हिमालय गाथा-7

हिमाचल के लोकगीत

सुदर्शन वशिष्ठ

हिमालय गाथा (सात)

हिमाचल के लोकगीत

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
सीनियर फैलोशिप (2011-12) के अंतर्गत कृतकार्य

हिमालय गाथा (सात)

हिमाचल के लोकगीत

संकलन एवं संपादन

सुदर्शन वशिष्ठ

लोक मेधा के प्रतीक : लोकगीत

लोकवार्ता में लोकगीत की महत्ता यह है कि रचना में गीतकार भी वही है, संगीतकार भी वही है तो गायक भी वही है। बहुत बार गीत का आनंद लेने वाला भी वही होता है। उसके लिए श्रोताओं की भीड़ या वाहवाही की जरूरत भी नहीं। वह श्रोताओं को रिझाने के लिए नहीं गाता।

लोकगीत केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं होते, ये समाज का प्रतिबिंब बड़ी निर्ममतापूर्वक प्रस्तुत करते हैं। वे समाज की कुरीति, आडंबर को परत दर परत उघाड़ते चले जाते हैं बिना किसी लाग-लपेट के। गीतकार और गायक, दोनों ही निर्भयता से अपना पक्ष पेश करते हैं। राजसत्ता, समाज, परंपरा, रूढ़ियों के ख़िलाफ ये निडर होकर खड़े होते हैं।

कांगड़ा के एक गीत में राजा हरिसिंह भेड़ें चराती गद्दण को बलपूर्वक अपने महलों में डाल लेता है। उसे महलों में रहना नहीं भाता। एक दिन राजा उसे छलकर पूछता है कि उसे गद्दी भाता है या राजा। गद्दण का उत्तर है कि मुझे कुछ-कुछ ममता तो राजा से हो गई है किंतु गद्दी (पति) के नाम से जैसे छुरी चल जाती है–

थोड़ी थोड़ी ममता राजा तुसां दी बी लगदी
गद्दिए दे नाएं लगदी छुरी ओ।

इससे भी अधिक मर्मस्पर्शी दृश्य तब उपस्थित होता है जब गद्दण महलों में है और उसका पति गद्दी महलों के नीचे भेड़ें चराता हुआ मुरली बजाता है–

महलां दे हेठ गद्दी भेडां जे चारे
मुरलिया रूणक सुणाई बो, मेरेया बांकेया गद्दिया।

कांगड़ा के एक अन्य गीत 'धोबण' में महलों के आने पर धोबन को राजा की पहली रानी (सौतन) द्वारा जहर देकर मारने के बाद जब उसके मृत शरीर की पिटारी नदी में बहती हुई आती है तो धोबी (उसका पति) उसी नदी के किनारे कपड़े धो रहा होता है। जब धोबी पिटारी खोलता है तो 'सोने की पिटारी

में उसके बच्चों की मां' नजर आती है। सोने की पिटारी में उसकी पत्नी नहीं, राजा की प्रेयसी नहीं, अपने बच्चों की मां का दिखना एक अद्‌भुत प्रयोग है–

धोबिएं पिंजरा सैह् खोल्लया, हाय खोल्लया
एह् बच्चेयां दी माई ए।

एक अन्य गीत में नायक निम्न वर्ग की नायिका से प्रेम करता है। वे दोनों एक थाली में दूध-भात खाते हैं। एक थाली में इकट्‌ठा खाने के बाद वह उसकी जाति पूछता है–

दूध ता भत्त मुआ खादा इक्की थालि़या,
हुण कजो पूछदा तू जाति।

कुल्लू में 'लामण' गीत में प्रेमी-प्रेमिका के दोहे के रूप में सवाल-जवाब हैं। एक छंद में कामना की जाती है कि जिस तरह लंबे केलू का पेड़ सदा हरा-भरा रहता है, उसी तरह जैसी हमारी जोड़ी फोटो में उतरी है, उम्र भर वैसी ही बनी रहे–

लोमे केलू री बूटड़ी, सदा बे हौरी री हौरी।
जेंडी जोड़ी थी फोटू न म्हारी, तेंडी लोड़ी उमर भौरी।

लोकगीतों में बड़ी से बड़ी बात सहज भाव से कह दी गई है जो उस युग में कहनी कठिन ही नहीं नामुमकिन थी।

विभिन्न संस्कारों पर गाए जाने वाले मंत्रों की तरह धीर-गंभीर गीत हों या विवाह के अवसर पर गालियां; सबकी रचना समय और परिवेश के अनुकूल की गई है। विवाह में एक ओर वैदिक मंत्रों से विवाह का क्रियाकलाप चलता है तो दूसरी ओर गीतों के माध्यम से उस कर्म को लोक के लिए उजागर किया जाता है। गीत से ही पता चल जाता है कि अब विवाह में कौन सी तैयारी चल रही है। लोकाचार का अद्‌भुत निर्वाह गीतों के माध्यम से किया जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार गीतों के माध्यम से निभाए जाते हैं। जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह और यहां तक कि मृत्यु में भी गीत परंपरा है। इसी तरह धार्मिक गीतों में वेद मंत्रों व देवताओं के आवाहन मंत्रों की तरह देव गीत गाए जाते हैं। किसी भी संस्कार से पहले देवताओं का आवाहन किया जाता है–

सुरगे ते उतरेयो देवतयो सांदी आई बैह्यो।

(हे स्वर्ग से उतरे हुए देवताओ, शांति हवन में आकर बैठो।)

कुल्लू की ओर देवताओं का आवाहन महिलाएं गीतों के द्वारा करती हैं। इसी तरह धार्मिक गीत अपनी जगह है। शिव स्तुति, देवी की भेंटों से लेकर अनेक भजन हैं जो भजन मंडलियों द्वारा गाए जाते हैं। ये मंडलियां गांव-गांव में 'जागरण' या 'महफिल' में गाती हैं।

इसके अतिरिक्त ऋतु गीत, उत्सव गीत, त्योहार गीत भी बहुतायत में हैं। नृत्य गीतों की एक अलग ही परंपरा है जो नाटी के समय गाए जाते हैं। घटना प्रधान या नायक प्रधान गीत भी हैं। बहुत सी प्रेमगाथाएं भी प्रचलित गीतों में रूपांतरित हुई हैं।

लोकगीत परंपरा थमती नहीं। समय के साथ-साथ नित नए-नए गीत बनते जाते हैं। गीत रचना के लिए कवि या गीतकार बनाने या उन्हें प्रोत्साहन, पारिश्रमिक देने की आवश्यकता भी नहीं। गांव की साधारण घटना जैसे फॉरेस्ट गार्ड की प्रेमकथा से लेकर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के आगमन तक के गीत हैं। राजाओं के समय की घटनाओं से लेकर स्वाधीनता प्राप्ति के बाद दरिया में बांध बनने, सड़क निकलने, बिजली तैयार होने, हेलीकॉप्टर उतरने तक के गीत हैं जो अपढ़ किंतु सुघड़ लोगों ने रचे हैं।

लोकगीत अपनी मधुर लय तथा मारक शब्दावली के कारण दोहरी मार करता है। कभी मनुष्य उसकी धुन पर ही मुग्ध होता है तो कभी मात्र शब्दों के बाणों से बिंध जाता है।

प्रेम गीत व गाथाएं

प्रेम के तराने सदियों से लोकगीतों के माध्यम से जनमानस में गूंजते रहे हैं। अपने ज़माने में ऐसे प्रेम को चाहे कितना भी निम्न क्यों न समझा गया हो, प्रेमियों को कितना ही प्रताड़ित क्यों न किया गया हो, समय के अनंतर उसी का स्मरण कर गाने गाए जाते हैं। इन गीतों की ख़ासियत यह भी है कि इनमें किसी भी बात को छिपाया नहीं जाता। सत्य को अपने क्रूर रूप में प्रकट करना ऐसे गीतों का ध्येय रहता है। इनमें ऊंच-नीच, अमीर-गरीब का भेद नहीं रहता। श्लील-अश्लील की भी परवाह नहीं की जाती।

राजाओं के समय में राजकुमारियां अपने महलों के ऊपर से आते-जाते राहगीरों को देखा करती थीं। राह चलते किसी सुंदर गठीले सजीले जवान से उन्हें प्रेम हो जाता। राजकुमारी कहती है, काले कुंडलों वाले जवान! तू महलों में आ जा। जवान कहता है तेरा तोता चुगलख़ोर है, मैं कैसे आऊं!

तेरी पगड़ी किसने रंगी है, रुमाल किसने रंगा है! वह कहता है मेरी भाभी ने रंगी पगड़ी और मेरी नार ने रंगा ये रुमाल। राजकुमारी कहती है, तेरी भाभी पर बिजली गिरे, तेरी नार को काला नाग डसे। यह गीत बिलासपुर, मंडी व कांगड़ा तक के क्षेत्रों में गाया जाता था–

महलां रे हेठिए जांदेया ओ जुआना
जांदेया ओ जुआना
महले तू आई लै जरूर
काल़ेया कुण्डला वाल़ेया ओ नौकरा।
महलां तां तेरेयां गोरिए कियां ओआं
ओ गोरिए कियां ओआं तोता बड़ा चुगलीबाज
सबज दप्पटे वाल़िए ओ गोरिए।
कीने रंगी तेरी पागड़ी ओ जुआना
कीने रंगेआ एह रुमाल
काल़ेया कुण्डला वाल़ेया ओ नौकरा।

चंबा का एक प्रसिद्ध गीत है 'छिंबी'। राजा एक छिंबी पर मोहित हो उसे महलों में ले जाने की बात करता है तो वह कहती है कि वह तो नीच जात है। राजा उसे जाति बदलने के लिए लाख, दो लाख देने की बात करता है, वह जाति बदलने को तैयार नहीं होती। गीत में छिंबी के सौंदर्य का वर्णन एक सधे हुए कवि की तरह किया गया है। छिंबी के दांत खिले हुए खटनालू के फूल की तरह हैं, आंखें सूरज की रोशनी की भांति तो होंठ पान के पत्तों की तरह–

छिम्बी हो छिम्बी पाणी जो गई हो
तेरड़े सौंह् छिम्बी पाणी जो गई हो।
दन्द कदेई ऐस्सा छिम्बी दे जियां खिड़े खटनालू
दन्द हेरी मत भुलै राजा जी हाऊं ता जाति री छिम्बी।।
हाखी कदेई ऐस्सा छिम्बी दी जियां सुरजे री लोई।।
हाखी हेरी मत भुल्ले राजा जी हाऊं ता जाति री छिम्बी।
हाथ कदेई ऐस्सा छिम्बी दे जियां हलुए री डाली
हाथ हेरी मत भुलै राजा जी हाऊं तां जाति री छिम्बी।।
होठ कदेई ऐस्सा छिम्बी दे जियां पाना रे पट्ठे
होठ हेरी मत भुलै राजा जी हाऊं ता जाति री छिम्बी।।

इक लख दिता तिजो दो लख दिता जाति देयां बदलाई
नि बो लैणे लख दो लख जाति नी बदलाणी।।

मंडी में प्रचलित एक गीत में झारू मियां के अति निम्नवर्गीय गगनू से प्रेमकथा का गान है। झारू मियां को सभी समझाते हैं कि नीच गगनू का साथ छोड़ दे किंतु वह प्रेम के समक्ष सामाजिक मान्यताओं की परवाह नहीं करता। मां-बाप, भाई-भाभी किसी की सीख वह नहीं मानता। यहां तक कि उसका हुक्का-पाणी बंद कर बिरादरी बाहर करने की धमकी दी जाती है। वह प्रेमिका को छोड़ने के बजाय असल चमार बनना चुनता है–

अम्मा भी समझांदी, बापू भी समझांदा
झारू ओ मियां छड्डी देणा चमारिया रा साथ।

झारू मियां ने जनेऊ कुएं पर फेंका। भाई-भाभी ने समझाया, तेरे हाथ का पानी कोई नहीं पिएगा। तुम्हारे नरेलु से कोई तंबाकू नहीं पिएगा। झारू मियां नहीं माना। अंततः सब ड्योढ़ी के अंदर बैठे और झारू मियां बाहर।

खूहा पर सट्टेया जनेओ, झारू मियां
पकड़ेया गगनू चमारिया रा हाथ।

भाई तेरा समझांदा, भाभी समझांदी
छड्डी देणा गगनू चमारी रा साथ।

किस भी पीणा तेरे हाथे दा पाणी
किस भी पीणा तेरे नरेलु तमाखू
किस भी बिह्याणी तेरी नार।

अम्मा पीणा मेरे हाथे रा पाणी
बापू पीणा मेर नरेलु तमाखू
मेरे भाईए बिह्याणी मेरी नार
अम्मा मेरिंए हाऊं हुआ असल चमार।

सब बैठे अंदर
झारू मियां ड्योढी ले बाहर।

छड्डी दे गगनू रा साथ
अम्मा भी समझांदे, बापू भी समझांदे
छड्डी देणा गगनू रा साथ।

मंडी में एक और प्रेमगीत 'जिंदु देबकू' नाम से भी प्रचलित है। इसके एकाधिक रूपांतर मिलते हैं। चंबा के 'छिंबी' गीत की भांति इस गीत में भी देबकू के सौंदर्य का मनोहारी वर्णन किया गया है। देबकू के गोरे-गोरे हाथ हैं, आंखें आम की फाड़ियों की तरह हैं, दांत मोती के दानों की तरह। वह बार-बार अपने प्रेमी जिंदु के आने की राह देखती है-

हाथा लैंदी लोटकू देबकुए
काच्छा पांदी धोति
चल मुईए न्हाओणेओ जाणा, ओ देबकुए...।

हाखियां ता तेरी देबकु
अम्बा रियां फालि़यां
गूठियां रौंगा दिया फालि़यां, ओ देबकुए...।

हाखियां ता तेरी देबकू आंबां रिया फाड़ियां
दांद तेरे मोतियां रे दाणे
हो दांद तेरे मातियां दे दाणे।

कुल्लू में एक जीवनू प्रेमी का गीत है जो विवाहित होने पर भी प्रेमिका को पाने की चाह मन में लिए हुए है-

जीवनू दूई रा बड़ा बांका, जीवनू दूईं रा बड़ा बांका।
एक बोला सी जीवनू जीवनू, एक बोला सी नावां।
सिंहा मुखिया कांगणू देनू, बौसे मेरे गावां।

प्रदेश में अनेक प्रेमगाथाएं हैं जो गीतों के माध्यम से आज भी जीवित हैं। फुलमूं-रांझू, कुंजो-चंचलो, सुन्नी-भुंकू, हीर-रांझा जैसे गीत उन प्रेमकथाओं की याद दिलाते हैं जो प्रेम के कारण समाज द्वारा प्रताड़ित किए गए या जिनका उपहास उड़ाया गया।

चंबा में फुलमूं-रांझू का किस्सा बहुत मशहूर है। इसे अब भी गाया जाता है। इस हृदयग्राही गाथा में फुलमू और रांझू के प्रेम की करुणाजनक कथा कही गई है। रांझू का ब्याह कहीं और तय कर दिया जाता है। विवाह से उसे भाभियां, ताईयां और चाचियां बटणा लगाती हैं। किसी पर दोषारोपण न कर, दोनों प्रेमी इसे कर्मों का दोष मान स्वीकारते हैं। किंतु प्रेम का उत्सर्ग देखिए कि एक ओर रांझू ब्याहने निकलता है तो दूसरी ओर फुलमू की लाश

निकलती है। रांझू कहारों को अपनी पालकी रोकने को कहता है कि फुलमू को 'दाग' देना है। वहीं रांझे की भी मृत्यु हो जाती है। इस हृदयग्राही गीत को करुण स्वरों में गाया जाता है–

गुआडुऐं पच्छुआडुऐ तू कजो झाकदी,
झाकां कजो मारदी।
दो हत्थ बुटणे दे ला फुलमू,
गल्लां होई बीतियां।
बूटणा लगान तेरियां सक्की भाभियां,
तेरीयां ताईयां-चाचियां।
जिन्हां जो ब्याहे दा चा ओ रांझू,
गल्लां होई बीतियां।
ठप्पा-ठप्पा क्हारो मेरी पालकिया,
मेरी पालकिया।
फुलमू जो दाग मैं देयां,
गल्लां होई बीतियां।

इसी तरह का दूसरा किस्सा 'कुंजू चंचलो' का है। गीत में चंचलो का कपड़े धोते हुए छम-छम रोने का चित्रण है। प्रेमी ने जो निशानी दी है उसका बार-बार उल्लेख किया जाता है। गीत में यह भी जिक्र है कि लोग कहते हैं चंचलो काली है किंतु प्रेमी कुंजू के लिए वह 'मरूए' की डाली के समान है–

कपड़े धोआं छम-छम रोआं चंचलों, बिच कै बो नसाणी हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बिच कै बो नसाणी हो।
कपड़े धोआं छम-छम रोआं कुंजुआ, बिच बटण नसाणी हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बिच बटण नसाणी हो।
गोरी-गोरी बांह लाल चूड़ा चंचलों, बिच कै बो नसाणी हो।

'हीर-रांझा' यद्यपि पंजाब की प्रेमगाथा है तथापि इसे हिमाचल में भी अपने ढंग से गाया जाता है। हिमाचल के जिला मंडी तथा पंजाब से लगते क्षेत्रों कांगड़ा आदि में भी हीर-रांझा का किस्सा मशहूर है। यहां मंडी में प्रचलित रूप दिया जा रहा है–

किधरां ले आइयां हीरां तख्त रांझे
ले मेरा रांझा आया

झंग स्याले ले हीरां ओ क्या ओखटी
के ओ रांझा जै लयाया।
किधरा ते मेरा रांझणा आया
किधरा ते आइयां हीरां
तख्ता मांझे ले मेरा रांझण आया
झंग स्याले ते मेरी हीरां।

सुन्नी-भूंकू की प्रेमगाथा बहुत प्रसिद्ध है। यह भरमौर और लाहुल की संस्कृति को जोड़ती है।

सुन्नी-भूंकू भरमौर की प्रसिद्ध गाथा है जो संक्षिप्त रूप में गीत के रूप में गाई जाती है। भूंकू नाम का गद्दी युवक अपनी भेड़-बकरियां लेकर लाहौल जाता है जहां उसकी भेंट लाहौली युवती सुन्नी से होती है। दोनों में प्रेम हो जाता है। अगली गर्मियों में जब भूंकू ने पुनः अपनी भेड़-बकरियों के साथ आना होता है तो कुछ औरतें उसे बताती हैं कि भूंकू तो मर चुका है। ऐसी ही खबर भूंकू को लाहौल पहुंचने पर मिलती है। फलतः दोनों एक-दूसरे के वियोग में मर जाते हैं।

गीतकार ने भूंकू का परिचय गठीले जवान के रूप में दिया है जिसकी दाढ़ी काले भंवरे जैसी है–

छोटड़ा गदेटा भैणजी, काली भौंर दाढ़ी है।

गांव में भूंकू को कुत्ते भौंकते हैं–

ओ बाहर जइयो निकियो छुकयो, कुत्ते कस जो लगे हो।

सुन्नी बाहर आती है तो वार्तालाप इस तरह होता है–

कठी तेरे घर ओ मित्तरा, कठी जो चलूरा हो।
भट्टी टिकरी घर बो मण्हिए, लोहला जा चलूरा हो।

...कहां है तुम्हारा घर और कहां चले हो! भूंकू कहता है, मेरा घर भट्टी टिकरी में है और लाहौल जा रहा हूं। वह वहां रुक जाता है और कई दिन ठहरने के बाद वह पूछता है–

कुण जिणी रित सुन्निए, कुण जिणा महीना है
सैरकणी रित ओ भूंकूआ, काति दा महीना है।

...यह कौन सी ऋतु है, कौन सा महीना है! सुन्नी उत्तर देती है, यह सैर

की ऋतु है और कार्तिक महीना है।

अगले साल मरने की झूठी खबर यूं सुनाई जाती है–

होर तां मह्णू राजी बाजी भूंकू गद्दी मुआ हो।
होर तां मह्णू राजी बाजी सुन्नी भोटली मुई हो।

इस गाथा के कई रूपांतर मिलते हैं। एक रूपांतर का उदाहरण–

कठी तेरे घर बो मित्तरा,
कठी जो चल्लू रा ओ।
भटी टिकरी घर बो गदणी,
खरचा जो चल्लू रा ओ।

विरह गीत

भरमौर में विरह गीतों की भरमार है। चंबा के जनजातीय क्षेत्र भरमौर में गद्दी एकमात्र ऐसा कबीला है तो छह ऋतुएं और बारह महीने अपनी भेड़-बकरियों के साथ चला रहता है। वह बैसाख के महीने में अपने घर गधेरन लौटता है जहां से उसे पुनः सफर पर निकलना है। पीछे छूटा उसका परिवार, पत्नी विरह सहती रहती है।

पत्नी चिट्ठियां लिख-लिखकर संदेशा भेजती है कि तुम्हारी माता बीमार है, तुम्हारी बहन बीमार है, प्रियतम घर आ जाओ–

लिखि लिखि चिट्ठियां मैं भेजां, हां मैं भेजां
माता तम्हारी बीमार ढोला, घरे आई जाणा।
लिखि लिखि चिट्ठियां मैं भेजां, हां मैं भेजां।
भैण तम्हारी बीमार ढोला, घरे आई जाणा।

ऋतु उदासी वाली आ गई है, प्रियतम घर आ जाओ! तुम्हारे दोस्त बावड़ी पर तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं–

प्यारी प्यारी हो क्या लांदा मेरेया प्यारूआ
बाईं पुर भाळें हो तेरे दोस्त मेरेया प्यारूआ।

जोता री थकूरी ओ मत छेड़ैं मेरे प्यारूआ
जोता पर भाळे ओ मेरी पतळिया भाखा प्यारूआ।

अज छतराड़ी ओ कल राखा मेरेया प्यारूआ।
रूत संघड़ोणी हो चलैं आयां मेरेया प्यारूआ।

पत्नी कहती है, तुम्हारे बिना मन बुरा-बुरा हो रहा है, घर आ जाओ। भेड़ों के साथ गया पति कहता है, भेड़ों ने बच्चे दिए हैं, सौ भेड़े सूई हैं, घर कैसे आऊं!

भेडा केरिआ पाह्लणुआ, घरै जो ईयां हो
घरा जो किहां ईणा भेड़े सो लाया हो
सौ सुइयां भेड़लियां, पणसो सुइयां हो
धारा दिया पाह्लणुआं, मन सुंघड़ लग्गा हो
सुंघड़ लग्गा हो सुंघड़ौण, मने बुरा बुरा लग्गा हो
घरा किहां ईणा भेड़ा सो लाया हो।

कांगड़ा के लोग पहले नौकरी के लिए बाहर जाते थे तो उनकी नवविवाहिता उनसे ले जाने का गुहार करतीं। वे कहतीं कि अगर जाना ही है तो मेरे गरी और छुहारे साथ ले जाओ, मेरे सिर की चुनरी ले जाओ, नाक की नत्थ ले जाओ। ये चीज़ें तुम्हारे काम आएंगी...तू मेरे नयनों का लोभी है। ऐसा ही भाव है 'जे तू चलेया' के गीत का–

जे तू चलेया चम्बे चाकरी ओ ढोला...
मेरे गरी ते छुहारे लैंदा जायां, छैल़ा ओ...
जे तिजो लग्गे मेरी बेदणा
गल़े लाई कने सौयां, नैणा देया लोभिया।

जे तू चलेया चम्बे चाकरी
ओ मेरे सिरे दे सालूए लैंदा जायां, छैल़ा ओ...
जे तिजो लग्गे ठण्डड़ी तां
तम्बू ताणी करी सोयां, नैणा देया लोभिया।

जे तू चलेया चम्बे चाकरी
ओ मेरे हत्थे दे चूड़े लैंदा जायां, छेला ओ...
जे तिज्जो लग्गे मेरी बेदणा
ताह्लू हिक्का कने लायां, नैणा देया लोभिया।

इसी तरह एक अन्य गीत में नायिका राजा की नौकरी पर गए पति

के इंतजार में बारह वर्ष से अट्ठारह की हो जाती है। उसका पति सदा ही मुसाफिर बना रहता है–

ओ गया भी ता था साजिया बाहिया
हण आई भी लगेया चैत्र बसाख
ओ सदा रेआ महिमीआ!

ओ बागें ता तेरेयां आम्ब केले़ पाके
होर भी ता पाके सरताज
ओ सदा रेआ, महिमीआ!

बारांह ता बरसी ब्याही ढोला
ठारहां गई बाल़ड़ी बरेस
ओ सदा रेआ मुसाफिरा!

ओ बले सदा भी नी रैंह्दी बालड़ी बरेस
सदा भी नी रैंह्दे काल़ड़े केस
ओ ढोला! मेरेआ बेदर्दिया!
ओ बदलुआं भी भेजदी बिरणा तेरेआं
ओ भलेआ देओरा मेरेआं!
ओ घरैं ता आओणा दिन चार।
बदलुआं भी नी मनदे नारे मेरिए नाजो!
राजेआं दी नौकरी भी तां हुंदी करड़ी
नाजो मेरिए! नारे नाजके!

प्रेम में मिलन और विरह के सर्वाधिक गीत लामण में हैं।

लामण कुल्लू, महासू, सिरमौर का एक सशक्त लोक काव्य है। इसे झूरी भी कहा जाता है। हृदयग्राही भावों के साथ इसमें उत्कृष्ट काव्य के दर्शन होते हैं। यह काव्य प्रश्न और उत्तर के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। नायिका प्रश्न पूछती है तो नायक उत्तर देता है। यह अरण्य गायिका का एक अद्भुत रूप है जिसमें युवक तथा युवतियां लंबी तान में गाते हैं ताकि एक शिखर से आवाज दूसरे शिखर तक पहुंच सके। दोहा, चतुष्पद और छंदों के प्रयोग से एक लयात्मक और गीतात्मक काव्य बन जाता है। प्रकृति से प्रतीक और बिंब विधान लेने से यह और भी मारक हो जाता है। नायक अथवा नायिका की

प्रशंसा, संयोग, वियोग सभी का चित्रण इस गायिका में मिलता है। यह काव्य मूलतः कुल्लू और इससे लगते क्षेत्रों में प्रचलित है। इस काव्य में संयोग तथा वियोग के कुछ पद देखिए–

संयोग

गेहूं गौगरे, पीऊंले़ जौऊरी काशी।
चंद्रा सेंही नजरी तेरी, सूरजा सेंही पियाशी।

फूल फुलू फूलणू झूरिए, भौर फूलला पाल़ा।
ज्हारा ज्हारा रे हौंखड़ू तेरे लाखे री दोंदे री माल़ा।

मखमला रे थिपू रा भलका, लोभे देई जुटू रे फेरे।
किहां भलेरने झूरिए मूं ता लाल गलोटड़ तेरे।

गेहूं जोंदरे ऊबण जौऊ जोंदरे सौरी।
लोभी गलाबा रा डोल्ह्रा, झूरी सा बोदी री तौरी।

खाई दपौहरी खाऊ औधला सीडू।
झूरी सा बोला बाल्हा री चाकरी लोभी जोता रा चीडू।

वियोग

बीझे सौरगा बादल निकता हौरा।
आपू न्हौठा फरंगी री नौकरी झूरी डाही जौल़दी घौरा।

फूल निभू फूलिया, भौर फूलला जौरा।
लोभी न्हौठा दूर नौकरी, दुखा रा कोटडू घौरा।

नीलीए चीड़िए, कोल्ह बुणू पाणी रे छोभे।
लोभी न्हौठा दूरा पारा बे कुणी रे रौहली लोभे।

भेलया माण्हुआ, भलेया जुआना।
राती नी पौड़दी निंद्र, दिहाड़ी नी रूचदा खाणा।

हेठे धीरे शहरा, ऊझे भेखली धारा।
लोभी चौलू दूरा पारा बे, गौल लागा भौरिदा म्हारा।

बारामासा के रूप में विरह गायन

ऋतु गीतों में वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले गीतों को कांगड़ा से बिलासपुर तक 'चमासा' कहा जाता है। छह महीने के गीतों को छहमासा या छमाह्ड़ा

और सावन गीतों को 'पींघ'। चंबा में वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले गीतों को 'मल्हार' कहा जाता है। रामायण या भक्तिगीतों को महासू तथा चंबा में 'एंचली' कहते हैं। वीरगाथा को 'बार' या 'भारथ'। लोकगीतों में झिंझोटी' गायन भी प्रसिद्ध है।

हिमाचल प्रदेश में बारामासा के गायन की समृद्ध परंपरा है। ये गायन कांगड़ा, मंडी, सोलन के क्षेत्रों में होता है जिसमें बारह ऋतुओं में विरहणी नायिका की मनोदशा का वर्णन मिलता है। चैत्र से लेकर बदलती ऋतुओं में कंत की प्रतीक्षा में विरहणी किस तरह तड़पती है, इसका हृदयग्राही वर्णन बारामासा में मिलता है। बारामासा में प्रत्येक ऋतु के साथ विरहणी नायिका के मन के उद्‌गारों को हृदयग्राही शब्दावली में व्यक्त किया जाता है।

कांगड़ा क्षेत्र में बारामासा

1

चैत न तू जाईं ढोला
बांदी ए बहार
बसाख स: दुप्पटे मैं सींदी वे हां।
जेठ न तू जाईं ढोला धुप्पां जोर जोर
हाड़े च हांखीं दुक्खण तेरियां
सौण न तू जायां ढोला बद्‌दल़ घनघोर
भाद्रूएं रातीं न्हेरियां।

सूज न तू जाईं ढोला पितर सराध
कात्तीं बिच बलन दयालियां वे हां।
मग्घर न तू जाईं ढोला ल्हेफ भरां
पौहे बिच सेजां बच्छाणियां वे हां।

माघ न जाईं ढोला लोहड़िया तिहार
फौगणे च नारां खेलण होलियां।

2

बसाख बसंबर वासुदेव, फुल वामन हरमन हारे।
पद्‌मनाभ परमेसर सिमरूं, परसराम बलकारे जी।।
हरि नाम हृदयधारी लीजो जब लागे प्रभु के सरनम

हरिभक्त अरे हरि भजन बिना
तुद बिन भवसागर किस विध तरनम।।

जेठ जपो जगदीश सदा प्रभु
यम के त्रास निवरणम।
नाम लेत सब पाप कटत हैं
हुण क्या गाफल करणम।
भक्त बच्छल भगवान भजो
सब संकट दोष निवरणम।
हरि भक्त अरे भजन बिना।।

हाड़ हरि का नाम जपो
पुन हृदय हरि जी धारो
अलख निरंजन निराकार नरसिंह
ध्यान बिच धारो जी
भक्त प्रल्हाद की मुक्ति करे
जब लगे प्रभु के चरणम।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

सौण श्याम सलोनों सिमरो
सुभ जुग के सुखदाई।
मोर मुकुट पट चीर बराजे
बलिभद्र के भाई जी।
मुरली के घनघोर सुनी
मृग, पंछी छिपी रहे हरि चरणम।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

लोकगीतों में पर्यावरण

ग्राम्य जीवन पर्यावरण की गोद में पलता-बढ़ता है। अनजाने में ही लोकमानस पर्यावरण के प्रति सचेत रहता है। इस बारे में कोई शिक्षा नहीं देता, कोई प्रचार नहीं करता। एक अपढ़ देहाती पर्यावरण की महत्ता उतनी ही जानता है जितना एक बड़े से बड़ा वैज्ञानिक या पर्यावरणविद्। पर्यावरण के प्रति सचेत रहने की दीक्षा उसे अपनी परंपरा से मिलती है। यह भावना लोकगीतों में भी सहज ही परिलक्षित होती है।

चंबा (भरमौर) का एक गीत है–

हरिए डालि़ए तू किह्‌यां बढणी
इक बो तेरा पाप लगंदा
दूजे दिक्खी कैं तू किह्‌यां छड्डणी।

...हे हरी शाख! तुझे कैसे काटूं। एक तो (तुझे काटने से) तेरा पाप लगेगा। दूसरे तुझे देखकर मैं छोड़ भी कैसे सकता हूं!

भेड़-बकरियों के चारे के लिए पेड़ से पत्ते शाख समेत काटे जाते हैं। हरे पत्ते भेड़-बकरियों के लिए आवश्यक हैं। उधर नई और हरी शाख को काटने का मन नहीं करता।

चंबा के गीत में चंबे के पेड़ की हरी-भरी डालियों का उल्लेख आता है। चंबे के पेड़ को संबोधित कर इस गीत में पति-पत्नी में प्रेम अवसरों पर रात को ससुर-सास, जेठ-जेठानी के जागते होने की बात की गई है और कहा गया है कि प्रेमालाप हौले-हौले करना, सब अभी जाग रहे हैं–

हाय बो चम्बा हरेया भरेया
हरेया भरेया रांझणा हो
हरियां चम्बे दियां डालियां हो
हाय बो चम्बा...।

हाय बो गल्लां हौले करयां
हौले करयां रांझणा हो
सौहरा सुता, वे सस्स जागदी हो
हाय बो चम्बा...।

हाय बो गल्लां हौले करयां
हौले़ करयां रांझणा हो
जेठ सुता, वे जठानी जागदी हो
हाय बो चम्बा...।

एक अन्य गीत में एक अजनबी के प्रति भाव बहुत ही काव्यमयी भाषा में व्यक्त किए गए हैं–

पखला माह्‌णू, खौदला़ पाणी
डर लगंदा...।

...पखला (अनजान, अजनबी) मनुष्य और गंदला (मटमैला) पानी...डर लगता है। यानी जिस तरह मटमैले पानी की कोई थाह नहीं लगा सकता, उसी तरह अजनबी के बारे में भी कोई अंदाजा नहीं लगा सकता कि कैसा होगा।

यूं तो लोकगीत से अभिप्राय अपने में स्पष्ट है। यहां यह बताना आवश्यक है कि इस संकलन में लोकगाथाएं जो गेय रूप में प्रचलित हैं, नहीं दी गई हैं क्योंकि वे गीतों की श्रेणी में नहीं आतीं। अतः राजा होडी, राजा रसालू, तोता-मैना जैसी गाथाओं को नहीं लिया गया। ऐसे ही युद्धगाथाओं, जिन्हें 'झेड़े या बार' कहा जाता है, को भी शामिल नहीं किया गया। प्रदेश में देवी-देवताओं की अनेक गेय कथाएं हैं जो देवता के गूरों के माध्यम से बखानी जाती है। ऐसी गाथाओं को भी नहीं लिया गया, जिन्हें भारथा कहा जाता है। इनमें देवता के जन्म से लेकर पूरी कथा रहती है। हिमाचल के दो जनजातीय क्षेत्रों-किन्नौर तथा लाहौल स्पिति को भी भाषा परिवार की भिन्नता के कारण छोड़ दिया गया है। तीसरा जनजातीय क्षेत्र भरमौर इस सर्वेक्षण में शामिल है। ऋतु गीतों में महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले बारामासा गीतों सहित ऋतु गीत लिए गए हैं। 'महीने के गीतों' में प्रथम बार महीने का नाम सुनाने का काम वर्ग विशेष (डूमणे, जोगी, तूरी) द्वारा किया जाता है। ये लोग घर-घर जाकर गाथाएं व गीत सुनाते हैं जिनमें वर्ष के प्रथम महीने या किसी महीने का नाम आता है। कांगड़ा, चंबा में इन्हें 'ढोलरू', महासू में 'चत्रोल' कहा जाता है। इन गीतों में भर्तृहरि, सरबण गाथा, गुग्गा गाथा तथा कुल्ह जैसी लंबी गाथाओं को छोड़ ऋतु गीतों को शामिल किया गया है। जिला कांगड़ा से संलग्न दो और जिले हमीरपुर और ऊना को भी अलग विस्तार से नहीं लिया गया क्योंकि हमीरपुर व ऊना की संस्कृति व संस्कार कांगड़ा जैसे ही हैं। गीत भी वही हैं। ऊना में भाषायी भिन्नता आ जाने से केवल पंजाबी का पुट आ जाता है तथापि दोनों जिलों के कुछ गीत उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

मैं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार का बहुत आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए सीनियर फैलोशिप प्रदान की और यह महत्त्वपूर्ण कार्य हो पाया।

हेमंत : 2020

—सुदर्शन वशिष्ठ

आभार

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार से यदि वर्ष 2011-12 की सीनियर फैलोशिप न मिली होती तो मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरा न कर पाता। फैलोशिप में 30 नवंबर, 2015 तक कार्य पूरा करना था, जो कर दिया गया हालांकि इसके बाद भी अपने स्तर पर काम जारी रखा। इससे पूर्व 'हिमालय गाथा' शृंखला तैयार करते हुए भी लोकगीतों का संकलन किया गया था जो 'लोकवार्ता' खंड में दिया गया है।

लोक साहित्य में कभी लगता ही नहीं कि आपने इसे 'पूर्ण' कर लिया है। सदा एक बात खटकती रहती है कि यह भी रह गया, वह भी रह गया। नित नई-नई जानकारियां मिलती रहती हैं। खैर, कहीं तो विराम लगाना ही होता है।

बहुत पहले जब भाषा संस्कृति विभाग में (सन् 1977) भाषा अधिकारी के पद पर आया तो विभाग में पहाड़ी शब्दकोश, लोक साहित्य के संग्रहण के साथ-साथ 'हिमाचल के लोकगीत' पर एक पुस्तक तैयार हो रही थी जिसका काम हम नए अधिकारियों को सौंपा गया। इस पुस्तक में मैंने कांगड़ा के लोकगीतों का संकलन किया। यह पुस्तक छपी किंतु शीघ्र ही अनुपलब्ध हो गई। आज इसकी एक प्रति भी कहीं देखने को नहीं मिलती। भाषा-संस्कृति विभाग में तीस वर्ष की सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के साथ हिमाचल अकादमी में दस वर्ष सचिव रहने पर लोक साहित्य का बहुत काम हुआ। लगभग सत्तर पुस्तकें मेरे सीधे संपादन अथवा सहयोजन में निकलीं। इनमें अन्य विधाओं के साथ लोकगीतों पर भी काम हुआ।

प्रस्तुत परियोजना के अंतर्गत लोकगीतों के संकलन में प्रदेश के विभिन्न दुर्गम स्थानों का भ्रमण किया। चंबा के भरमौर, पांगी से लेकर कुल्लू से सिरमौर तक की यात्राएं संभव हुईं। जनजातीय क्षेत्रों में भी जाना हुआ किंतु भाषा परिवार की भिन्नता से उपजी कठिनाइयों के कारण इन्हें छोड़ दिया गया।

प्रदेश के लोक कलाकारों, विशेषज्ञों, लोकगीत के जानकारों से संवाद के

बाद गीतों को अंतिम रूप दिया गया। एक ही गीत के विभिन्न पुरातन रूपों के मानकीकरण का कार्य चंबा (साहो) की लोकगायिका रेलो देवी, कुल्लू की गायिका सरला चंबयाल, मंडी की गायिका रूपेश्वरी के सहयोग से हो पाया। कांगड़ा में गौतम शर्मा व्यथित, ऊपरी शिमला में विद्यानंद सरैक, ध्यानसिंह भागटा, मंडी में सोमदेव कश्यप, पं. ज्वालाप्रसाद, बिलासपुर में अच्छर सिंह परमार, लैहरूराम सांख्यान, कुल्लू में मास्टर बलदेव, कृष्णा ठाकुर, चंबा में अमरसिंह रणपतिया, हरिश्चंद्र शर्मा, तेजराम पूंगा (स्व.), किशनचंद, सिरमौर में खुशीराम गौतम, यज्ञदत्त शर्मा आदि महानुभावों ने विशेष सहायता की।

पूर्व प्रकाशित लोकगीत संकलनों में भाषा-संस्कृति विभाग तथा अकादमी के प्रकाशन, 'हिमाचल के लोकगीत' (गौतम व्यथित), 'लामण' (एम. आर. ठाकुर), 'हिमाचल का लोकसंगीत (केशव आनंद तथा मोहन राठौर) आदि से मानकीकरण में विशेष सहायता मिली।

गायकों, गायन के ज्ञाताओं में शम्मी शर्मा, सुखदेव (स्व.), वासुदेव प्रशांत, करनैल राणा, वासुदेव अवस्थी, सुलोचना अवस्थी (कांगड़ा), डॉ. मनोहरलाल (स्व.), ओमप्रकाश शांत, रवींद्र कालिया, कुलदीप शर्मा (ऊना), केशवचंद्र शर्मा (स्व.), मुरारी शर्मा (मंडी), एस. शशि, प्रेमप्रकाश निहालटा (स्व.), ध्यानसिंह भागटा (शिमला), हेतराम तनवार, नंदलाल गर्ग, जगदीश शर्मा, हेमराज कौशिक (सोलन), एम. आर. ठाकुर, सूरत ठाकुर, विद्या, श्यामा शर्मा, ठाकुर दत्त शर्मा (स्व.), ईश्वरी प्रसाद, उमा, मास्टर बलदेव (कुल्लू), कृष्णा, जमना, वीना, गिलमो (पांगी-भरमौर) डॉ. कर्मसिंह, रमेश जसरोटिया, प्रेम शर्मा (चंबा) आदि का बहुत सहयोग रहा, जिससे यह कार्य पूरा हो पाया।

हेमंत : 2020

—सुदर्शन वशिष्ठ

क्रम

लोकभाषा

प्रत्येक क्षेत्र के लोकगीत वहां की ठेठ लोकवाणी को वहन करते हैं। लोकगीतों में उस क्षेत्र की आत्मा वास करती है।

हिमाचल की लोकभाषा को पहले सरकारी तौर पर पहाड़ी कहा जाता रहा। अब इसे हिमाचली भी कहते हैं। 1 नवंबर, 1966 को वर्तमान विशाल हिमाचल का गठन भाषा और संस्कृति के आधार पर ही हुआ। 'पंजाब सीमा आयोग' के निर्णयानुसार पंजाब और हरियाणा के पर्वतीय क्षेत्रों को हिमाचल में मिलाकर विशाल हिमाचल अस्तित्व में आया। फलस्वरूप जिला कांगड़ा के कांगड़ा समेत कुल्लू तथा लाहुल स्पिति, अंब और ऊना विकास खंड, जिला अंबाला की नालागढ़ तहसील और जिला चंबा के डलहौजी, बलून और बकलोह क्षेत्र हिमाचल में मिले। अतः बारह जिले—कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना, कुल्लू, लाहुल स्पिति, किन्नौर, शिमला, सोलन, सिरमौर, बिलासपुर, मंडी और चंबा अस्तित्व में आए। 25 जनवरी, 1971 को इस राज्य को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिला और भारतीय संघ का अट्ठारहवां राज्य बना।

यहां यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि जिला किन्नौर, जिला लाहुल स्पिति के क्षेत्र आधुनिक आर्य भाषा से संबंध नहीं रखते हैं। अतः समझने-लिखने की कठिनाई के कारण इन दोनों जिलों के लोकगीतों को छोड़ दिया गया है।

आर्य भाषा परिवार की भाषाओं में आज भी संस्कृत के मूल शब्द तथा वाक्यांश पाए जाते हैं। संस्कृत के दो मुख्य भेद माने गए हैं—वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत। लौकिक संस्कृत के बाद प्राकृत का उद्‌भव हुआ। अशोक के शिलालेखों में प्राकृत का प्रयोग हुआ। इसके बाद समस्त बौद्ध ग्रंथ पालि में लिखे गए। प्राकृत के कई रूप बने, यथा—शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री, पैशाची। जब प्राकृत भी संस्कृत की भांति व्याकरण में बंधने लगी तो एक ओर लोकभाषा का उदय हुआ जिसे अपभ्रंश कहा जाने लगा। व्याकरण के ज्ञाताओं तथा शिक्षित वर्ग ने जनसाधरण की बोली को अपभ्रंश नाम दिया। अपभ्रंश में ब्राचड़, वैदर्भ, मागधी, नागर, शौरसेनी, टक्क, गार्जर

आदि भाषाएं विकसित हुईं।

जॉर्ज ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में भारतीय भाषाओं के तीन वर्ग बनाए–बाहरी, मध्यवर्गी और भीतरी। भीतरी वर्ग में पहाड़ी श्रेणी के तीन उपवर्ग बने–पूर्वी पहाड़ी, मध्य पहाड़ी तथा पश्चिमी पहाड़ी। 'पश्चिमी पहाड़ी' में जौनसार बाबर से लेकर भद्रवाह तक की बोलियां आती हैं।

यद्यपि विद्वानों में इस वर्गीकरण में मतभेद है और भाषा विज्ञानियों ने अपने-अपने ढंग से इनका वर्गीकरण माना है। ग्रियर्सन के अनुसार पहाड़ी क्षेत्र में पहले खश आए और बाद में गुर्जर। खश भाषा पैशाची दरद से संबंधित थी। दरद जाति कश्मीर में रहती थी। डॉ. धीरेंद्र वर्मा तथा भोलानाथ तिवारी ने पहाड़ी भाषाओं का संबंध शौरसेनी से जोड़ा जो शूरसेन अर्थात् मथुरा के आसपास के क्षेत्र की भाषा थी।

हिमाचल प्रदेश की बोलियों पर विशेष अध्ययन नहीं हो पाया और इन्हें दरद पैशाची या शौरसेनी से जोड़ा गया। कश्मीर, जम्मू और राजस्थान व उत्तर प्रदेश से जोड़कर ही इनका अध्ययन किया गया।

जिस तरह पहाड़ी क्षेत्र में नेपाल की भाषा को नेपाली, कश्मीर की भाषा को कश्मीरी, गढ़वाल की भाषा को गढ़वाली और जम्मू यानी डुग्गर की भाषा को डोगरी कहा जाता है; वैसे ही हिमाचल की भाषा विस्तृत पहाड़ी से भिन्न देखने के लिए 'हिमाचली' कहा जाता है।

प्रत्येक जिले के नाम पर वहां की बोली का नाम भी है, जैसे–कांगड़ा की कांगड़ी, मंडी की मंडयाली, कुल्लू की कुल्लवी, चंबा की चंबयाली, लाहौल की लाहौली तथा किन्नौर की किन्नौरी। कुछ बोलियां जिलों के पुराने नाम पर हैं, जैसे–बिलासपुर की कलहूरी, शिमला की महासूवी, सिरमौर की सिरमौरी। कुछ पुरानी रियासतों के नाम पर भी हैं, यथा–जुब्बल की जुब्बली, बघाट की बघाटी, क्योंथल की क्योंथली। कुछ विशिष्ट भाषाओं का अलग अस्तित्व है, जैसे–किन्नौर में 'कोची', कुल्लू के मलाणा में 'कणाशी', जनजातीय भरमौर में 'गदयाली', चुराह में 'चुराही', किन्नौर के छितकुल में 'छितकुली', गुजरों द्वारा बोली जाने वाली 'गोजरी' लबाणा समुदाय द्वारा बोली जाने वाली 'लबाणी'।

मोटे तौर पर देखें तो बाहरी हिमाचल में चंबा से लेकर कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर और मंडी तक की बोली एक सी है और आसानी से समझी जा सकती है। भीतरी हिमाचल में कुल्लू, महासू, सिरमौर तक के क्षेत्र

की बोली, बोलने के विशिष्ट लहजे के कारण समझ नहीं आती। हालांकि शब्दावली, वाक्य विन्यास एक-सा है। गद्दी जनजाति द्वारा बोली जाने वाली गदयाली संस्कृत के अधिक निकट है। ऐसे ही चंबा लाहौल के त्रिलोकीनाथ के पास चनाल लोगों द्वारा बोली जाने वाली चिनाली में संस्कृत के शब्द तथा वाक्य विन्यास आज भी विद्यमान है। ऐसा ही भरमौर की गादी भाषा भी संस्कृतनिष्ठ भाषा है।

जिलावार लोकगीत दिए जाने से मोटे तौर पर यहां की बोलियों को कांगड़ी (हमीरपुर, ऊना समेत), चंबयाली (गदयाली, पंगवाली समेत), मडयाल़ी, बिलासपुरी (कहलूरी), सोलनी (बघाटी), महासूई, सिरमौरी तथा कुल्लूई कहा जाएगा। एक ही शब्द के उच्चारण में स्थान भेद के हिसाब से भिन्नता पाई जाती है।

हिमाचल प्रदेश के पूर्व में उत्तरांचल, दक्षिण में हरियाणा, पश्चिम में पंजाब, उत्तर में जम्मू कश्मीर और उत्तर-पूर्व में तिब्बत है। कांगड़ा व ऊना के साथ पंजाब, सिरमौर के साथ हरियाणा, चंबा के साथ पंजाब, महासू के साथ उत्तरांचल, कुल्लू के साथ लाहुल है। अतः इन क्षेत्रों की बोलियों का यहां प्रभाव रहा है।

बोली की विशेषताओं में 'ल' और 'ल़' की अलग ध्वनियां, 'च़, छ़, ज़, झ़' की विशिष्ट ध्वनियां, 'ओ' और 'औ' के बीच की ध्वनि, 'ह' और 'ह्' के बीच की ध्वनि है। 'से' और 'सेह्' के बीच 'सः' जैसी ध्वनियां भी इन बोलियों में मिलती हैं जिनसे उच्चारण के अनुरूप सही शब्द लिख पाने में कठिनाई आती है।

परंपरा के प्रतीक : संस्कार गीत

भारतीय परंपरा ने हमारे देश में जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार नियत किए हैं। पौराणिक ऋषियों द्वारा निर्धारित जीवन के चार आश्रमों के प्रतिपादन के साथ गृहस्थों के लिए अनेकानेक परंपराएं कायम की हैं। महाभारत में पांच प्रकार के विवाहों–ब्राह्म, क्षात्र, गांधर्व, आसुर, राक्षस का उल्लेख है तो स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन मिलता है। इसी तरह जन्म, यज्ञोपवीत जैसे संस्कारों के साथ छह ऋतुओं और बारह महीनों में कई पर्व त्योहारों का विधान है।

वैदिक परंपरा और विधि-विधान के साथ-साथ लोक परंपरा की धारा भी बहती है। समय के अनंतर लोकाचार का महत्त्व बढ़ता गया और यह वैदिक कर्मकांड के साथ-साथ समान रूप से चलने लगा। वैदिक ऋचाओं की भांति लोक परंपरा भी श्रुत और स्मृत रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही। वैदिक साहित्य तो बाद में लिखित रूप में भी उपलब्ध हुआ किंतु लोक परंपरा मंत्र की तरह एक से दूसरे को स्वतः ही स्थानांतरित होती रही। एक ओर तो पुरोहित वर्ग कर्मकांड के माध्यम से वेद का निर्वाह करते रहे तो दूसरी ओर साधारण जन लोकाचार के माध्यम से आगे बढ़ते रहे। जो मंत्र कभी सब लोगों द्वारा बोले जाते थे, समय के अनंतर वे कुल पुरोहित द्वारा बोले जाने लगे। कर्मकांड का अधिष्ठाता मात्र क्रिया करने वाला ही रह गया। ऐसे समय लोक धारा ने अपना बल दिखाया और लौकिक परंपरा के माध्यम से अपनी आम भाषा में इन परंपराओं को गीतों की लड़ी में पिरोया।

लोकाचार में लोकगीतों की प्रमुख भूमिका बनी। लोकगीतों के माध्यम से ही संस्कृति की झलक मिलने लगी। जहां लोक कवि ने सरल और सहज होकर काव्य रचना की, वहां वह गीत कालजयी हो गया। भावात्मकता, सरलता, गेयता की विशिष्टताओं के साथ लोकगीत निश्छल भाव से संस्कृति का उद्घाटन करते रहे।

बहुत सी परंपराएं अब समाप्त हो गई हैं। दीवाली, दशहरा, होली के

स्वरूप आज बदल चुके हैं। होली में कसमल की टहनियों को छीलकर घर में बनाएं रंग लगाए जाते थे। पुराने समय में दीवाली पर पटाखे नहीं चलाए जाते थे। उस समय पटाखा नाम की कोई चीज़ नहीं होती थी। कांगड़ा क्षेत्र में दीवाली की रात बच्चे घरों से दूर ऊंची रिह्डी पर 'ध्यो' जगाते थे। सूखी घास, मक्की के सूखे डंठल, भांग के सूखे रेशे, चील के जूगणूं लेकर उन्हें जलाया जाता और हाथ में पकड़ बांह को गोलाकार घुमाया जाता। इसे 'ध्यो सलाणा' कहा जाता। ध्यो घुमाते हुए बच्चे गांव के बड़े-बुजुर्गों को नाम ले-लेकर गालियां देते–

ध्यो द्यालि़ए ध्यो!
उआर...पार
परलियां रे जबरे दी जंघ फूकणी।

मंडी के भीतरी सिराज व पांगणा के क्षेत्र में इस मशाल को 'घूरशू' कहा जाता। भांग के सूखे रेशे, मक्की के सूखे डंठलों से मशालें बनाकर वृत्ताकार घुमाया जाता और गाते हुए गालियां दी जातीं–

ओआर सानणा पार ममेल
किसनूं रे जम्मे क्वाघी रंडेल
दयाउड़ी करो दयाउड़ियो
दयाउड़ी करो दयाउड़ियो।

यहां दयाली़ को दयाउड़ी कहा जाता–

दयाउड़ी करो दयाउड़ियो!

बालक के जन्म, नामकरण, यज्ञोपवीत संस्कार आदि के बाद विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों का अपना अलग महत्त्व है। यह गीत विवाह की एक-एक रस्म को प्रदर्शित करते हैं। हर रस्म का एक गीत है जो इस पूरे संस्कार को क्रमबद्ध तरीके से अपने ढंग से आगे बढ़ाता है। विवाह संस्कार एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है, अत: इसे विस्तृत ढंग से मनाया जाता है। इसमें रवार, कुड़माई, टिक्का, तमोल, बुटणा, सिरगुंदी, सांद आदि से लेकर सेहराबंदी, मिलणी, तेल तलाई, लग्न, विदाई ऐसी कई रस्में हैं जो निभाई जाती हैं। हर रस्म के साथ लोकगीत जुड़े हैं।

विवाह गीत जिस सांस्कृतिक धरोहर को समोए हुए हैं, वह इन्हें किसी एक भौगोलिक सीमा में नहीं बांधती। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। किन्हीं

अनजान कवियों ने पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और लौकिक संदर्भ लेकर इन्हें समाज के परिप्रेक्ष्य में ढाला है। सीता-राम, राधा-कृष्ण, रुक्मिणी-कृष्ण, लक्ष्मी-विष्णु, शिव-पार्वती, पांडव-द्रौपदी और सती सावित्री, तुलसी आदि की गाथाओं का स्मरण कर अपने विवाह गीतों में नायक-नायिका को उनसे जोड़ा है। इनमें एक धार्मिक भाव भी रहता है और आदर्श का भाव भी।

विवाह गीत लगभग पूरे प्रदेश में मात्र थोड़ी बोली की भिन्नता के साथ एक समान प्रचलित हैं। किंतु कांगड़ा के गीत अपनी एक विशिष्टता लिए हुए हैं। यहां एक ओर वैदिक और लौकिक अनुष्ठान चलते हैं तो दूसरी ओर महिलाएं उसी के अनुरूप अपने भाव लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त करती हैं।

विवाह उत्सव उल्लास और सौभाग्य का उत्सव है। विवाह के अवसर पर तीन तरह के लोकगीत प्रमुख हैं जो ध्यान आकर्षित करते हैं—सुहाग, बधोआ और गालियां।

'सुहाग' सौभाग्य का ही दूसरा रूप है। यह मंगल सूचक है। इन गीतों में मंथर गति से स्वरों का आरोह-अवरोह होता है। प्राय: इन्हें सयाणी महिलाओं द्वारा गाया जाता है। गायन में गंभीर मंत्रोच्चारण की तरह पौराणिक प्रसंग याद किए जाते हैं। ये गीत हंसी-खुशी के वातावरण को एक गंभीरता प्रदान करते हैं। एक सुहाग गीत 'राम राम हृदयें बसया, जीवन जन्म सुधारेया' के साथ आरंभ होकर राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी के विवाह का प्रसंग आता है। इस प्रसंग से अधिक हृदयग्राही है इसे वर्तमान संदर्भ से जोड़ना। जब कृष्ण रुक्मिणी को रथ पर बिठाकर ले जाते हैं, उस समय माता-पिता, भाई-भावज के संवाद हृदयग्राही हैं। मां बेटी को निरंतर मायके आने का न्यौता देती है तो पिता महीने में कभी एक बार। भाई कहता है कभी त्योहार को ही आना तो भावज कहती है अब आने की क्या आवश्यकता है!

इसी तरह एक अन्य सुहाग में लड़की के जन्म, बड़ा होने, वर की तलाश में पिता के जाने और विवाह के प्रसंग का वर्णन आता है। सुंदर वर ढूंढ़ने के प्रसंग में पुन: कृष्ण-रुक्मिणी विवाह का प्रसंग आता है।

'बधोआ' बधाई गीत है। मंगल संस्कार के समय बधाई यह गीत गाकर दी जाती है। इस गीत का व्यक्तिपरक संज्ञा देकर संबोधित किया जाता है कि हे बधाई गीत! तू किस देश से आया है। बधाई गीत कहता है, मैंने देस-विदेस सब छोड़ा है, मैं नगरकोट से आया हूं। गीत को संबोधित किया जाता है कि

हमने घर का मार्ग साफ करवा दिया है, आंगन लीप दिया है, इसलिए तू हमारे घर आया है। यह हमारे लिए शुभ घड़ी है।

विवाह के इंद्रधनुषी रंगों में गालियों का अपना महत्त्व है। अवसर की अनुकूलता और प्रतिकूलता को देखते हुए बिहारी ने भी अपनी कविता में वर्णन किया है कि किस प्रकार अवसर के अनुकूल गाली के बोल भी भले लगते हैं। विवाह में बारात के आगमन से विदा होने तक गालियों का दौर चलता है। बारात के आगमन से पूर्व ही महिलाएं ऊपरी मंजिल की खिड़कियों में अपनी पोजीशन ले लेती हैं और बारात के बैठने, हाथ-पैर धोने, पत्तल बिछाने, दाल-भात परोसने, खाना खाने, खाकर उठने, सभी क्रियाकलापों के समय गालियों की बौछारें की जाती हैं। इनमें बारातियों और उनके संबंधियों की अच्छी खबर ली जाती है। जो अधिक खा रहा हो वह भी और जो सलीके से थोड़ा खा रहा हो वह भी गालियों से बच नहीं सकता।

विवाह उत्सव का प्रारंभ ही गायन से होता है। समूहत, सांद, बुटणा, सिर गुंदणी, विदाई सब के साथ गायन आवश्यक है। वधू प्रवेश, कामदेव पूजन, पीपल पूजन, जल पूजन आदि कई परंपराएं हैं जो गानों के साथ निभाई जाती हैं। गानों से ही पता चलता है कि अब विवाह की फलां परंपरा निभाई ज़ा रही है।

विवाह के अवसर पर चाहे चुलबुल करती गालियां हों या हृदयग्राही विदाई, चाहे चुहलबाजी का झमाकड़ा हो या सुहाग जैसे धीर-गंभीर गीत, ये सभी उस सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं जो लोक परंपरा के रूप में सदियों से समाज का प्रतिबिंब होकर चली आ रही हैं। ये मानस की उन कोमल अनुभूतियों के प्रतीक भी हैं जो हमें सामाजिक बंधनों में बांधे हुए हैं और हमारे जीवन को संस्कारमय बनाते हैं।

संस्कार गीतों के अतिरिक्त कांगड़ा में ऋतु गीत भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। हर ऋतु, हर मास का गीत है। बारहमासा या बारामासा भी प्रसिद्ध है। ये गीत पति या प्रेमी के साथ जुड़कर शृंगार की पराकाष्ठा को पहुंचते हैं। प्रेम गीतों की अपनी अलग पहचान है। इन गीतों के अर्थ गूढ़ हैं। पति के राजा की नौकरी में जाने के फलस्वरूप विरहिणी नायिका का वर्णन ऐसे गीतों की विशेषता है। राजा और गद्दण या धोबण के प्रेम की गाथाएं भी हृदयग्राही हैं।

जो गीत गायें चराते या भेड़ें चराते हुए गाए जाते हैं, उनमें लोक की आत्मा बोलती है। ऐसे गीत बच्चे-बच्चे की जुबान पर होते हैं। इन गीतों में

भी लोक कवियों ने गहरे भाव भरे हैं। ऐसे गीतों को गाने के लिए किसी साज-बाज की आवश्यकता भी नहीं। बहुत से लोकगीत गहरी संवेदना के साथ मर्मस्पर्शी चोट करते हैं।

कुछ गीत ऐसे हैं जो केवल मस्ती के लिए ही गाए जाते हैं। उनमें धुन का महत्त्व रहता है। केवल एक-दो बोल ही गीत में बार-बार दोहराए जाते हैं। हां, कभी-कभी इनमें कुछ मनचले अपने टप्पे जोड़ देते हैं। ऐसा ही एक गीत है–'पाणी री टांकी ओ भाईरामा! पाणी री टांकी हो। बेगमू बांकी ओ भाईरामा! बेगमू बांकी हो।' शादी-ब्याह में इन दो पंक्तियों पर ही देर तक नृत्य चलता रहता है।

जीवन की आशा-निराशा, मिलन-विरह, सुख-दुःख, खुशी-ग़मी; सभी भाव लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत होते हैं। हास्य, शृंगार, करुण आदि जितने भी रस हो सकते हैं, लोकगीतों में समाए रहते हैं। वर्षों पुरानी संस्कृति को ये गीत सहज भाव से उद्घाटित करते हैं। मानव समाज की भौगोलिक-ऐतिहासिक, पौराणिक-धार्मिक, नैतिक-आर्थिक, आध्यात्मिक-सामाजिक सभी प्रकार की प्रवृत्तियां लोकगीतों के माध्यम से स्पष्ट होती हैं।

लोकगीतों का अपार भंडार है। इसके संग्रहण के लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता है। बहुत से गीतों के बोल और तर्ज बदल गए हैं या बदल दिए गए हैं। पुराने तर्जों पर नए गीत बन गए हैं। पुराने गीतों को नए तर्जों में गाया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश में बहुआयामी और बहुविध संस्कृति के दर्शन होते हैं। प्रदेश का प्रत्येक अंचल संस्कृति में एक-दूसरे से भिन्न है। शिमला, कुल्लू के गीत व नृत्य कुछ-कुछ मिलते हैं किंतु वेशभूषा एकदम अलग है। उधर सिरमौर का गायन व नृत्य एक अलग ही तान और लय लिए हुए है। इसी तरह कांगड़ा और चंबा साथ-साथ होते हुए भी गीत-संगीत में अलग हैं। चंबा के जनजातीय क्षेत्र भरमौर की लय बिलकुल अलग है। प्रदेश में बारह जिले हैं जिनमें लोक-संगीत व गायन अलग-अलग देखा जा सकता है। जिला कांगड़ा 1 नवंबर, 1966 से पहले सबसे बड़ा जिला था जिसमें लाहौल स्पिति से लेकर ऊना तक का क्षेत्र आता था। पंजाब के पुनर्गठन पर लाहौल स्पिति, कुल्लू, हमीरपुर और ऊना अलग जिले बने। हमीरपुर और ऊना की संस्कृति कांगड़ा की भांति है यद्यपि ऊना में बोली में अंतर आ जाता है। दो जनजातीय जिलों किन्नौर तथा लाहौल स्पिति की भाषा भोटी भाषा है जो तिब्बती से

मिलती-जुलती है। यहां का गीत-संगीत अलग है। तीसरा जनजातीय क्षेत्र चंबा का भरमौर व पांगी है जो भाषायी समानता के कारण पूरे प्रदेश से मिलता-जुलता है।

लोकगीतों में लोक की आत्मा बसती है। आत्मा बोलती है। गीत समाज की एक तसवीर सामने लाते हैं। ग्रामीणों के दिलों की धड़कन होते हैं लोकगीत जो कभी साज-बाज के साथ, कभी नृत्य के साथ तो कभी अकेले में ही जीवन में नया संचार करते हैं, नए प्राण फूंकते हैं।

यद्यपि आज भी नए-नए गीतों का निर्माण स्वत: हो रहा है तथापि समय के बदलाव से एक प्रदूषण आ रहा है। पहले कैसेट, ऑडियो-वीडियो सी. डी. और अब पेन-ड्राइव ने एक नया माध्यम तो दिया है, प्रचार-प्रसार भी हुआ है। इससे लोकगीतों के प्रति एक लगाव भी हुआ है। किंतु आज लोक में जो मिलावट या प्रदूषण आ रहा है, वह चिंता का विषय है। ठेठ और पुराने गीतों के जानकार बहुत कम रह गए हैं। आधुनिकता की दौड़ में पहाड़ी गानों को फिल्मी गानों के साथ रिमिक्स किया जा रहा है। आधा लोकगीत और आधा फिल्मी गीत गाकर इससे छेड़छाड़ की जा रही है। यही हाल गीतों के लोकसंगीत पक्ष का भी है, लोकनृत्य का भी है।

ऐसे में ठेठ व पुरातन लोकगीतों के संग्रह की नितांत आवश्यकता है। जो जानकार अभी शेष हैं, उनसे यह ज्ञान लेकर इसे लिपिबद्ध करने के साथ स्वरलिपि बनाने की भी आवश्यकता है अन्यथा इस निधि को खो देने का भय निरंतर बना हुआ है।

लोक में राम और रामायण

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रचलित पहाड़ी लोक रामायण में ऐसे अद्‌भुत प्रसंग हैं जो मूल रामायण या रामचरितमानस में नहीं मिलते। यही इस लोक रामायण की महत्ता है। लोक कवियों ने अपने-अपने ढंग से रामकथा का बखान किया है। वे रामचरितमानस के घटनाक्रम, पात्रों, संवादों से अलग एक रामायण की रचना करते हैं जो लोक के अनुकूल तथा लोक के करीब है। कुल्लू, महासू, किन्नौर, चंबा, सिरमौर, कांगड़ा आदि सभी क्षेत्रों में यह लोक रामायण अपने-अपने ढंग से बखानी जाती है।

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा 'पहाड़ी लोक रामायण' नाम से पुस्तक भी प्रकाशित की गई है।

'सिया राम मय सब जग जानी' की उक्ति इस प्रदेश में बिलकुल सटीक बैठती है। बेशक यहां हजारों की संख्या में देवी-देवता हों, लोक या ग्राम देवताओं में कितनी ही आस्था हो, राम सब में समाए हैं। अंततः लोग राम का स्मरण करते हैं।

तुलसीदास ही ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने राम को जन-जन तक पहुंचाया। तुलसीदास ने राम को लोक का नायक बना दिया और सभी जन राम-राम मंत्र का जाप करने लगे। हमारे प्रदेश में भी रामकथा का गायन घर-घर होने लगा और सर्दियों की लंबी रातों में रामकथा का गायन सुनने आसपास के लोग किसी एक घर में इकट्ठा हो जाते। राम नाम की महिमा ने कई लोगों को सहारा दिया और राम शब्द कइयों का संबल बना। रामचरितमानस का पवित्र ग्रंथ घर में रखना एक धार्मिक और पवित्र कृत्य माना जाने लगा।

पंजाब की सीमा से लगते जिला ऊना के एक गीत में सब कुछ राममय होने का सुंदर वर्णन है। गीत में सीता कहती है–

हम बी राम तुम बी राम, चलते राम फिरते राम।
अंदर राम बाहर राम, चक्की राम चूल्हा राम।
राम सुआरे सब के काज, जप लै श्रीराम राम।।

कांगड़ा के एक गीत में उल्लेख है–

राम राम ह्दयें बसेया, जीवन जन्म सुधारेया।

हिमाचल प्रदेश में रामायण या रामकथा की कई विशेषताएं रही हैं। इनमें प्रमुख यह है कि यहां राम का मानवीकरण किया गया है। राम या किसी भी अन्य दैवी शक्ति को एक साधारण मानव या यूं कहें अपनी तरह देखने का एक प्रबल भाव यहां के लोक मानस में रहा है। शिव को गद्दी लोग अपनी तरह मूंछों वाला बनाते हैं। उनका शिव या धूड़ू पहाड़ी दर पहाड़ी भागता फिरता है और गौरां उसे नालों में ढूंढ़ती है–

रिढ़ियां तां रिढ़ियां धूड़ू नचंदा; नाले ता खोह्ले गौरां तोपंदी

इसी तरह उनके राम और लक्ष्मण चौसर खेलते हैं तो सिया कसीदा काढ़ती है–

राम ते लछमण चौसर खेलंदे; सिया राणी कढंदी कसीदा हो

यहां राम न तो भगवान् हैं और न ही राजपुत्र। वे साधारण मानव हैं और उसी तरह रहते हैं जैसे स्वयं गद्दी लोग रहते हैं। वही पहनते हैं, वही खाते-पीते हैं। राम को ऐसा अपनी तरह मानव समझने का भाव पूरे प्रदेश में पाया जाता है।

दूसरी प्रमुख विशेषता यह है कि महाभारत हो चाहे रामायण, लोक में उसका गायन, घटनाओं का वर्णन अपने ढंग से किया गया है। यह आवश्यक नहीं है कि जो रामायण में घटनाक्रम का वर्णन है उसका ज्यों का ज्यों वर्णन लोक में भी किया जाए। कथा में अपने पात्र भी हैं। इसी तरह रामकथाओं में अंतर भी पाया जाता है। किन्नौर में प्रचलित एक लोकगीत में भरत को बड़ा भाई बताया गया है और भरत को राजा बनने के योग्य न होने पर उसे राजा नहीं बनाया गया। कैकेयी का चरित्र भी बुरा नहीं बताया गया। कैकेयी पर दबाव डालने वाली औरत का नाम फाफा कुटोन है। किन्नौर में रामकथा का श्रवण श्रद्धा से धूप-दीप आदि जलाकर करने के निदेश दिए गए हैं। कुल्लू में कैकेयी राक्षसों की धियाण अर्थात् वंशज या बेटी है। कांगड़ा, चंबा में रामकथा को 'रमैणी' कहा जाता है। इस लोकगीत में बचपन में राम गांव में मुंडुओं अर्थात् लड़कों के साथ खिन्नू अर्थात् गेंद खेलने लगते हैं। वे गेंद को इतनी जोर से मारते हैं कि गेंद कुएं में जा गिरती है। गेंद का स्वामी राम

पर बहुत गुस्सा करता है। राम ने चमत्कार दिखाया। कुएं से एक बिल्ब का पेड़ उगा जिसकी हर शाख में गेंद लटके थे। सभी बच्चों ने एक-एक गेंद लिया और मजे से खेलने लगे।

निरमंड की ओर रामकथा में यह उल्लेख आता है कि कैकेयी ने जब भरत को राज्य और राम को वनवास मांगा तो एक शर्त रखी कि वह सोने की एक गेंद आकाश की ओर फेंकेगी। जितनी देर में गेंद वापस आएगी, दशरथ उतने समय में अपना निर्णय कागज पर लिख दें, वह उसे मान जाएगी। कैकेयी ने गेंद उछाली और उसकी बहन कोकई ने पकड़ ली और नीचे ही नहीं आने दी। राजा दशरथ ने कागज पर राम को वनवास और भरत को राजपाट लिख दिया और मुख्यद्वार पर टांग दिया। राम-लक्ष्मण ने द्वार पर यह लिखा हुआ पढ़ा और निर्णय लिया कि अब इस नगरी में अन्न खाना हमारे लिए घोर पाप है। इसी तरह का प्रसंग कांगड़ा में भी मिलता है। गीत में वर्णन है कि राजा दशरथ राम को वनवास की बात बता नहीं पाए और उन्होंने यह आदेश एक कागज पर लिखा और प्रवेशद्वार पर चिपका दिया। राम खेलने के बाद घर आए तो यह आदेश द्वार पर लिखा हुआ पढ़ा। इसे पढ़ते ही वे खुशी से वन जाने को तैयार हो गए।

लाहौल में 'घुरे' गीत में राम-लक्ष्मण को 'सोदुरू' अर्थात् सगे भाई माना गया है–

ए रामा ए लछूमाणा दुये सौदुरे भाये।
ए राणी ए सीता बरूं ए मंगाये।।

सीता हरण प्रसंग में राम मायावी हिरण को मारने में सफल हो जाते हैं। कौवा उन्हें हिरण की खाल खींचने की विधि बताता है। राम उस विधि से हिरण की खाल निकाल लेते हैं और सोने के सींग भी निकाल लेते हैं ताकि सीता को दे सकें। हिरण को मारने और खाल निकालने का यहां एक लंबा प्रसंग है जिसमें रावण का साधु वेश में डमरू बजाकर भिक्षा मांगने और अपनी जटा में बाग का फूल लगवाने की कथा है। कांगड़ा में भी राम को खाल उतारने में कठिनाई आती है। राम समझ से काम लेकर जहां खाल उतारते हैं, वहां कील लगाते जाते हैं। सिरमौर में प्रचलित गीत के अनुसार जब राम वापस कुटिया में आते हैं तो सीता को वहां न पाकर अपने भाई लक्ष्मण पर संदेह करते हैं। लक्ष्मण शाम को खाना पकाने के लिए आग जलाने लगते

हैं तो चूल्हे में केवल एक लकड़ी लगाकर ही फूंक मार जलाने का प्रयास करते हैं। राम इस प्रयास को व्यर्थ बताते हैं तो लक्ष्मण कहते हैं कि जिस तरह एक लकड़ी से आग नहीं जल सकती, उसी तरह एक अकेला भाई भी कुछ नहीं कर सकता।

इस तरह अनेक प्रसंग हैं जो रामकथा में अपने ढंग से बखाने गए हैं और उनमें लोक में व्याप्त देशकाल को ध्यान में रखा गया है। राम तथा अन्य पात्र अयोध्या के नहीं, बल्कि उसी क्षेत्र के लगते हैं जहां कथा का गायन किया जा रहा है। उसकी वेशभूषा, हाव-भाव, रहन-सहन, बोल-चाल तथा क्रियाकलाप सब उसी क्षेत्र के होते हैं।

राम या रामकथा की एक अन्य विशेषता यह है कि लोकगीत या कथा किसी भी देवता की हो, उसमें अंत में 'राम' अवश्य आता है। सभी संस्कार गीतों में बार-बार राम का उच्चारण किया जाता है। और नहीं तो गीत के बोल का अंत राम से किया जाता है यथा एक विवाह गीत–

चार चकूंटे फिरी आया, वर नजरी नी आया राम
चार चकूंटे च साधु तपस्वी, बैठी धूणियां लगाइयां राम।

यदि कृष्णगीत गाया जा रहा है तो उसका अंत भी 'राम' से किया जाता है–

संझां जे होईयां संझैला जे होईयां, कृष्ण घरे नहीं आया राम।

या एक पंक्ति के साथ 'श्याम' लगाया जाता है तो दूसरी के साथ 'राम'।

प्रदेश में रामकथा के कई रूपांतर प्रचलित हैं। 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' उक्ति यहां साकार रूप में देखने को मिलती है। जहां बालक के जन्म से संबंधित अधिकांश गीत कृष्ण से जुड़े हैं, वहां किन्हीं गीतों में राम का भी उल्लेख मिलता है। बिलासपुर का एक लोकगीत देखिए–

चैत्र महीने वानणियां रातीं, अवधपुरी जन्मेया राम जी
काहे का तेरा पीह्ड़ा पलंघूड़ा, काहे री तेरी बणी ओ कटोरी
काहे की गुड़ सत्त घोली, मेरे राम जी... चैत्र महीने...।

कई लोकगीत, कई लोकगाथाएं यहां प्रचलित हैं जो रामकथा को प्रदर्शित करती हैं। रामचरितमानस के अतिरिक्त इन कथाओं में रामकथा अपने-अपने ढंग से बखानी गई है।

लोअर महासू, सोलन आदि के क्षेत्र में रामायण का गायन किया जाता है जिसे बरलाज कहते हैं। इसमें सीता हरण के तीन प्रकरण–रमैण, रथौल और छोकड़ा सुनाए जाते हैं।

रमैण

एबे भाया रामा लखणा, नठे जाओ जंगला ओ
पंजबटीए डेरा बे जमाओ, दशुओ खे
होए लंका खबरो
सिया रहि रे जंगलो दे आए।
एबे भाया सुईनुआ, मेरेया भाइया ओमे
मेरे संगे जंगलो खे चाले, सिया देओते
आए रौहे बणो दे ओ
म्हारे ए नारी लंका के ल आणे।

रथौल

राम देखो जंगले चला आओ
भले जी।
आगे आगे मिरग भागो
भले जी।
न देख डेरे दा जती बैठा होला
भले जी।
न देख सुइनु था अरज करो तो क्या बोलूं
बोलो भला जी।

छोकड़ा

बोले राणिए रोचना दे हाया
खिभाकी भईयो रे जाओ
रावणे दा गरड़ौ रे मिला
जुध बे गरड़ै रे कीयां
जुधो दा गरड़ौ रे हारो
रथ बे काशो दे लाया
सिया दे लंका पझाई

बागो रे सीतला रे राखे
देओते हाटे रा आए।

यहां सीता हरण के संक्षिप्त प्रसंग अलग-अलग बोलियों में दिए जा रहे हैं।

राम ते लछमण चले बन में, सीता को छोड़ महलों में
मंगदा जे मंगदा जोगी जे आया, जोगी ने अलख जगाया।
उच्चे महलां ते गोली जे उतरे, मोतिएं थाल़ लई खड़ी
तेरेआं हथां री गोली भिछया न लेओआं,
सीता देओए तां लेआंआं।
महलां ते सीता जे निकली बाह्र, चानण चौकी ढलाई
चौकिया सीता ने पैर जे धरेया, बांह मरोड़ी रावण लै गया।

(बिलासपुरी)

यहां सीता को वन न ले जाकर महलों में छोड़ा हुआ है जहां रावण हर लेता है।

दस रावण चोरी जो आया हो
तिनी जोगी रा भेस बणाया हो।
राजे इक दंत साथी लियोरा हो
तिनी दंते रा हरण बणाया हो
सेइयो सीता रे अग्गे जो आया हो। (चंबयाल़ी)

फुलवाड़ी वालीए सीता बोल कीर फकीर जो
कुटिया देखी तेरे बाल आया
भोजन दे दे माता।
जां मैं जंगलां दे बिच आया
भोजन जो तरसाया।
जां मैं जंगलां दे बिच आया, नंगा तरसाया
कपड़ा देई दे ओ माता।
जां मैं जंगलां दे बिच आया, प्यासा तरसाया
पाणी पिलाईदे भोजन खिलाई दे
माता तेरी कुटिया देखी तरसाया। (मंडयाल़ी)

पत्थर गिट्टा जोड़ी बो रामे कुटिया बणाई
चनणे दी लकड़ी लगाई बो रामा ऐ।

कुटए दें कंढैं कंढैं रामे बाग लुआए
फुल्लां दे लगाए बगीचे बो रामा ऐ।
इक दिन क्या हुंदा म्हाराज!
इक दिन राम त लच्छमण चौपड़ बाजी खेलदे
सीता राणी कढदी कसीदा मेरे रामा ए।
चौपड़ी बाजी खेलदेंआं जो लगिया प्यासा
कुण बो पियाए ठंडा नीर मेरे रामा ऐ। (कांगड़ी)

जूणजा लाऔला साधटा मेरे दाहिनी गूंठी हाथौ बै
तेरी लागू साखौरी आंव बौहिनी री बेबी बै
केंही डबूए थै तेरै रामणै मिरगौ रै हेड़े राणिए
संगी चालै लांके खि न्हींऊ आपणै तां बेड़ै राणिए
बौचणौ बौणे रे मिरगो भौलै राजै खि बोले देणै म्हारे
बुगचा जेआ थागियौ सातौ नींआ समुंद्रौ पारौ। (महासूवी)

मिरग नी होला मेरीए सीते
छली सा ए लंका रा रावण सीते।
लछमणा तौबे बोला सा हाऊं कुलछणा
रामा बे पोई मुसीबत
तू बेठदा भावी रे लाले।
राम गया था हेड़ा बे
सो पुहता ढौग ढंगाले
तेरे तीर कमान कीझी बे हुए
हाऊं सा पाए पीर निहासे। (कुल्लूवी)

सीता हनुमान संवाद (महासूवी)

सीतला राणिए भूखड़ी लागी, बाग रे राणिए आज्ञा देंदे
बुरे ओ भाईया लंके रे हेड़े, बुरे ओ भाईया लंका रे हेड़े
देवले मेरेया जानीएं घाए, देवले मेरिए जानीएं घाए
भाड़े पौड़े फलिक खामां, शड़े पौड़े फलिक खामां
बाड़िए तेरी हाथ नी लामा, बाड़िए तेरी हाथ नी लामा।

हिमाचल प्रदेश : संक्षिप्त परिचय

इतिहासकार और भू-वैज्ञानिक मानते हैं कि हिमालय और आदि मानव एक साथ अस्तित्व में आए। नालागढ़ की शिवालिक घाटियों से प्राप्त मानव फॉसिल्ज, गोल पत्थर के औजार इस क्षेत्र में पाषाण युग के आदि मानव होने की पुष्टि करते हैं। ऐसे ही फॉसिल्ज, बिलासपुर के हरितल्यांगर में मिले हैं। जिला सिरमौर की मारकंड घाटी, कुल्लू की व्यास घाटी, कांगड़ा की व्यास और बाणगंगा घाटियां, हरिपुर-गुलेर, देहरा जैसे स्थानों में पत्थर के औजार प्राप्त हुए हैं। कांगड़ा, गुलेर, देहरा, ढलियारा से ऐसे औजारों के बेहतर नमूने प्राप्त हुए। पुरातत्त्व विभाग द्वारा रावी घाटी में कठुआ के पास उत्तर पाषाण काल के स्थल ढूंढ़े गए हैं।

पाषाण युग के बाद रोपड़ में ताम्रयुग के पहले के प्रमाण पाए गए हैं। रोपड़, मोहनजोदड़ो, स्यालकोट, चंडीगढ़ आदि स्थानों की खुदाई में निषाद, मंगोल, किरात, पर्वतीय प्रदेशों के वासी लोगों के अस्थिपंजर मिले हैं। ये लोग दास, असुर, पिशाच, राक्षस, किन्नर, किरात रहे होंगे। सिंधु घाटी की सभ्यता के समय हिमाचल में कोल, किरात, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, दास, असुर, राक्षस, पिशाच जैसी जातियों के होने का अनुमान लगाया जाता है। सिंधु घाटी में देवदार की लकड़ी का प्रयोग वहां की सभ्यता से पर्वतीय संस्कृति का संपर्क सिद्ध करता है।

ऋग्वेद में शतद्रु (सतलुज), परूष्णी (रावी), असिकनी (चंद्रभागा), आर्जीकिया या विपाशा (व्यास) जैसी नदियों का गंगा, जमुना, सरस्वती के साथ स्मरण किया गया है। हिमाचल में यक्ष, गंधर्व, किन्नर, दानव, असुर, पिशाच, दास, दस्यु जैसी अनार्य जातियों व जनपदों का उल्लेख हुआ है। आर्यों ने अपने इन प्रतिद्वंद्वियों को दास कहकर पुकारा। पर्वतीय क्षेत्र के राजा इंद्र ने शंबर तथा दिवोदास युद्ध में दिवोदास को विजय दिलाई। शंबर यहां का शक्तिशाली शासक था। जिसका राज्य रावी, व्यास और सतलुज के बीच था इसके सौ मजबूत दुर्ग थे। चालीस वर्षों के युद्ध में दिवोदास ने इन सौ दुर्गों

को ध्वस्त कर शंबर को पराजित किया। ऋग्वेद में शंबर को 'दास कोलितर राज' कहा गया है।

माना जाता है कि ऋग्वेद की रचना हिमवंत अर्थात् हिमाचल में हुई। ऋग्वेद आर्यों का प्रिय पेय सोमरस अब भी हिमाचल में 'सुर' के नाम से जाना जाता है जो कई प्रकार की जड़ी-बूटियों से तैयार किया जाता है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत का स्वर्णयुग गुप्तकाल का उदय हुआ। चंद्रगुप्त के बाद लगभग 340 ई. में समुद्रगुप्त ने राज्यों व जनपदों का एकीकरण किया। समुद्रगुप्त ने त्रिगर्त, औदुंबर, कुल्लूत आदि को जीतकर अपने अधीन कर लिया। कुमारगुप्त प्रथम (425-455) के समय हूणों के आक्रमण आरंभ हुए। कुमारगुप्त के बाद स्कंदगुप्त ने हूणों को रोके रखा किंतु बाद में गुप्त शासन कमजोर हो गया। इसी बीच 525 ई. के लगभग हूणों के तोरमान के पुत्र मिहिरकुल ने आक्रमण कर दिया। मिहिरकुल हारने के बाद कश्मीर की ओर भागा। संभवतः कश्मीर तथा हिमाचल का बहुत सा भाग मिहिरकुल के अधीन था। हूणों के साथ-साथ गुज्जर भी आए जो पंजाब, सिंध तथा हिमालय में बसे।

इन आक्रमणों के फलस्वरूप गुप्त साम्राज्य का पतन और हिमालय में प्राचीन जनपदों के स्थान पर मैदानों से आए क्षत्रिय राजाओं ने छोटे-छोटे राज्य स्थापित किए।

कुल्लूत में मायापुरी के राजकुमार विहंगमणिपाल से पाल वंश, चंबा के ब्रह्मपुर में मेरुवर्मन से वर्मन वंश, बुशहर में प्रद्युम्न से चंद्रवंश, स्पिति में सेन वंश, कांगड़ा में कटोच वंश का शासन आरंभ हुआ।

हर्षवर्धन (606-647) के समय चीनी यात्री व्हेनसांग ने कुल्लूत, ब्रह्मपुर, जालंधर (त्रिगर्त) का उल्लेख किया। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद हिमाचल में और नए राज्य स्थापित हुए। मंडी तथा सुकेत में भी राज्य स्थापित हुए। 900 ई. के लगभग बुंदेलखंड के राजकुमार वीरचंद ने बिलासपुर राज्य बनाया। 920 ई. में साहिलवर्मन ने चंबा राजधानी बनाई। इस प्रकार 600 से 1000 ई. के बीच राजपूत काल में राजा, राणा और ठाकुरों का शासन रहा। आपसी संघर्ष के बावजूद मसरूर में शैल मंदिर, मणिमहेश मंदिर भरमौर, त्रिलोकीनाथ, शिव मंदिर बैजनाथ, विश्वेश्वर महादेव बजौरा, महिषासुरमर्दिणी हाटकोटी, शिव मंदिर बलग जैसे मंदिरों का निर्माण हुआ।

ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी ने नगरकोट कांगड़ा पर धावा बोला।

1070 ई. में गजनी के सुलतान इब्राहिम ने जालंधर पर अपना अधिकार कर लिया, जिससे त्रिगर्त शासकों का जालंधर पर अधिकार समाप्त हो गया।

महमूद गौरी-पृथ्वीराज चौहान युद्ध (1192 ई.) में त्रिगर्त के शासक ने चौहान का साथ दिया। भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना पर चंदेल, चौहान, तोमर, सेन, राठौर, परमार, तनवारी, पंवार आदि राजपूत तथा ब्राह्मण और वणिक लोग हिमाचल में आए।

ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में नूरपूर, कुटलैहड़, जसवां, कुमारसेन, नालागढ़, कुनिहार, भंगाहल जैसे नए राज्य बने। सिरमौर में युवराज कर्मचंद ने अलग राज्य बनाया। भंगाहल के वीरसेन ने सुकेत में सेन वंश की नींव रखी। वीरसेन के छोटे भाई गिरिसेन ने जुणगा में क्योंथल राजधानी बनाई। 1210 ई. में सिरमौर के राजा माल्ही प्रकाश ने अपना राज्य बनाया।

तुगलक वंश (1390-1441), लोधी वंश (1415-1526) आदि मुस्लिमों के आक्रमणों का अधिकांश प्रभाव कांगड़ा, नुरपूर, पठानकोट, नालागढ़, चंबा, सिरमौर आदि राज्यों पर ही पड़ा। अन्य राज्य और ठाकुराइयां, जैसे-कुल्लू, लाहुल-स्पिति, मंडी-सुकेत, जुब्बल, क्योंथल, बुशहर, बाघल, बघाट आपसी बैर-विरोध में व्यस्त रहे।

पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में हरिपुर, गुलेर, सीबा, दतारपुर, शांगरी, थरोच छोटे-छोटे राज्य बने। राजा अजबर सेन ने 1527 ई. में मंडी राज्य की स्थापना कर मंडी शहर को राजधानी बनाया।

सम्राट् अकबर ने पहाड़ी राज्यों के मिलाने हेतु आक्रमण किए और नजराना वसूल किया। कांगड़ा किला, जिसे अकबर नहीं जीत सका था, जहांगीर ने इसे जीतने का अभियान 1615 ई. में छेड़ा। अब तक इन किले पर 52 आक्रमण हो चुके थे। मुगल सेना तीन बार आक्रमण कर हार गई। उस समय कांगड़ा का शासक हरीचंद नाबालिग था, अतः राजमाता के भाई ने चंबा से आकर सेना का नेतृत्व किया। चौथी बार मुगल सेना ने चौदह महीने तक घेरा डाले रखा। सैनिक घास खाने को विवश हुए। अंततः नवंबर, 1620 में कटोच सेना ने आत्मसमर्पण किया। इसके बाद नवाब अली खान प्रथम गवर्नर बना और कांगड़ा मुगलों के अधीन हुआ।

सत्रहवीं शताब्दी में ठियोग, मधान, अर्की, कोटी, घूंड, रतेश छोटी-छोटी रियासतें बनीं। इस ओर बुशहर के राजा केहरी सिंह (1639-1696) ने राज्य-विस्तार किया। ठियोग, कोटखाई, हाटकोटी, शांगटी आदि को अपने

अधीन किया। ल्हासा के साथ समझौता हुआ।

मुगलों की शक्ति क्षीण होने पर कांगड़ा के राजा संसारचंद ने 1782 ई. में सिखों की कन्हैया मिसिल के जयसिंह की सहायता से बूढ़े मुगल गवर्नर नवाब सैफअली खान को आत्मसमर्पण पर विवश किया। किंतु जयसिंह ने छल से किला अपने अधिकार में कर लिया। सिख मिसल की पंजाब में हार के समय 1786 में जयसिंह को कांगड़ा किला छोड़ना पड़ा और अंततः कांगड़ा किला कटोच वंश के शासक संसारचंद के हाथ आ गया। संसारचंद ने नदौन को राजधानी बनाकर मंडी, सुकेत, कुल्लू, बिलासपुर, चंबा को अपने अधीन कर लिया। 1804 ई. में पहाड़ी राजाओं ने नेपाल के अमरसिंह थापा को निमंत्रण दिया। 1806 में उसने महल मोरियां में संसारचंद को हरा दिया। पहाड़ी राजाओं की सहायता से अमरसिंह ने कांगड़ा दुर्ग भी घेर लिया। संसारचंद को सिखों से सहायता लेनी पड़ी। रणजीत सिंह ने गोरखों को हराकर संसारचंद से 1809 में कांगड़ा दुर्ग ले लिया। इस घटना के साथ पहाड़ी राज्य सिख शासन के अधीन हो गए।

सिख-अंग्रेज युद्ध में पहाड़ी राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया। मार्च, 1846 की संधि के तहत पहाड़ी रियासतें अंग्रेजों के अधीन हो गईं। मंडी, सुकेत, चंबा के राजाओं को शिमला क्षेत्र के राजाओं की तरह राज्य लौटाकर आंतरिक स्वायत्तता दी गई। लाहौल स्पिति, कुल्लू, कांगड़ा, जसवां, गुलेर, नूरपुर, दतारपुर आदि राज्य छीनकर अंग्रेजी राज्य में मिला लिए गए।

1848 ई. कांगड़ा क्षेत्र के राजाओं ने मंत्रणा की। नूरपुर के वजीर रामसिंह पठानिया ने विद्रोह कर दिया। रामपुर की अंग्रेज सेना से शाहपुर दुर्ग और 'राजा के डेरा' नामक स्थान में लड़ाई हुई। रामसिंह पंजाब भाग गया। 1849 में रामसिंह पठानिया ने पुनः अंग्रेज सेना से युद्ध किया। रामसिंह पकड़ा गया और सिंगापुर जेल भेज दिया जहां उसकी मृत्यु हो गई। रामसिंह की गाथा आज भी गाई जाती है।

इसके बाद कांगड़ा कुल्लू लाहौल स्पिति को एक इकाई बनाकर डिप्टी कमिश्नर के अधीन कर दिया। मंडी, सुकेत, बिलासपुर तथा चंबा रियासतों में सिस-सतलुज स्टेट्स सुपरिंटेंडेंट नियुक्त किया। 1850 ई. में बघाट के राजा की मृत्यु होने पर उत्तराधिकारी न होने से राज्य छीन लिया गया। 1851 ई. में कांगड़ा के राजा प्रमोदचंद की अल्मोड़ा जेल में मृत्यु हो गई। कांगड़ा, नूरपुर, जतोग, डगशाई, कसौली और सपाटू में ब्रिटिश सैनिकों की छावनियां

मजबूत की गईं और 1857 तक पहाड़ी रियासतों पर मनमाने ढंग से अंग्रेजी शासन चलता रहा।

सन् 1857 की क्रांति की इस दौड़ में शिमला हिल्ज की जुब्बल, कोटगढ़, बुशहर जैसी रियासतों ने भी अंग्रेजों से विद्रोह किया और उन्हें अपमानित किया। बुशहर रियासत ने अंग्रेज सरकार को पंद्रह हजार रुपए का वार्षिक नजराना देना बंद कर दिया।

कुल्लू और लाहुल तक 1857 की क्रांति की लहर पहुंची। कुल्लू में विद्रोह की योजना राजा किशनसिंह के पुत्र युवराज प्रतापसिंह ने बनाई। प्रतापसिंह सिख-अंग्रेज लड़ाई में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए घायल हो गया था। 16 मई, 1857 को प्रतापसिंह ने कुल्लू के सिराज में विद्रोह किया। प्रतापसिंह के साथ उसका साला मियां वीरसिंह बैजनाथ का रहने वाला था। इन दोनों ने सिराज के गांवों से समर्थन लेकर हथियार इकट्ठे किए। गुप्त रूप से क्रांतिकारियों ने लाहुल तक योजनाएं बनाईं। एक क्रांतिकारी के पकड़े जाने से गुप्त पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गए। बंजार में सशस्त्र मुठभेड़ हुई, जिसमें प्रतापसिंह, वीरसिंह तथा दूसरे क्रांतिकारी पकड़े गए। इन्हें भागसू जेल (धर्मशाला) में कैद कर दिया गया। प्रतापसिंह और वीरसिंह को 3 अगस्त, 1857 को फांसी दी गई। सात क्रांतिकारियों को 3 वर्ष से 14 वर्ष तक की कैद हुई।

हिमाचल का गठन

भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हो गया किंतु हिमाचल का गठन 15 अप्रैल, 1948 को हुआ। देश को स्वतंत्र होने के बाद भी हिमाचल की प्रजा देसी रियासतों के अधीन रही, यद्यपि कई रियासतों में स्वाधीनता प्राप्ति का जश्न मनाया गया।

सर्वप्रथम प्रजामंडल ठियोग ने राणा कर्मचंद (ठियोग) को सत्ता छोड़ने पर विवश किया। यहां प्रजामंडल के नेता सूरतराम प्रकाश मुख्यमंत्री बने और देवीदास मुसाफिर कैबिनेट सेक्रेटरी। डॉ. परमार कानूनी सलाहकार हुए। ठियोग के राणा को बाद में सरदार वल्लभभाई पटेल ने केंद्र से सहायता भेज नजरबंद कर दिया। मुख्यमंत्री सूरतराम प्रकाश ने केंद्र द्वारा भेजे रीजनल कमिश्नर मित्र प्रसाद आई. सी. एस. को ठियोग का प्रशासन सौंपकर केंद्र सरकार में सम्मिलित किया। जुब्बल में डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने अपने सचिव वेंकटरमन

को भेजा, जहां राजा जुब्बल को संवैधानिक अध्यक्ष और प्रजामंडल के नेता भागमल सौहटा को मुख्यमंत्री बनाया गया।

सन् 1948 में बघाट के राजा दुर्गासिंह, मंडी के जोगेंद्रसेन, शांगरी के रघुबीरसिंह, कुनिहार के राणा हरदेवसिंह अर्की के कुंवर मोहनसिंह आदि रियासती संघ या पहाड़ी प्रांत बनाने की योजना में लग गए। 4 जनवरी, 1948 को शिमला में प्रजामंडल की एक बैठक में 'हिमाचल प्रांत' बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। 25 जनवरी को शिमला के गंज मैदान में एक विशाल सभा हुई जिसमें पुनः 'हिमाचल प्रांत' का प्रस्ताव रखा। राजाओं ने 'पहाड़ी रियासत संघ' बनाने के प्रस्ताव के साथ 26 जनवरी, 1948 को सोलन में एक बैठक बुलाई। इस बैठक में 27 पहाड़ी रियासतों के प्रजामंडल नेताओं ने भाग लिया। राजा दुर्गासिंह के दरबार हॉल में हुई इस बैठक में रियासती संघ का नाम 'हिमाचल प्रदेश' रखा गया। गृहमंत्री सरदार पटेल से सभी पहाड़ी रियासतों को इकट्ठा कर 'हिमाचल प्रदेश' बनाने का आग्रह किया गया। राजा दुर्गासिंह ने 25 पहाड़ी रियासतों को मिलाकर 'हिमाचल प्रदेश' बनाने और सत्ता छोड़ने की भी घोषणा कर दी।

अंततः विलय-पत्र में 'हिमाचल प्रदेश' क्षेत्र केंद्र के अधीन दर्ज हो गया। 8 मार्च, 1948 को शिमला हिल्ज़ की 27 पहाड़ी रियासतों के विलय से हिमाचल प्रदेश का गठन आरंभ हुआ। ये रियासतें थीं—क्योंथल, कोटी, ठियोग, मधाण, घूंड, रतेश, बुशहर, खनेटी, देलठ, बाघल, बघाट, जुब्बल, रावीं, ढाडी, कुमारसेन, भज्जी, महलोग, बलसन, धामी, कुठार, कुनिहार, अर्की, मांगल, बेजा, दरकोटी, थरोच, शांगरी। इनमें रतेश सबसे छोटी रियासत थी, जिसका क्षेत्रफल दो वर्गमील था। जनसंख्या 542 और वार्षिक आय पांच सौ रुपए।

14 मार्च, 1948 को मंडी-सुकेत के शासकों द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए गए। चंबा के शासक ने भी विलय स्वीकारा। 22 मार्च को वित्त सचिव, ई. पी. कृपलानी के सिरमौर आगमन पर दूसरे दिन 23 मार्च को सिरमौर रियासत भी हिमाचल प्रदेश में शामिल हुई। नालागढ़ (हंडूर) का विलय पंजाब में हुआ। इस प्रकार 27 रियासतों के बाद मंडी-सुकेत, चंबा, सिरमौर आदि तीस छोटी-बड़ी रियासतों के मिलने पर 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ। इन रियासतों में पंजाब हिल्ज़ स्टेट्स की दो (चंबा तथा मंडी-सुकेत) तथा शिमला हिल्ज़ स्टेट्स की अट्ठाईस रियासतें

(बिलासपुर के अतिरिक्त) शामिल हुईं। सर्वप्रथम हिमाचल प्रदेश केंद्र शासित 'चीफ कमिश्नर प्रोविंस' के रूप में अस्तित्व में आया। केंद्र की ओर से एन. सी. मेहता प्रथम चीफ कमिश्नर और ई. पी. मून डिप्टी कमिश्नर बने। शिमला में राजधानी के साथ 27,018 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में आया।

चीफ कमिश्नर के साथ स्थानीय नेता मात्र सलाहकार बने रहे। सन् 1951 में सलाहकार समिति से कांग्रेस के नेताओं ने त्यागपत्र दे दिया। चीफ कमिश्नर के विरोध में डॉ. यशवंत सिंह परमार शीर्षस्थ नेता के रूप में सामने आए। पर्याप्त संघर्ष के बाद केंद्र ने हिमाचल प्रदेश को 'पार्ट सी स्टेट' का दर्जा दिया और 1952 के प्रथम आम चुनावों के साथ यहां भी चुनाव करवाए गए। कांग्रेस पार्टी ने चारों लोकसभा सीटों के साथ 36 सदस्यों की विधानसभा में 28 सीटें जीतीं। 24 मार्च, 1952 को डॉ. यशवंत सिंह परमार प्रथम मुख्यमंत्री बने। चीफ कमिश्नर की जगह मेजर जनरल हिम्मतसिंह उपराज्यपाल बने। हिमाचल प्रदेश के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना में 5.27 करोड़ रुपए के बजट प्रावधान के साथ प्रदेश का विकास आरंभ हुआ। कोटगढ़, कोटखाई पंजाब के शिमला जिला की एक तहसील थी, जिसे 15 अप्रैल, 1950 को हिमाचल प्रदेश में मिलाया गया।

इधर अभी तक बिलासपुर के राजा आनंदचंद ने अपना स्वतंत्र राज्य बचाया हुआ था। अंततः पं. नेहरू द्वारा लोकसभा में घोषणा के फलस्वरूप 1 जुलाई, 1954 को बिलासपुर हिमाचल प्रदेश में मिलाया गया।

राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा हिमाचल को पंजाब में शामिल करने की सिफारिश की गई। इस संवैधानिक संघर्ष में हिमाचल का दर्जा 'पार्ट सी स्टेट' से घटाकर यूनियन टैरेटरी कर दिया गया। 1 नवंबर, 1956 को यहां उपराज्यपाल की तैनाती हुई। 15 अगस्त, 1957 को टेरिटोरियल कौंसिल की स्थापना हुई।

1962 के चुनाव में टेरिटोरियल कौंसिल में कांग्रेस को बहुमत मिला। 1 जुलाई, 1963 को टेरिटोरियल कौंसिल को फिर से विधानसभा में बदला गया। डॉ. यशवंत सिंह परमार दोबारा मुख्यमंत्री बने।

1 नवंबर, 1966 को केंद्र ने कांगड़ा, कुल्लू, लाहुल-स्पिति, ऊना, शिमला, नालागढ़, डलहौजी, बकलोह के पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल में मिलाकर विशाल हिमाचल का गठन किया। 1 जुलाई, 1970 को तत्कालीन

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की संसद में घोषणा के फलस्वरूप 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति हुई।

वर्तमान हिमाचल प्रदेश का क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर है। 1991 की जनगणना के अनुसार 51.7 लाख जनसंख्या वाले इस प्रदेश में बारह जिले (कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना, लाहुल-स्पिति, किन्नौर, सोलन, शिमला, सिरमौर, मंडी, बिलासपुर, चंबा, कुल्लू) हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से जिला लाहुल-स्पिति (13,835 वर्ग किलोमीटर) सबसे बड़ा और जनसंख्या की दृष्टि से जिला कांगड़ा (लगभग 11 लाख) सबसे बड़ा है। सबसे छोटा जिला हमीरपुर (1,118 वर्ग किलोमीटर) है किंतु साक्षरता से सबसे आगे (74.88 प्रतिशत)। सबसे कम जनसंख्या (31,294) लाहुल-स्पिति की है। साक्षरता में सबसे पीछे जिला चंबा (44.70 प्रतिशत) है।

2001 की जनसंख्या के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 60,77,900 थी जिनमें 54,82,319 ग्रामीण तथा 5,95,581 शहरी थी। 2011 की जनगणना के अनुसार यह जनसंख्या 68,56,509 हो गई जिसमें 34,73,892 पुरुष तथा 33,82,617 महिलाएं हैं। लाहौल स्पिति की जनसंख्या 33,224 से घटकर 31,528 रह गई जो लोगों के यहां से पलायन के कारण है। कांगड़ा की जनसंख्या अभी भी सबसे अधिक 15,07,223 है। 2001 में साक्षरता में सबसे आगे हमीरपुर (75.7 प्रतिशत) और सबसे कम चंबा (48.8 प्रतिशत) था। 2011 में साक्षरता दर बढ़कर 83.78 हो गई।

कांगड़ा के लोकगीत

ऐतिहासिक संदर्भ

नए क्षेत्रों के पुराने हिमाचल में मिलने पर यद्यपि हमीरपुर तथा ऊना जिले अलग हो गए तथापि जनसंख्या में यह सबसे बड़ा जिला बना रहा। 1 नवंबर, 1966 को कांगड़ा एक अलग जिले के रूप में अस्तित्व में आया।

पौराणिक समय में सतलुज से सिंधु तक सबसे बड़े जनपदों में कश्मीर और डुग्गर के साथ त्रिगर्त था। कांगड़ा के त्रिगर्त नाम का उल्लेख महाभारत में भी आता है। सतलुज, रावी और व्यास नदियों के मध्य की उपत्यकाओं में होने के कारण इसे त्रिगर्त कहा जाता था जिसकी राजधानी जालंधर थी। कांगड़ा के कटोचवंशीय शासकों की वंशावली को मूरक्राफ्ट ने सबसे पुरानी माना है जिसका प्रथम शासक भूमचंद्र या भूमिचंद्र था। महाभारत के समय में यहां का राजा सुशर्मा या सुशर्म चंद्र 234वां राजा माना जाता है। सर लेपेल ग्रिफिन ने भी इस वंशावली को दुनिया के किसी भी दूसरे राजवंश की अपेक्षा अधिक प्राचीन और अविच्छिन्न माना।

त्रिगर्त को ही बाद में जालंधर कहा जाने लगा। व्हेनसांग ने जालंधर को 1000 ली अर्थात् 167 मील लंबा और 800 ली अर्थात् 133 मील चौड़ा बताया है। जालंधर को जालंधर दैत्य से भी जोड़ा जाता है जिसका शरीर वध के बाद इस पूरे भूभाग में गिरा। जालंधर का सिर जिस स्थान पर गाड़ा गया, वह 'कं' अर्थात् शिर और 'गडित' गाड़ा गया जिस देश में, वह कांगड़ा कहलाया। कांगड़ा को प्रसिद्ध किले अर्थात् कोट के कारण 'नगरकोट' भी कहते थे।

ऊंचे धौलाधार के प्रांगण में फैला कांगड़ा किला पहाड़ का गौरव रहा है। आज जहां इस लंबे-चौड़े क्षेत्र से लोग मात्र घास लेने आते हैं। कभी आक्रमणकारी सोने-चांदी, हीरे-जवाहरात से लदे घोड़े, खच्चरें, ऊंट हांककर ले गए थे। इतनी लूटपाट के बाद भी यह किला खड़ा रहा और इतिहास में अपना नाम बनाए रखा।

आरंभ से लेकर 4 अप्रैल, 1905 को आए भूकंप तक इसे फौजी कैंप के रूप में प्रयोग में लाया जाता रहा। भूकंप से क्षतिग्रस्त होने के बाद यह एक सुंदर स्मारक बनकर रह गया। किले के बारे में कहावत प्रचलित थी कि जिसके पास यह किला है, उसके पास सारी पहाड़ियां हैं।

सुजानपुर टीहरा महाराजा की उपाधि से विभूषित कांगड़ा के अंतिम स्वतंत्र शासक संसारचंद की राजधानी रही।

ऊंची पहाड़ी पर स्थित महलों से नीचे चौगान और पूरा सुजानपुर दिखता है। ऊपर की जगह को टिहरा कहते हैं, इसलिए दोनों को मिलाकर पुराना नाम सुजानपुर टिहरा है। ऊपर खड़े होने पर दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों के ऊपर धौलाधार की बर्फीली चोटियां नज़र आती हैं। नीचे छोटी पहाड़ियां और समतल भूमि। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम जहां भी नज़र जाती है, महाराजा संसारचंद का राज्य है, जो वास्तव में था भी।

'हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल्ज़ स्टेट्स' में उल्लेख है कि राजा अभयचंद ने 1748 में सुजानपुर में दुर्ग बनवाए। इसके बाद घमंडचंद ने व्यास नदी के किनारे नगर बसाया और राजधानी बनाई। घमंडचंद एक शक्तिशाली और लोकप्रिय राजा था जिसने कांगड़ा किले को छोड़ लगभग सारा राज्य अपने अधिकार में कर लिया। उसने कई दुर्ग बनवाए और कलाकारों को संरक्षण दिया।

1774 में घमंडचंद की मृत्यु के बाद पुत्र तेगचंद राजा बना जिसने केवल एक वर्ष राज्य किया। इसके बाद संसारचंद 1775 में गद्दी पर बैठा। पिता की मृत्यु तथा गद्दी संभालने के समय वह केवल दस वर्ष का था।

दस वर्ष की अल्पायु में राजा बनने पर संसारचंद ने राज्य की बागडोर कुशलता से संभाली और उसने पूर्वजों द्वारा संरक्षित राज्य की रक्षा करते हुए 21 वर्ष की आयु में लगभग (1787) गौरवपूर्ण पैतृक किला 'कांगड़ा किला' जीतकर पहाड़ों का सर्वशक्तिमान राजा बनने का गौरव प्राप्त कर लिया। चंबा, मंडी, कुटलेहड़, कहलूर राज्यों को हराकर अपनी सीमाएं बढ़ाई। 1776 में बैजनाथ मंदिर की मरम्मत करवाई।

1871 में मुरली मनोहर मंदिर, 1874 में गौरीशंकर मंदिर बनवाया। कांगड़ा कलम को संरक्षण दिया और कलाकारों, कथावाचकों, शिल्पियों को प्रोत्साहन दिया। अपने सैंतालीस वर्ष के शासन में लगभग बीस वर्ष तक निष्कंटक राज्य करते हुए संसारचंद ने दूसरा अकबर, हातिम और अपने समय के रुस्तम

का खिताब पाया।

सुजानपुर टिहरा के खंडहर आज महाराजा संसारचंद के अंतिम दिनों की भांति दीनहीन दशा में खड़े हैं स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए।

1 नवंबर, 1966 को विशाल हिमाचल के गठन से पूर्व कांगड़ा लाहौल स्पिति से लेकर ऊना तक फैला था। लाहौल स्पिति तथा कुल्लू को छोड़कर वर्तमान कांगड़ा, हमीरपुर तथा ऊना की बोली एक ही है, यद्यपि ऊना तक आते-आते पंजाबी का पुट ज्यादा हो जाता है। पहले पंजाब का हिस्सा होने के कारण भी इस क्षेत्र में पंजाबी का प्रभाव रहा है। कांगड़ा की बोली को 'कांगड़ी' कहा जाता है जो कांगड़ा, हमीरपुर तथा ऊना तक फैली है।

हमीरपुर की बोली व संस्कृति कांगड़ा की ही तरह है अतः कुछ स्थानीय घटनाओं के गीतों को छोड़ हमीरपुर में वही गीत प्रचलित हैं जो कांगड़ा में हैं। ऊना की बोली में पंजाबी का पुट आ जाता है।

लोकगीत

जन्म गीत

1

काले़ महीने दियां न्हेरियां रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम...।

पुच्छी लै मेरेयां संगीयां साथियां, जान बचाई घरें आया
छिक्केयां तोड़ी, भाण्डे भी भन्ने, बिन्नुआं ता दित्ता रूढ़ाई
काले़ महीने दियां न्हेरियां रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम...।

पुच्छी लै मेरेया संग्गियां साथियां, जान बचाई घरैं आया
जां जन्मेया जां दीवक बलेया, चौन्हीं चौकेयां हो रेह्यां लोंईं
काले़ महीने दियां न्हेरियां रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम...।

पुच्छी लै मेरया संग्गियां साथियां, जान बचाई घरें आया
बांह मरोड़ी मेरी मटकी तोड़ी, बिन्नुआं ता दिता रूढ़ाई
काले़ महीने दियां न्हेरियां रात्तीं, जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम...।

न्हौता ता धोता पाट पलेटेया, कुच्छड़ लेया ए दाईया
पंज रूपेयै मैं दाईया जो देसां, पुत्तर पियारा माईया
जां जन्मेया जां दीवक बलेया, चौन्हीं चौकेयां हो रेह्यां लौईं
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम...।

घोल़ पतासा मैं गुड़सत देंदियां, सूने दी लावां कटोरी
चन्नण कट्टी मैं पंघूड़ा घड़ावां, रेशमी लावां डोरां
जां जन्मेया जां दीवक बल़ैया, चौन्हीं चौकेयां हो रेह्यां लौईं
काल़े महीने दियां न्हेरियां रात्तीं जन्मेया कृष्ण मुरारी
जन्मेया कृष्ण मुरारी स्याम...।

औंदे तां जांदे बासुदेव झुटांदे, झुटेयां देन खलाइयां
औंदी ता जांदी माई देवकी खलांदी, झुटेयां देन खलाइयां
जां जन्मेया जां दीवक बल़ैयां, चौन्हीं चौकेया होई रंह्यां लौईं
पुच्छी लै मेरेयां संगियां साथियां, जान बचाई घरैं आया
स्याम...

यह गीत घर में बालक के जन्म पर गाया जाता है। बालक को कृष्ण मानकर गांव की महिलाएं इकट्ठा होकर यह गीत गाती हैं। गीत, श्रीकृष्ण के जन्म की याद दिलाता है और बालक को कृष्ण समझकर इसे गाया जाता है। श्रीकृष्ण का जन्म काले महीने की अंधेरी रातों में हुआ था। घर में बालक का जन्म किसी भी मास में हुआ हो, कृष्ण जन्म का स्मरण कर इसे काल़े महीने से ही जोड़ा जाता है।

2

मदन मोहन जी दी प्यारी
नी सुणेया बैह्णे बंसरी।
भादों म्हीने दियां न्हेंरियां रात्तीं
जनमेया कृष्ण मुरारी। नी सुणेया...
जे जमेया तां दीपक बल़ेया
छौवी छके हो रहियां लोंईं। नी सुणेया...
नौह्ता रे धौह्ता पाट पलेटेया
कुछड़ लेया गोरिएं दाइएं। नी सुणेया...

गोल पतासा गुड़सल देंदी
सोने दी ए कटोरी। नी सुणेया...
चनण कटी पलंघूड़ा घड़ांदी
रेसमी लाइयां मैं डोरां। नी सुणेया...
औंदे ता जांदे बासुदेव झटांदे
झुटेया देन खल्हाइयां। नीसुणेया...

3

अंगण साढे जित पिपलड़ी तित बैठा काल़ा कागा रामा
उडेयां तू कागा बडिया भ्यागा उडी कें करेयां स्नेहा रामा।
जाई जाई आखेयां मेरी अमड़ी, पासे धिया सुपना होया
सुपने मंझ सस्सू सुहागण, हरेयां नरेल़ां लई आई रामा
चुप कर धिए सर्व सुहागणी हरिया बेल बधाई।
सुपने मंझ नणद सुहागणी हरी हरी द्रुब लई आई रामा
चुप कर धिए सर्व सुहागणी साईया बधाईया जो आई।
सुपने मंझ जठाणी सुहागण कजल़ कुंगू लई आई रामा
चुप कर धिए सर्व सुहागणी सुहागे भागे लई आई।

इस गीत में पुत्र जन्म का पूर्वाभास सपने द्वारा होता है। बेटी को सपना आता है कि सास हरा नारियल लेकर आती है, ननद हरी दूब लेकर आती है, जेठानी काजल और टीका लेकर आती है। मां कहती है—बेटी! यह सब तुम्हारे लिए शुभ है।

4

अंगण साढे जित पिपलड़ी तित बैठा काल़ा काग रामा
उडेयां तू कागा बडिया भ्यागा उडी के करेयां स्नेहा।
जाई आखेयां मेरी अमड़ी पांसे धिया स: ओलरू जाया रामा
अम्मां पुच्छदी भट्टां जोतषियां बालक किस रासिएं जाया
त्रीह चोदिएं पुनया प्रगड़िया बालक इस रासिएं जाया
अम्मां पुच्छदी धिया अपणियां सस्सू क्या पच्छ दित्ता
काढ़ कढ़िड़िया दा सस्सू भत्त दित्ता
उप्पर सागे दा लचकारा दिता

उप्पर लूणे दा बरूरा दिता
खायां खायां नूंहें नखरेलड़ी एह नीं तां उठी कम्म कमायां
सस्सू पुच्छदी नूंहां अपणियां माऊ क्या पच्छ दित्ता
सेलिया झिंझणी दी अम्मा भत्त रिधा
उप्पर घिउए दा लचकारा दिता
उप्पर सुंडी दा बरूरा दिता
खायां ओ खायां धिए लाडलिए उठी पलगें सौयां
अम्मा दिंदड़ी लख सीसा दाडूआं जेही फलेयां धिए
द्रुबा जेही हरेयां
सस्सू दिंदी लख सीसड़ियां द्रेका जेही फलेयां
द्रुबा जेही हरेयां।

इस गीत में बेटी पुत्र जन्म पर मां को कौए द्वारा संदेश भिजवाती है। मां ज्योतिषी से बालक का भविष्य पूछती है। सास बहू को खाने के लिए घटिया चावल और साग में खूब नमक डालकर देती है किंतु मां उसे बढ़िया चावल 'झिंझण' का भात देती है जिस पर देसी घी और सोंठ डाली जाती है। मां आशीष देती है, बेटी! तू दाड़िम अर्थात् अनार की तरह फलना और दूब की तरह हरी रहना!

5

ढोला सब फुल फुल्ले, फुल्ले माली बाग
सिम्बले दा फुल्ल नीं फुल्लेया।
गोरिए सिम्बले दा फुल मुलख गुआर
न चढ़े देवर देवते।

ढोला डिगेया भियाणू होया प्रकास
नोपत किस घरे बजी ए!
गोरिए हरिचंदे राजे दे घर जन्मेया पुतर
नोपत तिस घर बजी ए।

ढोला डिगेया भियाणू होया प्रकास
नाई द्रुब लई आया ए।
ढोला न म्हारे छटिया न पंजाप
नाई कुस उंघे आया!

तेरे ही घर छटिया तेरे ही पंजाप
बालक तेरिया गोदा।
ढोला पंजे रूपइए सिरे सूई पग
नाई जो तुरत पहनाई दे।
ढोला जिस नगरी मंझ चोरी तू जाए,
ओह धण गोरी की सांवली!
गोरिए न धण गोरी न धण सांवली
रूप जेही चन्द्रावली।

ढोला कढूं पटारी देवां दो लाल
बालक मुल मंगाई दे।
ढोला कढूं कटारी मरूं विष खाई
बालक मैं ते छुपाया।

गोरिए बालके वाल़ी जो झिंझण रिन्हां
सां नोईएं धणा जो खिचड़ी।
बालके वाल़ी जो मैं नथ घड़ा सां
नोईएं धणा जो बेसरू।
बालक वाल़ी जो पल़ंग ढलां सां
नोईएं धणा जो मंजड़ी।

इस गीत में राजा हरिचंद के पुत्र होने का समाचार रानी को मंगल धुन बजने और नाई द्वारा दूब लाने से मिलता है। पुत्र राजा की किसी और रानी से होता है। रानी पूछती है, जिस नगरी में तू चोरी-छिपे जाता है, वह गोरी है या सांवली! वह न गोरी है, न सांवली—राजा उत्तर देता है। गीत में दूसरी स्त्री द्वारा बालक की उत्पत्ति का समाचार रानी को हिला जाता है।

प्रसव पूर्व का गीत

एह जिसा पैलिया सूहड़िया, ओठ सुके मुख पिऊल़ा ए
एह जिसा दूजिओ सूहड़िया, चरूए दा रिह्धा भत नी भौए।
एह जिसा त्रीजिया सूहड़िया, खुरियां च रंगणी बहुआ औए
एह जिसा चौथिया सूहड़िया, छातिया च रंगणी आई ए
एह जिसा पंजिया सूहड़िया, दराणियां जठाणियां ने सुणाया
एह जिसा छटिया सूहड़िया, सस्सु नणाना ने सुणाया ए

एह जिसा अठियां सूहड़िया, हुण सस्सु करिआं अठुआं ए
एह जिसा नौमिया सूहड़िया, ओबरे पलंग डुलाया ए।

यज्ञोपवीत के समय गुरु दीक्षा

मंतर दिनयों मेरे गुरूआ जी
मंतर दिनयों मेरे गुरूआ।

तम्हारे तां मंतरा गुरूआ जी
मैं ब्राह्मण होया।
अग्गर दिनयों मेरी माए जी
तम्हारे तां अग्गरे माए जी
मैं ब्राह्मण होया।

लड्डुआ भिच्छिया सगोती भिच्छिया
भगत भिच्छिया जनेउ ए।

भिच्छिया दिनयों मेरी दादिए जी
भिच्छिया दिनयों दादी ए।

कुल पुरोहित या गुरु यज्ञोपवीत संस्कार के समय बालक के कान में गायत्री मंत्र कहता है, उस समय महिलाएं यह गीत गाती हैं। इस समय बालक ने ब्रह्मचारी का रूप धारण किया होता है। शरीर पर केवल लंगोट धारण कर बालक के गले में झोली डाली जाती है और सभी रिश्तेदार महिलाएं झोली में भिक्षा डालती हैं।

विवाह गीत

समूहत (शुभ मुहूर्त) गीत

किसिए दा प्रोहत सः लाडला जी
कन्ने लोहे दी मुरकी।
किसिए दा बामण सः लाडला जी
कन्ने सूने दी मुरकी।
कुड़मां दा प्रोहत सः लाडला
कन्ने लोहे दी मुरकी।
न छड्डी अम्मां न छड्डी भैणा

न छड्डी जजमानणी
कन्ने लोहे दी मुरकी।
म्हारा प्रोहत सः लाडला
कन्ने सूने दी मुरकी।

वर तथा वधू को उबटन लगाया जाता है। वर पक्ष की ओर से पुरोहित वधू को उबटन लगाने के लिए लाता है। वधू पक्ष में वधू को नहलाने का आंगन में प्रबंध किया जाता है। महिलाएं आंगन में चरखा कातती हैं और वधू पक्ष की ओर से आए पुरोहित को गालियां गाती हैं कि हमारे पुरोहित के कानों में सोने की मुरकियां हैं तो वधू पक्ष के पुरोहित के लोहे की।

उबटन गीत

बाय बा कि बुटणा चोल़ां दी
मल़ेदियां दो जणियां
ताईंयां चाचियां सक्कियां भैणा।
बाय बा कि बुटणा कटोरे दा
बाय बा कि बुटणा चोल़ां दा
मल़ेदियां दो जणियां
बुटणे मल़ेदियां दो जणियां
ताईयां चाचियां सक्कियां भैणा।

वर या वधू को उबटन मलते समय महिलाएं यह गीत गाती हैं। वर या वधू को उबटन लगाने के साथ-साथ आपस में भी उबटन मला जाता है। पहले प्रायः दो सगी बहनें दो सगे भाइयों को ब्याह दी जाती थीं, इसलिए वर या वधू की ताई और चाची को सगी बहनें कहा गया है।

कन्या के सिर में तेल डालने पर गालियां

ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी
कणक कटोरड़िए परोह्तें पाया तेल जी।
पैसा धेला कुछ नहीं सरेया, परोह्तणी तेल पाई जी।
ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी
ठणक कटोरड़िए अम्मा पाया तेल जी
पैसा धेला कुछ नहीं सरेया, द्रुब तेले पाई न जी।

ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी
ठणक कटोरड़िए बूआ पाया तेल नी
पैसा धेला कुछ नहई सरेया उप्पू तेले पई नी।
ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल नी
ठणक कटोरड़िए मामे पाया तेल नी
पैसा धेला कुछ नहीं सरेया, मामी तेले पाई नीं।

इस प्रकार जो रिश्तेदार कन्या के सिर में द्रव से तेल डालता है उसका नाम लेकर गीत के बोल गाए जाते हैं।

स्नान गीत

अंगणे चिक्कड़ कुनी कीता जी
कुनी डोलेया पाणी
बुढ़े दा पुत्तर सः लाडला जी
जिनी डोलेया पाणी।

यह गीत वर या वधू के उबटन मलने के बाद आंगन में स्नान करने पर गाया जाता है।

स्नान के उपरांत गणेश पूजन

न्होई धोई गुड़ घीउ खादा
गणपत पूजेया लम्मीयां बाहीं
सूरज कुंडे लाड़ें न्हौंण कीता
न्होई धोई गुड़ घीउ खादा
गणपत पूजेया लम्मीयां बाहीं।

भाभी द्वारा काजल लगाना

हाक्खीं काचरियां दयोरा
सुरमा पाई के गुआया
हाक्खीं सोहणियां भाभी
तिजो पाणा नी आया।

संबंधियों द्वारा तमोल

होर तमोल तेरी भैण लई आई
जीजे दा खट्टेया भैणा लई आई
तू लेयां बीरना सीस नवाई।

दूल्हे के घोड़ी पर बैठने से पूर्व बहन घोड़ी को भिगाई हुई चने की दाल खिलाती है। उसे टीका करके लाल चुनरी ओढ़ाती है।

गाली गीत (वधू पक्ष)

बारात आगमन

बाजेयां वाल़े आए चन्हरिया
बाजेयां वाल़े आए।
बाजेयां वाल़ेयां दे हत्थ तोते चन्हरिया
छूहीं हार परोते।
लाड़े दे बुड़े दे गल़ पाए चन्हरिया
छूहीं हार परोते।

बारात द्वारा हाथ पैर धोना

माधो! पैरां धो मेरा कामा मरहट्टा
धोएंगा तत्ते मारेगी लत्तें
धोएंगा ठण्डे मारेगी डण्डे
चक्किया पीह मेरा कामा मरहट्टा।

आसन और पत्तल बिछने पर

1

किनी बछाई काल़ी कम्बल़ी जी
किनी बछाया सतरंगा जी
तुसां बेहो अंगणे।

लाड़े दे बापूए बछायी काल़ी कम्बल़ी
म्हारे भाईयां बछाया संतरंगा जी
तुसां बेहो अंगणे।

किनीं बछाई काल़ी कम्बल़ी जी
किनी बछाया सतरंगा जी
तुसां बेहो अंगणे।

लाड़े दे मामे बछाई काल़ी कम्बल़ी
म्हारे भाईयां बछाया सतरंगा जी
तुसां बेहो अंगणे।

2

माधो! छिड़क छिड़क कर चौका दिया
मैं बुझया चरनामृत लिया
हरो हरि भई बड़ी खरी
सोना देईये तब न लईये
रूपय्ये देईये तब न लईये
जब लईये तब जोरू दा दान
तेरा पुःन मेरा कल्याण
हरो हरि भई बड़ी खरी।

पानी देने पर

पाणी देणे वाल़ा मुंडा कुआरा
जे लाड़े देया मितरा तेरी भैण कुआरी
सह साडे भाईयां जो दे सहारा।
पाणी देणे वाल़ा मुंडा कुआरा
जे लाड़े देया मासड़ा तेरी भैण कुआरी
सह साडे भाईयां जो दे सहारा।

भात परोसने पर

पत्तल पिरो भत्त आया...आया जी
मंगतू अपणियां जोरू जो कहंदा माया...माया जी।
पत्तल पिरो भत्त आसी...आसी जी
मंगतू अपणियां जोरू जो कंहदा मासी...मासी जी।
पत्तल पिरो भत्त तरदा...तरदा जी
मंगतू अपणिया जोरू ते बड़ा डरदा...डरदा जी।

भात खाने पर

1

पियूल़ी पियूल़ी दाल़ चणयां दी बणी
भत्त खाणा बणया जोरू देणा बणी
पियूल़ी पियूल़ी दाल़...

2

मंगतुआ! थोड़ा थोड़ा खाणा
सुणया जी थोड़ा थोड़ा खाणा
हैजे दी बमारी है
समां बड़ा भारी है
थोड़ा थोड़ा खाणा।
बोत ज्यादा खाऐगा पेट फट जाएगा
थोड़ा थोड़ा खाणा।
आलू दी तरकारी है गोभी दी भुआरी है
थोड़ा थोड़ा खाणा।
सुणया हो, थोड़ा थोड़ा खाणा।

3

मिरचां झरबरियां चणयां दी दाल़ करारी
प्रीतम खाण बैठा खा गया बाटी सारी
होर भत मंगणे लगा लबड़ा ते कछड़ी मारी।

4

ए लाड़े दा बुह्ड़ा सत्तां दिनां दा भुखा
गराईयां खूब लांदा
हां, हां, गराईयां खूब लांदा
ए अधी नी खांदा, पूरी नी खांदा
खारियां जो मारदा झफां
गराईयां खूब लांदा
हां, गराईयां खूब लांदा।
ए लाड़े दा चाचा सत्ता दिनां दी भुखा
गराईयां खूं ब लांदा
हां, हां, गराईयां खूब लांदा
ए अधी नी खांदा, पूरी नीं खांदा
बाटिया जो मारदा झफां
गराईयां खूबा लांदा
हां जी गराईयां खूब लांदा।

5

मस्तो जो गाळीं मत गांदे
कैंह जी, कैंह!
साढा भाई हुंदा
कदका जी, कदका!
लोहे दी मेख लुहार ने घड़ी
इस दी मां मेरे बाप ने फड़ी
तदका जी, तदका।

यह गाली प्रश्नोत्तर रूप में बारातियों में से एक-एक का नाम लेकर गाई जाती है।

कुछ और गालियां

1

पक्खी शहर दी सईयो पक्खिया बुंबल़ लाया
लाड़े दा मामा बोह्ड़ी ते रड़काया
अम्मा अम्मा करदा आया, बापू बापू करदा आया
चिलम तमाकू करदा आया
लाड़िया तोड़ तमाचा लाया
पक्खी शहर दी सईयो पक्खिया बुंबल़ लाया।
लाड़े दा बापू बोह्ड़ी ते रड़काया
अम्मा अम्मा करदा आया, बापू बापू करदा आया
चिलम तमाकू करदा आया
लाड़िया तोड़ तमाचा लाया
पक्खी शहर दी सईयो पक्खिया बुंबल़ लाया।

2

हर हर गंगे भई हर गंगे!
एह बड्डिया मुच्छा वाळा गया हरिद्वार
हर गंगे भई हर गंगे!
मच्छिएं पकड़ेया मुच्छा दा बाल़

हर गंगे भई हर गंगे!
हुण नईं औंगा तेरे दरबार।
हर गंगे भई हर गंगे!
लाड़े दा मामा गया हरिद्वार
हर गंगे भई हर गंगे!
मच्छिएं पकड़ेया मुच्छा दा बाल़
हर गंगे भई हर गंगे
हुण नईं औंगा तेरे दरबार
हर गंगे भई हर गंगे!

यह गाली दो टोलियों द्वारा गाई जाती है। एक हर गंगे बोलती है तो दूसरी अगला भाग।

3

लाड़े दे बापूए जो गाल़ीं मत गांदे
कैंहजी कैंह!
साढा भाई हुंदा
कदकाजी कदका!
लोहे दी मेख लुहार ने घढ़ी
इसदी मां मेरे बाप ने फड़ी
तदकाजी तदका।
लाड़े दे मामे जो गाल़ीं मत गांदे
कैंहजी कैंह!
सढा भाई हुंदा
कदकाजी कदका!
लोहे दी मेख लुहार ने घढी
इसका मां मेरे बाप ने फड़ी
तदकाजी तदका।

यह गाली भी दो टोलियों द्वारा सवाल-जवाब के रूप में गाई जाती है।

खाकर उठने पर

उठी गै बचारे क्या बोलिए
डांगें सोठें मारे क्या बोलिए।

जाने पर

जा बो जा! पिट्ठी डोडे पा ओ पा
डोडेयां रखनेयां धारियां
सुखसांत दिनेयों लाड़ियां।

गाली गीत (वर पक्ष)

1

लाड़ी ऐडी ऐडी ऐडी
साढे मुंडे ते भी केडी
साढा मुण्डा बालक याणा
लाड़िया आपू ही समझाणा
लाड़ी बंगड़ियां छणकावे
साढे मुण्डे जो डरावे।

2

लाड़िए लड़िकिड़ए तू अपणिया अम्मां केहनी लई आई
तेरी अम्मां मेरा बापू जोड़ी खूब बणाई।
लाड़िए लड़िकिड़ए तू अपणिया चाचिया केहनी लई आई
तेरी चाची मेरा चाचा जोड़ी खूब बणाई।
लाड़िए लड़िकिड़ए तू अपणिया ताईया केहनी लई आई
तेरी ताई मेरा ताउ जोड़ी खूब बणाई।
लाड़िए लड़िकिड़ए तू अपणिया बुआ केहनी लई आई
तेरी बुआ मेरा बुआई जोड़ी खूब बणाई।

झमाकड़ा

झमाकड़ा वो, मेरा मन बोलदा नचणे जो, नचाणे जो
नईं रेहणे जो...झमाकड़ा वो...उड्डी जाणे जो
लाड़े दिए मामिए, वो मेरा मन बोलदा
नचणे जो नचाणे जो नईं रेहणे जो...झमाकड़ा वो...
लाड़े दिए मासिए, वो मेरा मन बोलदा नचणे जो
नचाणे जो नईं रेहणे जो...झमाकड़ा वो...

जब बारात ब्याहने चली जाती है तो घर में पीछे रही महिलाएं नाचते हुए यह गीत गाती हैं क्योंकि उस समय घर के सभी मरद बारात में गए होते हैं, महिलाएं अकेले में खुलकर नाचती हैं। वर की मां, मासी, मामी, बुआ आदि को संबोधित कर यह गीत गाया जाता है। महिलाएं पुरुषों के स्वांग रचकर खुले मन से नाचती हैं और गाती हैं। पुरुषों के वहां न होने से श्लील-अश्लील का ध्यान नहीं रखा जाता। अब 'झमाकड़ा' कांगड़ा क्षेत्र का एक लोकप्रिय नृत्य बन गया है जो विभिन्न समारोहों में प्रस्तुत किया जाता है।

सांद गीत

विवाह संस्कार से पूर्व शांति हवन किया जाता है जिसे 'सांद' कहा जाता है। इस हवन के अवसर का 'सांद गीत' गाया जाता है।

1

सांदी लिखेंदिया बाह्मणा, सांदी लिखने दी करेयां
कोठियां चौल़ बथेरड़े कोठेयां भरने दी करेयां
सांदी लिखेंदेया बाह्मणा...
कोठियां दाल़ीं बथेरिड़यां कोठेयां भरने दी करेयां
सांदी लिखेंदेया बाह्मणा...।

'सांद' में मामा का आगमन बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। सांद या शांति हवन मामा द्वारा ही करवाया जाता है। मामों के आगमन की प्रतीक्षा में व्यग्र हो ऊंचे स्थान पर खड़े हो देखा जाता है कि मामे आए तो नहीं–

2

उच्चे तां खड़ोई ने दिख लाड़ेया तेरे मामे आए
मामे तां आए जी घोड़ियां मामियां आईयां डोले़।

3

दूरां ते चली ने लाड़े दा मामा आया
सांद सांद पुकारदा।
आई जा मामा बैठ पटड़ी, खोल गठड़ी
सांद दी वेला मामा हो रही ए।
दूरां ते चली लाड़े दा मामा आया
सांद सांद पुकारदा।

इस अवसर पर मामा-मामी को गालियां भी गाई जाती हैं–

हरे हरे मुंगरे पठानकोटों आए जी
मामा पुच्छदा जोरू जो ऐ कौण परोह्णे आए जी।
चुप कर बच्चा मेरेया साजन मेरे आए जी
सरमा दिया मारिया मैं ओबरिया लुकाए जी।

सिर गुंदी

1

रतिए डोरिए रौंगलिए, कुर्बान गई है
किन्नी सः डोरी रंगाई, कुर्बान गई है।
किसिए दे सीस सः लाई है, कुर्बान गई है
गणेसे सः डोरी रंगाई, कुर्बान गई है
रिधिया सिधिया दे सीस लगाई, कुर्बान गई है।
ब्रह्मे सः डोरी रंगाई, गायत्रिया दे सीस लगाई है
कुर्बान गई है।
बिष्णुए सः डोरी रंगाई, पार्वतिया दे सीस लगाई है
कुर्बान गई है।
कृष्णे सः डोरी रंगाई, राधिका दे सीस लगाई है
कुर्बान गई है।
कुड़िया दे बब्बे सः डोरी रंगाई
लाड़े दिया माउ दे सिरे लाई है
कुर्बान गई है।

2

लाड़े दी मा हाथ कटोरी नौ गज डोरी
सीस गुंदावन चल्ली है।
इह्यां गुंदेयां नैणी तू तिह्यां गुंदेयां नैणी
छह म्हीने बाल़ नीं हिलसी है।
हाथ कटोरी नौ गज डोरी
पेट मलावन चल्ली है।
इह्यां मल़यां दाईए तू तिह्यां मल़यां दाईए
बालके जो जर्ब न औसी है।

सुहाग

1

राम राम ह्दयें बसेया, जीवन जन्म सुधारेया।
भीखमें दे घरें पंज पुत्तर, कन्या इक है रूकमणि ए
भाई कहे धिया द्वारका देणी है, बोआ कहे घर अब्बल है
अजी माई कहे सिसुपाल राजा है, रूकमणि वर कृष्ण है।

कोण सुणे मेरे दिले दिया बाता,
कोण लेई जावे मेरिया पोथिया
परतेणी सुणे मेरे दिले दिया बाता,
परोत लेई जावे मेरिया पोथिया।

माए गरूड़ चढ़ेया माए डिगी मरां, सिसुपरल राजे नीं वरां
ताक बैठी मैं अरजां करदी, इक पल घड़ी आई जाणा
आई के दरस दिखाई जाणा।
राम राम ह्दये बसेया जीवन जन्म सुधारेया।

अम्बका पूजण चली राणी रूकमणि
सठां सहेलियां दी रंग लड़ी
बाईं ते पकड़ी रथें भ्याली, पोण पखेरू उड़ी गये।
द्वारका जाई करी होम करदे, पाठ करदे होम करदे
हींग लाजां फेरियां।
रामा राम ह्दयें बसेया जीवन जन्म सुधारेया।

माता कहे धिए नित नित ओयां, बोआ कहे महीनें ओयां
अजी भाई कहे धिए छठिया पंजापे, भावो कहे तेरा कम्म क्या।
राम राम ह्दयें बसेया जीवन जन्म सुधारेया।
माई तां रोंदी दी भिजी जांदी साड़ी, बोआ रोए दिल मार के
अजी भाई तां रोदे दा भिजदा रूमाल,
भावो दे मने च चा होया।
राम राम ह्दयें बसेया जीवन जन्म सुधारेया।

2

चार चकूंटें मैं फिरी आया, वर नजरी न आयो राम।
चार चकूंटें च साधु तपस्वी, बैठी धूणियां लगाईयां राम।
मैं तुसां जो आखां कुड़ी देआ बाबला वर ढूंढण जाणा राम।
जुग जुग जियां नी तपस्वी भैणे वर गंदला पायो राम।
लग्ना दे बेलें श्याम रूप बदलया रूकमण छम छम रोई राम।
बेदीं दें बेले श्यामें रूप बदलया
रूकमणि खिड़ी खिड़ी हस्सी राम
मैं तुसां जो आख्या कुड़ी देआ चाचा वर ढूंढण जाणा राम।

बधोआ

1

ए बधोआ! किधर देसे दा आया ए।
मैं तां देस छोडया परदेस छोडया नगरकोटे ते आया
एह घर पुत्तरां भरेया,एक घर पुत्तरियां भरेया
बाबल फिरिया नीं जांदा ए।
एक घर नुहआं भरेया एह घर धीयां भरेया
अबड़ फिरिया नीं जांदा ए।
नुहआं पेके गईयां धीयां सोहरे गईंयां
अबड़ फिरिया नीं जांदा ए।
डब्बा गेहणयां भरेया डब्बा सुच्चेयां भरेया
ढक्कन खुड़ेया नीं जांदा ए।
बूंदे पाई लेया सुच्चे बरती लेया
ढक्कन खुड़ेया सुखाला ए।

'बधोआ' बधाई गीत है। विवाहादि मंगल कार्य के समय महिलाएं इसे गाती हैं। ऐसे गीतों के माध्यम से ही बधाई दी जाती है।

2

एह बधोआ रंग रसिया, अज्ज साडें गोह्रें आया
असां गोह्र सताई सुट्टेया, सताई छडया,
अज्ज स्हाडें सुभ घड़ी

असां सुभ दिन मनाई छडया, अज्ज स्हाडें शुभ घड़ी
एह बधोआ रंग रसिया, अज्ज स्हाडें परोल़ी आया
असां परोल़ सताई छडी अज्ज स्हाडें सुभ घड़ी
एह बधोआ साडें अंगणें आया, अज्ज साडे अगणें आया
असां अंगण लपाई छडया अज्ज स्हाडे सुभ घड़ी।

3

ओ मेरी अम्बड़िए मेरी माए
ए देस कियांह् करी बसदे!
इनां देसां जम्मण धीयां
आवण सरस जवाई
बैंह्दे धोतियां लाई
जांदे रोटियां खाई
ए देस ईयांह् करी बसदे।
ओ मेरी अम्बड़िए मेरी माए
ए देस कियां बसदे।
इना घरां जम्मण पुत्तर
आवण नूहां सुहागणी
ए देस ईयांह् करी बसदे।

दूल्हे के मंडप में बैठने के बाद कन्यादान के अवसर पर कन्या को भीतर से बुलाया जाता है। उस समय यह गीत गाया जाता है–

बाह्र आ मेरी श्याम सुंदरी
काह्न लगनां जो आया।
कियां आवां मेरे आप स्वामी
बौए ते सरमांदी हां।
बौआ तेरा धरम करदा
हथ लौटा चूल़ियां भरदा
लै हो कन्या कुमारी हां।

विदाई गीत

1

बेटी को विदाई के बाद पिता के घर से कुछ नहीं मिलेगा, यह व्यथा इन गीतों में मिलती है।

चरखे दियां पूणियां माए चरखे ने रहियां
दहिएं दी रहि है छलै़न, माए चलेआं जाणा।

अन्न भी दिंगी धिए धन भी दिंगी
होर तां दिंगी जगीर, धिए नी ओ जाणा।

अन्न तां धन माए पुतरां जो देणा
नुह्आं जो देणी जगीर, माए चलेआं जाणा।

अन्न भी दिंगी धिए धन भी दिंगी
कनें दिंगी जगीर धिए नी ओ जाणा।

अन्न तां धन माई पुतरां ने लैणा
नुह्आं ने लैणी जगीर चलेआं जाणा।

चरखे दियां पूणियां माए चरखे ने रहियां
दहिंए दी रहि है छलैहून माए चलेआ जाणा।

2

विदाई के समय जब लड़की का डोला उठाया जाता है और लड़की रो रही होती है, यह हृदयग्राही गीत गाया जाता है। इस गीत के बोलों के बीच लड़की के सस्वर रोने की आवाज आती है। लड़की मां, बाप, भाई, बहन, ताए, चाचों और सभी संबंधियों का नाम ले-लेकर रोती जाती है और 'ताया जी घुमाई तुसां जो, चाचा जी घुमाई तुसां जो' कहती जाती है।

तेरेयां महलां दे अंदर वे बाबुल मेरा डोल़ा अड़ेया
तेरे डोल़े दिंगा ओ छुड़ाई धिए घर जा अपणे।

तेरेयां महलां दे अंदर वे अम्माजी मेरा डोल़ा अड़ेया
तेरे डोल़े दिंगी ओ छुड़ाई धिए घर जा अपणे।

3

अटली तां तेरी बाबल परबत होया, अंगण होया परदेस
अम्मा चलेयां जाणा।
अन्न बो दिहंगे धिए, धन बो दिहंगे, हौर दिहंगे जगीर
धिए नी जाणा।

अन्न तां धन तेरिया नुहां ने लैणा, पुतरां लैणी जगीर
माए चलिया जाणा।

4

मेरा गुडियां पटारू बे
बापू मेरे कौण खेले!

तेरी गुडियां खलाहई दिंगा बे
धीये घर जा आपणे।

तेरे मैह्लां दे अंदर बे
बापू मेरी अम्मा रोए।

तेरी अम्मा जो चुप करांगा
धीऐ घर जा अपणे।

तेरे मैंह्लां दे अंदर बे
बापू मेरी ताई रोए।

तेरी ताईया जो चुप करांगा
धीए घर जा अपणे।

तेरे मैह्लां दे अंदर बे
बापू मेरा डोला अड़ेया।

इन्हां मैह्लां दिंगा बो पटाई
धीए घर जा अपणे।

पालकी का वर के घर आगमन

झिलमिल पालकी जी
साडे अंगणे आई
दादुए दा पोतरा सः लाडला जी

ब्याही घरैं आया
ननुए दा ध्योतरा सः लाडला जी
ब्याही घरैं आया।

संबंधियों के विदा होने पर विदाई गीत

साजण मिलणा लगे, मिली करी खिंडणा लगे
असां भूईंयां सोंह्गे, तुसां जो मंजा दिंगे।

साजण मिलणा लगे, मिली करी खिंडणा लगे
असां भूईंयां सोंह्गे, तुसां जो मंजा दिंगे।

विविध एवं प्रचलित गीत

भ्यागड़ा

1

काल़ेया कुकड़ा तेरी झांग बुरी (या सुणी)
तें मेरी निंदर ओ गुआई वे।
अंगण मेरे ब्रह्मा बिष्णु खड़े
मैं तां रही बो पापण सोई
मन करदा उठ्ठी फेरी लैंदी
चरणा पींदी धोई धोई।
कालेया कुकड़ा...

अंगण मेरे गौरां सिबजी खड़े
मैं तां रही बो पापण सोई
मन करदा उठ्ठी फेरी लैयां
चरणा पींदी धोई धोई।
कालेया कुकड़ा...

अंगण मेरे चन्दर सूरज खड़े
मैं तां रही बो पापण सोई
ईयां बुझदी उठ्ठी फेरा लैंदी
चरणा पींदी धोई धोई।
काल़ेया कुकड़ा...

अंगण मेरे सस्स सौरा खड़े
मैं तां रही बो पापण सोई
ईयां बुझदी उठ्ठी फेरा लैंदी
चरणा पींदी धोई धोई
काल़ेया कुकड़ा...।

अंगण मेरे जेठ जेठाणी खड़े
मैं तां रही बो पापण सोई
ईयां बुझदी उठ्ठी फेरा लैंदी

चरणा पींदी धोई धोई
काल़ेया कुकड़ा...।

2

गुजरिए गजरेटड़िए ओ भलिए,
नंद मेहरे दिए बेटड़िए।

गुजरिया दे सिरे पर, सालुआ बिराजदा
गोटे नैं मौज लगाई भलिए।

गुजरिया दे नक्के पर, बेसर बिराजदी
नगां नैं मौज लगाई भलिए।

गुजरिया दे गल़े पर कण्ठियां बराजदी
ओ नामे ने मौज लगाई भलिए।

गुजरिया दे लक्के पर लैंहगा बराजदा
ओ गोटे ने मौज लगाई भलिए।

गुजरिया दे पैरां पर मौचड़ू बराजदे
तिले ने मौज लगाई भलिए।

गुजरिए गजरेटड़िए ओ भलिए
नंद मेहरे दिए बेटड़िए।

3

पजां सतां गुजरियां जोड़ जड़ाया
दुधे दईंए बेचणा जाणा ओ...मेरे राम।

अगली बी जाओ रामा, पिछली बी जाओ मेरे राम...
गभली जाणा न देसां मेरे राम।

बांह न मरोड़ो, मेरी मटकी न तोड़ो
मैं घर सोह्रा सयाणा मेरे राम।

सोह्रे तेरे जो हुक्का भखांगा
तिज्जो घर न जाणा देसां मेरे राम।

बांह न तोड़ो, मेरेयां बंगडूआं न तोड़ो
मैं घर सस्स सयाणी मेरे राम।

सस्सू तेरिया जो मैं चरखा डलांगा
तिजो घर जाणा न देसां मेरे राम।

बांह न मरोड़ो, मेरी मटकी न तोड़ो
मैं घर मेरा देर नियाणा मेरे राम।

देरे तेरे जो में दुध भत्त दिंगा
तिजो घर जाणा न दिंगा मेरे राम।

बांह न मरोड़ो, मेरी मटकी न तोड़ो
मैं घर गुजर जुआन मेरे राम।

गुजरे तेरे दा ब्याह करांगा, गुजरी लेई आंगा
तिजो घर जाणा न दिंगा मेरे राम।

होरना जो बोलदा मैं ब्याह करवाई दिंगा
अप्पूं मुआ फिरदा कुआरा मेरे राम।

पंज बो सत गुजरियां मैं ब्याही छडियां
तिजों पिच्छें फिरदा कुआरा मेरे राम।

अधी अधी रात

अधी अधी रात सबेरे दा तड़का,
कृष्णे बंसरी बजाई ओ मेरे राम
तोड़ी सट्टां बंगड़ूआं मरोड़ी सट्टा बंसरिया,
तैं मेरी निंदर गुआई ओ।

दियां नी माए मेरे सिरे केहड़े सालुए,
राधा दिया गुजरिया जो देणा ओ
मरी मरी जाए सः राधा केहड़ी गुजरी,
जिने मेरी निंदर गुआई ओ।

दियां नी माए मेरे गले़ केहड़ी बेसरा,
राधा दिया गुजरिया जो देणी ओ
मरी मरी जाए सः राधा केहड़ी गुजरी,
जिने मेरी निंदर गुआई ओ।

दियां नी माए मेरे लक्के केहड़े घघरूए,
राधा दिया गुजरिया जो देणा ओ

मरी मरी जाए सः राधा देई गुजरी,
जिने मेरी निंदर गुआई ओ।

दियां मेरी माए मेरे पैरां केहड़े मोचडू,
राधा दिया गुजरिया तो देणे ओ
मरी मरी जाए सः राधा देई गुजरी,
जिने मेरी निंदर गुआई ओ।

धंतारा बंजदा हो

धंतारा बजदा ओ रांझणा! नूर महल दी मोरी।
चल मेले चलिए ओ रांझणा! दुईं जणेया दी जोड़ी
धंतारा बजादा ओ रांझणा नूर महल दी मोरी।

मिंजो सूट सयाई दे ओ रांझणा।
माउ अपणी ते चोरी
असां कदी न कीती ओ गोरिए
माउ अपणी ते चोरी
धंतारा बजदा ओ रांझणा...

मिंजो नथ घड़ाई दे ओ रांझणा!
माउ अपणी ते चोरी...
असां कदी न कीती ओ गोरिए
माउ अपणी ते चोरी
धंतारा बजदा ओ रांझणा!...

मिंजो झांझरां घड़ाई दे ओ रांझणा!
माउ अपणी ते चोरी
असां कदी न कीती ओ गोरिए
माउ अपणी ते चोरी
धंतारा बजदा ओ रांझणा! ...

मिंजो कांटे घड़ाई दे ओ रांझणा
माउ अपणी ते चोरी
असां कदी ना कीती ओ गोरिए
माउ अपणी ते चोरी।
धंतारा बजदा ओ रांझणा!...

मिंजो गजरू घड़ाई दे ओ रांझणा।
माउ अपणी ते चोरी
असां कदी न कीती ओ गोरिए
माउ अपणी ते चोरी।

उच्चिया जे रिढ़िया

उच्चियां जे रिढ़िया, मैं बंगला पुआंदियां जी
बंगला पुआंदिया जी
लम्मियां रखांदी गज कातीं...
लम्मियां रखदियां गज काती वेलिया ओ...
लम्मियां रखांदी मैं कातीं।

उच्चिया जे रिढ़िया मैं
खुआ दुआंदीं जी खुआ दुआंदीं
लम्मियां रखांदी मैं लज्जणीं...
लम्मियां रखांदी मैं लज्जणी वेलियां ओ...
लम्मियां रखांदी मैं लज्जणी।

चत्तर जे हुंदे स: डोली़ भरी पींदे जी
डोली़ भरी पींदे
मूरख रैंहदे तरियाहे, मूरख रैंहदे तरियाहे वेलिया ओ...
मूरख रैंहदे तरियाहे।

उच्चिया जे रिढ़िया मैं खाणा बणादी
जी खाणा बणादी, बाह्मण लगांदी रसोइया
बाह्मण लगांदी रसोइया वेलिया ओ...
बाह्मण लगांदी रसोइया।

दुध ता भत मुआ खाद्दा इक्की थालि़या
ओ खादा इक्की थालि़या
हुण कजो पुच्छदा तू जाति
हुण कजो पुच्छदा तू जाति वेलिया ओ..
हुण कजो पुच्छदा जाति।

दो चार रोटियां मैं जादा पकांदियां जी
जादा पकादियां, खाणे वाले आई जांदे राती

खाणे वाले आई जांदे राती वेलिया ओ...
खाणे वाल़े आई जांदे राती।

ओयां बो ललारिया

ओयां बो ललारिया, बोयां बो ललारिया
ओ बैठणे जो दिंदी तिज्जो पंद
पंद बो ललारिया ओ...।

हरी बो पुरे दा कुसुम्भा मंगादियां
कुसम्भा मंगादियां
ओ झोलणियां जो देणा गूढा रंग
तेरा सौं, रंग बो ललारिया ओ...।

रंग लाई तां पहनी गोरी अंगण खड़ोतिए
ओ बिजल़ी लसके अंग अंग
तेरी सौं बिजल़ी लसके अंग अंग
ओ अंग बो ललारिया ओ...।

ओयां बो ललारिया, बोयां बो ललारिया
ओ बैठणे जो दिंदि तिजो पंद
पंद बो ललारिया ओ...।

बत्ता चलदेआ मसाफरा

पिपल़े दे हेठ गोरी कैंह खड़ी
कजो तेरा मेलड़ा भेष
क्या घरैं सस बुरी!
ओ! बत्ता चलदेआ मसाफरा!

तिजो मेरी क्या पई!
न मेरा मेलड़ा भेष
न घरें सस बुरी
तिजो मेरी क्या पई।

नक्के जो दिंह्गा बेसर
गल़े जो दिंह्गा पंज लड़ी

चल तू सपाहिए सौगी
दिंह्गा मैं सुख घड़ी।

अग्ग लगै तेरियां गेणयां जो
नदिया रूढ़े तेरी पंजलड़ी
जाह्लू औंगा गोरी दा कंत घरें
ताह्लू करगी सुख घड़ी

धन धन तेरियां माउ जो
जिनें देही धी जाई
धन धन तिस रसिए जो
जिस दें तू लड़ लाई।

इस गीत का एक और रूपांतर भी है जिसमें कुछ पंक्तियां अलग जोड़ी गई हैं, जैसे–कान के लिए फुल्ल जोड़ियां दूंगा, बैठने के लिए पीह्ड़ा दूंगा, कातणे के लिए चरखा दूंगा आदि। नायिका का उत्तर वही रहता है कि वह सुखी तभी होगी, जब उसके पति या साजन घर आएंगे।

सूलि़या टंगोई गई जान

तेरी सौह सूलि़या टंगोई गई जान
भली होई जान पछाण।

उठदियां बैंह्दिया निकल़दे हौके
भुली गै घरे दे चुल्हे चौके
रैंह्दा नित तेरा धयान
तेरी सौह सूलि़यां टंगोई गई जान।

भली होई राजे दी नौकरी बे सपाहिया
भली चंगी फसी गई दुखे दिया फाहिया
भुली गिया खाण ते लाण
तेरी सौह सूलि़या...

काग उडावां मैं संदेसड़े भेजां
तेरे बाह्जी सुन्नी रेसमी सेजां

दौड़ी दौड़ी औंदियां खाणा
नि तेरी सौह सूलि़या...।

अप्पू बसरे जो जांदे

इस गीत में एक राजा को बसरे की लड़ाई में जाना पड़ता है तो घर में रानी कहती है कि नत्थ क्यों घड़वा रहे हो, खुद तो बसरे जा रहे हैं। बसरे में लड़ाइयां लगी हैं, फौजें जेहलम से आई हैं। यह नत्थ, यह लौंग, यह कांटे, यह कंठा क्यों घड़वाया! मेरी इत्र की डिबिया भी नमाणी पड़ी है।

नत्थ कजो बो घड़ांदे, अप्पू बसरे जो जांदे
बसरें लगियां लड़ाईयां, फौजां जेहलम ते आईयां।
फौजां बसरे ते आईयां, राजा भरो बो लिया।

मेरिये अतरे दिये डब्बिए, तू ता पई बो नमाणी
महलैं रोंदी है राणी, राजा भरो बो लिया।

लौंग बेसर कजो बो घड़ादें, अप्पू बसरे जो जांदे
बसरें लग्गियां लड़ाईयां, फौजां जेहलम ते आईयां
फौजां बसरे ते आईयां, राजा भरो बो लिया।

बाल़ कजो बो घड़ांदे, अप्पू बसरो जो जांदे
बसरें लगियां लड़ाईयां, फौजां जेहलम ते आईयां
फौजां बसरे ते आईयां, राजा भरो बो लिया।
मेरिये अतरे दिये डब्बिए, तू ता पई बो नमाणी
महलैं रोंदी है राणी, राजा भरो बो लिया।

कांटे कजो बो घड़ांदे, अप्पू बसरे जो जांदे
बसरें लगियां लड़ाईयां, फौजां जेहलम ते आईयां
फौजां बसरे ते आईयां, राजा भरो बो लिया।
मेरिये अतरे दिये डब्बिये, तू ता पई बो नमाणी
महलैं रोंदी है राणी, राजा भरो बो लिया।

कंठा कजो बो घड़ांदे, अप्पू बसरे जो जांदे
बसरें लगियां लड़ाईयां, फौजां जेहलम ते आईयां
फौजां बसरे ते आईयां, राजा भरो बो लिया।
मेरिये अतरे दिए डब्बिए, तू ता पई बो नमाणी
महलैं रोंदी है राणी, राजा भरो बो लिया।

नौकर माह्णु

औंदयां जो पुच्छे गोरी
जांदेयां जो पुच्छे
कि नौकर माह्णु कियां रैंह्दे
तेरी सौह नौकर माह्णु कियां रैंह्दे।

बह्णे बो बसूंटियां बच्छाण जे कीते
बांहीं बो सराह्णे देई सौंदे
तेरी सौह नौकर माह्णु इयां रैंहदे।

भरियां बंदूकां चमके पलीते
फिरी बो लड़ाईया जो जांदे
तेरी सौह नौकर माह्णु इयां रैंहंदे।

चढ़ी चबारें

चढ़ी चबारें चरखा कतदी
अम्मा मेरिए।
उपरे ते बरसेया रिमझिम मेघ वे
कोठे चरखा रंगीन ए।

भरियां बंदूकां राजा हेड़े जो चढ़या
मारी अंदा गनिहर नाग ए।
कणकां दियां पकाइयां सौकणी रोटियां
नी बैरनी रोटियां।

थाल्यिां च पाया गनिहर नाग ए
पहलें गराहें तिरमिरी लगी ए
दूजें गराहें मंदे हाल दे
अम्मा मेरिए वे
मरी बो जाणा जिंदे मौत होई ए।

बही लैणा

बही लैणा बही लैणा बही लैणा ओ...
पल भी बही लैणा ओ।
सुख दुख कही लैणा कही लैणा ओ

इस बो बड़ोटुए दिया छाउआं...छाउआं
पल भर बही लैणा बही लैणा ओ जिंदे।

पल भर बही के गल्लां करी लैणियां
कदी हस्सी लैणा, कदी हांखी भरी लैणियां
मने दा दुख सुख कही लैणा
कही लैणा ओ मित्तरा!

छलियां दी रोटी तां छाही दा कटोरा
सरूआं दा भुज्जू, आलूआं दा न्योड़ा
भत चिट्टयां चौल़ां दी
खाई लैणा ओ मितरा!

बही लैणा बही लैणा बही लैणा औ
इस बो बड़ोटूए दिया छाउंआं छाउंआं...।

फुलके पकांदियां

फुलके पकांदियां मैं गिणी गिणी
फुलके पकांदियां मैं गिणी गिणी
ओ जिंदे गिणी गिणी
मेरे खाणे वाल़े लोभी दूर।

खाणे वाल़े लोभी खाई जांदे
मजा पाई जांदे
लाई जांदे डुगढ़े तीर।

कपड़ेयां धौंदी मैं छुमी छुमी
ओ जिंदे छुमी छुमी
मेरे पहनणे वाल़े लोभी दूर
ओ मेरे लाणे वाल़े लोभी दूर।

सब्जी बणानियां मैं चीरी चीरी
ओ जानी चीरी चीरी
मेरे खाणे वाल़े लोभी दूर।

असां भेलयां घरां दे माह्णु
बचारिए नित नईं मिलदे ओ!

चले परदेस

अप्पू चले परदेस पिंजरे तोता पाई चल्ले
अप्पू चले परदेस बागें बूटा लाई चल्ले।

बारहां बरहियां गोरी कंध घरैं आया
आई रिहा ठण्डे बागें ओ...।
मिला मेरियो सइयो सहेलड़ियो
कंधें फिरि सेना जो जाणा ओ।
अजी खड़ेया खड़ोतया चंदा
मूरखें समझ नी आई बो।

अप्पू तां चले परदेस पंछी पिंजरे पाई चल्ले
कच्चियां कलि़यां न तोड़ मूरखा भलियां माह्णुआ
सुतेयां माह्णुआं न छेड़ मूरखा
सुतेयां दा दिल परदेस
उठी दिंदे गालि़यां।

खण्डा दी भरी है परात, मिसरी दी इक डली़
ऐहो देई चंचल नार, बिसरे न इक घड़ी
अप्पू तां चल्ले परदेस, अपणियां गोरिया छडी चल्ले
अप्पू तां चल्ले परदेस, पंछी पिंजरें पाई चल्ले
कियां करी कटणी बरेस, कदिं तुसां घरैं औणा।

हस्सी हस्सी कटणी बरेस, कल असां घरैं औणा
सस्सु दी करेयां गोरिए टेहल, ऐहा मेरी आज्ञा है
देर सह घरै दा बजीर, मंदा मत बोलदी
सस्सु जो समझेयां गोरिए माता, सौहरे जो पियो जी।

सस्स न बणे मेरी माता, सौहरा न बणे पियो जी
देर सह बणे सरीक, फिरी दिंदे गालि़यां
सद्दा नैणा जो, मैं सिर गुंदाणा
सद्दा कहारां, पालि़किया, मैं पैइयां जाणा।

गंगी बजोगण

बूट तां तिज्जो गंगिए मापियां लई दित्ते
तस्मियां लई औए ठाणेदार।

अड़ौसी पड़ौसी ओ गंगिए गोह्रें रोंदे
रिह्लुए दा रोंदा ओ ठाणेदार
गंगी ओ बजोगां दी मारी।

कपड़े तां तिज्जो गंगिए मापियां लई दित्ते
सिलमां लई औए ठाणेदार
गंगिए ओ जमेदार गंगिए।

बेसर तां गंगिए तिज्जो मापियां लई दित्ती
मोतियां लई औए ठाणेदार
ओ गंगिए...।

अड़ौसी पड़ौसी गंगिए गोह्रे रोंदे
रिह्लुए दा रोंदा ठाणेदार
गंगिए ओ बजोगां दी मारी।

नागर बेल

नागर बेल भाईयो रेल़दी मंझ बो बणे
नागर बेल भाईयो!
काल़ी कोयल़ बोलदी सरले अम्बें
नागर बेल भाईयो रेल़दी मंझ बो बणे।

गोरिया जो चप्पल़ां बराजदियां पैरां मंझें
सद्दा गोरिया जो
गोरिया जो घगरू बराजदा ढाकल़ू मंझें
नागर बेल रेल़दी मंझ बो बणे।

गोरिया जो कैण्ठुआ बराजदा हिकड़ू मंझें
गोरिया जो सलुआ बराजदा सिरे ओ मंझें
सद्दा गोरिया जो
नागर बेल रेल़दी मंझ बो बणे।

गोरिया जो बेसर बराजदी नक्के मंझें
सद्दा गोरिया जो
गोरिया जो बाल़ियां बराजदियां कन्ना मंझें
सद्दा गोरिया जो
नागर बेल रेल़दी मंझ बो बणे।

चल्ले नौकरी

जे तुसां चल्ले नौकरी राहिया बे
असां जो घरें छोड़ी चल्ले।
ओ असां किंयां कटणी राहिया
ओ हल्की बरेस बे।

ओ चरखें प्रीत लायां गोरिए
ओ कन्धा कने पिठ लायां।
ओ कती कती कटणी गोरिए
वे हल्की बरेस बे।

वे लिखी लिखी चिट्ठियां
वे राहिया बे।
ओ कोरे कागदां मैं भेजां
कियां कटणी वे राहिया
वे हल्की बरेस ओ।

ओ ससु जो मां बोलयां गोरिए
ओ सौहरे जो पियां बोलयां।
देरे जो बोलयां गोरिए
वो निकड़ा वीर बे।

सस मां न बणे राहिया
सौहरा बब न बणे।
देर न बणे वे राहिया
निकड़ा वीर बे।

चम्बा मैं लांदी राहिया
वो मरूआ मैं लांदी।
विच विच लानियां
वो असल गुलाब बे।

चम्बा खिड़ी रिया राहिया
ओ मरूआ भी खिड़ी रिया।
बिच बिच खिड़ी रिहा
ओ असल गुलाब ए।

उठी काल़जें पीड़

मेरें उठी काल़जें पीड़
मैं नीं बचदी।

तोल़ी सदाओ सौहरे जो
जिन्नी खरचेया डेढ़ हज़ार ओ
मैं नीं बचदी।

तोल़ी सदाओ जेठे जो
जिन्नी कीते बाजे तय्यार
मैं नीं बचदी।

तोल़ी सदाओ द्योरे जो
जेह्ड़ा रिहा जंजा दे नाल़
मैं नीं बचदी।

तोल़ी सदाओ उस कंते जो
जिन्नी फेरियां लाजां चार
मैं नीं बचदी।

इक बेड़ी

होरनी तां पतणा इक इक बेड़ी
जी इक इक बेड़ी
चंबे पतणे दो बेड़ियां
भला ओ मलाहिया जी, पहलैं पूरैं लंघी जाणा ए।

तेरे ताएं अम्मा बी छोड़ी
ओ बापू बी छडेया, जी बापू बी छडेया
भाईयां दी छोडियां दो जोड़ियां
असां ओ मलाहिया जी, पहलैं पूरें लंघी जाणा ए।

तेरे ताएं सस्सू बी छोडी, ओ सौह्रा बी छोडेया
देरां दिया छोडियां ओ दो जोड़ियां
ओ जानी भला ओ मलाहिया जी, पहलैं पूरे लंघी जाणा ए।

राजे दिए बेड़िए

राजे दिए बेड़िए, नि सौकणी तू मेरिए
तिजो पर डुल़ी गेया, मियां जसरोटिया।

चिट्टी नि चादरी मच्छी कंडे सीतिए
तिजो पर डुल़ी गेया, मियां जसरोटिया।

कुन्हीं चादर दीतिए, कुन्हीं चादर सीतिए
कुण लेई आया, बड्डा पियार ऐ।
अम्मा चादर दीतिए, भाबों चादर सीतिए
भाई लई आया, बड्डा पियार ऐ।

पूणी नि ओ मूकदी, तंद नि ओ टूटदी
सस नि ओ बोलदी, पाणिए जो जाणा ऐ।
डुब बो घड़ोलुआ, सिरे दिया बेरिया
सज्जण निहालदे निंबुआं दे बाग ऐ।

इक जोड़ा सूटे दा

इक जोड़ा सूटे दा
वो जानी मेरिए ओ...पैह्नण वाल़ियां दो जणिया वे
दोयो जणियां लड़ी पैईयां, ओ जानी मेरिए ओ...
ओ कंत परदेस ओ...।

उआरें उआरें मैं चलां, ओ जानी मेरिए ओ
पारें पारें तू चले ए।
दोआं विच वगदी रईए, ओ जानी मेरिए ओ
चंदरी बंडेर ओ...।

इक मन बोलदा, ओ जानी मेरिए ओ...
नदिया मैं डुब्बी मरां ए, ओ जानी मेरिए ओ...।
दुआ मन बोलदा, ओ जानी मेरिए ओ...
बालड़ी बरेस ओ...।

अम्मा मेरी रौंमदी, ओ जानी मेरिए ओ...
बापू मेरा झूरदा ए।

भाई मेरा तोपदा, ओ जानी मेरिए ओ...
नदिया दें फेर बो।

इक बक्ख खाई लेया, ओ जानी मेरिए ओ...
जल दिया जलेकिया।
इक बक्ख फस्सी रेया, ओ जानी मेरिए ओ...
सपड़े दे हेठ बो।

इक जोड़ा सूटे दा ओ जानी मेरिए ओ...
पैह्नण वालियां दो जणियां वे
दोयो जणियां लड़ी पईयां, ओ जानी मेरिए ओ
कंत परदेस ओ...।

काल़ी घघरी

यह गीत बिलासपुर में भी गाया जाता है।

सौहणी सौहणियां सिमले दियां सड़कां जिंदे
हाय छैल़ छबिलियां सड़कां जिंदे
काल़ी घघरी लयोयां ओ...काल़ी घघरी लयोयां ओ...

उड़ी जा बो कागा मेरा लई जा स्नेहा
लई जा स्नेहा हो
भ्यागा हुंदी मैं दुधा जो रिड़कां जिंदे
सौगी सस्सू दिया सुणा झिड़कां जिंदे
काल़ी घघरी लयोयां ओ...काल़ी घघरी लयोया ओ...

सौण महीने आई बरखां बहारां
होआ पाणी सौगी लयाईयां ठण्डियां फुहारां
ठण्डियां फुहारां हो
अधी राति जो द्वार मेरा खड़के जिंदे
काल़े बदलां च बिजली गड़के जिंदे
काल़ी घघरी लयोयां ओ...काल़ी घघरी लयोयां ओ...

नौकरिया छडी करी छोड़े घरैं आयां
छोड़े घरैं आयां फेरी कदी बी न जायां
कदी बी न जायां हो

कोई औंदा है पारलिया सड़का जिंदे
ओजो देखी करी दिल मेरा धड़के जिंदे
काली़ घघरी लयोयां ओ...काली़ घघरी लयोयां ओ...।

भरियां बंदूका

भरियां बंदूंकां राजा होया तयार
मारी जे लैणा छैले बागे दा मोर।

न तुसां मारयो राजा चिड़ियां तोते
न तुसां मारयो छैले बागे दा मोर।
क्या ओझे लगदे राणी चिड़ियां तोते
क्या ओझे लगदे छैले बागे दा मोर।

सस्सु दे जाया राजा चिड़ियां तोते
अम्मां दा जाया छैले बागे दा मोर
भरियां बंदूकां राजे खेलेया सिकार
मारी जे ल्यौंदा छैले बागे दा मोर।

उठो जी राणी तुसां करियो रसो
अब्बल बणायो छैले बागे दा मोर
सिरें भी पीड़ राजा बखिया भी पीड़
साढ़े ते नी बणदा छैले बागे दा मोर।

उठो जी राणी तुसां खाई लो रसो
अब्बल बणायो छैले बागे दा मोर
उच्चे जे चढ़ के राणिया दितियो है छाल़
जान गवाणी वीरा तेरे ही नाल।

हरिए नी भरिए

हरिए नी भरिए सब्ज खजूरे, पतलू़ जिन्हां दे पिउले़ ओ
कंत जिन्हां दे नित मसाफर, नारां दे क्या हीले ओ।

राज बिना कोई राजा जे झूरे, वैद बिना कोई रोगी ओ।
ओ कंत बिना कोई नार जे झूरे, तिन्नो फिरन बजोगी ओ।

उच्ची उच्ची रिढ़िया सीस गुंदांदिया, लम्मीयां रखदी लरजीं ओ
दिलां दा मैहरम कोई नी मिलेया, जो मिलेया अलगरजी ओ।

बागां दे बिच कोयल बोल्ले, मैं जाणेया कोई माली ओ
कढी कालज़ा हाजर कीत्ता, पिंजरा रेही गिया खाली ओ।

टुटिया फटेया फटा पराणा, कोई नीं सींदा दरजी ओ।
दिलां दा मेहरम कोई नीं मिलेया, जे मिलेया अलगरजी ओ।

फटेया चोल़ा होया पराणा, ना सीए कोई दरजी ओ
दिलां दा मेहरम कोई नीं मिलेया, जे मिलेया अलगरजी ओ।

गद्दण

बाड़िया दे बणे राजा हेड़े जो चलेया
गद्दण तमासे जो आई ओ
चार सपाही राजें दड़ बड़ भेजे
गद्दण बांकी चुकी डोलें पाई ओ
मेरेया बांकेया राजेया।

छोड़ छोड़ राजा मेरे सालुए दा लड़
मैं तां नार पराई ओ
मेरेया बांकेया राजेया।
भूईंयां दा सौणा गद्दणी छोड़ी छोड़ी देणा
पलघां दे सोणे जो आ बो
मेरिए बांकिए गद्दणी।

पलघां दा सौणा तुसां राजेयां जो बणदा
जी राणियां जो बणदा
भूईंयां दा सौणा असां जो
मेरेया बांकेया गद्दिया।
लूंहडे दा खाणा गद्दणी छोड़ी छोड़ी देणा
सूने दे थालां च खाणा बो
मेरिए बांकिए गद्णी।

थालां दा खाणा राजेयां राणियां जो बणदा
लूंहडे च खाणा असां दा
मेरेया बांकेया राजेआ।
उन्नी दा चोल़ा गद्दणी छोड़ी छोड़ी देणा

रेशमी पोशाकां पा बो
मेरिए बांकिए गद्दणी।

रेशमी पोशाकां राजेया राणियां जो बणियां
उन्नी दी चोल़ा असां जो
मेरेया बांकेया राजेया।
इक दिन राजा गद्दणी छल़ी छल़ी पुच्छदा
गद्दी पिआरा कि मैं बो
मेरिए बांकिए गद्दणी।

थोड़ी थोड़ी ममता राजा तुसां दी बी लगदी
गद्दिए दे नाएं लगदी छुरी ओ
मेरेया बांकेया राजेया।

थोड़ी थोड़ी बुरी राजा छेलुआं दी लगदी
राजा भेडुआं दी लगदी
गद्दिए दे नाएं बजदी छुरी ओ
मेरेया हरिसिंघा राजेया।

महंलां दे हेठ गद्दी भेडा जे चारे
मुरलिया रूणक सुणाई बो
मेरेया बांकेया गद्दिया।

गद्दण (रूपांतर)

लई के नगारे जो राजा हेड़े जो चलेया
लोक तमासे जो आए, जिया हो...
मेरेया हरिसिंघा राजेया।

लौंगा दे बागें गद्दण बकरियां चारदी
राजे दिया नजरी पई, जिया हो...
मेरिए हीरां गदरेटिए हो।

थोड़ी तां थोड़ी राजा साह्बां दी लगदी
गद्दिये दी बज्जी जांदी छुरी, जिया हो
मेरेया हरिसिंघा राजेया।

ओ छोड़ी तां देणा ओ गद्दणी प्हाड़ां दा हंडणा
कि तेरी सौह प्हाड़ां दा चलणा
पधरे गुलेर जो जाणा, जिया हो
मेरिए हीरां वो गदेटड़िए।

यह गीत गुलेर के राजा हरिसिंह और हीरां गद्दण की प्रेमगाथा है। बकरियां चराती हुई गद्दण राजा हरिसिंह को भा गई। वह उसे रानी बना गुलेर ले गया। हीरां गद्दण को अपने गद्दी के नाम से छुरी सी चल जाती है जो पीछे छूट गया है। महलों के नीचे गद्दी का भेड़ें चराना और गद्दण का मुरली की तान सुनना हृदयग्राही है।

भागसूए दिया धारा

भागसूए दिया धारा ओ गद्दणी
भेडा चारणा जाणा ओ।
पैरां दी मैं नंगी ओ दयोरा
गोदिया बालक याणा ओ।

पैरां जो मैं मोचड़ू लई दिंगा
बालक मैं खलाणा ओ
भागसूए दिया धारा ओ गद्दणी...।

भागसूए दिया धारा ओ गद्दणी
घाए बढणा जाणा ओ।
अंगे दी मैं नंगी बो दयोरा
गोदिया बालक याणा ओ।
अंगे जो मैं चोलणी लई दिंगा
बालक मैं खलाणा ओ
भागसूए दिया धारा ओ गद्दणी...।

भागसूए दिया धारा ओ गद्दणी
लकड़ुआं हुंजणा जाणा ओ।
सिरे दी मैं नंगी ओ दयोरा
गोदिया बालक याणा ओ।

सिरे जो मैं सलुआ लई दिंगा
बालक मैं खलाणा ओ।
भागसूए दिया धारा ओ गद्दणी...।

मेला नंदपुर दा

ओ मेला नंदपुर दा
ओ मेले तां जाणा जरूर।

मेले तां जाणा, सौगी चल्ले मेरा देर
ओ मेला...।

मेले तां जाणा, घघरूए चुके मेरा देर
ओ मेला...।

अट्ठां गजां दी घघरी सियांदी
दस्सा गजां दो फेर।
ओ मेला...
मेले तां जाणा, सौगी चल्ले मेरा देर।
ओ मेला...।

कूंजां

उडदियां कूंजां जाई पुजियां पठियार
भाभो मंगदी गल़े जो हार
इक गल सुणी लेआं देरा!
ओ मेरेया बांकेया देरा!

ओ कूंजां जाई पईयां बरोट
चिट्टे दंद गुलाबी होठ
इक पल बही लेयां देरा!
ओ मेरेया बांकेया देरा!

कूंजां जाई पईयां कलेसर
भाभो तोल़े दी मंगदी बेसर
तुरंत घड़ाई दंयां देरा!
ओ मेरेया बांकेया देरा!

कूंजां जाई पाईयां मंडिया
साग रिझदा काल़िया हण्डिया
दुध भत खाई जायां देरा!
ओ मेरेया बांकेया देरा!

ओ कूंजां जाई पुजियां पपरोल़ें
भाभो रोंदी डुघड़े खोह्ल़े
कि इक गल्ल सुणी जाया देरा
ओ मेरेया बांकेया देरा!

इंदरदेई

कुथू ते उगमी काल़ी बादली
ओ! मुंडेया पृथीसिंघा!
कुथू ते उगमेया ठण्डा नीरे वे हां।

छातियां ते उगमी काल़ी बादली
ओ कुड़िए इंदरदेईए!
नैणा ते उगमेया ठण्डा नीर वे हां।

कुन्हीं तां रंगी तेरी पागड़ी
ओ! मुंडेया पृथीसिंघा!
कुन्हीं ता कढेया रमाल वे हां।

भाबो तां रंगी मेरी पागड़ी
ओ! कुड़िए इन्दरदेईए!
नारां तां कढेया रमाल वे हां।

बिज तां कड़के तेरिया भाबिया
ओ! मुंडेया पृथीसिंघा!
नारा जो डसे काल़ा नाग वे हां।

बिज तां हुंदी साढ़ी कुल़ज
नी कुड़िए इंदरदेईए!
नाग तां कुले दा परोह्त वे हां।

यह गीत बिलासपुर में गाए जाने वाले 'मैहलां हेठ जांदेया ओ नौकरा...' से मिलता है। इसका एक अन्य रूप भी गाया जाता है–

पारे जांदेया नौकरा! ओ चाकरा!
कीनी रंगी तेरी पागड़ी, कीनी कढ़िया रमाल
भैणी रंगी मेरी पागड़ी, नारे कढ़िया रमाल।

केही जेही तेरी भेनड़ी ओ, केही जेही तेरी नार
तेही जेही मेरी भेनड़ी ओ, तेते सुआई मेरी नार।

नारां देयां तू छडी ओ नौकरा, दो नैणा रिया मारेया।

भला मियां

भला मियां मनेजरा ओ...

राहे बिच बंगलू तेरा, तेरी सौह राहे बिच बंगलू तेरा
पल भर बौहणा दे।
भला मियां मनेजरा ओ...

मालतिया दिया छौंआं, तेरी सौह मालतिया दिया छौआं
छिन भर बौहणा दे।
भला मियां मनेजरा ओ...

डुंड बड़ी दे टियाले़, तेरी सौह डुंड बड़ी दे टियाले
पल भी बौहणा दे।
भला मियां मनेजरा ओ...

कामलूए दिया बाईं, तेरी सौह कामलूए दिया बाईं
दो घुट पीणा दे।
भला मियां मनेजरा ओ...

कुछड़ बालक याणा, तेरी सौह कुछड़ बालक याणा
दुध पियाणा दे।
भला मियां मनेजरा ओ...

जेठ महीने दियां धूपां, तेरी सौह जेठ महीने दियां धूपां
छतरिया ताणी दे।

छींबी (धोबण)

रूपांतर : यह गीत चंबा के राजा और छींबी या धोबण की प्रेमकथा कहता है।

कीधर देसे दी आईणी धोबण
कीधर देसे ओ जाणा ना
दक्खिण देसे दा आईणी धोबण
पच्छिम देसे ओ जाणा ना।

कपड़ेयां धोंदी नीं धोबण
छमां छमां दियां रोंदी नां
खौल्ला खौल्ला पाणी ई नदिया
गहरा गहरा लिभदा नां।

सुरती दिक्खी भूलैं ना बो राजा
जाति दी मैं छींबी नां।

खबरा गईयां ओ राजा
चम्बे दियां राणिया नां
सुरती दिक्खी भुल्लैं ना ओ राजा
जाति री मैं छिंबी नां।

सद्दियो मंगा दा राजा
जिन्हां इन्हां कहारां नां
चुक्किया डोला़ बो कहारां
लित्ता इन्हां महलां नां।

सब्बा सौ मण चौल़ बो राजा
धामा जो लाए नां
जहर खादा बो राणियां
मरी तां गईयो नां।

चनणै दा रूक्ख कटाया
चिक्खा च चणाया नां
चैत्रा म्हीने बो धोबणी
गीति गाई ए नां।

श्रमगीत

खेतों में काम करते हुए, जंगल से लकड़ियां ढोते हुए श्रम की थकान दूर करने के लिए महिलाएं गीत गाती हैं। इन गीतों को श्रमगीत

भी कहा जा सकता है।

बारा बरियां अंबरे बरहे् जो होईयां
जी अंबरे बरह् जो होईयां
कैदे उंह्गें खेती लाणी बो मेरे राम।
बारा बरियां कंते रूस्यो जो होईयां
कैदे उंह्गे सैंडल पाणे बो मेरे राम।

अंदर जांदी गोरी कोपे दी मारी बो
गोरी सैंण्डलां खोह्ड़ी डबिया पांदी।
बारा ता बरियां कंते रूस्यो जो होईयां
कैंदे उंह्गे घघरू लाणे बो मेरे राम।

घघरूए खोह्ड़ी गोरी बक्से च पांदी।
बारा ता बरियां कंते रूस्यो जो होईयां
कैदे उंह्ग बेंसरा लाए बो मेरे राम।

अंदर जांदी गोरी कोपे दी मारी बो
गोरी बेसरा खोह्ड़ी डबिया पांदी मेरे राम।

ऋतु गीत

1

नां लईए सीरी ठाकरां जिन्हां ए उम्र बणाई
दूजा नां लईए देवी माता नगरकोटे दी राणी
तीजा नां लईए माई बाप दा जिन्हां एह रचेया संसार
ए जी आया चैत सतर सीयां गुणदयां
सुणदेयां धर्म जे होवे...।

ए जी बज्जण संख रामा मुरलियां
गौरजां तेरा ब्याह भी होवे
वेद गड़ावयो पिपले पत्ते लाओ सेहरे
मेरी गौरजां जो लगाओ मगरू दे कपड़े
गौरजां दे गल चुन्नी लगाओ
गौरजां जो पुच्छण लग्गी सहेलियां
वे वर कजेहा पाया...।

2

सुण ससु जी! सावण आया जी! बूंदा बरस रहियां
सुण ससु जी! इक पुतर होसारा, ओ बी कंत गोरी दा
ओ बी परदेस गया।

सुण गोरिए जी! चन्द्रावली गूजरी जी!
ओहदे नैण रसीले जी
जिन्हा ढोला मोही लेया।

3

घणी घणी दरेकां फूलियां, ठण्डी जिन्हां री छांव
रे बीर भाई चलो, मिंजों जाणा अम्मां रे देस।

अग्गे जे भैणे, अग्गे भैणे मिरग जे गुंजदे
जिंदी बी लैणी तू खाई, रे बैहणे रैह सासु रे घरे।

मिरगा जो ता बीर, बकरे जे देंहगी
मिंजो जाणा अम्मा रे देस, रे बीर भाई चलो।

अम्मां जो गुजरे छह म्हीने हुए, तिथि तू मिलणा किसने
रैह बैहणे घर अपणे।

अम्मां जो न मिलगी रे बी कन्धा ता मिली औंहगी
मिंजों बी जाणा अम्मां रे देस, रे बीर भाई चलो।

जेठ महीना

जेठ महीने धुप्पां जे लग्गियां
पखुए लई ने खड़ोई रहियां।

औंदे कंते पल छिन भाल़ा
पखुए लई ने खड़ोई रहियां।

कौण वे कृष्णा मुरलिया बोले
मैं सुणी ने बतौरी होई रहियां।

चैत्र गीत (ढोलरू)

कांगड़ा में चैत्र मास का नाम चैत्र गीत डोम लोगों द्वारा घर-घर जाकर गाकर सुनाया जाता है। इन्हें 'ढोलरू' कहा जाता है।

पहला ता नां लैणा नारायण दा
जिन्हीं दुनिया बसाई ए
दुआ ता नां लैणा माई बाप दा
जिन्हा दस्या संसार ए
तिजा ता नां लैइए गुरू आपणा
झड़दे काया दे पाप नां
सब्बे ता रितु रामा फिरि फिरि रहियां
मानस फिरि ना औए नां।

आया ता चैत बसाख
जे कोई सुणैं भाग मान नां
इंदड़ा गिया घर अप्पणे
आई सो दी बहार नां
तुलसी डाली ता गोरिए ना लेइए
तुलसी जाति दी बमनेटी

मरूआ डाली ता गोरिए ना लेइए
मरूआ जाति दा कदरेटा ए
कौल्लेह दे फुल्ले ता गोरिए न लेइए
कौल्ला फुल्ल ठौकरें प्यारा

सीता चल्ली ए पाणिए
हत्थें लिया सीस घड़ोलू
पुच्छणा लेई राजे रामचंदे
सीता रहियो बढ़दी बहार।

2

चैत्र मास में 'ढोलरू' गायन में चैत्र मास का नाम सुनाने के साथ-साथ कुछ और गीत व कुल्ह जैसी गाथाओं का गायन भी किया जाता है। प्रस्तुत गीत में गज्ज नदी के किनारे दो राजाओं (जो मामा-भानजा थे) के युद्ध का वर्णन है। इस गीत को 'घोड़ी' कहा जाता है।

नीलिए नीं घोड़िए

नीलिए नीं घोड़िए, लाखिए हांजी नां...
दूमसु रंगे तेरे मैंहदिये हांजी नां

ओ जाई खड़ोती बड़ी दे टयालें हांजी नां
गज्जा लां दे बणे ओ लागिया
लडाईयां हांजी नां
मामा जे भाणजे दिया लग्गियां
लडाईयां हांजी नां
मामे ता हुण भाणजा मारी ता
लिया हांजी नां
गज्जा लां दे बणे
मुंडियां दे टेड़ले हांजी नां
ढाई घड़ियां खून्नें दी गज्ज
बग्गी हांजी नां।

3

इस ढोलरू गीत में चाची द्वारा अपने दो भतीजे राणाओं को चैत्र मास में भोजन में जहर मिलाकर मारने का उल्लेख है।

बुढड़िया जां माईया राणे ओ दोएओ बेटड़े पर जायो नां
बुढड़ियां जां माईया राणे ओ दोउओ बेटड़े पर जायो नां
लोई नरैंणे लाइयां ना
बरिह्या दे...
दूई बरिह्या दे होए मेरे दोएओ राणे सिरीनगरा चली जांदे नां
दूई बरिह्या दे...
सिरीनगरा जो जांदे मेरे दोएओ राणे होर क्या कमादें नां
छक्कुएं जां छाबडूएं दोएओ राणे फुलडूआं जां चगैंदे नां
फुल्लां जां चगैए मेरे दोएओ राणे होर क्या कमांदे नां
फुल्लां जां चगैए मेरे दोएओ खिन्नूआं जा खेलदे नां
लटपटिया पगड़िया बन्हदे त्रेडड़ेओ दोमाह्णे नां
पगड़ियां लै बन्हीं दोएओ मेरे राणे हारां जां परोंदे नां
हारां जां परोंदे मोर दोएओ राणे पगड़ियां पर धरदे नां
पीड़े जां घोड़े दोएओ राणे होए रैंह्दे त्यार नां
लै जां घोड़े दोएओ राणे होए रैंह्दे सुआर नां
ओ तेरिया जां परोल़ी ओ चाचिए दो परोह्णे बणी आए नां

क्या क्या खातर करिए परोह्णेया दी क्या क्या आदर करिए नां
झिंझण जां गाड़ चाचिया लै धामा जो लगाया नां
ओ पंजसत लुंगा चाचिया जैह्र मौह्र पाया नां
जांदेया जां ला राणेया चाचिया पंदी दित्तियां बछाई नां
भला लोटेयां जां गड़बियां दोएओ राणे धामा खाणा मंगाए नां
पैह्लें जां ग्राहें दोएओ राणेयां जो तिरमिरी जां लग्गी नां
दूए जां ग्राहें दोएओ राणे जांदे ना ओ समाई नां
भला बैरनी ना बैरनी चाचिया बैर लेया कमाई नां
भला चन्नण जां कटाया लै चाचिया चिखा दित्ती रचाई नां
बैरनी जां केसी चाचिया बैर लेया ओ कमाई नां
मैह्लां देओ कण्डे लै चाचिया दाग दित्ता ओ दुआई नां
भला चैत्र जां म्हीने राणेया दी गीति दित्ती गुआई नां।

ढोलरू गायन में रल़ी गीत

चैत्र मास में कन्याओं द्वारा घरों में 'रल़ी पूजन' किया जाता है। इस परंपरा के पीछे 'रल़ीशंकर' की कथा है। ब्राह्मण कन्या रल़ी का विवाह शंकर से तय हुआ जो निरा बालक था। रल़ी नदी में कूद गई और उसके पीछे शंकर और रल़ी का भाई भी कूद गया। चैत्र मास में घरों में कन्याओं द्वारा रल़ी पूजन किया जाता है और वैशाखी को रल़ी का ब्याह कर उसे नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। रल़ी पूजा का उल्लेख ढोलरू गायन में भी किया जाता है।

आया बधोआ लगी गईंयां जातरां
कुड़ियां अड़ियां पाईयां नां।
देया नी माए मेरे फुलां दिए छकुए
मैं रलि़यां पूजण जाणा नां।
देयां नी माए मेरे पैरां देई झांझरां
मैं छणमण करदियां जाणा नां।
देयां नी माए मेरे ढाके दे घाघरे
मैं कूबर पांदिया जाणा नां।

मुख्य रल़ी गीत हमीरपुर में दिए गए हैं।

बंसरिए बो भैणे

बंसरिए बो भैणे बड़ी ओ प्यारिए
चल बिंदराबण जाई ओ बस्सिए।

चिड़ियां दे बच्चे ओ भैणे अपणे नीं बणदे
कितणा भी चोग चुगाई ओ दस्सिए।
लोकां दे बच्चे ओ भैणे अपणे नी बणदे
जितना भी लाड लड़ाई ओ दस्सिए।
बंसरिए नीं भैणे बड़ी ओ प्यारिए
चल बिंदराबण जाई ओ बस्सिए।

बारामासा-1

1

चैत न तू जाईं ढोला
बांदी ए बहार
बसाख सः दुप्पटे मैं सींदी वे हां।
जेठ न तू जाईं ढोला धुप्पां जोर जोर
हाड़े च हांखीं दुक्खण तेरियां
सौण न तू जायां ढोला बद्दल़ घनघोर
भाद्रूएं रातीं न्हेरियां।

सूज न तू जाईं ढोला पितर सराध
कात्तीं बिच बलन दयालियां वे हां।
मग्घर न तू जाईं ढोला ल्हेफ भरां
पौहे बिच सेजां बच्छाणियां वे हां।

माघ न जाईं ढोला लोहड़िया तिहार
फौगणे च नारां खेलण होलियां।

2

बसाख बसंबर वासुदेव, फुल वामन हरमन हारे।
पद्मनाभ परमेसर सिमरूं, परसराम बलकारे जी।।
हरि नाम हृदयधारी लीजो जब लागे प्रभु के सरनम
हरिभक्त अरे हरि भजन बिना
तुद बिन भवसागर किस विध तरनम।।

जेठ जपो जगदीश सदा प्रभु
यम के त्रास निवरणम।
नाम लेत सब पाप कटत हैं
हुण क्या गाफल करणम।
भक्त बच्छल भगवान भजो
सब संकट दोष निवरणम।
हरि भक्त अरे भजन बिना।।

हाड़ हरि का नाम जपो
पुन हृदय हरि जी धारो
अलख निरंजन निराकार नरसिंह
ध्यान बिच धारो जी
भक्त प्रल्हाद की मुक्ति करे
जब लगे प्रभु के चरणम।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

सौण श्याम सलोनों सिमरो
सुभ जुग के सुखदाई।
मोर मुकुट पट चीर बराजे
बलिभद्र के भाई जी।
मुरली के घनघोर सुनी
मृग, पंछी छिपी रहे हरि चरणम।
हरि भक्त अरे हरि भजन बिना।।

बारामासा-2

इस बारामासा गीत में ससुर अपनी बहू से कहता है कि तुझमें यदि हिम्मत और चतुराई है तो अपने पति को घर से दूर जाने से रोक ले। पत्नी सभी ऋतुओं को गिनाकर पति को रोकना चाहती है। अंत में वह उसे तख़्त लाहौर जाने को कहती है जहां नौकरी करके सबके लिए कुछ न कुछ लाएगा और सबसे ऊपर अपने माता-पिता की सेवा करेगा।

उच्चे तां महलां नूंह खड़ी रही ए, सौहरे दिया नजरी पई गई
क्या नीं नूंहे तेरा मैला मैला भेस, किन गुणा भांवरी तू हो रही।

पुत्तर ता तेरा सौह्‌रेया चलेया परदेस, इन्हां गुणा भांवरी मैं हो रही
तिज्जो तां जाणा नूंहें चतर सुजान, जांदे मसाफरे जो मोड़ी ले।

चैत्र न जायो पिया फुल्ल फुले, बसाख महीने दाखां पक्कियां
जेठ न जायो पिया धुप्पां दे जोर, हाड महीनैं अम्बियां पक्कियां।

सौण न जायो पिया नदियां चढ़ियां, भांदू महीनैं रातीं न्हेरियां
अस्सू न जायो पिया ल्हेफ भरां, कतके दियाल़ी बाल़णी।
मघर न जायो पिया पाल़े पौंदे, पोह महीनैं लोहड़ी बालणी
माघ न जायो पिया सीतां दे जोर, फगण महीनैं होल़ी खेलणी।

शाबाश! नी नूंहें तू चतर सुजान, जांदा मसाफर तैं मोड़ी लेया
जायां ता जायां पिया तख्त लाहौर, जांदे दी लग्गी जायो नौकरी।

पहलें मनायां अपणे बापूए, जांदा ही पैसे भेजयां
फिरी मनायां अपणेयां भैण भाऊआं, उन्हां दी तरक्की करेयां।

फिरी मनायां पिया अम्मा तू अपणियां, तीरथ बरत करायां
फिरी मनायां पिया नारा तू अपणियां, उसा दा मान पान रखेयां
असां तां पिया सारे छोटे मोटे हन, माता पिता दी सेवा सोचेयां।

छह मासा

चैत्र दे म्हीने श्यामा
मैं तां चैत्र फुल्ल चुगनियां।
हत्थ छाबड़ी गल़ें फुल्ल माल़ा
मैं हरी जी दा नां ध्यानियां।

बसाख दे म्हीने श्यामा
मैं बसाखड़ी पुहाणा जानियां
हत्थ गडुआ मुंहडे पर धोती
मैं हरी जी दा नां ध्यानियां।

जेठ म्हीने श्यामा
मैं तां जेठे ते झूंड नी पानियां
मेरा हस्सणू खेलणू बड़ा हंसोला
मैं झूंड नी पानियां।

हाड़ दे म्हीने श्यामा
दोयो खिड़ी रईंयां चंबे डालियां
इक उआर खड़ी एं दूई पार खड़ी ए
दोयो राम का नां ध्यानियां।

सौण दे म्हीने श्यामा
मैं तां भूरी म्हैस मंगानियां
मेरी भूरी मैंह बड़ी है दोह्दण
किसिए जो चूरी नी पानियां।

भादूं म्हीने श्यामा
मैं ता मिठड़ा दही जमानियां
मेरे श्याम चले परदेसां जो
मैं ता जांदेया सौगण मनानियां।

सतमासा

चढ़िया म्हीना चैत्र, चैत्र फुल्ल लाया जी
जिन्हां दे कंत परदेस, उन्हां नी लाया जी।

चढ़िया म्हीना बसाख, अंगणे पक्की दाख
दाखा प्यारियां पक्कियां
जिन्हां दे कंत परदेस उन्हां नीं चक्खियां।

चढ़िया म्हीना जेठ, जेठे ज्वाला जगमगी
सुकी जांदे नदियां दे नीर
सुकण सरीर दर्द नमाणी ए।

चढ़िया म्हीना हाड़, हंडी पुकारे
जोबन ढ़िया
हत्थें तलुआर कुसी मत मारदी।

चढ़िया म्हीना सौण, सौहणें रहण धनी
सुन्नी थी हरी जी दी सेज, राधा तड़फदी।

चढ़िया म्हीना काल़ा, कि काल़ियां रातीं न्हेरियां
जिन्हां दे कंत परदेस, उन्हां सोचां घेरियां।

चढ़िया म्हीना अस्सू, सुणेयां मेरिए ससु
मैं करदी सोलह संगार, सीस गुदांदियां।

तुसां चल्ले परदेस

नौकर मसाफरां जिन्हां पीड़े घोड़े
तुसां चल्ले परदेस स्हाड़े जिगरे थोड़े।

चैत्र न जाई पिया फुल्ल हर भांत,
बसाख तां दाखां प्यारियां पक्कियां।

जेठ न जाई पिया गरमी दा जोर,
हाड़ तां अम्बियां पक्कियां।

लैरें न जाई पिया बरखा दा जोर,
काले तो रातीं न्हेरियां।

होली गीत

1

मुझ को सांवरे ने गारी दई
दई मैं तो कुछ न कही
मुझ को सांवरे ने गारी दई।

आप श्रीकृष्ण पार उतर गये
दिखदी मैं दिखदी रही
रही, मैं तो कुछ न कही।

आर गोकलिया पार मथुरा
बीच में जमुना बही
बही, मैं तो कुछ न कही।

गारी की गारी, टोने का टोना
मैं तो कुछ न कही
भई! मैं तो कुछ न कही
मुझ को सांवरे ने गारी दई।

2

रंग दे चुनरिया रंग दे लाल
मंग मेरे पिया से रंगाई

मंग लै लाल
चुनरिया रंग दे लाल।

जो मेरे पिया रंगाई न देवे
मेरा जोबण गहणे रख ले लाल
चुनरिया रंग दे लाल।

मेरी चुनरिया मेरे पिया की पगरिया
दोनों बसंती कर दे लाल
मेरे पिया से रंगाई
मंग लै लाल।

3

जसोधे तेरा बालक
गारियां दई वे दूंगी
वे काह्ना!
मैं गारियां दई वे दूंगी।

दुध दहीं वे छोड़ के
तू खटिया छाही खाना वे
तू अपणा आप गुआना वे
तू झूठोंझूठ गलाना वे
जसोधे तेरा बालक
मैं गारियां दई वे दूंगी।

घरें दियां सेजां छोड़ के
तू गुजरियां बिच रैहना वे
तू अपणा आप गुआना वे
तू झूठोंझूठ गलाना वे
जसोधे तेरा बालक
मैं गारिया दई वे दूंगी।

4

चैत्तर म्हीने होली़ जे आई
मैं तां किस संग खेलां रे होली़

मेरे स्यामा घरैं नी आए जी।
मैं तां किस संग खेलां रे होल़ी!!

तुरही बे नगारा लई गल़े बिच पाया
तुरहियां नरसिंगे कन्ने लई आया
हुण असां खेलणी होल़ी होल़ी।
मैं तां किस संग खेलां रे होल़ी!!

कहां से आए मेरे काह्न कन्हैया
मेरे छैला
कहां से आई मेरी राधा पियारी
मेरे रामा
मैं तां किस संग खेलां रे होल़ी!!

बागां ते आया मेरा काह्न कन्हैया
महलां ते आई राधा पियारी
अनी छैला
भरी पिचकारी मेरे मुंहे पर मारी
बेसर भिजी गई सारी।
मैं तां किस संग खेलां रे होल़ी!!

5

आ स्यामा
तेरे ते रंग पां होल़ियां दा
बदला मैं अज लेआं।

मोहन स्याम मुरारी ए
भरी पिचकारी स्यामा मारी ए
ओह्यो जेहा रंग असां जो लाणा
होल़ियां दो बदला मैं अज लेआं।

सब सखियां मिली सारी ए
राधा रुक्मण पियारी ए
लुट लुट मक्खण अज खाणा
होल़ियां दा बदला अज मैं लेआं
आ स्यामा तेरे ते रंग पां।

6

फूले बसंत पिया घर नाहीं
मैं किस संग खेलूंगी होरी!

पहला बसंत सदासिब कहिए
पारबतिया रंग ला लै
अज पिया अपणे को मना लै।

होर बसंत सिरीरामचन्द्र कहिए
सीता गोरी रंग ला लै
अज पिया अपणे को मना लै।

होर बसंत गणपति कहिए
रिद्धि सिद्धि रंग ला लै
अज पिया अपणे को मना लै।

छुट्टियां दी मंजूरी

लिखी लिखी चिट्ठियां मैं कंते जो भेजदी
छुट्टियां दी लैणी मंजूरी ए।

पेहलिया चिट्ठिया कंता सुख दुख लिखिया
दूजिया चिट्ठिया मंदे बोल ए।

जंघां तां होईयां कंता सेह्ल पराल
पिट्ठी तां होया लसकारा ए।

मेरा तां तेरा गोरिए बड़ा बो प्यार
मेरे कने बोल्यां मंदे बोल।

तू कजो झूरदा नमाणेया पंछिया

तू कजो झूरदा नमाणेया पंछिया...नमाणेया पंछिया
तिजो भी रिजक भतेरा
कि करमा दिया हिणेया।

रिजक था स: चिड़ियां चुगेया...जी चिड़ियां चुगेया
मिंजो भी रही गिया थोड़ा
कि करमा दिया हिणेया।

कागज होए ता फाड़ी जे सट्टिए
ए जिंद फाड़ी नी जांदी
कि करमा दिया हिणेया।

जी धागा होए ता तोड़ी जे सट्टिए
ए जिंद तोड़िए नी जांदी
कि करमा दिया हिणेया।

जे तू चलेया

जे तू चलेया चम्बे चाकरी ओ ढोला...
मेरे गरी ते छुहारे लैंदा जायां, छैला़ ओ...
जे तिजो लग्गे मेरी बेदणा
गल़े लाई कने सौयां, नैणा देया लोभिया।

जे तू चलेया चम्बे चाकरी
ओ मेरे सिरे दे सालूए लैंदा जायां, छैल़ा ओ...
जे तिजो लग्गे ठण्डड़ी तां
तम्बू ताणी करी सोयां, नैणा देया लोभिया।

जे तू चलेया चम्बे चाकरी
ओ मेरे नक्के दे बालूए लैंदा जायां, छैला ओ...
जे तिजो लग्गे मेरी बेदणा
तू सब्बी जो दिखायां, नैणा देया लोभिया।

जे तू चलेया चम्बे चाकरी
ओ मेरे गरी ते छुहारे लैंदा जायां, छैला ओ...
जे तिजों लग्गे कंता भूखड़ी
बही करी खाया, नैणा देया लोभिया।

जे तू चलेया चम्बे चाकरी
ओ मेरे हत्थे दे चूड़े लैंदा जायां, छेला ओ...
जे तिज्जो लग्गे मेरी बेदणा
ताह्लू हिक्का कने लायां, नैणा देया लोभिया।

बारांह् तां बरियां

बारांह् तां बरियां सस्सू ब्याहे कीते होईयां
पुत्तर मेरा नजरी नी आया ए।

काह्ली न होयां नूहें, बौरी न होयां
पुत्त मेरा बागां जो आया ए।
कुथू बछां सस्सू कंदे दे पलंगे
कुथु बछां अपणी मंजी ए।
ओबरिया बछायां नूंहे कंदे दे पलंगे
उच्चिया पसारी तेरी मंजी ए।
अग्गैं कियां दिंदी सस्सू सुक्के सुक्के टुकड़े
अज्ज कियां घ्योये दी चूरी ए।
अग्गैं तां था नूहें सौहरे दा खट्टेया
अज तेरे कंदे दा खट्टेया ए।
पैह्ला ग्राह पाया राजे दिंया बेटिया
ओठां तिरमिरी आई ए।
दूजा ग्राह पाया राजे दिया बेटिया
राजे दी बेटी गई मरी ए।
बारहें ता बरहें माए! मैं घरैं आया
नूह तेरी नजरी नी आई ए।
निंदरा दी काह्ली पुत्तरा! चिंता दी मारी
राजे दी बेटी गई सोई ए।
उठदा कंद जी बागां जो जांदा
तूते दी छट्टी ल्याया बड्डी ए।
इक छट्टी मारी कंदे दूई छट्टी गूरी
राजे दी बेटी नईं जागी ए।
दूई छट्टी मारी कंदे त्री छट्टी गूरी
राजे दी बेटी नईं जागी ए।
चुकेया ए हत्थ कंदे मुंहें पर फेरया
राजे दी बेटी रेही एक मरी ए।
चन्नण कटाया कंदे चिखिया चणाई
नारी जो दाग दुआया जी।
हड्डियां बटोलि़यां कंदे बटूए च पाईयां
गंगा जमना रढ़ाईंयां ए।
कन्न तां छेदे कने मुंद्रां जे पाईयां

कीता ए जोगियां दा भेस ए।
मरि मरि जायां माए मुंढा दिए बैरनी
मूइया जो मार दुआई ए।
जोगी मैं होया माए बरागी मैं होया
तेरे देसे माए कदि भी नी औंगा
मूइया जो मार दुआई ए।

यह एक मर्मस्पर्शी गीत है। बारह वर्ष बाद पुत्र घर आता है। मां ईर्ष्यावश बहू को मीठी चूरी में जहर डाल मार देती है। पुत्र घर पहुंच पत्नी को ढूंढ़ता है तो मां बताती है कि बहू तो सो गई है। पुत्र गुस्से में आकर उसे शहतूत की सोटी से मारता है। वास्तविकता जानने पर वह जोगी हो जाता है।

रूपांतर

बारहीं बरसी मैं घर आया
मैं घर आया
नजरी नी आई नूंह तेरी
नजरी नी आई नूंह तेरी।

चुकेया घड़ोलू सिरे पर धरेया
पाणिए लेयोणे गई ओ।
पाणिए लेयोणे गई ओ पुतरा!
पाणिए लेयोणे गई ओ।

इक्की बाईं तोपी अम्मा! दुइया बाईं तोपी
मैं हण्डी हण्डी तोपी, नजरी नी आई नूंह तेरी
नजरी नी आई नूंह तेरी ओ अम्मा!
नजरी नी आई नूंह तेरी।

इक्की हत्थे दराटी ओ दूए हत्थे रस्सी
हो दूए हत्थे रस्सी, पारलिया धारा गई ओ
घाए लेयोणे गई ओ पुतरा!
परलिया धारा गई ओ।

इक्की धारा तोपी अम्मा दूईया धारा तोपी
मैं हण्डी हण्डी तोपी, नजरी नी आई नूंह तेरी

नजरी नी आई नूंह तेरी ओ अम्मा!
नजरी नी आई नूंह तेरी।

इक्की हत्थे डोरी ओ दूए हत्थे डोरी
सिरै गुंदाणा गई ओ
नाईयां दे बेहड़े गई ओ पुतरा!
नाईयां दे बेहड़े गई ओ।

इक्की बेहड़े तोपी दूए बेहड़े तोपी
मैं हण्डी हण्डी तोपी, नजरी नी आई नूंह तेरी
नजरी नी आई नूंह तेरी ओ अम्मा!
नजरी नी आई नूंह तेरी।

हत्था लेया चाबियां दा गुच्छा, कोठे उप्पर गई ओ
नत्था जो पाणा गई ओ पुतरा!
कोठे उप्पर गई ओ।

इक्की कोठे तोपी अम्मा! दुए कोठे तोपी
मैं हण्डी हण्डी तोपी, नजरी नी आई नूंह तेरी
नजरी ता आई ल्हास ओस दी ओ अम्मा!
नजरी ता आई ल्हास ओस दी।

दुख मत करदा, तू गम मत करदा
राजे दे बेटी बियाह्णी
राजे दी बेटी बियाह्णी ओ पुतरा!
राजे दी बेटी बियाह्णी।

तैं बुरी कीती अम्मा! तैं बुरी कीती ओ
हंसा दी जोड़ी बछोड़ी, तैं बुरी कीती
इक थी सः अम्मा! जैहर देई मारी
दुजिया जो नदिया रूढ़ाया।

देयां तो मेरी झोलि़या, देयां मेरा तूंबा
जोगिए मैं हुण होई जाणा
जोगिए मैं हुण होई जाणा ओ अम्मा!
जोगिए मैं हुण होई जाणा।

भ्यागड़ा

प्रातः समय गाए जाने वाले गीत को भ्यागड़ा कहा जाता है। इन गीतों में ईश्वर स्मरण ज्यादा रहता है।

1

जाग ब्रह्मा जाग बिष्णु, जागणे दी बेला होई जी
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी
राधे खड़ी जी।
जाग ब्रह्मा जाग बिष्णु, दातणे दी बेला होई जी
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी।
जाग ब्रह्मा जाग बिष्णु, नौह्णे दी बेला होई जी
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी
राधे खड़ी जी।
जाग ब्रह्मा जाग बिष्णु, पूजा दी बेला होई जी
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी
राधे खड़ी जी।

2

चंदे दीया चानणिया तारेंयां दिया लोई
गुजरियां नौह्ण संजोया जी, श्यामा हां जी कोई।
गढ़ मथरा ते गुजरी उतरी
अग्गे कान्ह जगाती जी, श्यामा हो जी कोई।
छोड़ छोड़ श्यामा बहियां मेरियां
मुझ घर सौहरा सयाणा जी, मैहरिए हो जी कोई
सौहरे नूं तेरे गढ़ मथरा वजीरी
तुझ घर जाण न देवां जी, मैहरिए हो जी कोई।
छोड़ छोड़ श्यामा बहियां मेरियां
मुझ घर सासु सयाणी जी, श्यामा ही जी कोई।
सासु नूं तेरिया नूं पीढ़े बहालां
तुझ घर जाण न देवां जी, मैहरिए हां जी कोई।
छोड़ छोड़ श्यामा बहियां मेरियां
मुझ घर बालक याणा जी, श्यामा हां जी कोई।

बालके नूं तेरे नूं दुध पल्यावां, गल़ी गल़ी फरयावां
तुझ घर जाण न देवां जी, मैहरिए हो जी कोई।
छोड़ छोड़ श्यामा बहियां मेरियां
मुझ घर कंत रसीला जी, श्यामा हां जी कोई
कंते दा तेरे ब्याह करावां
इक सांवली दुज्जी गोरी जी, मेहरिए हां जी कोई।
अप्पू क्यों फिरदा कवारा जी, श्यामा हां जी कोई
तुझ जियां गुजरियां मैं लड़ बी नी लांदा
इस बिध रेहया कवारा जी, श्यामा हां जी कोई।
जे तू श्यामा खरा रसीला
रखदा दो दो नारां जी, श्यामा हां जी कोई।
इक ता तेरियां तल़ियां झसदी
दूजी तोड़दी तणियां जी, श्यामा हां जी कोई।

संध्या गायन

घरों में सायं के समय आरती के साथ भजन गाए जाते हैं। सायंकालीन भोजन, जो प्रायः आठ बजे तक कर लिया जाता है, से पहले हर घर में अपने इष्टदेव के पास जोत जगाकर आरती गाई जाती है। आम आरतियों के साथ कुछ विशिष्ट भजन भी पहले गाए जाते थे।

शिव स्तुति

हरि संध्या सिमरो मंदर को जाती।
काहे का दीवा रामजी काहे की बाती
काहे का तेल जले दिन राती
हरि संध्या...
माटी का दीवा रामजी, नरमे की बाती
सरसों का तेल जले दिन राती
हरि संध्या...
बाई बाईं ते मैं जल लेऔंदी
सिबजी को गड्डुआ ढलांदी, संभूजी को गड्डुआ ढलांदी
बागां बागां ते मैं चनण कटांदी
सिबजी को तिलक लगांदी, संभूजी को तिलक लगांदी

हरि संध्या...
हाटी हाटी ते मैं अछत मंगांदी, सिबजी को अछत चढांदी
हरि संध्या...
बागां बागां ते मैं फुल्ल मंगांदी, संभूजी को फुल्ल चढ़ांदी
हरि संध्या...
बागां बागां ते मैं बिल पतर मंगादी, शंभूजी को भंग चढांदी
हरि संध्या...
हाटी हाटी ते मैं धूप मंगांदी
सिबजी को आरती चढ़ांदी, संभूजी को नवेद चढ़ांदी
हरि संध्या...।

संझौटी (संध्या गायन)

यह संध्या गायन शाम को थोड़ा अंधेरा होने पर लड़कियों द्वारा सामूहिक रूप से गाया जाता है या कभी विवाहादि के अवसर पर भी गाया जाता है।

1

संझां जे होईयां संझेला जे होईयां
जी कृष्णे तोपणा जाणा ए।
देयां देयां सस्सू मेरे पैरां दियां पहणियां
जी कृष्णे तोपणा जाण ए।

सहर भी हण्डे बजार भी हण्डे
जी कृष्ण नजरी नी आया ए।

देयां देयां जठाणी मेरे ढाका दे घघरे
जी कृष्णे तोपणा जाणा ए।

इक बण हण्डेया जी दुआ बण हण्डेया
जी कृष्ण नजरी नी आया ए।

देयां देयां दराणी मेरे गले़ दे हारे
जी कृष्णे तोपणा जाणा ए।

इक बण हण्डेया जी दुआ बण हण्डेया
जी कृष्ण नजरी नी आया ए।

देयां देयां नणाने मेरे सिरे दे सालुए
मैं कृष्णे तोपणा जाणा ए।

सहर भी हण्डे बजार भी हण्डे
जी कृष्ण नजरी नी आया ए।

हलुआं मैं पुच्छदी गुआलुआ मैं पुच्छदी
जी कृष्ण जांदा न देखया जी।

संझां जे होईयां संझेला़ जे होईयां
जी कृष्णे तोपणा जाणा ए।

2

संझली़ बतरा सस्सु झगड़ा रचाया, कुथू दा भरणा जले़या पाणी हो।
बच्छू तरहाया कट्टू तरहाया, कुथू दा भरणा जले़या पाणी हो।

पंज सत खूईयां नूएं होर तलाईयां, निचली खूईया ठण्डा पाणी है जी
कुथू हुंगा सस्सू सीसा घड़ोलू, कुथू नरैले़ दा बिन्ना।

चुकेया घडोलू गोरिया सिरे पर धरेया, चाल रखी अलबेली जी
भरेया घड़ोलू डंगी पर धरेया, जी डंगी पर धरेया
बाल न लांदा बैरी कोई जी।

संझली़ बेला सस्सु झगड़ा रचाया, कुथू दा भरणा जले़या पाणी हो।

पंछी बोले

संझ बेलां होईयां पंछी बोले
काबल लग्गियां लड़ाईयां।
पंज रूपय्ये मैं सौह्रे बला दिंदियां
पुत्तरे दी खबर मंगायां।

पंज रूपय्ये नूहें अप्पू बला रखेयां
दूए दा दर्दी न कोई।
संझा बेला...

पंज रूपय्ये जेठे बला दिंदियां
बीरे दी खबर मंगायां।

पंज रूपय्ये नूहें अप्पू बला रखेयां
दूए दा दर्दी नी कोई।
संझा बेला...

पंज रूपय्ये देरे बला दिंदियां
बीरे दी खबर मंगायां।
पंजा रूपय्ये भाभिए अप्पू बला रखेयां
दूए दा दर्दी नी कोई।
संझा बेला...

पंज रूपय्ये मैं भाईए बला दिंदियां
भह्णोईए दी खबर मंगायां
पंजा रूपय्ये भैणे अप्पू बला रखेयां
भह्योईए दी खबर मंगागा।
संझा बेला...।।

काल़ीए कोयले

काल़ीए कोयले बोल सवेरे
खत सजणा दा आया हो।

उसी बेलैं मैं फाड़ लफाफा
नाल सीने दे लागाया हो।
नां मैं मरदी, नां मैं जींदी
नां मेरी होस ठकाणे हो।

चिट्टी चादर चार कनारे
कितणी कि मल मल धोआं ओ
अज देयां बिछड़ियां फिरि कदीं मिलणा
होई जांदा दूर ठकाणा हो।

काल़ीए कोयले बोल सवेरे
खत सजणा दा आया हो।

सब्ज पखेरूआ

सब्ज पखेरूआ सुआं देयां बासिया
कुत्थू गुजारी ओ अजकणी रैन ऐ।

सुआं देया बासिया सत्तां दियां धूणिया
ओत्थू गुजारी ओ अजकणी रैन ऐ।

चम्बे दिए बेड़िए नी सौकणी तू मेरिए
तैं मेरा लोभी नी पार लंघाया ऐ।
अप्पू बी नी औंदा चिट्ठी बी नी भेजदा
किह्यां करी कटणी बालड़ी बरेस ऐ।

अप्पू बी औंगा चिट्ठी भी भेजगा
हस्सी हस्सी कटणी बालड़ी बरेस ऐ।
जिह्यां थोड़े पाणिए मच्छली जे तड़फै
तिह्यां करी तड़फै नौकरे दी नार ऐ।

धागा बी नी टूटदा तंद बी नी मूकदी
सस्स बी नी बोलदी नूंहए पाणिए जाणा ऐ।
लिखी लिखी चिट्ठियां मैं नौकरे जो भेजदी
नारा हुण मरी जाणा जहरे खाई।

भरियां कचहरियां नौकर चिट्ठियां वाचदा
रोई रोई भिजी जांदा रेशमी रमाल ऐ।

द्वारका देया बासिया

अधी अधी राती चन्द्र करालया मोहना
तारेयां भरी रैन सारी।
मेरेया द्वारका देया बासिया
हटि कैंह नी पाया फेरा।
कत्थू रियां बैरियां तेरियां
चौपड़े दियां नरदां
कुत्थू रैह खेलणा हार ऐ।

कुत्थू ते उठी काली बादली
कुत्थू ते बरसेया मेघ ऐ
घाटिया ते उठी काली बादली
नैणा ते बरसिया मेघ ऐ।

कुत्थू सुकैणे सुहे सुहे कपड़े
कुत्थू सुकैणा रमाल ऐ।

महलैं सुकैणे सुहे सुहे कपड़े
बागें सुकैणे रमाल ऐ।

गोरी

छठड़े पीह्ड़े पर बैठिए नी गोरिए
मुईए किस दी हुंदी सुन्दर गोरी बे।

बत्ता चलैंदिया राहिया मसाफरा
तिजो क्या पुच्छणें दी पई बे।

छठड़े पीह्ड़े पर बैठिए नी गोरिए
मूईए किस दा तू कढदी रमाल बे।

कंत मेरा गेया परदेस, नौकरा मसाफरा
मैं अपणे छैले दा कढदी रमाल बे।

चुकेया घड़ोलू गौरी पाणिए जो चली ऐ
अखैं खुहे पर नौकर माह्णू आया बे।

खुहे पर खड़ौतिए जी गौरिए
मूईए ठण्डड़ा देया नीर पलाया ऐ।

कच्छ घड़ा जी कच्छ लोटा नौकरा
अप्पू जे डोलो अप्पू पियो जी ऐ।

अपणेयां हत्थां दा नित पीता गोरिए
मिंजो तेरेयां हत्था दा चा ऐ।

चुकेया घड़ोलू गौरी घरैं चली आई
औंदी तां सस्सू पुच्छी लई ऐ।

ऐडी तां देर कुत्थू लाई बो नूंहे
ऐडी तां देर सस्सू खुहे पर लाई
खुहे पर नौकर माह्णू आया ऐ।

कुजो साहीं लम्बड़ा जुआन नूंहेजी
कुदिया नुहारी ऐ नुहार वे आं।

देरे साही लम्बड़ा जुआन सस्सूजी
नणैना दिया नुहारी ऐ नुहार वे आं।

हत्थें तां लेआं नूंहे तेल कटोरी
अपणे कंते दिया सेवा जो जायां ऐ।

हत्थें तां लेई गौरिया तेल कटोरी
कंते दिया टहला जो गई वे आं।

सुतड़ेया कंता तुसां जागणा कंताजी
मैं तुहाड़ेयां महलां जो आई वे हां।

सुतड़ेया कंता तुसां जागणा कंताजी
भितलुआं छडनेओं घुहाड़ेयां ऐ।

ऐ तू सतवंती नार तां पल्ले ने भित्ता घुआड़
बारह तां बरहियां तुआड़ी सेवा कीतिए
अजकणियां लाजा छड़नियों रखी ऐ।

लैनियां सत्तां गुरां दा नां जी मैं लैनियां
अजकणियां लाजा छड़नियों रखी ऐ।

मारेया गौरिया मारेया बो पल्ला
पल्ले ने भिजलू घुआड़ेया।

सुतड़ेया महला कंता जागनयों
महलां तुहाड़ेयां न्हेर ग्वार ऐ।

अखैं तुसां संतवंती जी नार गौरिए
पल्ले ने दीवड़ा बाल्यो।

मारेया पल्ला बो गौरिया
पल्ले दीवक जलाया ऐ।

नौलक्खा हार

चुकेया घड़ा कंढी पाणिए जो चली जाणी नां...
भरेया जी घड़ा कंढिए मीणी पर धरेया
हेड़ा जां खेलदे आए कोई पांजले पंज राणे नां।

पाणी जां भरेंदिए नारे घुट पाणिए दा प्याया नां
पाणी जां प्यांगी मैं भाई, जाति दे कुण हुंदे नां।

आसां नां हुंदे भैणे मियें पांजले, पंज राणे नां
कंढिए दे साखने चार चार भाई नां।

अग्गैं नां होए तुसां मैलड़े मैलड़े भेस नां
अज कियां करि आए तुसां मैलड़े भेस नां।

माल तां खजाना भैणे मिए साडा लुट्टी लेया साभकारां नां
घोड़ा तां तबेला भैणे साडा लुट्टी तेया सरकारा नां।

इत्तणे जां गलांदे भैण भाईयां दे गल़े लग्गी जांदे नां
गल़ैं लग्गी भैण छम छम देई रोए नां।

नौआं लक्खां दा हार भैणा भाईयां दे गल़े लाया नां
अद्धे दा तुसां लैन्यों माल जा माथेरा नां
होर जां लैन्यों मैह्लां जो राणियां नां।

चुकेया जां घड़ा कंढी मुड़ी घरैं चली औंदा नां
सौह्रा पुच्छै नूंहे मिए कैंह् तू ढूंण मढूणी नां
सस्स पुच्छै नूंहे मिए कैंह् तू ढूण मढूणी नां।

नौआं लक्खां दा हार सौह्रया टुटी खूहा मंझ पैया नां
नौआं लक्खां दा हार सस्सू टुटी खूहा मंझ पैया नां।

सौह्रियां दा देस

जल़ी जाए सौह्रियां दा देस
अम्माजी मैं नईंयों बस्सणा।

गुड़नू कुदाल़ू दिंदे

खाणे जो कचालू दिंदे
दस्सी देंदे लम्मे लम्मे खेत
अम्माजी मैं नईंयों बस्सणा।

छलियां दी रोटी दिंदे
चप्पा चप्पा मोटी दिंदे
कने दिंदे देड़ियां दा साग
अम्माजी मैं नईंयों बस्सणा।

बाजरा पुराणा औत्थू

जुड़दा नी खाणा औत्थू
जिंद मेरी मोतियां दा दाणा
किह्यां लाणा पट्टूए दा भेष
अम्माजी मैं नईंयों बस्सणा।

ध्याग ते हुंदी नी
टोकरी चकाई दिंदे
पतची जांदे मेरे रेस्मी केस
अम्माजी मैं नी नईंयों बस्सणा।

हऊं गलादियां सच्च बो

हऊं गलांदिया सच्च बो मेरे बांकू दिया चाचूआ
अप्पूं ता दूर चलेया नौकरी चाकरी
मिंजो फड़ाई दिंदा खुरपा ते दातरी

कम्म करी टूटी जांदा लक्क बो
मेरे बांकू दिया चाचुआ।

अप्पूं ता खांदा मुआ भत्त भटूरू
मिंजो नीं दिंदा कख बो
मेरे बांकू दिया चाचूआ।

अप्पू ता चल्ला मुआ नौकरी चाकरी
मेकी भी लई चल कच्छ बो
मेरे बांकू दिया चाचूआ।

छैला राजपूता

पारिएं बो जांदेया छैल़ा राजपूता
दो जणियां दा मुल्ल करि जायां।

गोरी तां हुंदी सईयो लाख टका
सांवली दा मुल्ल लख चार।

गोरी जो सजदा काजल़ कुंगू
सांवली जो सजै बिंदु लाल।

गोरी जो सजदा काला घुंडू
सांवली जो सजै गुलानार।

धर्मू

कांगड़ा में धर्मू नाम का डाकू प्रसिद्ध था। वह वीर भी था। उसके बड़े भाई ने पुलिस को उसके छिपे होने की सूचना दे दी। पुलिस ने उसे रिश्वत लेकर छोड़ने की पेशकश की किंतु वह लड़ते हुए मारा गया।

ठण्डड़ी ठण्डड़ी हवा जो चलदी, बरखा दी छणकार ओ
अंदर पक्के फुलके धर्मूआ, बाह्र रिज्झे दाल़ ओ।

बड्डे जे भाऊएं चुगली लाई, सद्दी बुलाई सरकार ओ
हौले़ हौले़ पुल़सा चलदियां, कड़ियां दी छणकार ओ।

सौ सौ रूप्पइया सपाही मंगदे, दो सौ ठाणेदार ओ
मैं कुत्थू ते देयां ओ लोको, देवे धर्मू जान ओ।

सुत्ता सुत्तेड़ा धर्मू उठेया, हत्थैं फड़ी तलवार ओ
पंज तां बड्ढे पुल़स सपाही, छेवां ठाणेदार ओ।

कोठे चढ़ी नैं बब्ब जे रोए, धर्मूएं खाणी मार ओ
तू कजो रौंदा मेरे बापू, धर्मू नी खांदा मार ओ।

पैड़िया चढ़ी जे माता रोए, दर बिच तेरी नार ओ
तू केंह रोवे मेरी अमड़ी, धर्मू नी खांदा मार ओ।

किसे दा नी मारेया धर्मू मरदा, करमे दी ए हार ओ
चार चुफैरें धर्मू दौड़े, पेया मूहां दे भार ओ।

पेह्ली गोल़ी छातिया बज्जी, दूजी कलेजे फाड़ ओ
सेर ता पक्का काल़जा निकलेया, चर्बी बेसुमार ओ।

गड्डियां मोटरां जांदा जांदा, उतरी गेया हरिद्वार ओ।
सैह्र बजारे डौंडी पिट्टी, धर्मूए दी गई ल्हास ओ।

इस ग्राएं देया लंबरा

इस ग्राएं देया लंबरा ओ, इन्हां छोह्‌रूआं जो लियां समझाई
कि बाटा जांदे सीटी मारदे।

पाणिए जो जाणा असां, आणना घड़ोलू
कियांह् करी नालू टपणा, कि बाटा जांदे सीटी मारदे।

इस ग्राएं देया लंबरा ओ...
घाए जो जाणा असां, आणना गड़का
तू ही दस्स कियांह् लंघणा, ओ तू ही दस्स किहां लंघणा
इस ग्राएं देया लंबरा ओ...

डंगर चारणा असां खेतां जो जाणा
लुकी छिपी कियांह् चलणा
ओ इस ग्राएं देया लंबरा ओ इन्हां छोह्रूआं जो

ओ इन्हां जागतां जो लेयां समझाई
कि बाटा जांदे सीटी मारदे।

प्रसिद्ध लोकगायिका शांति बिष्ट का लिखा और गाया यह गीत रेडियो व स्टेज पर बहुत लोकप्रिय रहा।

भियाई पूजन गीत

जन्मदिन पर देवी की मूर्ति माटी से गढ़ी जाती है जिसे भ्याई कहा जाता है।

किधर देसे ते आई भ्याई राणी
किधर देसे जो जाणा!
दक्खण देसे ते आई भ्याई राणी
पच्छम देसे जो जाणा।
अज भाई राणी साढें जे आई
किन्नी भ्याई राणी सद्दी बुलाई
किन्नी घड़ी मन चित लाई।
अज भ्याई राणी साढें जे आई।

मोख का गीत

किसी व्रतादि का उद्यापन करने पर पूजन के साथ गीत भी गाए जाते हैं।

सब न्हौंण मैं न्हौते मेरे हरि जी
गंगा दे न्हौंण बिना न्हौंण नीं है, मेरे हरि जी

तुसां बिना बाह्र नीं जाणा।
सब बस ब्रत मैं कित्ते मेरे हरि जी

कादसी दे ब्रते बिना ब्रत नीं है।
सब बस ब्रत मैं कित्ते मरे हरि जी

पुणया दे मोखे बिना मोख नीं है।
सब बस दान मैं कित्ते मेरे हरि जी

लखोलियां बिना दान नीं है।
सब बस मोख मैं कित्ते मेरे हरि जी

हरियालिया दे मोखे बिना मोख नीं है।
सब बस दान मैं कित्ते मेरे हरि जी

गाईं दे दाने बिना दान नीं है।
सब बस दान मैं कित्ते मरे हरि जी
कन्या दे दाने बिना दान नीं है।

पंजभीखम गीत (तुलसी विवाह)

कांगड़ा क्षेत्र में पंचभीष्म का पर्व उत्साह से मनाया जाता है। घर के एक कमरे में वेदी बनाकर पंचभीष्म स्थापना के साथ रात-दिन दीपक जला रहता है। यह तुलसी और ठाकुर से विवाह का पर्व है।

आई मालण हो, आया माली
हत्थैं कदाळी, सिरे पर खारी
जमना कनारे कीती क्यारी
चैत्र महीनैं बाही ए सैली
बसाख महीनैं लुंगणा लग्गी
जेठ महीनैं पतरू दो पतरू
हाड महीनैं छोड़े डालू
भाद्रु महीनैं मिंजरां जे पईयां
सूज कहीनैं फिरदे रबारू
काती महीनैं दा ब्याह जे रचाया
हुण मेरिया सैल्लिया जो कुण बो बरेऊ
हुण मेरिया सैल्लिया जो रामचन्द्र बरेऊ

रामचन्द्र न देआं बाबल सीता जो सोका
हुण मेरिया सैल्लिया कुण बरेऊ
हुण मेरिया सैल्लिया जो कुष्ण बरेऊ
कृष्णे न देया बाबल राधा जो सोका।
हुण मेरिया सैल्लिया गणेसा बरेऊ
गणेसे न दियां बाबल; दिया सिद्धिया जो सोका।
फिरी फिरी सैल्लिया जो ठाकर बरेऊ
ठाकरें ता सैल्लिया दा ब्याह जे रचाया
सौ सठ देवता जानिया आए
गरड़ैं चढ़ी ठाकर ब्याहणा आया
कौरूआं पाण्डवा ढोल बजाया
ब्रह्मा तां बिसणु बेद पढैंदे
ठाकर सैल्ली सैह लाजां फरैंदे
सैल्ली थी सैह जमना रढ़ाई।
कुण तेरी माता कुण तेरा पिता!
कुन्नी ब्याही कुण बरताए!
धरत मेरी माता अंबर मेरा पिता
ठाकरे ब्याही सैल्लियां बरते
बुढी गाए बैकुण्ठ जाए
कन्या गाए घर वर पाए।
तरूण गाए बैकुण्ठ जाए
कन्या गाए घर वर पाए।
तरूण गाए दुध पुत्र खल्हाए
सुणदियां गुणदियां गंगा दा न्हौण
गांदेया बजादेयां सुरग बणाणा।
जेहड़ा मेरिया सैल्लिया जो दिहंगा पाणी
सैह हुंगी चन्द्र राजे दी राणी।
जेहड़ा मेरी सैल्लिया जो दिंहगा पाणी
ओ भी हुंगा चन्द्र राजे दा पुत
जेहड़ा मेरी सैल्लिया जो चाढ़गा द्रुब
उस दे घरै नित होए नोई हुब।

भेंट (देवी स्तुति)

कांगड़ा में शिव और देवी स्तुति का गायन प्रचलित है। देवी स्तुति को 'भेंट' कहा जाता है। वज्रेश्वरी, श्रीज्वाला जी, चामुंडा जैसे प्रसिद्ध मंदिरों में देवी की हिंदी में प्रचलित आरतियां गाई जाती हैं। पूजा के समय निश्चित आरतियों का विधान है। जगराते या नवरात्रे के समय पंजाबी में भी खूब गाई जाती हैं। उन आरतियों के अलावा यहां लोक में गाए जाने वाली भेंटों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

1

बस्सी बनेर दे कंडे
ओ माता चामुंडे।

किनी किनी मैयूया तेरा भवन बणाया
कीनी चोरी झलाई ओ माता चामुंडे।

पंजा पंजा पांडवां तेरा भवन बणाया
अरजणे चोरी झलाई ओ माता चामुण्डे।

पान सपारी ओ मैयूया धजा ओ नरेल़ा
पेह्लड़ी भेंट चढ़ाई ओ माता चामुंडे।
बस्सी बनेर दे कंडे ओ माता चामुण्डे।

2

गढ़ कांगड़ा धौलीधार, मैयाजी तैं बैकुण्ठ बणाया
गढ़ कांगड़ा धौलीधार...

किनी तां मैया तेरा भवन बणाया, किनी कलस चढ़ाया
पंजां तां पाडवां मैया भवन बणाया, कृसने कलस चढ़ाया।

नंगी नंगी पैरी मैया अकबर आया, सूने दा छत्तर चढ़ाया
सूहा सूहा चोल़ा मैया अंग बराजे, गोटियां बणत बणाई।

मत्थे तेरे मैया बिंदला बिराजे, सुरमें बणत बणाई
नक्के तेरे मैया बेसर बराजे, पतरूएं झिलमिल लाई।

पैरें तां तेरे मैया झांझर बिराजे, बिच्छुएं रूणझुण लाई
हत्थें रकेबी मैया जलेबी, तिजो भोग लगाया।

ध्यानू भगत मैया तेरा जस गावे, चरणे सीस नवाया
मैयाजी बैकुण्ठ बणाया...
गढ़ कांगड़ा धौलीधार...।

3

गढ़ कांगड़ा धौलीधार मैयाजी बैकुण्ठ बणाया।
ऊच्चे ऊच्चे परबत मैया भवन जे तेरा
सेर भरे ललकारां।
दूरा बे दूरा ते मैया जातरू आए
करदे जै जैकारा।
पंजे पाण्डवे तेरा भवन बणाया
सूने रा कलस चढ़ाया।
हाथ रकेबी मैया थाल़ जलेबी
मैयाजी जो भोग लगाया।
सुआ सुआ चोल़ा मैया अंगे बराजे
केसर तिलक लगाया।
गढ़ कांगड़ा धौलीधार मैयाजी बैकुण्ठ बणाया।

4

रंग बरसे...रंग बरसे गुलानारी, भवन पर रंग बरसे
रंग बरसे...

कीनी कीनी मैयूया तेरा भवन बणाया, कीनी चौरी झलाई
भवन पर रंग बरसे।
पंजां पंजां पांडवां मेरा भवन बणाया, अरजणे चौरी झलाई
भवन पर रंग बरसे।

सूआ सूआ चोल़ा मैयूया अंगे बराजे, तारेयां रूणझुण लाई
भवन पर रंग बरसे।
हत्थें रकेबी मैयूया थाल़ जलेबी, पेह्लड़ा भोग लगाया
भवन पर रंग बरसे।
पान सपारी ओ मैयूया धजा बो नरेल़ा, पेह्लड़ी भेंट चढ़ाई
भवन पर रंग बरसे।

सिब गौरजां विवाह

हिंचले राजे नैं कन्या जे जाई
सद्दे ब्राह्मण रास गणाई
इसा मेरिया कन्या जो, इसा मेरिया गौरजां जो
खरा वर चाहिए ए, छैल़ वर चाहिए
सुणा जी म्हारेया प्रोहता जी
जोड़ी वर चाहिए...राम।

ना इत्थू रसदी ना इत्थू बसदी
कुसा देहिया सेधा मैं जाणा जी
काल़े काल़े बणे बिच धूएं दी घटा
इसा देहिया सेधा तुसां जाओ प्रोहता जी।

हत्थैं लई धोती ते कच्छा मारी पोथी
घर वर ढूंढण चलेया...राम।

इक बण हण्डेया, दुआ बण हण्डेया
त्रिए बणे साधुए दा डेरा राम...।
तू कजो आया भोल़ेया ब्राह्मणा
न मेरैं छन ता न मेरैं टपरी
न मेरैं झोली ता ने मेरे खपरी
न मेरैं खाणे जो दाण राम...
मैं किह्यां ब्याह्णीं गौरजा राम...।

तेरैंई छन तां तेरैं है टपरी
तेरैंई झोल़ी तां तरैंई खपरी
तेरैंई खाणे जो दाणे राम...
तैंही ब्याह्णी गौरजां राणी सिबजी।

चिकड़ै चिभड़ैं शिबजी न्हौंण संजोया
काल़ैं कजल़ैं पीवल कीती...राम
अंगैं बभूति गल़ैं मुण्ड माल़ा
राहुएं तां केतुएं ढोल बजाए
भूत प्रेत सः जानिया चलाए
बैलैं चढ़ी शिब ब्याहणा आए राम...।

दिख दिख नडुल्ले तू अपणे जुआइए
धिया सरूप जुआई करूप
फिट फिट धिए तू कजो जाई
तिजो सरेखा नी मिलेया जुआई
तैं धिए लाज गुआई...राम।

चिकड़ैं तां चिभड़ैं गौरजां जो न्हौण कराया
काल़े कजले पीवल कीती...राम।
हत्थां दे गहणे सः पैरैं पुआए
ढाका दा घघरा सः सीसें लुआया
सिरे दा सालू सः ढाका बन्हाया
गौरजां दा रूप बदलाया...राम।

धारेयां धारेयां सिबजी अपणे रूपे
अम्मां दा दुखड़ा मटायां...राम।
गंगा ता जमना दा न्हौण संजोया
कुंगूएं केसरें पीवल कीती...राम।

सूरज चन्द्रमा मुगटैं जड़ाए
ध्याणु तारा कद्दी लाया...राम।
सौ सठ देवते जानिया चलाए
सदा सिब ब्याह्णा आए...राम।

धारिएं कणसारिएं दिखदी नडुल्ल
धिया कुरूप जुआई सरूप
एह किह्यां गल्ल बणनी...राम।

गंगा जमना जलैं गौरजां जो न्हौण कराया
कुगूंएं केसरैं पीवल कीती...राम।
हत्था दे गहणे सः पैरैं पुआए
ढाका दा घघरा ढाका बन्हाया
सिरे दा सालुआ सः सिरैं उढाया
गौरजां दा रूप सजाया...स्याम।

सिब गौरजां दा ब्याह बो रचाया

धिया जो दिंदी धूप स: सस्सड़ी
जुआईए जो अर्घ दुआई...राम।

धन जी जुआईया धन धन सिबजी
धन धन बांकड़ा रूप...राम।

भक्ति गीत

विपदा निवरेंगा भगवान
चिंता मन में काहे को करे!
काहे को करे दिन रात, चिंता मन में काहे को करे।

हिरनू ता हिरनी चले जंगल को, फंदकी ने फाईयां लाई
हिरनी बचारी लंघे खड़ोती, हिरनू फसेया बिच फाईयां
चिंता मन में काहे को करे!

पंच सात कदमां पीछे हटदी जे हिरनी, मेरा हिरनू बी फसेया
म्हारिया ओखिया निवारेंगा महाराज, चिंता मन में काहे को करे!
हिरनी जे बोलदी सुण मेरे हिरनुआं हमरी थोड़ा बातां

फंदकी रे घरें जाई के मुकेयां बेची कनें खाणा तेरा मास
हेड़ी रे मना दया जे आई छोड़ेया हरनू ते जाल
चिंता मन में काहे को करे!
तेरी भली बे करेगा करतार, चिंता मन में काहे को करे!

लोहड़ी गीत

कांगड़ा में लोहड़ी (मकर संक्रांति) का त्योहार विशेष उत्साह से मनाया जाता है। पौष मास में ही छोटी लड़कियां तथा लड़के अपनी टोलियां बनाकर शाम को घर-घर गाते हैं जिसके बदले इन्हें कुछ अनाज या पैसे दिए जाते हैं। इन गीतों को 'लुकड़ी' कहा जाता है। ये गीत लोहड़ी से आठ दिन पहले से लड़कियों द्वारा घर-घर जाकर आंगन में गाए जाते हैं और इसके बदले रुपए-पैसे या चावल आदि दिया जाता है।

1

लोहड़ी आई भाभी लोहड़ी आई
क्या लेई आई भाभी क्या लेई आई!
लुंगी केहड़ा टोपा, भाभी लुंगी केहड़ा टोपा

सौह्रड़ा घर खोटा, भाभी सौह्रड़ा घर खोटा।
ब्याह्इए घर मिट्ठा, भाभी ब्याह्ईए घर मिट्ठा।
उखल़िए दो घाणे भाभी उखल़िए दो घाणे
कुटेगी दराणी भाभी फड़ाकेगी जठाणी।
समटुए दो काजल भाभी, समटुए दो काजल
भाईया साडा हाजर भाभी, भाईया साडा हाजर।

लोहड़ी की शाम लड़कियां ये गीत गाती हैं और तिलचौल़ी मांगती हैं।

तिलचौल़िए! तिलचौल़िए!
कौण बेला होईयां!
तिलचौल़िए! तिलचौल़िए!
संझा बेला होईयां।

तिलचौल़िए! तिलचौल़िए!
भरवो दे पूड़े गीगा।
तिलचौल़िए! तिलचौल़िए!
गीगे दे पैरां कड़ियां।

तिलचौल़िए! तिलचौल़िए!
कुन्नी सुनियारें घड़ियां।

2

तिलचौल़िए! हां! हां!
गीगा मोल़िए! हां! हां!
गीगा जमेया था, हां! हां!
गुड़ बंडेया था, हां! हां!
गीगा जमेया था, हां! हां!
चणे बंडे थे, हां! हां!

3

कुछ गीत ऐसे भी गाए जाते हैं, यथा–

पैसे दा मैं कद्दू मंगांदी
टुकड़े कित्ते चार अड़िए
लगा चटाका कद्दुए दा।

लई दराटी चीरना बैठी
चीरी मारेया थाल़ अड़िए
लगा चटाका कद्दुए दा।

चीरी चीरी तुड़कें पाया
मुस्क चली बजार अड़िए
लगा चटाका कदुए दा।

लैह नणदे तू बी खायां
गल्ला मत कढदी बा:र अड़िए
लगा चटाका कद्दुए दा।

छोटे लड़कों द्वारा गाया जाने वाला गीत–

जट्टी मट्टी घेरनी
जट्टे ने नीं छेड़नी।

जट्ट जाई पकारया
जटटे माधो मारेया।

माधो अंदी छतरी
बिच निकल़ेया खतरी।

खतरिएं अंदा बाण
बिच निकल़ेया तरखाण।

तरखाणे घड़ी डोई
बिच निकल़ेया सोई।

सोईएं सीता टोपू
बिच निकल़ेया घोपू।

अट्टूआ भई अट्टुआ
खोल माई बटुआ।

गाने के बाद घर वाले इन्हें पैसे देते हैं। यदि कोई न दे तो यह बोल गाए जाते हैं–

हुक्का भई हुक्का
एह घर भुक्खा।

सुंदर मुंदरी का गीत

पंजाब और कांगड़ा में दूल्हा भट्टी की कथा बड़ी प्रसिद्ध है। इसे लोहड़ी के समय भी बच्चे घर-घर जाकर गाते हैं।

सुंदर मंदरिए हो!
तेरा कौण बचारा हो
दुल्हा भट्ठी वाला हो।
दूल्हे धी ब्याही हो!

लोहड़ी की रात 'हिरण' बांधने पर हिरण के स्वांगी यह गीत गाते हैं–

हरण मंगे तिलचौली दे
लाल गुड़े दी रोड़ी दे।

दिंदी जा दुआंदी जा
कोठे हथ्थ पुआंदी जा।

कोठे च बड़ेया चुहा
दड़ दड़ करदा मुआ।

हरण मंगे तिलचौली़ दे
लाल गुड़े दी रोड़ी दे।

हरण गिया खेड़िया
रोप्पा भरेया पेड़ियां।

हरणे लाई सिंगे दी
हण्डी भज्जी हिंगे दी।

हरणे दे सिंग मोटे थे
लाल सुजारी खोटे थे।

टकमटक्कू टकमटक्कू
तिलाचौलि़या दा फक्कू।

लोहड़ी की अगली प्रातः जब खिचड़ी पकाई जाती है, लड़कियां आंगन में मांगने आती हैं और यह गीत गाती हैं। इसे 'राह्जड़े' भी कहा जाता है–

असां आईयां राजड़यो! राजड़यो!

राज दुआरें आईयां भाई
राज दुआरें आईयां।

पैरां लग्गी ठंडड़ी ठंडड़ी
बत्त कियां हण्डणी हण्डणी
सरे दी सलहाई
भाई सरे दी सलहाई।

चौल़ां माए रेड़दिए रेड़दिए
कुड़ियां जो सीत भाई
कुड़ियां जो सीत।

कोठे उप्पर दमदमा, दमदमा
मैं बुझया कोई चोर भाई
मैं बुझया कोई चोर।

चोर नी पैहरी, पैहरी
राजे दा भण्डारी भाई
राजे दा भण्डारी।

दियां माए चौल़मां, चौल़मा
पुत्तर तेरे ठाकर, भाई
पुत्तर तेरे ठाकर।
धियां तेरियां राणियां, राणियां
पुत्तर तेरे ठाकर, भाई
पुत्तर तेरे ठाकर।

हमीरपुर के लोकगीत

1 नवंबर, 1966 को जिला हमीरपुर कांगड़ा से पृथक हो अलग प्रशासनिक इकाई बना किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से अलग इकाई नहीं है। यहां की संस्कृति और संस्कार एक हैं। कहते हैं आठ कोस पर बोली बदलती है अतः इस दृष्टि से परिवर्तन स्वाभाविक है। यहां कुछ ऐसे गीतों के उदाहरण दिए जा रहे हैं जो जिला कांगड़ा में शामिल नहीं किए गए हैं, यद्यपि उनका चलन कांगड़ा में भी है जैसे 'रल़ी गीत'।

विवाह गीत

अंदरेरा (वधू प्रवेश)

अजी अंबे दिया डालि़या कोयल बोले
कोयल बोले, कोई सबद सुणाए।
नी एह घर तेरा बहुए, एह वर तेरा
नी तुध आईया ते, मेरा फलि़या सुहावा।
नी आ मेरी बहुए, एह घर तेरा।

नी तुध आईया ते, मेरा अंदर सुहावा
नी आ मेरिए बहुए, एह घर तेरा।
नी अंबे दिया डालि़या कोयल बोले
कोयल बोले, काई सबद सुणाए।

सिर गुंदाई

सीस गुंदाई गोरी, बड़ी बांकी लगदी
तुजो क्या पेई ढोला, धी है बगानी।
धी है बगानी बोरिए, नार तू मेरी
तेरियां ग्लाईयां ढोला, अंगे अंगे रचियां
अंगे अंगे रचियां गोरिए, गुड़े घ्योएं मिठियां।

चक्के ता लाई गोरी, बड़ी बांकी लगदी
तुजो क्या पेई ढोला, धी है बगानी
धी है बगानी गोरिए, नार तू मेरी
तेरियां ग्लाईयां ढोला, अंगे अंगे रचियां
अंगे अंगे रचियां गोरिए, गुड़े घ्योएं मिठियां।

पैर बंदाई

बहू द्वारा बड़े-बुजुर्गों, सास-ससुर, जेठ-जेठानी आदि के पैर छूने की रस्म।

पैरां बंदेयां लाड़िए, अपणे ददौरे भाल आई
पैरां बंददी बो जायां, सीस सुणदी बो जायां।

पैरां बंदेयां लाड़िए, अपणियां ददेसू भाल आई
पैरां बंददी बो जायां, सीस सुणदी बो जायां।

पैरां बंदेयां लाड़िए, अपणे सौहरे भाल जाई
सीस सुणदो बो जायां, सेवा करदी बो जायां।

पैरां बंदेयां लाड़िए, अपणे जेठे भाल आई
पैरां बंददी बो जायां, सेवा करदी बो जायां।

मुंह घड़ाई

नववधू के मुंहदिखाई पर उसे कुछ भेंट दी जाती है।

दो अंबे दियां डालि़यां झुल रहियां, दो अंबे दियां
दो चंबे दियां डालि़यां मिल रहियां, दो चंबे दियां।

दो चंबे दियां डालि़यां खिल रहियां, दो चंबे दियां
म्हाराजां दिया अखिंया मिल रहियां, म्हाराजां दियां।

सूरजे दियां किरणां चप रहियां, सूरजे दियां
दो चंबे दियां डालि़यां सज्ज रहियां, दो चंबे दियां।
दिखी चंदे दियां रसमां चप रहियां, दिखी चंदे दियां
दो अंबे दियां डालि़यां झुल रहियां, दो अंबे दियां।

स्तातर (स्नान) गीत

सोने जेहड़िए पटड़िए, स्वर्णे तेरे पौए न
ददेसू पूछां, ददोरे पूछां, कुथू बैठी न्हौणा न

चंद चढ़े दिया चानणियां, पुछवाड़े बैठी न्हौणा न।

सोने जेहड़िए पटड़िए, स्वर्णे तेरे पौए न
ससू पूछां, सौहरे पूछां, कुथू बैठी न्हौणा न
चंद चढ़े दिया चानणियां, पुछवाड़े बैठी न्हौणा न।

सोने जेहड़िए पटड़िए, स्वर्णे तेरे पौए न
जेठे पूछां, जठाणियां पूछां, कुथू बैठी न्हौणा न
चंद चढ़े दिया चानणियां, पुछवाड़ें बैठी न्हौणा न!

विदाई गीत

कजो आए सुनहरी पग बन्ह के
जी सुनहरी पग बन्ह के
असां बेटी नईयों भेजणी।
महलां उप्पर रोए बापू मेरा
जी डोली़ बिच बैण रोंवदी
चुप कर के तू डोली बिच बहि जा
तू डोली बिच बहि जा
कि रोणे दा रूआज नई है।
कजो आए...
महलां उप्पर रोए अम्मा मेरी
जी डोली बिच बैण रोए
चुप कर क तू डोली बिच बैह जा
कि रोणे दा रूआज नईं है।
कजो आए सुनहरी पग बन्ह के
जी सुनहरी पग बन्ह के
असां बेटी नईयों भेजणी।

रली़ गीत

कांगड़ा, हमीरपुर तथा आसपास के क्षेत्रों में 'रली़शंकर' विवाह एक ऐसा उत्सव है जिसे विवाहित महिलाएं आयोजित करती हैं और कन्याएं खेलती हैं। यह पूजन रली़ नाम की ब्राह्मण कन्या और शंकर की याद में किया जाता है। रली़ का विवाह शंकर नाम के वर से कर दिया जाता है जो बालक सा

लगता है। रल़ी नदी में कूदकर प्राण त्याग देती है और उसके साथ शंकर भी नदी में कूदकर मर जाता है। शिव-पार्वती की मिट्टी से मूर्तियां बना स्थापित की जाती हैं जिन्हें रल़ीशंकर कहा-माना जाता है। चैत्र संक्रांति से वैशाखी तक रोज़ इनकी पूजा की जाती है। हर कृत्य के साथ गीत गाए जाते हैं। अंत में विवाह के बाद इन्हें पानी में बहाया जाता है। रल़ी को बेटी की भांति पालकी में बिठा कहार ले जाते हैं और समीपस्थ दरिया में विसर्जित कर दिया जाता है।

1

लीपने-पोतने का गीत

बौह्टड़िए सूह्ण ल्यौ
सूह्यां घर धर चन्ना
बोह्टड़िए...

बोह्टड़िए गोहा ल्यौ
लिप्यां घर घर चन्ना
बौह्टड़िए...

बोह्टड़िए गोलू ल्यौ
परोल्यां घर घर चना
बोह्टड़िए सूहण ल्यौ।

2

फूल चुनने का गीत

फुल्ल चुंगदिए दाड़बाड़िए,
महाराज जी
अज न डंगी कल नागणुए
महाराज जी
फेर ना आऊं तेरे बाग में।

3

रल़ी को नहलाने का गीत

हे बाही थी अमली, जम्या था अप्पू बारी
अमली मंगदी बधाई रे।

हे छेया म्हीनियां अप्पू फुल्या बारी
अमली मंगदी बधाई रे।

हे उठ मेरेया नाईया, नणदा देया भाईया बारी
नणदा तू सद बुलाओ रे।

हे आओ मेरेया भाईया बही जा पटड़े बारी
दुखसुख गलाओ रे।

हे उठ मेरे घारो पिड़ मेरी पालकी बारी
मैं बी पैंईएं जाणा रे।

हे आओ मेरी नणदे बैठ पटड़े बारी
दुध चरणा धुलाओ रे।

हे आओ मेरी नणदे, बैठ पलंगे बारी
दुख सुख गलाओ रे।

हे औंदिया नणदा रूण झुण लाई बारी,
जांदिया भरे तलाओ रे।

गीत में विवाहिता ननद को भाभी द्वारा मायके बुलाए जाने और उसके आदर-सत्कार का उल्लेख है। पीहर से जाने पर भाभी इतना रोती है कि तालाब भर जाते हैं।

4

घोड़ी

घोड़ी तेरी बे बीरा सोह्णी
बणदी काठियां दे नाल़
मैं बलिहारी ओ मेरेया सुरजणा।
बागों बीचोंबीच ल्याओ
चोट नगार्‌यां घर ढुंढणा।
सेह्रा तेरा बे बीरा सोह्णा
बणदा कलगियां दे नाल़
मैं बलिहारी ओ मेरेया सुरजणा।
बागों बीचोंबीच ल्याओ
चोट नगार्‌यां घर ढुंढणा।

रात्रि गीत

पारलिए धारे ओ डरावणिए, कि ओ डरावणिए!
कि धख मुइए न्हिहठी होयां।

तखत बहिठेया ओ सौह्रयाजी, कि ओ सौह्रयाजी
कि धख जी ओ पेइंयड़े भेज।
हऊं क्या जाणू ओ मेरी कुलबहुए, कि ओ कुलबहुए
कि जाई अपणियां सस्सू न पूछ।

नरमा कतैंदिया ओ सासु जी, कि ओ सासु जी
कि धख जी ओ पेईयड़े भेजे।

हऊं क्या जाणू ओ मेरी कुलबहुए, कि ओ कुलबहुए
कि जाई अपणे जेठे नूं पूछ।
सरियां खलैंदयो ओ जेठाजी, कि ओ जेठाजी
कि धख जी ओ पेइंयड़े भेज।

हऊं क्या जाणू ओ मेरी कुल भाभिए, कि ओ कुल भाभीए
कि जाई अपणी जठाणियां नूं पूछ

कसीदा कढ़ैंदिए ओ जठाणि जी, कि ओ जठाणिए
कि धख जी ओ पेइंयड़े भेज।

हऊं क्या जाणू ओ मेरी कुलबहुए, कि ओ कुलबहुए
कि जाई अपणे कंते जो पूछ

सुइना तुलैंदेया ओ कंताजी ओ कंता जी
कि धख जी ओ पेईयड़े भेज।

ल्यायां ग्वालुआ ओ तिर्मछटी, कि ओ तिर्मछटी
कि नाजो दी मैं जाऊं जाऊं चुकाऊं।

गीत में बहू के मायके जाने की तीव्र इच्छा है। वह बार-बार सास-ससुर, जेठानी-देवरानी से पूछती है। अंत में उसे पति से पूछने को कहा जाता है। पति इस बात को सुन तिरमिरे की सोटी मंगवाता है कि मैं इसकी जाऊं-जाऊं चुका ही देता हूं।

बाबा बालकनाथ स्तुति

हमीरपुर के दियोटसिद्ध में बाबा बालकनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है।

1

तेरी गुफा दे नजारे जोगिया मेरा मन मोह लेया
मन मोह लेया मेरा।

पैर खड़ाऊंआं पाई बाबे नैं अंग बभूता लाई
घर घर अलख जागाया जोगिएं
मन मोह लेया मेरा।

म्हूंडें झोल़ी पाई बाबे नैं अंग बभूता लाई
घर घर अलख जगाया जोगिएं
मन मोह लेया मेरा मन।

गल़ बिच सिंगी पाई बाबे नैं अंग बभूता लाई
घर घर अलख जगाया जोगिएं
मन मोह लेया मेरा मन।

2

मारी ताड़ी बैठा उजाड़ी, बाबा दूधाधारिया
हत्थ कटोरा दूधे दा, तेरी माई मनावण आई
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

घर जायां माई आपणे, वारी असें लया बनवास
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

हत्थ कटो दहिंए दा, तेरी नार मनावण आई
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

घर जायां गोरी आपणे, वारी डाढे ने कलम बगाही
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

हत्थे लई फुल्लां दी करनी, तेरी भैण मनावण आई
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

घर चल्लो बीरा आपणे, साडे बीरा ना कोई
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

घर जायां भैणे आपणे, असीं लया बनवास
ओ मैं वारी दूधाधारिया।

ऊना के लोकगीत

1 नवंबर, 1966 को ही कांगड़ा से अलग हुआ जिला ऊना पंजाब से सटा हुआ क्षेत्र है। अतः यहां की बोली में पंजाबी का प्रभाव आ जाता है। यहां गाने की तर्ज, लहजा अलग है। कांगड़ा के पहले दिए गए गीतों से भिन्न कुछ गीत यहां दिए जा रहे हैं।

जन्मगीत

1

ननदी भाबो दा जोड़ दोनों कत्तदियां
जे तेरे जन्मेया गीगा, साडा है भतीजा
बधाई साह्नू की देवेगी!

नी ननदे जे मेरे जन्मेया गीगा, तेरा है भतीजा
कंगण तैनूं मैं दे देऊंगी।

भाबो नूं उठेया सी दर्द, ननद पट्टी पासे खड़ी
ऐ नी भाबो अपणे बोल सम्भाल
कंगण तां मैं लैं लऊंगी।

2

मंगो मंगो नी नणदीयो मंगण दी बहार
गैंहणे न तू मंगी नणदीये मेरे अंगा दा शृंगार
गैंहणया विच्चों नथली दऊंगी चुटकी लऊंगी काट
भांडे न तू मंगी नण्दीये मेरी रसोई दा शृंगार
भांडेया बिच्चों कड़छी दऊंगी डंडी लऊंगी काट
मंज्जी न तू मंगी नण्दीये मेरे बेहड़े दा शृंगार
मंज्जीया बिच्चों कट्टी दऊंगी पूंछ लऊंगी काट।
मंगो मंगो नी नण्दीयों मंगण दी बहार।

3

रुपये मंगे नणदी लाल दी बधाई
इक रुपया मेरे ससुर दी कमाई है

अठन्नी लै जा नणदी लाल दी बधाई
अठन्नी मेरे जेठ दी कमाई है

दवन्नी लै जा नणदी लाल दी बधाई
इक दवन्नी मेरे देवर दी पढ़ाई है

इकन्नी लै जा नणदी लाल दी बधाई
इक इकन्नी से मेरा लाल खेलेगा
दो धक्के मारूं नणदी लाल दी बधाई।

4

गीगा जम्मेया मैं सुणया, कुम्हारे दे गईयां
भाईया वे कुम्हारा लै आया करूवा कुनाली

करूवा कुनाली मैं लै आवां नहलावेगी दाई
चंडला जम्मेया मैं सुणया पाद्धे बेहड़े दे खड़ियो

भाईया वे पाद्धेया, बेटेयां चंगी रास सुधाया
चंडला रास मैं गिणा, गणावे गा बाबा।

यज्ञोपवीत संस्कार

छोटा जेया कनिया मंगदा जनेऊ
धीरा हो कनिया, बीजणी कपाही।
छोटा जेया कनिया मंगदा जनेऊ
धीरा हो कनिया चुगणी कपाही।
छोटा जेया कनिया मंगदा जनेऊ
धीरा हो कनिया कतणी कपाही।
इक्कसी तंदे दूए तीए तंदे जनेऊ।

लेई छेई

यज्ञोपवीत के लिए एकत्रित समिधा को लेई छेई कहते हैं जो शुभ मुहूर्त में लाई जाती है।

कौण सुहागण तेरिया लेई छेईया आई।
अंदरे दी लेई छेई बाहरे न आई
दादी सुहागण तेरिया लेई छेईया आई।

कौण सुहागण तेरिया लेई छेईया आई
माता सुहागण तेरिया लेई छेईया आई।

अंदरे दी लेई छेई बाहरे न आई
कौण सुहागण तेरिया लेई छेईया आई
चाची सुहागण तेरिया लेई छेईया आई।

अंदरे दी लेई छेई बाहरे नूं आई
भाभो सुहागण तेरिया लेई छेईया आई।

विवाह गीत

तोरण

तोरन बनैका आओ म्हारे
इस तोरन बनैके नूं देओ कूंगू
इस तोरन बनैके नूं देओ फुल दुब
इस तोरन बनैके नूं देबो धूप
इस तोरन बनैके नूं देओ नवेद।

बटणा

1

कणक कचरूआं मैदा कि घीयू रलाइए
कौण इस बटणे जोगा कि बटणा कीजिए।

हटडुआं बल गईए, हत्थे लई झोलणा
बहुआ गोरिया बर मिलेया, कि सदा मिट्ठा बोलणा।

हटडुआं बल गईए, हत्थे लई सूत ए
बहुआ गोरिया बर मिलेया कि भेले दा पूत ऐ।

हटडुआं बल गई ए, हत्थ लई आरसी
बहुआ गोरियां बर मिलेया कि दूरों लिखदा फारसी।

2

बटणा कुलैंदिए नैणे नखरेलो ए
बटणे नूं क्या चिर लाया ए।
गई थी सुरियां दे गोहे नूं
उत्थे लग्गी बड़ी देर ए।

बटणा कुलैंदिए नैणे नखरेलो ए
बटणे नूं क्या चिर लाया ए
गई थी मैं कणका दे मेदे नूं
उत्थे लग्गी बड़ी देर ए।

बटणा कुलैंदिए नैणे नखरेलो ए
बटणे नूं क्या चिर लाया ए
गई थीं मैं हल्दी दी गठिया नूं
उत्थे लग्गी बड़ी देर ए।

सेहरा

चुग ल्या नी मालण चंबे दियां कलियां
बे बनायो, बे बनायो।
अच्छी बनायो, अच्छी दोस्ती लगायो
हीरे लाल जड़ायो, सुच्चे बौह्त लगायो
मेरे याणे बने दा सेहरा
बे बनायो, बे बनायो।
तेरा बापू हंसे तेरे मुकुट चढ़ाई के
मेरिया माईया दे मन है बधाईयां
बे बनायो, बे बनायो।
अच्छी बनायो, अच्छी दोस्ती लगायो
हीरे लाल जड़ायो, सुच्चे बौह्त लगायो
बे बनायो, बे बनांयो।

तेल का गीत

तेलिया मेलिया तेल ल्यावे
सात सोहागणी तेल पावे।

तेलिया मेलिया तेल ल्यावे
अम्मा सोहागण तेल पावे।
तेलिया मेलिया तेल ल्यावे
चाची सोहागण तेल पावे।
मेलिया मेलिया तेल ल्यावे
ताई सोहागण तेल पावे।

तेल तुलाई के समय गाली

आंगण साडा कुंगूए लिखेया जी
आई महाजन बैठे जी।
क्या सजनो तुसें गरीयां छुहारे, जी
क्या मिसरी दे कुज्जे जी
असें जै लैणी कुड़में दी जोरा जी
लई के चखंडिया सुत्ते जी।

स्नान गीत

1

सेहर लाड़े दिए माए, लाड़ा न्हौमण आया
चानण चौकी डलायो, लाड़ा न्हौमण आया।

मोतियां जड़त जड़ायो, लाड़ा न्हौमण आया
सेहर लाड़े दिए माए, लाड़ा न्हौमण आया।

चानण चौकी डलायो, लाड़ा न्हौमण आया
मोतियां जड़त जड़ायो, लाड़ा न्हौमण आया।

मोतियां जड़त जड़ायो, लाड़ा न्हौमण आया
सेहर लाड़े दिए नानी, लाड़ा न्हौमण आया।

2

अंगण चिक्कड किन कित्ता नी, किन डोलेया पाणी!
नहावेगा बाबल बेटाजी, उन डोलेया पाणी।
नहावेगा ताए भतीजाजी, उन डोलेया पाणी।
नहावेगा मामे भानजाजी, उन डोलेया पाणी।

3

ती गूंद नहाण चली, सौरे दे चबारे जी
गूंद नहाण चली।
गूंदे कपड़े जी खोले, लाया डयोड ध्याड़ा
गूंदे कपड़े खोले, गूंदे गहणे जी खोले
लाया ड्योड ध्याड़ा जी, गूंदे गहणे जी खोले।

4

सेवा लाड़े दिए माए
लाड़ा बाहर खड़ोता।

तांबे दी धरत मढ़ाओ
लाड़ा बाहर खड़ोता।

लौंगा दा बाड़ दुआओ
लाड़ा बाहर खड़ोता।

कंतू दा पटड़ा ढलाओ
लाड़ा बाहर खड़ोता।

तेल दही सिरे पाओ
लाड़ा बाहर खड़ोता।

नगरे दी नैण बुलाओ
लाड़ा बाहर खड़ोता।

मेहंदी

रंग मैंहदिए, रंग चढ़ावां गूढ़ा
नी रंग मैंहदिए।
पिंडा दे बिच सस्ती बिकेंदी, शहरा दे बिच मैंहगी नी
रंग मैंहदिए, रंग चढ़ावां गूंढ़ा
नी रंग मैंहदिए।
डंडा भी लम्मा, कंडा भी लम्मा, मार घसका रखके नी
रंग मैंहदिए, रंग चढ़ावा गूढ़ा
नी रंग मैंहदिए।

तेल

कणकिया तेल कटोरिए भर पैसे नूं, पैसे नूं।
पहला तेल सड़ोलिया, तेरी अमा ने, अम्मा ने
लाड़े दी अम्मा ने तेल लवालेया, इक पैसे नूं पैसे नूं
कणकिया तेल कटोरिए, भर पैसे नूं, पैसे नूं।
दूजा तेल सड़ालिया तेरी चाची ने, चाची ने
लाड़े दी चाची ने तेल लवालेया इक पैसे नूं, पैसे नूं।

सांद (शांति हवन)

1

सुर्गे ते उतरेयो देवतेओ, सांदी आये बओ
साड्डा आमण नहीं लाड़ेया, बह्मा बिष्णु बओ।
सुर्गे ते उतरेया देवतेओ सांदी आये बहो
साड्डा आमण नहीं लाड़ेया, तेरा बाबा बओ।
सुर्गे ते उतरेयो देवतेओ, सांदी आई बओ
साड्डा आमण नहीं लाड़ेया, तेरा ताया बओ।

2

सांदी बहिठेया बाह्मणा
तुझ क्या ही चाहिदा।
जी ओ मेरी जजमानणी
मुझ कुंगू चाहिदा।
कुंगू बथेरा म्हारे, सरफा न करेयां।

विवाह गीतों में गालियां

कांगड़ा, हमीरपुर की भांति यहां भी विवाह में खूब गालियां गाई जाती हैं। यद्यपि बोली व टेक्स्ट की भिन्नता लिए हुए है। कुछ गालियों में शब्दावली कुछ फेरबदल के साथ गाई जाती हैं।

सांद (शांति हवन) में मामा को गालियां

मामा आया बण ठण के, सूट लिआया मंग शुंग के
सूट तेरें आव नहीं, क्या मामा तिज्जो लाज नहीं!

मामा आया बण ठण के, टोपी लिआया मंग शुंग के
टोपिया तेरिया आब नहीं, जुंड़ा दा कोई हसाब नहीं।

मामैं पैया तेल मुइए मैं तेरी सौं
ओरने पैया धेला पाई मामे पाई माई।

नाई प्रोत लेई नैं नह्ठे, अदोअद बंडाई
नैण परोतणी खुशियां मनाण, घरे जो गोली आई।

पुरोहित को गालियां

1

कुदा घल्लिया तू बाम्मण एया
कुदे बेड़े जाणा ए।

कुड़मा दा घल्लेया मैं बाम्मण एया
कुड़मा दे बेड़े जाणा ए।

आ साये दिआ बरामणा तूं लै दच्छणा
बूरिया मेंहे दा दान करानियां तू लै दच्छणा।

नी मैं दड़ा नी जजमानणिए मेरा चौंका सुन्ना
मेरा कुण मेंहे जो दुग्गे!
कुड़मैं दिआ जोरो दान करानियां
तू लै लै बरामणा दच्छणा।

नी मैं राजी नी जजमानणिए
मेरा चौंका होइया सुहाया
ए दे दे दच्छणा।

2

भलां जी, किसे दिया बाम्मणा
भलां जी, आई बैठा साम्मणा।
भलां जी, पानी बुड्ढा ठांगणा
भलां जी तिलकी पिया आंगणा।
भलां जी, चथोई गिया ठप्पणा
भलां जी, चंगी मिल्ली दच्छणा।

गाली : मिलणी के समय

3

मेरे रणबुटुए दी डोर
अच्छा मेरा रणबटुआ।
कुड़मे लाड़ी म्हारे आई रे बाबा, अंदर बाड़ी रे बाबा
कित्ता खड़का दड़का रे बाबा, कि होया लड़का रे बाबा।

बज्जी थाली रे बाबा, कि जम्मे चाली रे बाबा
अंदा मट रे बाबा, कि जम्मे सठ रे बाबा
बट्टी रस्सी रे बाबा, कि जम्मे अस्सी रे बाबा

बाह्या जौ रे बाबा, कि जम्मे सौ रे बाबा
दित्ता धूप रे बाबा, कि जमेया पूत रे बाबा।

मेरे रणबटुए दी डोर
अच्छा मेरा रणबटूआ।

गाली : खाना खाते समय

4

पत्तल़ लै डूना लै बे, नाले आ सजना
भत लै पत लै बे, नाले आ सजना
मांह लै, मां लै बे, नाले आ सजना
छाल़ लै गाल लै बे, नाले आ सजना
सक्कर लै लक्कड़ लै बे, नाले आ सजना
घ्यो लै प्यौ लै बे, नाले आ सजना।

बारात को गालियां

1

बज्ज बे शह्नरिया बज चीरे वालिया, बाबल बेड़े बज बे
जे तुसीं आए बज्जदे बाजे, अगैं तां साडे उच्चे दरवाजे।

जे तुसीं लांदियां लौंगा दियां पुड़ियां
अग्गें ता साडे सहैरा दियां कुड़ियां।

जे तुसीं लांदिया जोरो दिया घघरियां
अग्गें तां साडे उच्चियां अटारियां।

जे तुसीं लांदियां पित्तलां परातीं
अग्गे त्रां साडियां उच्चियां जातीं।

जे तुसीं लियाए बज्जदे नगारे
अग्गें तां साडे मुण्डे कुआरे।

2

बाज्जां आल़े आए शह्नरिया बाजा दैं हत्थ तोते
छूई हार परोते शह्नरिया, छूई हार परोते।

बाज्जां दैं गल़ पाए शह्नरिया बाज्जा दे गल़ पाए
फुल्लां हार परोते शह्नरिया, छैलां दे गल़ पाए।

धाम की गालियां

1

चंदे लसलस लाई, तारा कोई कोई ए
जंज बुढेयां दी आई, गबरू कोई कोई ए।

चंदे लसलस लाई, तारा कोई कोई ए
जंज काणेयां दी आई, सुरिआखा कोई कोई ए।

जंज बोल़ेयां दी आई, सुणदा कोई कोई ए।
चंदे लसलस लाई, तारा कोई कोई ए।

2

छोलियां दी दाल़ करारी, मिर्चां तिरमिरियां
खा गेई खिलकत सारी, छोलियां दी दाल़ करारी।
जीजा खा के होर मंगदा, कड़छी मुंह बिच मारी।
कड़छी दा खून हो गिया, चलिया मुकद्दमा भारी।
जीजे दा मां लग्ग गेई, साड़ी खोटी चुअनी सारी।

जीजे को गालियां

1

मेरे हत्थ आ गेई नीं कौल कैंच दी डब्बी
जीजे दिआ अम्मा खसम कीते, दो चार छब्बी।

मेरे हत्थ आ गेई नीं कौल कैंच दी डब्बी
जीजा उठी नैं पैंटा जो झाड़, पैंटा च भूंड बड़ेया
इक्क नी बड़ेया दो नी बड़े, बड़े पंज सत्त चार।

रौला मत पा अड़िए, ए माऊ मेरिया दे यार
कुल पंज सत चार, होईया तिसा ने प्यार।

जीजा जुड़ी गया मंजे नाल़, मंजा तेरा क्या लगदा
सालिए ए मेरी माऊ दा यार मेरा पियो लगदा।

लैहरे लैहरे मुंगरे पठाणकोटों आए ने
जीजा पुच्छै बोबो ते, परौणे कुतू ते आए ने।

चुप कर बसरा बे, ए तेरे पियो आए ने
तत्ते डरदिया, सुत्थणी हेठ लुकाए ने।

हल्ला न कर मोईया, परौणा बुलाए दा ए
इक्की दुई दा बी नी, चौंटा दा तू जाया ए।

कें तां लौंग लैचियां दे के तां ताईयां चाचियां दे
कें तां लौंग सपारी दे के भैंण कुआरी दे।

हरिए मूलि़ए नी तेरे लेह्रे लेह्रे पत्त
जीजे दा पियो जोरी दिये कन्ने जोड़े हत्थ
इसा जो लेई जानयो जी, दिल गिया है अक्क।

2

मकोड़िया बे तेरी जात बुरी
खसम खाणिया बे तेरी जात बुरी।
जीजे दिया अम्मा सियाई सुत्थण
मकोड़े किती सुक्खण मकोड़िया बे...

आ जा बे जीजा साडे कारखाने
तिज्जो लोहे दा कम्म सिखा देईए
तैनूं सिमले दिल्लिया दी सैल करा देईये।
मकोड़िया बे तेरी जात बुरी।

सिरगुंदी की गालियां

छंद पैयां जीजा सालि़यां मैं
छंद परागे आइये जाइये, छंदे अग्गै तोता
जीजे दिया माऊ खसम कीता साडे पिंड दा खोता।

छंद पैयां जीजा सालि़यां मैं
छंद परागे आइये जाइये, छंदे अग्गे कूड़ा
जीजे दिया भैणा खसम कीता साडे पिंड दा चूह्ड़ा।
छंद पैयां जीजा सालि़यां मैं।

भड़ग्गे (अंतिम धाम) की गालियां

अंगणे साडे बैह जा कुड़मा दिये बेटिए
साड़ी पत्तल ले ले कुड़मा दिये बेटिए।

साडा खाणा खा ले कुड़मा दिए बेटिए
साडे गोते रल़ जा कुड़मा दिए बेटिए।

तू सत्तां दिनां दी भुक्खी, गराईयां लै लै नीं
तू माऊ नै घल्ली भुक्खी, गराईयां लै लै नीं।

उनजजे दी नी भुक्खी, कल्ले दी नी भुक्खी
माऊ ढिढे दी नी भुक्खी, गराईयां लै लै नीं।

लग्न

नी तू बाहर आ राणी रूकमण तैनो राम बुलाए
राम बुलावे तां क्या फरमावे, पैरी झांझर छणके
वे मैं किहां आमा म्हाराज, वे मैं बाबे त शर्मानियां
तेरे बाबे नो अपनी माता देवां, साडी लगना दी वेला
नी तू बाहर आ राणी रूकमण तैनो राम बुलावे।

वेदी में दही पिलाने पर गाली

थोड़ा थोड़ा माधो पी वे
उद्दल ज़ाणी दे जाया

अम्मा दियां पट्टियां नूं रख वे
बाबे दी मुछां नूं रख वे

थोड़ा थोड़ा माधो पी वे
उद्दल जाणी दे जाया।

खारे बदलना

बाबुल बेटड़िए हुण होई पराई
खारिया बदल लेईयां हुण होई पराई
बाबुल बेटड़िये हुण होई पराई।

बाबे ने मणस दिती बस चलदा न कोई
चाचे भतिजड़िए हुण होई पराई।

खारियां बदल लईयां हुण होई पराई
चाचे मणस दिती हुण होई पराई।

मामे भाणजी हुण होई पराई
मामे भाणजी मणस दिती हुण होई पराई।

विदाई

तेरेयां महलां दे बिच बिच वे बाबुल मेरा डोला नहीं लंघदा
इक इट पटा देवांगा धिए घर जा आपणे।

तेरेयां महलां दे बिच बिच वे बाबुल मेरी माई रोवे
तेरी माई नूं चुप्प करा देवांगा धिए घर जा आपणे।

तेरेयां महलां दे बिच बिच वे बाबुल मेरियां गुड़ियां रहियां
मेरियां खेलण पोतड़ियां धिए घर जा आपणे।

अंदरेरा

वीरा अम्बरसर दी डब्बी तैनूं खेलदे नूं लब्भी
डब्बी खुल गई बाजार बोह्टी आ गई मुटियार।

आमदणी धार सा वीरे
निकल ससड़िए घर मेरा
तैं ता बरत लिया बथेरा
हुण ता फिरका पै गया मेरा।

आमदणी घर सा वीरे
मंगे खुलड़ी सभात, मंगे तवा ते परात

मंगे शक्क्र जो गाये, मंगे अम्मा जोगा पे
आमदणी घर सा वीरे।

गुणे खेलना

गुणे खेलेयां बहुए, अपणे परोहते दे नाल़
इन्हां गुणा मनयां, इस परोहते देया चरणां बंदेयां।

गुणे खेलेयां बहुए, अपणे सोहरे दे नाल़
इन्हां गुणा मनयां, इस सौहरे देयां चरणा बंदेयां।

गुणे खेलेयां बहुए, अपणे पतौरे दे नाल़
इन्हां गुणा मनयां, इस पतौरे दे चरणा बंदेयां।

गुणे खेलेयां बहुए अपणे जेठे दे नाल़
इन्हां गुणा मनयां, इस जेठे दे चरणा बंदेयां।

अंगूठी खोजना

बोह्टी कड़ियां ना छणका साडा मुंडा ना डरा
बोह्टी थाल़ पेया पतासा, साडे मुंडे नाल की हांसा।
मुंडा बाल निआणा, नी बोह्टी मुंडा बाल निआणा।

सुहाग

1

दादा हरे हरे बांस कटाएओ, छत्तालेओ ओबरिया
दादा चढ़ घोड़े ते सवार, म्हूंडे तलवार के नगरोनगर फिरे
दादा पिंडा दे बिच पिंड, बडूही मेरे मन बसेया
पिता हरे हरे बांस कटाएओ, छत्तालेओ ओबरिया
पिता चढ़ घोड़े ते सवार, म्हूंडे तलवार के नगरोनगर फिरे
पिता पिंडा दे बिच पिंड केह्ड़ा पिंड तेरे मन बसेया
बेटिए पिंडा दे बिच पिंड, बडूही मेरे मन बसेया।

2

काह्नूं होईयां ने जवान बाबाजी धियां परदेसणा
तेरे महलां दा शंगार बाबाजी, धियां परेसणा।

जिस अमड़ी ने दे दे लोरियां, लखां लाड़ लड़ाए
हाय रब्बा उस अमड़ी दे, बिछड़न दे दिन आए।

काह्नूं होईयां जवान बाबाजी, धियां परदेसणा
जिस भाभी ने दे दे लोरियां, लखां लाड़ लड़ाए
हाय रब्बा उस भाभी दे बिछड़ने दे दिन आए।
काह्नूं होईयां जवान बाबाजी धियां परदेसणा!

3

नित नईयो पेके रहणा नित नई रहणा कुवांरियां
न लड़ भाभी साडियां हो रहियां ने तैयारियां।
बाबे तां साडे ने ब्याह कर देणा है
कई मंजिला तों साह्नूं दूर कर देणा है
आमागियां पामागियां जोगी वाला फेरा
न लड़ भाभी साडियां हो रही हैं तैयारियां।
नित नईं पेके रैहणा, नित नहीं रैहणा कुवारियां
न लड़ भाभी साडियां हो रही तैयारियां।
ताये तां साडे ने ब्याह कर देणा है
कई मंजिलों तो साह्नूं दूर कर देणा है
आमागियां पामागियां, जोगी वाला फेरा।
न लड़ भाभी साडियां हो रहियां तैयारियां।

4

सच कहो सखि झूठ न बोलो, रंग भवन हरि आयो जी
चलो सखि हर का मुख देखो, रंग भवन।
काहे के तोरन, काहे की बेदी, काहे के कलस लगायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
सुइने के तारेन, रूपे की बेदी, सुचेयां कलस लगायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
हरे हरे गोबरे अंगण लपाया, गज सुचेयां चौक पुरायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
इस सांवरे दूए गोरे मनोहर, संग महामुनि आयो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।

धन धन भाग राजा जनक के, जसरथ सजन बुलायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।

धन धन भाग सिया जी तुम्हारे, रामचद्र बर पायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।

5

बाओजी तुसीं बड़े गियानी, बड़े गियानी
केहा वर अंदा रंग सांवला
जी तुसीं केहा वर अंदा रंग सांवला।
बीबीजी नी कोई गाड़ियां दियां धमका
नी कोई गर्द उड़े रंग सांवला।
जाओ जी तुसीं अतर लगा देओ
कस्तूरी पल़ा देओ वर नूं घोल के।

घोड़ी

छप्प गईयां अखबारां वीराजी, तेरे सगुणा दियां
कौन वीराजी तेरे सगुण मनावे, कौन पढ़े अखबारां
वे वीराजी तेरे सगुणा दियां छप्प गईयां अखबारां।
भाई वीराजी तेरे सगुण मनावे, बाबा पढ़े अखबारां
कौन वीराजी तेरे सगुण मनावे, कौन पढ़े अखबारां
ताया पढ़े अखबारां, वे वीरा तेरे सगुणा दियां
छप्प गईयां अखबारां वीराजी तेरे सगुणा दियां।

बिरहड़ा

साओरियां दे गया जवाईं, बैठा तंबू ताणी
बे हर बोल मना।
चार ध्याड़े न्याहल़ जवाईयां, बग्गे ब्योरे देवां
बे हर बोल मना।
बग्गे ब्योरे घर रख सासू, मैं मुकल्यावा लैणा
बे हर बोल मना।
साओरियां दे घर गया जवाईं, बैठा तंबू ताणी,
बे हर बोल मना।

चार ध्याड़े न्याह्ल़ जवाईयां, थाल़ कटोरे देवां
बे हर बोल मना।
थाल़ कटोरे घर रख सौह्रया, मैं मुकल्यावा लैणा
बे हर बोल मना।

साऔरियां दे घर गया जवाईं, बैठा तंबू ताणी,
बे हर बोल मना

चार ध्साड़े न्याह्ल जवाईंयां, गाई म्हैसी देवां
बे हर बोल मना।

गाईं म्हैसी घरे रख पतौह्रया, मैं मुकल्यावा लैंणा
बे हर बोल मना।

चार ध्साड़े न्याह्ल जवाईयां खारू पटारू देवां
खारियां पटारियां रख मलौह्या, मैं मुकल्यावा लैणा
बे हर बोल मना।

इस प्रकार ससुर, बड़े ससुर सभी दामाद को वस्तुएं देने का लालच देते हैं किंतु दामाद कन्या को साथ ले जाने पर बल देता है।

विवाहोपरांत संबंधियों के बिछड़ने पर

बाओ! नित नित करियो कारजां नी
सानू सद्दी बुलाओ।

बरिह्यां छमाहियां दे पावणे जी
असां रोज नी औणा।

चाचा! नित नित करियो कारजां नी,
सानू सद्दी बुलाओ।

बरिह्यां छमाहियां दे पावणे जी,
असां रोज नी औणा।

चाचा! नित नित करियो कारजां जी
सानू सद्दी बुलाओ।

इस प्रकार सभी संबंधियों को संबोधित कर आग्रह किया जाता है।

ऋतु गीत

सावन मास

1

मैंहदी ता पा दे माए सूकूणी नी माए मेरिए
मैंहदी तां पा दे माए सूकूणी नी माए मेरिए।

मैंहदी दा रंग है उदास सामण आएया
बहुआं नूं भेजयां माए पेहिए नी माए मेरिए
धीयां नूं सद बुलायो सामण आएया।

2

पींघा अधसमाण चढ़ाईयां
डोरां कच्चियां शामा वे।
कर जा पक्किकयां शामा वे
पींघां अधसमाण चढ़ाईयां
डोरां कच्चियां शामा वे।

तेरे प्रेम दी चुक्क लई खारी
होका दिंदी नगरी सारी
मैं तां थकी होई थक्यारी
ओ मेरे शाम मुरारी।

पींघां अधमसाण चढ़ाईयां
डोरां कच्चियां शामा वे
कर जा पक्किकयां शामा वे।

जेठ मास

धूप्पां तां पैंदियां जारो जारो रसिया
किस्स विध हंडणी वाट ए।
लाहौरी पखुआं साडे पास गोरिए
जिथ्थे बहिए उथ्थे झोल लईए।
धूप्पां ता पैंदियां जारो जारो रसिया
किस्स विध हंडणी बाट ए।

लाहौरी तां छतरी साडे पास गोरिए
इस्दीयां छामां छामां चलदे जाईए।
पोहा दे ठण्डे ठण्डे पाणी गोरिए
जिथ्थे बहिए उथ्थे पी लईए।
धूप्पां तां पैंदियां जारो जारो रसिया
किस विध हण्डणी वाट ए।

आषाढ़ मास

चढ़ेया महीना हाड़ सखी री
ऋतु अम्बा दी आई।
साजना वे घर आवे ता अस्सी भी
पहाड़ बस्सिये।

अम्ब तुड़ा लै गोरिए, पायला पा लै
साडा आमण नाहि।
चढ़ेया महीना हाड़ सखी री
रूत अम्बा दी आई।
सजना वे घर आवे ता अस्सी भी
पहाड़ बस्सिए।

छत्ता पोआ लै गोरिए, पखे पोआलै
साडा आमण नाहि।
चढ़ेया महीना हाड़ सखी री
रूत अम्बा दी आई।
सजना वे घर आवे ता अस्सी भी
पहाड़ बस्सिए।

छहमासा

1

चढ़ेया महीना चैत वे अड़ेया
मैं खिड़ रहियां चंबे डालियां।
कुछ वार पईयां, कुछ पार पईयां
सानू बोलियां लान बेहड़े वालियां।

चढ़ेया महीना बसाख वे अड़ेया
बसाखी दे न्हौणै नू जानियां।
स्हाडे हत्थ दे गडुआ मूंढे पर परना
मैं जमना दे न्हौणे जानियां।

चढ़ेया महीना जेठ वे अड़ेया
मैं जेठे ते घुंड कढैनियां।
सानू हसणा खेलणा बौहत पयारा
मैं देहिया नूं आंच न लानियां।

चढ़ेया महीना हाड़ वे अड़ेया
मैं मझियां ते दुध चौई ल्यौनियां।
स्हाडे चोमणे वालड़े दूर सहियो
मैं तां आपे ही चोई लै आनियां।

चढ़ेया महीना सौण वे अड़ेया
मैं कोरे कुज्जे दहियां जमादियां।
स्हाडे खानण वालड़े दूर सहियो
मैं तां छिक्के नू हत्थ ना लानियां।

चढ़ेया महीना भादों वे अड़ेया
मैं पाधे नू पुच्छण जानियां।
खोल खोल पाधेया पोथिया नूं
स्हाडे रांझे ने कद घर आवणा।

2

चैत चित्त बिच सलाह कीत्ती
चलो राधिके नीर भर लाईये जी।
उथे होणगे नंद के लाल सईयो
चल के दर्शन पा आईये।

वैशाख कह चले, नी चित ला चले
नंद के लाल सईयो
मेरे कृष्ण दे हथ बिच बंसरी
जेहड़ी बजदी बारम्बार सईयो।

जेठ जोर कर के बड़ा शार कर के
रस्ते रोक लए बृज दियां नारियां ने
साडा आवणा जावणा बंद कित्ता।

हाड़ हस्सां कुछ दस्सां प्यारे
मेरा हार तूं चुराया है
मेरे बेह्ड़े दे विच चोर कोई नहीं
तूं यूं चुक झोले बिच पा लेया।

सौण भूलियां जी भादों याद आईया
सानू हार दी चोरी ना ला राधे।
जिस नदी ते बैठ के स्नान कीत्ता
उस नदी ते बैह के टोल राधे।

राम कहंदी है जी शाम कहंदी है
कि हथ्थीं दान कीत्ता, असी पईयां रमैंण ख्याल
तेरी सुण के बंसी बिच ध्यान मेरा।

बारामासा

1

चैत्र सोहरे चित ना लागदा
चिट्ठी कलहां माए नी।
पऱ्र होवे ते उड के आवां
उडेया मूल ना जांदा नी।

चढ़े वैशाख आई बसाखी
सखियां सतलुज नावादियां।
नीलो शीलो सारी सहेलियां
रल़मिल सतलुज नावादियां
कुंवारे पणे दी बेफिक्री बिच
छिट्टे मार उड़ामदियां।
मैंनू इथ्थे पा पिंजरे बिच
आप दड़ंगे लावदियां।

चढ़दे जेठ महीने माए
याद आवे घर तेरा नी।

पिछले कमरे सो जावे तूं
नाले करे अंधेरा नी।
तू सोवे मैं खेलां गिट्टे
बज्रे पावां पथेरा नी।
नाले तोता बाजां मारे
नौ लै लै के मेरा नी।

चढ़दे हाड़ महीने माए
सौ सौ पक्षी बोले नी।
बेह्ड़े दे बिच कुड़ियां इकट्ठी
वणके वा वरोले नी।
बेह्ड़े दे बिच कुड़ियां इकट्ठी
गुड्डियां फूक जलाईयां नी
गुड्डे गुड्डी दी करके शादी
कीत्तियां कुढ़म कढ़माईयां नी।

सावन दे महीने माए
रत्ते थम गढ़ावे तूं।
लै मूंजा दी मोटी रस्सी
अंगण पींघा पावे तूं।
गली मुहल्ले दियां कुड़ियां इकट्ठियां
पिंगां झूट झूटावे तूं।
ए ता मौजा किथ्थे माए
फिर भी याद दलावे तूं।

चढ़दे भादों नेहरियां रातां
बीतण बिच न आंदियां नी।
सस, जेठाणी नाल़ दराणी
दिल मेरा परचांदियां नी।
गल्ल ननद दी समझ न आवे
क्या गल्लां ओ करदी ए।
जेहड़ी चतुर ओ गल्लां करदी
लिखदी नूं शर्म भी आंदी ए।

चढ़दे अस्सू आया दशहरा
जोता जगे जगावे तूं।
पा थाली बिच रंगली मैंहदी
मेरे हथ फड़ावे तूं।
गली मुहल्ले दियां कुड़ियां इकट्ठियां
अपणे घर बुलावे तूं।
लै थाली दी रंगली मैंहदी
सब दे हथ लगावे तूं।
कत्तक दे महीने माए
सुपना आख सुणादी हां
पूड़े ता चिलड़ियां मैं
तेरे नाल तलांदी हां।
जदद तूं मैंनूं आवाजां मारे
मैं कुडियां खड़कांदी हां।
जगमग करदी आई दीवाल़ी
थां थां दीये जलानी हां।
अक्ख खोल के देखण लग्गी
सूत्ती पेई बरड़ानी हां।

मगहर दे महीने माए
चिंतपुरनी दे दर्शनां नूं जानी ए
घुंघरूआं आलि़यां खचरां ते
ठंडियां हवा खानी हां।
पिंड पिंड ते गन्ने चूप्पां
चूप्पां ते चुप्पानी हां।
चिट्टे चिट्टे गिह्टे
मैं खिस्से बिच पानी हां।

2

चढ़ेया महीना चैत, चैत चतारदी जी
पिया गए परदेस पिछों पछतामदी जी।
चढ़ेया महीना वैशाख अंगण पक्की दाख जी

दाखा प्यारे मिठियां जी
पिया गए परदेस तोड़ न चखियां जी।

चढ़ेया महीना जेठ, अम्बूए हेठ, चोली गोरी सींमदी
अम्बू दा झड़ रेहा बूर, छम्म छम्म रोमदी जी।

चढ़ेया महीना हाड़, हुंदी मारोमार, घोड़े सवार जे घर आमंदे जी
लायां मैं सोलह श्रृंगार, शगुन मनावदी जी।

चढ़ेया महीना सावण, पींघां प्यारे पै गईयां जी
जिन्हां दे कंत परदेस, झूटन ना जांदियां।

चढ़ेया महीना भादों, की उड़न पंभीरियां जी
जिन्हां दे कंत परदेस, दिल दलगीरियां जी।

चढ़ेया महीना अस्सू, के सुणेयां साडिएं सस्सू जी
के आप सुणामदी जी, बारहीं बरसीं घर आए
सीस गुमांमदी जी।

चढ़ेया महीना कत्तक, कत्ते नाजो सामती जी
लाए के सोलहा श्रृंगार, कत्ते बूहे सामणे जी।
चढ़ेया महीना मगहर, रंगा सूहे सोसणे जी
बारही बरसी घर आए की शगुन मनामदी।

चढ़ेया महीन पोष कि पाले़ प्यारे आ गए जी
ठोकमें चंदे बणाए, ल्हेफ भरामदी जी।
चढ़ेया महीना माघ, लोहड़ी प्यारे आ गई जी
कुटदी मैं सठ्ठी बाले धान चौल़ बणामदी।

चढ़ेया महीना फग्गण, फगुआ मैं खेलदी।
अतर, अमीर, गुलाल सारे रंग डोलदी।

होली गीत

1

होली खेलत नंदलाल, वृंदावन कुंज गली में
सखी शाम ने मारी पिचकारी, मेरी चुनरी दी आब उतारी
चुनरी हो गई लाल गुलाल, वृंदावन कुंज गली में
होली खेलत नंदलाल वृंदावन कुंज गली में।

सखी शाम ने मारी पिचकारी, मेरी चुनरी दी आब उतारी
वाहां हो गई लाल गुलाल, वृंदावन कुंज गली में।
सखी शाम ने मारी पिचकारी, मेरी चुनरी आब उतारी
दिल हो गया बागोंबाग, वृंदावन कुंज गली में।
सखी शाम ने मारी पिचकारी, मेरी बिंदली आब उतारी
मुखड़ा हो गया लाल गुलाल, वृंदावन कुंज गली में।
सखी शाम ने मारी पिचकारी, मेरी पायल आब उतारी
गलियां बिच पै गई झंकार, वृंदावन कुंज गली में।

2

पथरां दे नाल मेरा घड़ा फोड़ेया, वे जशोधा तेरे लाल ने
चंगी मंदी कह के मेरा दिल तोड़ेया, जशोधा तेरे लाल ने।
हथ्थ च धूपां दियां बत्तियां, धूप जगावां हर रोज
धूप जगावण वेले मुख मोड़ेया, जशोधा तेरे लाल ने
हथ्थ च गड़वा गंगाजल पाणी, स्नान करावां हर रोज
स्नान करावण वेले दिल तोड़ेया, जशोधा तेरे लाल ने।
हथ्थ रकेबी थाल जलेबी, भोग लगावां हर रोज
भोग लगावण चेले मुंह मोड़ेया, जशोधा तेरे लाल ने।

कुछ धार्मिक गीत

बाबा बालकनाथ स्तुति

मोर दी सवारी कर आ गिया नी
मा इक छोटा जेहा बालक।
भक्तां ने पुच्छया, क्या नाम तम्हारा
बालकनाथ नाम बतला गया नी
मां इक छोटा जेहा बालक।
भक्तां ने पुच्छया क्या तम्हारा गहणा
गल़ बिच सिंगी बतला गिया नी
मां इक छोटा जेहा बालक।
भक्तां ने पुच्छया क्या तम्हारा खाना
इतबार रोट बतला गिया नी
मां इक छोटा जेहा बालक।

पीर स्तुति

मैं लुक लुक रस्ता देखां
पीरां ने आणा रात नूं।
मैं ढोल नगारे बजामा
पीरां ने आणा रात नूं।
मैं राह बिच रस्ता साफ करामा
पीरां ने आणा रात नूं।
मैं गली पतासे बंडां
पीरां ने आणा रात नूं।
मैं लुक लुक रस्ता देखां
पीरां ने आणा रात नूं।

शिव स्तुति

पार्वतिया नूं वस्त्र पहनामदी
सोने कटोरी मैं केसर घोलां
शिवां नूं तिलक लगांवदी
पार्वती नूं तिलक लगांवदी
शिव शंकर ब्रह्मा तेरी आरती...महादेव हरे।
गढ़ मथुरा ते मैं पेड़ा मंगावां
शिवं नूं भोग लगामदी
पार्वतियां नूं भोग लगामदी
शिव शंकर ब्रह्मा तेरी आरती...महादेव हरे।
गढ़ मथुरा ते मैं फुल्ल मंगावां
शिवां नूं पुष्प चढ़ाउदियां
पार्वतियां नूं पुष्प चढ़ाउदियां
शिव शंकर ब्रह्मा तेरी आरती...महादेव हरे।

भेंट (देवी स्तुति)

1

जिथ्थे उच्चियां निच्चियां धारां
झण्डे झुल्लण तां लगन बहारां
माता चिंतपुर्णी दे।

जिथ्थे काल़िया पील़िया धारां
झण्डे झुल्लण तां लगन बहारां
माता चिंतपुर्णी दे।
जिथ्थे मां ने लाया डेरा, बिच पहाड़ां दे
झण्डे झुल्लण तां लगन बहारां
माता चिंतपुर्णी दे।

2

आई है अस्सू दी बहार, बहारां शेरां वालिए
बहारां जोतां वालिए, बहारां लाटां वालिए।
आई है अस्सू दी बहार, बहारां शेरां वालिए
तेरे मंदर बिच क्या क्या बजदा है!
तबला, सारंगी, सितार, सितार शेरां वालिए
आई है अस्सू दी बहार, बहारां शेरां वालिए।
तेरे मंदर बिच क्या क्या फल़ है!
नींबू, नारंगी, अनार, अनार शेरां वालिए
आई है अस्सू दी बहार, बहारां शेरां वालिए
बहारां जोतां वालिए, बहारां लाटां वालिए।

3

मां लाल चोला जय जय मां!
मां सोहाया चोला जय जय मां।
लग्गियां किनारियां तेरे दर उत्ते
अग्गों शेरां वाली नूं मनावां हथ्थ जोड़ के
मनावां माता नूं, करदे मेरहवानियां।
हत्थ में गड़वा गंगा जल पानी
स्नान कराया माता नूं, जय जय मां
करदे मेहरवानियां जय जय मां।
हत्थ में धूप, धूप्पां दियां बत्तियां
धूप जगाणा शेरां वाली नूं।
मां लाल चोला जयजय मां!
मां सोहाया चोला जायजय मां!

हत्थ में करनी फुल्लां नाल़ भरनी
पुष्प चढ़ावां माता, जयजय मां!
मां लाल चोला, जयजय मां!

कृष्ण कंस युद्ध

कंस मामे छिंजां लाईयां, मैं भी छिंजां जो जाणा
नहीं श्याम! नहीं वो जाणा, ओथी तेरे दुश्मन वैरी।
माए मैं जरूर जाणा, ओथी मेरेयां मामेयां औणा
दूध देयां भैंसड़िए, काह्ने दा रिजक करायां
रोज दिंदी बट्टी दो बट्टियां, अज्ज टिप्पी ना दित्ती
गुज्जर जांदे छुड्डियां, काहन चले अलबेला।
पहली चोट टमके पई है, कंसे दे महल जे कंबदे
दूजी चोट टमके पई है, पापिए दे दंद टराए
तीजी चोट टमके पई है, टमक दिते बो फुटाई
चौथी चोट टमके पई है, चौबां सैह धरती पुजाई।

कुछ अन्य गीत

1

हरे हरे बागां बिच सिटदी छुहारा वे
मैं ही ना हुंदी जानी फिरदा कुवारा वे।
बगदी बगदी रावी विच सिटदा गनेरियां
तू ही ना हुंदी साह्नू होर बथेरियां।
हरे हरे बागां विच फुल्ल गलाब दा
तुरया माही जांदा नी, भरेया मजाज दा।

2

धूरौं लाहौरों जोगी नी आया
दर विच धूणा न लायो जोगी
मैं ता कन्या कुवांरी।
अधी अधी राती जोगी बीन वजावे
मुरली ने मेरा मन मोहया
जोगी सानू लै चल नाल।

बाबे तेरे दे ता महल चुबारे
बण विच साणां दी कुटिया देवी
तुसीं न चलो नाल़ छोड़ बाबे दे महल चुबारे
बण विच कुटिया मंजूर जोगी
सानू लै चलो नाल जोगी।

3

सानू ठूठी घड़वाई दे वे जम्मू देया नौकरा शाहूकारा!
साड़े लामण दे दिन दो जवानी चार ध्याड़े।
तैनूं ठूठी घड़वाई दूंगा वे जम्मू दिए राणिए मुटयारे
सानू छुट्टियां दिंदे दो के शनिचरे, एतवारे।
सानू नत्थ घड़वाई देयां जम्मू देया नौकरा शाहूकारा!
साड़े लामण दे दिन दो जवानी चार ध्याड़े।
तैनूं नत्थ घड़वाई दूंगा वे जम्मू दिए राणिए मुटयारे!
सानू छुट्टियां दिंदे दो के शनिचरे एतवारे।

4

जम्मू लगीयां लड़ाईयां
जानी दे बदले जी मैं सौहरा भेजां सईयोओ नी पतोरा भेजां सईयो!
जम्मू लगीयां जी लड़ाईयां।
सस भी लड़दी नी पतीस लड़े, सईयो पतीस लड़े, लोको सईयो!
तैं की भेजे कंत पराये।
जानी दे बदले नी मैं जेठ भेजां, सईयो नी छोटा देवर भेजां सईयो!
जम्मू लगीयां जी लड़ाईयां।
जठाणी भी लड़दी नी, दराणी लड़े सईयो, दराणी लड़े लोको सईयो!
तैं की भेजे कंत पराये।

चंबा (भरमौर-पांगी) के लोकगीत

ऐतिहासिक संदर्भ

पश्चिमी हिमालय में स्थित चंबा राज्य तीन पर्वत शृंखलाओं में विभक्त है। तीस से साठ मील लंबी ये शृंखलाएं एक-दूसरे के समानांतर हैं। बाहरी शृंखला धौलाधार शृंखला है जिसकी ऊंचाई पंद्रह से अट्ठारह फुट है। इस शृंखला से होकर यहां के मूल वासी गद्दी लोग कांगड़ा आदि स्थानों में अपनी भेड़-बकरियों के साथ आते-जाते हैं। दूसरी पीर पंजाल है जो चौदह हजार से अट्ठारह हजार फुट ऊंची है। यह शृंखला चंबा को दो भागों में बांटती है। तीसरी का नाम जंस्कर है जो अट्ठारह से बीस हजार फुट ऊंची है। ये चंबा को लद्दाख और लाहुल स्पिति से अलग करती है।

चंबा की पांच बजारतें—भरमौर, चंबा, चुराह, भटियात और पांगी होती थीं जिनमें भरमौर मुख्य बजारत रही है जिसमें गद्दी लोग वास करते हैं। इस बजारत की राजधानी बुढल नदी के किनारे स्थित भरमौर थी। चंबा और चुराह बजारतें रावी घाटी में आती हैं। हाथीधार और धौलाधार के बीच में भटियात का क्षेत्र पड़ता है। चंद्रभागा नदी के साथ पांगी का क्षेत्र है जो लाहुल से प्रारंभ होकर जम्मू तक जाता है। इस बजारत में चंबा, लाहुल और पांगी आते हैं।

चंबा के जनजातीय क्षेत्र

चंबा का मुख्य जनजातीय क्षेत्र भरमौर है। यही यहां की प्राचीन राजधानी रहा। दूसरा जनजातीय इलाका पांगी का है जो बैरागढ़ से होते हुए चौदह हजार फुट ऊंचे साच दर्रे के पार चंद्रभागा नदी के किनारे-किनारे है।

चंबा से भरमौर तक के क्षेत्र को शिवपुरी कहा गया है। चंबा से तीस किलोमीटर आगे रावी के दाएं किनारे गूं कोठी के शिव मंदिर के शिलालेख (मेरुवर्मन 680 ई.) में इस मंदिर को शिवपुरी के मध्य स्थित माना है। चंबा से चालीस किलोमीटर लूणा पुल से एक सड़क छतराड़ी को जाती है जहां ऐतिहासिक शक्ति देवी का मंदिर है। लूणा पुल के पार भरमौर का जनजातीय

क्षेत्र आरंभ होता है। दुर्गठी में भरमौर का पहला रेस्ट हाउस है। इससे आगे ऊंचे पहाड़ों का क्षेत्र गधेरन कहलाता है यहां गद्दी लोग वास करते हैं।

गद्दी हिमाचल प्रदेश का एकमात्र आदि कबीला है जो छह ऋतुएं बारह महीने अपनी भेड़ों के साथ चलता रहता है। गर्मियों में गधेरन में पुहाल (भेड़-बकरियों के साथ जाने वाला गद्दी) घर लौटते हैं कुछ समय के लिए। उसी समय इन्हें भेड़ व बकरियों सहित लाहुल की ओर जाना होता है जहां नई घास उगती है। सर्दियों में प्रदेश के निचले क्षेत्र बिलासपुर की ओर प्रस्थान होता है।

साहिल वर्मन (920 ई.) द्वारा स्थापित चंपा या चंबा से पहले रावी के पार सड़क जाती है जो चंबा के चुराह क्षेत्र में प्रवेश करती है। सुरगाणी बांध से आगे चुराह का मुख्यालय तीसा है। तीसा से आगे बैरागढ़ जहां से 'साच' दर्रे से होकर पांगी (पैदल) जाया जा सकता है। चंबा से जनजातीय क्षेत्र पांगी के लिए यही एकमात्र रास्ता है। चुराह के लोगों का पहरावा गद्दियों से भिन्न है यद्यपि ये भी भेड़-बकरी पालन पर निर्भर हैं। जहां गद्दी महिलाएं लुआंचुड़ी पहनती हैं यहां चुराही कुल्लू की भांति पट्टू।

बैरागढ़ से बीस किलोमीटर साच दर्रे का आधार सतरूंडी है। सतरूंडी से पांच किलोमीटर सीधी चढ़ाई पर साच दर्रे की चोटी, दूसरी ओर लगभग छह किलोमीटर उतराई पर पहला पड़ाव बगोटू। बगोटू से बिंद्रावणी और चंद्रभागा के पार चढ़ाई के बाद पांगी का मुख्यालय किलाड़। दूसरी ओर रोहतांग के पार उदयपुर तक बस मार्ग से तथा आगे जीप द्वारा किलाड़ पहुंच सकते हैं।

पांगी से सात हजार से लेकर इक्कीस हजार फुट तक आबादी है। नीचे पंगवाल रहते हैं तो ऊंचाइयों में भोट या बौद्ध। पांगी का जनजातीय क्षेत्र एक ओर जम्मू से मिलता है तो दूसरी ओर चंबा लाहुल (लाहुल स्पिति) से।

चंबा की पुरातन राजधानी भरमौर का नाम ब्रह्मपुर था। भरमौर को चौरासी भी कहा जाता है क्योंकि यहां चौरासी सिद्धों के मंदिर हैं (यद्यपि अब चौरासी की गिनती पूरी नहीं की जा सकती)। ऊंची पहाड़ी पर स्थित भरमौर में ऐतिहासिक लखणा या लक्षणा देवी मंदिर, मणिमहेश मंदिर हैं।

भरमौर

घर होते हुए भी खुले आसमान के नीचे सोने वाला एकमात्र आदि कबीला है हिमाचल प्रदेश का गद्दी समुदाय। भेड़ों के साथ रहने वाले 'पुहाल' को तो नित मुसाफिर कहा जाता है क्योंकि वह छह ऋतुएं बारह

महीने भेड़ों के साथ चलता रहता है। गर्मियों के कुछ महीने गद्दी परिवार अपने मूल निवास 'गधेरन' या 'गदेरन' में बिताते हैं। इन दिनों घर-घर में 'सुर' लगाई जाती है, उत्सव मनाया जाता है। बसोआ, वैशाखी का त्योहार मनाया जाता है। इन परिवारों का सितंबर आते-आते पुनः 'गधेरन' से जालंधर 'कांगड़ा' की ओर प्रस्थान हो जाता है।

गद्दी शब्द संस्कृत के 'गड्डरः' से जोड़ा जाता है जिसका अर्थ भेड़ है। सभी गद्दी भेड़ पालक हैं।

भरमौर के लोग आज प्रवासी हुए हैं। कोई वहां स्थायी रूप से नहीं रहता। किंतु सन् 680 में भरमौर 'ब्रह्मपुर' नाम से जाना जाता था। उस समय वहां अद्वितीय मंदिरों, मूर्तियों का निर्माण हुआ। मूर्तियों पर खुदे लेख, शिलालेख, ताम्रपत्र उज्ज्वल अतीत के प्रतीक हैं। मणिमहेश मंदिर, लक्षणादेवी भरमौर, शक्ति देवी छतराड़ी, मृकुला देवी उदयपुर इस अनूठी वास्तुकला के उदाहरण हैं।

इसी के साथ लगता जनजातीय क्षेत्र पांगी है जो वर्ष के मात्र चार महीने पैदल मार्ग के लिए खुलता है। चंबा की ओर बैरागढ़ से चौदह हजार फुट से ऊंचा साच दर्रा, कुल्लू की ओर से तेरह हजार फुट से अधिक रोहतांग दर्रा और उसके बाद ग्लेशियरों का रास्ता। प्रदेश का यह सबसे कठिन क्षेत्र है।

इस दुर्गम और दूरस्थ क्षेत्र में भी सेहली, लुज पनघट शिलालेख, मिंधल माता लेख अपने भीतर इतिहास छिपाए हुए हैं। मिंधल माता लेख वैशाख शुक्ल अष्टमी वि. सं. 1698 (8 अप्रैल, 1641) का है जो चंबा के निर्वासित राजा पृथ्वीसिंह (1641) की मंडी से कुल्लू, रोहतांग, पांगी, चुराह होते हुए वापसी तथा पुनः चंबा पर आधिपत्य की कहानी कहता है।

चंबा गेजेटियर (1904) में जिला चंबा की बजारतों की जनसंख्या निम्न दी गई है–

बज़ारत	*जनसंख्या*	*क्षेत्रफल*	*घनत्व (1901 की जनगणना के अनुसार)*
पांगी	5,846	4	1,461
भरमौर	4,343	18	261
भटियात	35,115	46	763
चुराह	40,901	48	852
चंबा	41,629	46	905
कुल	1,27,834		

जिला में चंबा ही एकमात्र शहर था (अब भी एकमात्र शहर कहा जा सकता है) जिसकी जनसंख्या 1891 की जनगणना में 5,905 के मुकाबले 1901 में 6,000 हुई।

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनजातीय क्षेत्रों पांगी तथा भरमौर की जनसंख्या सबसे कम 5,846 तथा 4,343 है। इससे पहले तो ये और भी कम रही होगी क्योंकि 1901 की जनगणना में 1,27,834 जनसंख्या के मुकाबले 1891 में 1,24,032 तथा 1881 में 1,15,773 थी।

गजेटियर के अनुसार 1901 में 6,382 लोग यहां से कांगड़ा, गुरदासपुर, कश्मीर आदि स्थानों में चंबा छोड़कर गए।

'ए ग्लासरी ऑफ ट्राईब्ज एंड कास्ट्स' में जो 1883 की जनगणना पर आधारित है, चंबा में गद्दियों की जनसंख्या 11,507 दी है जो सही प्रतीत होती है।

2001 की जनगणना के अनुसार, चंबा जिला की कुल जनसंख्या 4,60,887 है जिसमें से शहरी जनसंख्या 34,542 है। परिवारों की संख्या 79,618 ग्रामीण तथा 7,411 शहरी हैं। अकेले चंबा की जनसंख्या 1,59,399 भरमौर की 22,732 तथा पांगी की 17,598 है जो सबसे कम है। चंबा के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की संख्या कम है। उदाहरणत: भरमौर में 11,734 पुरुष हैं तो 10,998 स्त्रियां, पांगी में 9,259 पुरुष हैं तो 8,339 स्त्रियां।

भरमौर : भौगोलिक स्थिति

भरमौर क्षेत्र को मुख्यत: आठ इकाइयों में बांटा जा सकता है–रावी घाटी, होली क्षेत्र, गरोला क्षेत्र, क्वार्सी, तुदांह नाला, बुड्ढल नाला क्षेत्र, रणहू कोठी क्षेत्र, कुगति क्षेत्र।

गद्दी जनजाति

छह ऋतुएं बारह महीने चलता रहने वाला एकमात्र आदि कबीला है हिमाचल प्रदेश का गद्दी समुदाय। गद्दियों का मूल पड़ाव 'गधेरन' है। जहां से ये अपना सफर शुरू करते हैं। गर्मियों में गधेरन का बार पूरा बसता है। सूने घर गीतों से गूंजते हैं। इन दिनों पुहाल भी घर आते हैं और मंगल मनाते हैं। जिला कांगड़ा से प्रवास के बाद गद्दी परिवार भी अपने घर लौटते हैं।

घर में 'सुर' लगाई जाती है और उत्सव मनाया जाता है। इन दिनों बसो या बसोआ 'वैशाखी' का त्योहार विशेष रूप में मनाया जाता है जब सारा परिवार अपनी जमीन, अपने घर में इकट्ठा होता है।

अपने घर में इनका प्रवास ही कहा जा सकता है। यह समय बहुत कम होता है। मार्च-अप्रैल तक गधेरन वापसी और सितंबर तक किसी तरह फसल इकट्ठी कर पुनः जांधर जाने की तैयारी। सर्दियों में यहां रहना कठिन है इसलिए कुछ मजबूर लोग ही रहते हैं।

भरमौर की सीमा रावी नदी के किनारे लूणापूल से मानी जाती है। लूणा, फाटी, औरा से खड़ामुख तक ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं। लूणापुल से रणहू कोठी को सड़क जाती है। छत्तराड़ी भी इसी ओर है। रावी नदी के बाईं ओर होली है। इस ओर सुंदर खेत बनाए गए हैं और खेती होती है। चणहोती, बुड्ढल के साथ कुगाति, तुंदाह घाटियां हैं।

होली क्षेत्र के लोग 'जालसू' जोत से होकर बैजनाथ, छत्तराड़ी-रणहू कोठी से बलेणी-गिरझाट जोत से शाहपुर रिहलू पहुंचते हैं। जालसू जोत से भेड़-बकरियों के साथ पशु भी जा सकते हैं। दूसरे जोतों से पशु नहीं लांघ सकते। पशु लाने वाले सड़क मार्ग से होकर सफर करते हैं। लंबी यात्रा के दौरान इन्हें घोड़ों, बैलों पर आवश्यक सामान लिए चले हुए देखा जा सकता है।

कांगड़ा क्षेत्र को ये लोग 'जांधर' कहते हैं और यहां के वासियों को जांधरा। कांगड़ा में पहले ये गोशाला या घरों के किसी अलग कमरे में रहा करते थे। पुरुष मजदूरी करते, औरतें धान कूटतीं। अब बहुत से लोगों ने जमीनें खरीद ली हैं और घर बना लिए हैं। धौलाधार की गोद में धर्मशाला, पालमपुर, बैजनाथ के ऊपरी क्षेत्रों में अधिकांश लोग अब स्थायी तौर पर बस गए हैं और भरमौर की तरह राख, बिंद्रावणी, दियोल जैसे नाम भी उन गांवों को दे दिए गए हैं। कुछ स्थायी वासी ऐसे भी हैं जो गधेरन नहीं जाते किंतु इनकी संख्या कम है। प्रायः हर परिवार की जमीन और घर गधेरन में है। वैसे भी सरकारी सुविधा के लिए केवल गधेरन वासी गद्दी ही जनजातीय श्रेणी में आते हैं, कांगड़ा वासी नहीं।

जांधर के लोग गद्दियों को अपना 'मित्तर' बनाते हैं। यह मैत्री विवाहादि उत्सवों के समय निभाई जाती है। जांधर में वैसे भी गद्दी को 'मित्तर' कहकर संबोधित किया जाता है और 'गद्दी मित्तर' अपने भोलेपन के लिए प्रसिद्ध हैं।

पुहाल गर्मियों में भी अपने घर अधिक दिन तक नहीं रह सकता। उसे

तो भेड़-बकरियों को लेकर कुगति दर्रा पार कर चंद्रभागा किनारे लाहुल की पट्टन घाटी में पहुंचना है। बर्फ पिघलने पर लाहुल के शिखरों पर नरम और ताकतवर घास उगती है।

लोग कहते हैं गद्दी जैसा मुसाफिर नहीं। प्रवास के दौरान गद्दी को किसी टैंट या ट्रेकिंग के सामान की आवश्यकता नहीं। किसी गुफा में, किसी बड़े पत्थर के नीचे, पेड़ के नीचे या खुले आकाश के नीचे उसका बसेरा है। अपने मोटे पट्टू के नीचे उकडूं बैठा हुआ भी वह सो लेता है। चाहे ऊपर से वर्षा गिर रही हो, ओले गिर रहे हों या तूफानी हवा हो। पीठ पर उठाए छिक्के में मक्की का आटा पड़ा रहता है। कहीं दो पत्थर लगा आग जलाई और मोटी रोटी बना ली या बकरी का दूध गरम कर पी लिया। कभी सूती या ऊनी सुथण (पाजामा) या कभी नंगी टांगें। ऊपर चोला, सिर पर ऊनी टोपू। कमर में गात्री या डोरा। डोरा कस जाने से चोले में कमर के ऊपर दो जेबें बन जाती हैं, जिन्हें 'खोख' कहा जाता है। खोख में कभी-कभी भेड़-बकरियों के चार-पांच नवजात बच्चे भी रहते हैं। कभी गद्दण साथ चली हो तो वह भी पीठ पर बोझा उठाती है। उसके छिक्के के साथ एल्यूमिनियम के बर्तन अवश्य बंधे रहते हैं। उसकी कमर में भी काला डोरा। ऊपर चोली, नीचे घाघरा, जिसे लुआंचड़ी कहा जाता है। टांगों में सुथण। गले में कीमती पत्थरों के मणकों की माला, सिर में चक, माथे में मानटिक्का, नाक में लौंग, हाथ में कंगणू और पैरों में मौचड़ू।

गद्दी एक ऐसा आदि प्राणी है जो आज भी आग जलाने के लिए चकमक पत्थर का प्रयोग करता है। डोरे के साथ 'रूणका' लटका रहता है जो लोहे का एक टुकड़ा होता है। चमड़े के बटुए में 'भुज़लू' या 'कफ्फी' घास या जंगली वनस्पति के पत्ते। रूणके को चकमक पत्थर से टकराकर भुजलू घास में आग जलाई जाती है।

हालांकि अब समय बदला है। बचपन में जिन गद्दियों को चोला डोरा पहने सी-सी कर सीटी बजाते धण हांकते देखा था, इस बार भरमौर तक कोई गद्दी अपनी वेशभूषा में नहीं दिखाई दिया। भरमौर से आगे केवल एक वृद्ध दंपती चोरा डोरा, लुआंचड़ी पहने जा रहा था। गद्दी लड़के धण के साथ जो चलते हैं, कभी पैंट, कभी जींस पहन लेते हैं। फिर भी विवाह या अन्य उत्सवों पर आज भी उन्हें अपनी वेशभूषा से सुसज्जित देखा जा सकता है। 'सुर' की खुमारी में आज भी गद्दी सीं-सीं करते 'डंडारस' नाचते हैं,

स्त्रियां 'घुरेई'। लोकगीतों की ताल आज भी गूंजती है। कुजू चंचलो, सुन्नी भूंकू, जयचंद नोखू के गीत एंचली, घुरेई, चिड़ी द्रुभड़ी गीत आज भी उसी मनोभावना और मनोयोग से गाए जाते हैं।

चंबा

चंपा के सुगंधित वृक्षों से सुवासित रहा होगा कभी चंबा। आज भी लोक कवि 'चंबे दा फुल्ल' का वर्णन करते हैं। 'चंबे दी कली' की सुगंध पंजाब तक फैली और गीतों के बोल बनी। क्या यही वह चंपा का फूल था जो कालांतर में चंबा बना! हो सकता है।

आज चंबे के फूलों की जगह यहां कंकरीट के फूल भरे पड़े हैं। चौगान सिमटा। महल उजड़े। मंदिरों के साथ-साथ हाट-बाजार बने। रानी सूही के नीचे जो कंकरीट का जंगल उगा है, उसने चंपावती के फूलों के महकने पर रोक लगा दी है।

1839 में विगने ने चंबा की जनसंख्या चार हजार से पांच हजार आंकी थी। वोगल ने 1911 में इसे छह हजार बताया। उस समय सबसे महत्त्वपूर्ण बिल्डिग महल की थी जिसका सबसे पुराना भाग अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य में बना।

आज इस शहर की जनसंख्या 21,214 है। दूर से देखने पर महल आज भी भव्य दिखता है। लक्ष्मीनारायण मंदिर भी नजर आता है। किंतु ऐसा, जैसे झाड़ियों के बीच कोई पुराना ठूंठ।

छह मंदिरों का लक्ष्मीनारायण मंदिर समूह, चमेसणी मंदिर, हरिराय मंदिर आज उस ऐतिहासिक वैभव की याद दिलाते हैं जो इस राजधानी के अतीत के साथ जुड़ा हुआ है। इस समय लक्ष्मीनारायण मंदिर भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के पास है। मंदिर समूह राज्य के अधीन। चमेसणी मंदिर प्रदेश सरकार के भाषा एवं संस्कृति विभाग के अधीन राज्य संरक्षित स्मारक था, अब भारतीय पुरातत्त्व विभाग के अधीन है।

यह स्मारक हमें दस शताब्दियां पीछे ले जाते हैं जब इस सुंदर स्थली पर साहिल वर्मन की राजकुमारी चंपावती की नजर पड़ी।

मिंजर महोत्सव

प्रदेश के अधिकांश भागों में फागुन के आगमन के साथ मेले उत्सवों का आयोजन प्रारंभ हो जाता है। वर्ष भर ये उत्सव तथा मेले अच्छी फसल

आने की संभावना में, फसल की कटाई के बाद तथा फुरसत के क्षणों में मनाए जाते हैं। ऐसा ही एक मेला है मिंजर मेला।

सुनहरी धागों से बनी नवमंजरी या मिंजर उत्सव के प्रथम दिन मिठाई फलों के साथ बांटी जाती है। सर्वप्रथम यह नवमंजरी श्री लक्ष्मीनारायण तथा श्री रघुनाथ जी को भेंट की जाती है। श्रावण मास के द्वितीय रविवार से तृतीय रविवार तक मिंजर बांधी जाती है। इसके बाद इसे नदी में विसर्जित कर दिया जाता है।

मिंजर मेला मनाए जाने के विषय में विभिन्न धारणाएं हैं। 'मंजरी महोत्सव' नामक एक पुस्तिका में इस उत्सव का आरंभ दसवीं शताब्दी बताया गया है। राजा साहिल वर्मन के समय उनके गुरु चरपटनाथ ने इस उत्सव की योजना बनाई। एक अन्य धारणा है कि उत्सव वरुण देवता की पूजा के लिए मनाया जाता है।

चंबा इस समय चंबा रुमाल, चंबा चप्पल और मिंजर मेले के लिए प्रसिद्ध है। सन् 1908 में स्थापित भूरीसिंह संग्रहालय भी चंबा की शान है।

गद्दी या गादी भाषा

गद्दियों की भाषा को गादी, गदयारी या भरमौरी कहा जाता है। चंबा की चंबयाली, चुराह की चुराही और पंगवाल की पंगवाली कहलाती है।

गादी बोली भरमौर के अतिरिक्त छतराड़ी, बस्सु, लिल्ह, साहो, मेहला, कडेड, खजियार, भटियात में बोली जाती है। कांगड़ा तथा पालमपुर में धौलाधार की तलहटी में जहां गद्दी लोग रहते हैं, यह बोली बोली जाती है।

यह बोली सीधी संस्कृत के निकट है क्योंकि गद्दी लोग अलग-थलग रहे हैं, अतः इनकी बोली आज तक अपने मूल रूप में सुरक्षित रही है। अंण (लाना), अंस (अंश), कन्या (कन्या), कंदमूल (कंदमूल), अंबर (आकाश) जैसे संस्कृत के शब्द आज भी प्रयोग किए जाते हैं।

मुख्य क्षेत्र

गादी का मुख्य क्षेत्र भरमौर है। तहसील भरमौर, छतराड़ी, कूंर, पियूहर, भटियात तथा कांगड़ा (पालमपुर) का गद्दीवासी क्षेत्र इस बोली को बोलता है। गद्दी लोग जब गधेरण से जाते हैं तो सर्दियों में कांगड़ा में बसते हैं। यहां भी इन्होंने भरमौर की भांति गांव के गांव बसाए हैं। इन गांवों के नाम भी

वही रखे हैं जो भरमौर में हैं। जैसे पालमपुर के पास 'राख' गांव है जहां बहुत से गद्दी रहते हैं, बैजनाथ के ऊपर 'दयोल' गद्दियों का गांव है। अतः यहां गद्दियों ने पूरा भरमौर ही बसा दिया है। साथ ही आई गादी भाषा।

गादी बोली का दूसरा क्षेत्र बेलज, गूं, बकानी, मैहला का ऊपरी भाग, कडेड है। तीसरा बस्सु और चौथा लिल्ह तथा साहो है। इन क्षेत्रों के गद्दी यहीं रहते हैं, कहीं प्रवास पर नहीं जाते। अधिकांश राठी लोग रहते हैं अतः बोली में थोड़ा अंतर आया है।

ग्रियर्सन आदि विद्वानों ने 'ष' ध्वनि को इस बोली में असाधारण बताया है, 'ष' शब्द श, स, ख़ और ह ध्वनि भी देता है। चंबा में 'स', साहो तथा लिल्ह में इसे 'श' बोला जाता है। जैसे सांग (साग तथा शाग), सिंग (सिंग तथा शिंग), शंढ (संढ तथा शंढ)।

चंबा-भरमौर के लोकगीत

धार्मिक गीत

शिव स्तुति

1

धूड़ू नचेया

धूड़ू नचेया जटा ओ खलारी ओ
धूड़ू नचेया जटा ओ खलारी हो।
गंगा गौरां पाणिए जो गईयां हो।
गंगा गौरां सरो पैर लड़ियां हो।
गंगा पुच्छदी, क्या लगदी तू मेरी हो
गौरां बोलदी मैं सौकण तेरी हो।

गंगा जो लई गेया भगीरथ चेला हो
धुड़ू रई गेया केल मकेला हो।

2

सिब कैलासों के बासी

सिब कैलासों के बासी धौलीधारों के राजा
संकर संकट हरणा।

तेरे कैलासों का अंत नी पाया
तेरे कैलासों का...
अंत बेअंत तेरी माया ओ मेरे रामा
अंत बेअंत तेरी माया।
सिब कैलासों के बासी...।

नंगे नंगे पैरां तेरे जातरू जे आए
भरदे जै जैकारा ओ भोले बाबा
भरदे जै जैकारा
सिब कैलासों के बासी...।

अंग बभूति ढोह्लू संवारे
दरसन किया तेरे करणा ओ भोले बाबा
दरसन किया तेरे करणा
सिब कैलासों के बासी धौलीधारों के राजा
संकर संकट हरणा।

रूपांतर

सिब कैलासों के बासी

सिब कैलासों के बासी धौलीधारों के राजा
संकर संकट हरणा।

तेरे कैलासों का अंत न पाया
अंत बेअंत तेरी माया ओ मेरे रामा
अंत बेअंत तेरी माया।

पैह्ला ता डेरा स्वामी चम्बे रे चौगानां
दूजा डेरा भरमौरा ओ मेरे रामा
दूजा डेरा भरमौरा।

तीजा ता डेरा स्वामी हड़सर थाणा
चौथा डेरा धणछोआ ओ मेरे रामा
चौथा डेरा धणछोआ।

पंजुआं ता डेरा स्वामी सिब तां कलौतरी
छठुआं डेरा ऊपर कैलासा ओ मेरे रामा
छठुआं डेरा कैलासा।

रूपांतर

शिव कैलासों के वासी

धौलीधारों के राजा, संकर संकट हरणा
मेरे स्वामी...तुध मेरा संकट हरणा।

तेरे जे कैलासों का अंत न पाया
जगत स्वामी लगन रहे चरणों में
औखी औखी घाटी प्रभुजी बिखड़ा जे पैंडा
जगत स्वामी समझ समझ पग धरना
शिव कैलासों के वासी...।

एह गौरीकुण्ड सतिजुगा जे बणेया
जगत स्वामी पाप कटे घड़ी छिन में
कैसे जे राज री लड़की तू कहिए
मेरी गौरा केस री हुंदी पटराणी
राजा हिमालय दी लड़की मैं सखियो
शिवजी दी हुंदी पटराणी।
शिव कैलासों के वासी...।

प्रणय गीत

कूंजू चंचलो

कपड़े धोआं छम-छम रोआं चंचलो, बिच के बो नसाणी हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बिच के बो नसाणी हो।

कपड़े धोआं छम-छम रोआं कुंजुआ, बिच बटण नसाणी हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बिच बटण नसाणी हो।

गोरी-गोरी बांह लाल चूड़ा चंचलो, बिच के बो नसाणी हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बिच के बो नसाणी हो।

गोरी-गोरी बांह लाल चूड़ा चंचलो, बिच गजरा नसाणी हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बिच गजरा नसाणी हो।

लोक तां गलांदे काली-काली चंचलो, तू तां मरुए दी डाली हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे तू तां मरुए दी डाली हो।

हत्था कने हत्थ मत लांदा कुंजुआ, हत्थे सोने दी गुठ्ठी हो।
हाय बो मोरिए जिन्दे हत्थे सोने दी गुठ्ठी हो।

सोने दा गम मत कर चंचलो, चम्बे सोना बथेरा हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे चम्बे सोना बथेरा हो।

बांहीं कने हत्थ मत लांदा कुंजुआ, बांहीं चांदिए दे गजरे हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे बांहीं चांदिए दे गजरे हो।

गजरयां दा गम मत करैं चंचलो, चम्बे चांदी बथेरा हो।
हाय बो मेरिए जिन्दे चम्बे चांदी बथेरा हो।

रूपांतर

कपड़ेआं धोआं कने रोआं कुञ्जुआ,
मुखों (या मुक्ख) बोल जुबानी ओ। मेरिए जिंदे। (टेक)

असां चली जाणा परदेस चैंचलो,
रख गूठी नसाणी ओ। मेरिए जिंदे।
गूठिया तां तेरिया नि मैं पांदी,
चंबे सुन्ना भत्हेरे ओ। मेरिए जिंदे।

छातिया ने छाती मत लांदी चैंचलो,
छाती बटणा दी जोड़ी ओ। मेरिए जिंदे।
चिटड़ा रमाल तेरे हथ कुञ्जुआ,
लियां बटणा नसाणी हो
मेरिए जिंदे लियां बटणा नसाणी हो। मेरिए जिंदे।

खुलें बो चगानें मेरा डेरा चंचलो
रखी दियां किछ नसाणी हो
मेरिए जिंदे किछ रखेयां नसाणी हो। मेरिए जिंदे।
बटणा रा बसोस मत करें कुञ्जुआ,
चंबे बटण भत्हेरे ओ। मेरिए जिंदे।

मुंहें कने मुंहें मत लांदी चैंचलो,
तिज्जो खांसी बमारी ओ। मेरिए जिंदे।
खांसिया दा डर मत करैं कुञ्जुआ,
चंबे बैद भत्हेरे ओ। मेरिए जिंदे।

कलकिया राती चली जाणा चैंचलो,
कम पई गिया भारी ओ। मेरिए जिंदे।

कलकिया राती न जायां कुञ्जुआ,
लंघी औयां दुआरिया ओ। मेरिए जिंदे।
राती बराती में न औंदा चैंचलो,
तेरे घरें तां बंदूकां ओ। मेरिए जिंदे।

फुलमू-रांझू

गुआडुएं पच्छुआडुएं तू कजो झाकदी,
झाकां कजो मारदी।
दो हत्थ बुटणे दे ला फुलमू,
गल्लां होई बीतियां।

बुटणा लगान तेरियां सक्की भाभियां,
तेरीयां ताईयां-चाचियां।
जिन्हां जो ब्याहे दा चा ओ रांझू,
गल्लां होई बीतियां।

मैं तां होया मजबूर फुलमू,
तिज्जो ते दूर फुलमू।
पंडतां कित्ता मेरा नास,
गल्लां होई बीतियां।

जिन्नी तां बाह्मणे तेरा ब्याह रखेया,
ओ ब्याह गिणेया।
उसदी नि पाए परमेसर पूरी,
गल्लां होई बीतियां।

बाह्मणां दा दोष नि किछ फुलमू,
ऐह तां कर्मा दा लिखया होयै।
कर्मा दा लिखयां नि मिटै फुलमू,
गल्लां होई बीतियां।

जाणदी परीता करी दुख भोगणा,
जानी दुख भोगणा।

भुल्ली नि पांदी मैं परीत,
गल्लां होई बीतियां।

इक्की पासें रांझू ब्याहणा चलेया,
ब्याहणा चलेया।
दुए पासें फुलमू दी लाश चली,
गल्लां होई बीतियां।

ठप्पा-ठप्पा क्हारो मेरी पालकिया,
मेरी पालकिया।
फुलमू जो दाग मैं देयां,
गल्लां होई बीतियां।

सुन्नी भूंकू

सुन्नी भूंकू भरमौर की एक त्रासद गाथा है जो संक्षिप्त रूप में गीत के रूप में गाई जाती है। भूंकू नाम का गद्दी युवक अपनी भेड़-बकरियां लेकर लाहुल जाता है जहां उसकी भेंट लाहुली युवती सुन्नी से होती है। दोनों में प्रेम हो जाता है। अगली गर्मियों में जब भूंकू ने पुनः अपनी भेड़-बकरियों के साथ आना होता है तो कुछ औरतें उसे बताती हैं कि भूंकू तो मर चुका है। ऐसी ही खबर भूंकू को लाहुल पहुंचने पर मिलती है। फलतः दोनों एक-दूसरे के वियोग में मर जाते हैं।

गीतकार ने भूंकू का परिचय गठीले जवान के रूप में दिया है जिसकी दाढ़ी काले भंवरे जैसी है-

छोटड़ा गद्‌देटा भैणजी, काली भौंर दाढ़ी है।

गांव में भूंकू को कुत्ते भौंकते हैं-

ओ बाहर जइयो निकियो छुकयो, कुत्ते कस जो लगे हो।

सुन्नी बाहर आती है तो वार्तालाप इस तरह होता है-

कठी तेरे घर ओ मित्तरा, कठी जो चलूरा हो।
भट्‌टी टिकरी घर बो मण्हिए, लोहला जा चलूरा हो।

सुन्नी के घर में वह कई दिन ठहरता है। उसे समय का भान नहीं रहता। कई दिनों बाद वह पूछता है-

कुण जिणी रित सुन्निए, कुण जिणा महीना है
सैरकणी रित ओ भूंकूआ, काति दा महीना है।

अगले साल गर्मियों में जब पुनः पुहाल लाहुल आते हैं तो कुछ मनचले भूंकू के मरने की झूठी खबर यूं सुनाते हैं–

होर तां मह्णू राजी बाजी भूंकू गद्दी मुआ हो।

उधर भूंकू के आने पर भी ऐसी खबर दी जाती है–

होर तां मह्णू राजी बाजी सुन्नी भोटली मुई हो।

रूपांतर

तिंदी लगी जातरा हो
भूंकू जातरा जो आंदा ओ।
भट्टी टिक्करी रा भूंकू ओ गद्दी
जातरा जो आया ओ।
लक्कें बनदा चोला डोरा
काली़ भौरें दाढ़ी ओ
बणी ठणी जातरी जो सुन्नी
भोटली़ आई ओ।
हत्थे बणदे टोके ओ सुन्निए
हांखीं मंझ कजला़ ओ
दंदा बणदा दंदासा ओ सुन्निए
देखणै रा चाओ ओ।
पी ओ पियाई भूंकू गद्दी
नचणा लगोरा ओ
नचदे नचदे ओ भूंकूए
सुन्नी बखा हेरे ओ।
नजरी ने नजर ओ
सुन्निए मलाई ओ
ढोली ओ सन्हाटे आए
बज्जदे ढमाके ओ।
दूहरी फट्ट पायो ओ ढोलियो
गद्दी नचणा लगोरा ओ।

बाहर जायो निक्कुओ छुक्कूओ
कुत्ते कस जो लगोरे ओ
बाहर हेरो निक्केयो छुक्कयो
बाहर कुण माह्णु आया ओ।
लम्बड़ा गदेटा ओ सुन्निए
काळी भौंर दाढ़ी ओ
लम्मा झम्मा माह्णू ओ।
इतड़ी गल्ल सुणी ओ सुन्निए
सुन्नी बाह्रा जो आई
गद्दिए पुच्छणा लग्गी ओ।
कठी रा तू गद्दी ओ माह्णुआ
के आ तेरा नां ओ
भट्टी री मैं गद्दी ओ मह्णीए
भूंकू मेरा नां ओ।
कठी तेरे घर ओ माह्णुआं
कठी जो चलूरा ओ
भट्टी टिक्करी घर ओ मह्णीए
लौहळा जो चलूरा ओ।
सत्तां ओबरी रे ताले खुड़ाए
भूंकू आबेरी मा पाऊ ओ
दिने दिने भूडू बणादी
राती जो मनुआ ओ।

सोना भोटळी

सुन्नी भूंकू का एक और रूपांतर 'सोना भोटळी' है। इस गीत में सुन्नी का नाम सोना है। भोट देश यानी लाहुल की वासी होने पर उसे भोटळी या भोटड़ी कहा जाता है। भूंकू को भौंकू भी कहा गया है। भूंकू का घर बड़ा भंगाल या भट्टी टिकरी में बताया गया है। कथा वही है—भरमौर से एक गद्दी युवक भूंकू अपनी भेड़-बकरियां लेकर लाहुल के गोशाल गांव में जाता है। यहां उसकी भेंट सोना नाम की युवती से होती है। सोना भोटली उसे किसी बहाने से अपने घर ले जाती है। उसे चूरू गाय के घी में स्वादिष्ट व्यंजन खिलाती है। उसे वहां रहते हुए छह महीने बीत जाते हैं किंतु समय का पता

नहीं चलता कैसे बीत गया! एक दिन उसे अपनी भेड़-बकरियों की याद आती है तो सोनी से पूछता है कि यह कौन सा महीना है और कौन सी ऋतु है! सोनी उसे बताती है कि यह कार्तिक का महीना आ लगा है। अंततः उसे वापस जाना पड़ता है। दूसरी गर्मियों में जब सब पुहाल लाहुल से गुजरते हैं तो सोनी उनसे भूंकू के बारे में पूछती है। कोई मनचला मजाक में बताता है कि भूंकू तो मर गया है। बस, सोनी बेहोश हो गिर जाती है और अपने प्राण त्याग देती है। जब भूंकू वहां पहुंचता है और उसे सोनी के मरने की खबर मिलती है। वह भी अपने प्राण त्याग देता है।

सोना ता भाटड़ी बलिए पाणिया रे गई
गुंशे री चौंऊरे बलिए नौवां गद्दी आया।

सोना ता भोटड़ी बलिए पुछूणे लागी
क्या तेरा नांव बलिए क्या तेरा ग्राऊंए!

भूंकू मेरा नांव बलिए बीड़ भंगाल ग्राऊंए
भूंकू लागा पूछूणे बलिए क्या तेरा नांव
क्या तेरा ग्राऊंए!
सोना मेरा नांव बलिए बाड़ी गुशाणे ग्रांऊंए।

अंदर आईए भूंकू गद्दिया घाणे बूझी देंऊंले
मूं नी आणा सोनी भोटड़ी सारा सूरे री बासे।

सारा सूरे री बासे चुली चौका देऊंले
सोनी छैड़े किनरी बलिए भूंकू छैड़े नाचै।

भूंकू छैड़े किनरी बलिए सोनी छैड़े नाचै
भूंकू तां आए मौज बैणेरा
पता नीए वास्त बरिए शैरे काटता जीयो।

ताता ताती खिचड़ी ए भूंकू जो दिती ओ
चूरिए घीऊए चोरी कारी दिती जीयो।

खांदे पींदे प्रेमा करांदे जीयो
प्रेमा करदे कई महीने बीते जीयो।

नई रीति रे चीड़ चवाड़े वाशुदे जीयो
भूंकू गद्दी री निद्रा जागी जीयो।

सांगा साथी रे मिलणेरी लागी जियो
भूंकू पूछा कुण ता रित ऐ कुण महीना जीयो।

केठी मेरी भेड बकरी तिना हेरदा साथी जीयो
त्रिण चुगदी भेडा बकरी तिना हेरदा साथी जीयो।

सोनी छोडी तिंदि पारे गैया जीयो
सोनी बोलदी आइए भूंकू गद्‌दी जीयो।

हाऊं तां त्रड़ी तेरी आगी जीयो
नोऊएं बारणै सोनी पूछणे गई जीयो।

गद्‌दी भाइयां सुखसांता देणा जीयो
होरां गद्‌दी राजीबाजी भूंकू गद्‌दी मुआ जीयो।

सोना भोटड़ी चेता गवाई जीयो
चेता गवाई फेरी मरी गई जीयो।

आऊं तो आया ए कागे री वैखे जीयो।
माऊं तां भेडा बकरी घारे छूटी गई जीयो।

भूंकू गद्‌दी ए पुछणे लागा जीयो
होर तां राजीबाजी सोनी भेटड़ी मूई जीयो।

भूंकू ता गद्‌दी चेता गवाई जीयो
चेता गवाई फेरी मरी गई जीयो।

सतयुगे री माणुए सत युगे गेई जीयो
हीरा जन्मेरी हीरा जन्मा गेई जीयो।

एक प्रचलित गाने में अन्य रूपांतर–

कठी तेरे घर बो मित्तरा,
कठी जो चल्लू रा ओ।

भटी टिकरी घर बो गदणी,
खरचा जो चल्लू रा ओ।

टुटी मेरे टिकणू री डोर,
बैरिया सम्हाले ओ।

भाले मिंजो भाले बो गदणी,
भाले जिंदे मिंजो भाले ओ।

छिकणू री डोर नी टुटी,
टुटी दिले री परीतां ओ।

कोढ़िया बो सजणा तैं,
हिक बो जाले लाई ओ।

हऊं बो कीहां मुझां तेरे,
हिकडू रे रोगा ओ।

बैरिया बो सजणा तैं,
बड़े बो दुख जाली ओ।

कोढ़िया बो सजणा तू,
भाले बो मिंजो भाले ओ।

राजा हरिसिंघ और गद्दण

कांगड़ा के राजा या राजपरिवार के कंवर द्वारा गद्दण को उठवाकर महलों में डालने का किस्सा कांगड़ा और चंबा दोनों जगह बखाना जाता है। राजा को हरिसिंघ संबोधित किया गया है जबकि कांगड़ा के राजा अपने नाम के साथ 'चंद' लगाते थे और राजा के भाई या अन्य मियां लोग 'सिंघ'। यह संभव है यह राजा का भाई हो जो भेड़ें चराती गद्दण पर आसक्त हो गया और उसे उठवाकर महलों में डाल लिया। गीत में कहीं गुलेर तो कहीं नादौण का जिक्र है। ये दोनों ही कांगड़ा की शाखाएं थीं। कांगड़ा के राजा संसारचंद (1775-1823) ने नौखू नाम की गद्दण से विवाह किया था। रणजीत सिंह द्वारा कांगड़ा किला व राज्य छीन लेने पर राजा नादौण में रहने लगा था। नादौण में संसारचंद की गद्दण रानी से जुधवीरचंद उत्तराधिकारी हुआ। जुधवीरचंद के पुत्रों में राजा अमरचंद उत्तराधिकारी हुआ जिसके एक भाई का नाम मियां हरिसिंह (जन्म 1840) था। प्रस्तुत प्रचलित गीत राजा संसारचंद तथा नौखू गद्दण के विवाह पर आधारित नहीं लगता। संभव है यह मियां हरिसिंघ हो या गुलेर के किसी राजा का किस्सा हो, जो अपने नाम के साथ 'चंद' के स्थान पर 'सिंह' लगाने लगे थे।

चंबा या भरमौर में गाए जाने वाले इस गीत में यहां की बोली के शब्द

ज्यादा हैं, किस्सा एक ही है। लोकगीत में राजा द्वारा गद्दण को महलों में रहने के अनेक प्रलोभन दिए जाने का उल्लेख है किंतु गद्दण को जमीन पर सोना, भेड़-बकरियों के साथ रहना और अपने गद्दी का संग ही अच्छा लगता है। गीत में बाड़ी के जंगल का जिक्र है और गद्दण का नाम हीरां है। राजा गद्दण को मैदान में रहने, पलंग पर सोने, लाख-दो लाख देने और वजीरी तक देने की बात करता है मगर गद्दण इन सारे प्रलोभनों को ठुकराकर अपनी भेड़-बकरियों, अपने गद्दी के लिए रोती है।

नगारे चुक्की राजा हेड़े जो चढ़ेया
बांकी जिही गद्दण नजरी आई
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

चार सपाही राजें दड़ बड़ भेजे
बांही ते चुक्की डोल़ें पाई
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

छड्डी तां देणा गद्दणी पहाड़ां दा हण्डणा
गधेरने दा बस्सणा
पदरे नदौणे जो आ
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

महलां दा रहणा ओ राजा असां जो नी सजदा
मने नी ओ लगदा
पहाड़ा दा रहणा चंगा
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

छड्डी तां देणा गद्दणी भूंईयां दा सोणा
ओ गद्दणी भूंईयां दा सोणा
नुआरी दे पल़ंगा जो आ
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

नुआरी दे पल़ंगा दा सौणा राजाजी असां जो नि सजदा
ओ असां जो नि गमदा
राणियां जो सजदा
भूंईयां दा सौणा सुहाणा राजा
ओ! मेरेया बांकेया राजेया।

छल़ी छल़ी राजा गद्‌णी जो पुच्छदा
गद्दणी जो पुच्छदा
कुदी दस्स लगदी बुरी
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

थोड़ी थोड़ी राजा छेलुआं भेड्डुआं दी लगदी
गद्दिए दे नाएं लगदी छुरी बो
ओ! मेरेया हरिसिंघा राजेआ!

इक लख दिंदा गद्दणी दो लख दिंदा
पल़मा दी देणी बजीरी
ओ! मेरिए बांकिए गद्दणी!

लख नी लैणा राजेआ दो लख नी ओ लैणा
नी लैणी तेरी बजीरी
ओ! मेरेया हरिसिंघा राजेआ!

अन्य गीत

चंबे दियां धारां

गोरी दा मन लगेया चम्बे दीयां धारां।
घर-घर टिकलू घर-घर बिंदलू,
घर-घर बांकियां नारां।
गोरी दा मन...।

चम्बे दीयां धारां हरियां ते भरियां,
ठंडियां पौण फुहारां।
गोरी दा मन...

चम्बे दीयां धारां। की-की बिकदा,
निम्बू नरंगी अनारां।
गोरी दा मन...।

चम्बे दियां धारां पौण फुहारां
ओढणू भिज्जी जांदा सारा।
घर घर चकरू घर घर बकरू
घरा घर मौज बहारां।

घर घर चरखे घर घर पूणयां
घर घर नारां कताह्रां।
घर घर बजदे ढोल नगारे
घर घर नारां गताह्रां
गोरी दा चित्त लग्गेया चम्बे दीयां धारां।

ऐसा ही एक गीत चंबा के साथ कांगड़ा में भी गाया जाता है–

चम्बे दियां धारां, पौह्न फुहारां
ओ दूरे दिया बासिया, हुण घरैं आई जा।

बद्दलां घिरी घिरी हार बणाया
रळी मिळी सखियां झूला पाया।
ओ दूरे दिया बासिया...।

पंखेरूआं ता पंच्छियां ने कितड़े संदेसे भेजे
बिजली दी चम-चम हिली जा कलेजे।
ओ दूरे दिया बासिया, हुण घरै आई जा।

चंबा हरेया भरेया

हाय बो चम्बा हरेया भरेया
हरेया भरेया रांझणा हो
हरियां चम्बे दियां डाळियां हो
हाय बो चम्बा...।

हाय बो गल्लां हौळें करयां
हौले करयां रांझणा हो
सौहरा सुता, वे सस्स जागदी हो
हाय बो चम्बा...।

हाय बो गल्लां हौळें करयां
हौळे करयां रांझणा हो
जेठ सुता, वे जठानी जागदी हो
हाय बो चम्बा...।

घिर घिर आंवदियां

घिर-घिर आंवदियां ओ मेरे चम्बे दीयां, ओ मेरे चम्बे दीयां,
ओ मेरे चम्बे दीयां धारां।
हौले-हौले चलणा रावी दे कंडे-कंडे
ठंडा रावी दा किनारा।
घिर-घिर आंवदियां...।
बही लैणा पिपलू दी ठंडिया छांवां
कन्ने कटणा दिन सारा।
घिर-घिर आंवदियां...।
गैहरी-गैहरी घाटियां, टेढ़ी-मेढ़ी नदियां
चम्बा सैहर पियारा।
घिर-घिर आंवदियां...।

चंबा उआर कि नदिया पार

चम्बा उआर कि नदियां पार, मेरी लाल रंगिए।
ओ राजा घोड़ी दा सवार, मेरी लाल रंगिए।
पैरां देला मोचड़ुआं दे जोड़, मेरी लाल रंगिए।
चम्बा उआर की नदियां पार, मेरी लाल रंगिए।
ओ राजा घोड़ी दा सवार, मेरी लाल रंगिए।
सिरा देला सालड़ुआं दे जोड़, मेरी लाल रंगिए।
चंबा उआर कि नदिया पार, मेरी लाल रंगिए।
ओ राजा घोड़ी दा सवार, मेरी लाल रंगिए।
ठंडी-ठंडी सड़कां दे मोड़, मेरी लाल रंगिए।
चम्बा उआर कि नदिया पार, मेरी लाल रंगिए।
कि राजा घोड़ी दा सवार, मेरी लाल रंगिए।
चंबा दो नदियां विचकार, इक रावी ते दूजी साल
मेरी लाल रंगिए।

माए नी मेरिए

माए नी मेरिए जम्मूए दी राहे, चंबा है कितणी कि दूर।
उच्ची उच्ची रिढ़ियां, डुग्गी डुग्गी नदियां

दिल मेरा होई जांदा चूर।
माए नी मेरिए...

उड्ड उड्ड कागा तू लई जा स्नेहा
सजणा जो मिलणा जरूर।
माए नी मेरिए...

सिमले नी बस्सणा, स्पाटुए नी बस्सणा
बस्सी लैणा चंबे जरूर।
माए नी मेरिए...

होर होर देस माए सब बो दिक्खी लै
चंबा ता दिक्खणा जरूर।
माए नी मेरिए...।

लाल चिड़िए

यह गीत कुल्लू नाटी में भी गाया जाता है।

लाल चिड़िए! हो लाल चिड़िए।
मूं बी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे पैरां जो मोचडू लई दे बिमलो
मूं बी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे हाथा जो गजरू लई दे बिमलो
मुंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए।
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे सिरा तो सालणू लई दे बिमलो
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे पैरां जो झांझर लई दे बिमलो
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे दसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे नाके जो बेसर लई दे बिमलो
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

हुण बो कतांही जो

हुण बो कतांही जो नह्स्दा धोड़िया
बापूएं लाड़ें तेरे बो लाए।
कदी बो कुआरी बाबुल दे घरैं
अध बो ब्याहियां कद भला छोड़ंदा।

रिढ़ियां कलासां धूड़ू भला बसदा
मिजों बला बलदा गौरां न आए।
हुण बो कतांही जो नह्सदा धोड़िया
अध बो ब्याहियां कद भला छोड़ंदा।

रीढ़ियां रीढ़ियां तां गौरां नह्सदी
नाल़े तां खोह्ले धूड़ू तोपंदा
हुण बो कतांही जो नह्स्दा धोड़िया
अब बो ब्याहियां कद भला छोड़ंदा।

गौरां बला गौरां हासा बो लांदा
गौरां बला ना बो सुणदी
हुण बो कतांही जो नह्स्दा धोड़िया
अब बो ब्याहियां कद भला छोड़ंदा।

मियां मक्खणा

मियां मक्खणा! मियां मक्खणा!
मेरी दाल़ी रा लूण कुनी चखणा
हे रे हेरो! हे री प्यारो!
भले मैं क्या गलाणा हुण कुनी चखणा।

मियां मक्खणा! मिया मक्खणा!
मेरी दाल़ी रा लूण तिईयों चखणा
मैं बो चखणा मेरी अम्मो बकणा
मिंजो बाह्ई ते बिहाल़ फंरी रखणा।

मियां मक्खणा! मियां मक्खणा!
दो पैसे रा तमाकू कुत्थी रखणा
हे रे हेरो! हे री प्यारो!
मैं क्या गलाणा कुत्थे रखणा।

मियां मक्खणा! मियां मक्खणा!
लूणा जो पाणी कैयां रखणा
मैं बो रखणा मेरी लाड़ी बकणा
मिंजो बाहीं ते बिहाल़ फेरी रखणा।

मियां मक्खणा! मियां मक्खणा!
मेरी दाल़ी रा लूणा कुनी चखणा
हे रे हेरो! हे री प्यारो!
भले मैं क्या गलाणा हुण कुनी चखणा।

लच्छी

हाय बो प्यारिये, हाय बो दुलारिए,
तेरे कने बोलणे दा चा,
ओ मेरे कने बोल लच्छीए।

गोरे-गोरे मुंहें टिकलू तू लाई लैंदी,
निकी-निकी हाखीं बिच कजल़ तू बाई लैंदी।
लच्छी बड़ी सूरतां वाली,
ओ मेरे कने बोल लच्छीए।

भरिया घड़ोलू गोरी चुकया नि जांदा,
पतल़ी कमर दुखी जांदी।
निक्का घड़ा चुक लच्छीए,
मेरे कने बोल लच्छीए।

चोलि़या दे टांके खुली-खुली जांदे,
लोकां जो पई जांदे गस्स।
जुआनियां सम्हाल़ लच्छीए,
मेरे कने बोल लच्छीए।
लच्छी बड़ी सूरतां वाली

ओ मेरे कने बोल लच्छिए
हाय बो प्यारिए, हाय बो दुलारिए।

लच्छी लच्छी लोक गलांदे
तू मेरे कने बोल लच्छिए
हाय बो प्यारिए, हाय बो दुलारिए।

जोबणू नणाने

जोबणू नणाने, तू भोड़ी है कि वाने,
कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
जानी मेरिए कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
केसरो मेरी भाभी, कि मिंजो देई जा ओबरे दी चाबी,
कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
जानी मेरिए कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
घड़ी-घड़ी औबरे जो जांदी, कने धूपणू धुखांदी,
कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
जानी मेरिए कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
केसरो मेरी भरजाई, देयां ल्हेफ ते रजाई,
कि अज मेरे बापू ईणा हे।
जानी मेरिए कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
बाबू रिड़केआ चौंडी रे फाटा, असें हेरेया तमासा,
कि अज मेरे बाबू ईणा हे।
जानी मेरिए कि अज मेरे बाबू ईणा हे।

पाणी री टांकी

पाणी री टांकी ओ भाई रामा पाणी री टांकी हो
बेगमूं बड़ी बांकी हो भाई रामा बेगमूं बड़ी बांकी हो।

पाणी रा लोटा हो भाई रामा पाणी रा लोटा हो
जिभ मिठड़ी दिल खोटा ओ भाई रामा
जिभ मिठड़ी दिल खोटा हो...।

दूधा री खीर हो भाई रामा दुधा री खीर हो
काल़जूए मां पीड़ हो भाई रामा
काल़जूए बड़ी पीड़ हो...।

दहीं री लस्सी ओ भाई रामा दहीं री लस्सी हो
बेगमूं बड़ी हस्सी हो भाई रामा बेगमूं बड़ी हस्सी हो।

पाणी री टांकी हो भाई रामा पाणी री टांकी हो
बेगमूं बड़ी बांकी हो भाई रामा बेगमूं बड़ी बांकी हो।

माल्ले दी राखी

डूघे डूघे नालू चढ़ने कुआलू
जाणा माल्ले दिआ राक्खी ओ भला...
भला जाणा माल्ले दिआ राक्खी...।

उच्चियां हन घाटियां बिखड़ा पैंडा
जाणा माल्ले दिआ राक्खी हो
भला जाणा माल्ले दिआ राक्खी...।

जेठ म्हीने धुप्पा जे लगदा
बौह्णा मिली करी छांऊंआं
बो बौह्णा मिली करी छांऊंआं।
हो बो आया नी मेरा साथी हो
भला आया नी मेरा साथी हो...।

सौण म्हीने अम्ब जे पकदे
न्हौणा मिली करी राक्खी हो
भला बौह्णा मिली करी राक्खी हो...।

सौण म्हीने मिंजरा दे मेले
दिखणे मिली करी सौगी हो...
जाणा माल्ले दिआ राक्खी हो
भला जाणा माल्ले दिआ राक्खी हो।

भेडां तेरियां

भेडा तेरियां हो...चुगदियां फाट नीलिमा
हेठ नालूए हो...मेरा बो घराट नीलिमा।

मैं गावां हो...तू सौगी सौगी गायां नीलिमा
तू गायां हो...मैं बंसरी बजायां नीलिमा।

गल्लां तेरियां हो...मिठड़ा मखीर नीलिमा
तू तां लगदी ओ...रांझणे री हीर नीलिमा।

फुल्ल खिड़ेया हो...खिड़ेया गलाब नीलिमा
मैं तां पढ़णी ओ...तेरे नैणा री कताब नीलिमा।

पंछी उडदे ओ...लम्मियां उडारां नीलिमा।
दिल मिलदे ओ...जले़ जमाना सारा नीलिमा।

रूपणू पुहाल़

रूपणू-पुहाल़ घरे ईला हो।
कालका जो छत्तर चढ़ाली हो।
रूपणू-पुहाल़ घरे ईला हो।
सिबजी जो देली नवाल़ा हो।
रेसो ते बदामो सकी भैणां हो।
चित्त मन कुस कने लाणा हो।
जली गया रेसो रा चेता हो।
दिल मेरा जल़ी जांदा हो।
सब तां पुहाल़ घरे आए हो।
रूपणू दा आया सुखसांदा हो।
मेरी-तेरी ढिकलू दी जोड़ी हो।
कुनी जिंदे बैरिए बछोड़ी हो।

ठिंडलु पुहाल़

ठिंडलु पुहाल़ भेड़ बकरी चरांदा जी ओ,
हिंसे री धारा भेड़ बकरी चरांदा जी ओ
रोज-रोज दुधा दूंधा जी ओ
ओ गाई हिंसा दी दूणा-चूणा कीती जी ओ
ठिंडलु पुहाल़ जोड़ा बकरी दूंधा जी ओ
ओ भेड़ा बकरी असी नहीं दूंधा जी ओ
ओ तू नहीं दूंधा होर कुण दूंधा जी ओ
ओ दुर्गा गोठे पलड़ी छाया जी ओ
ठिंडलु पुहाल़ा जपतावा बैठी जी ओ

ओ सातों मूर्ति निकली नै आई जी ओ
ओ साता मूर्ति से सात दी सात दुहणा आई जी ओ
ठिंडलु पुहाल बकरी दूंधा जी ओ
ओ ठिंडलु पुहाला जगदा धैड़ी जी ओ
छिओ मूर्ति छिप कर गई जी ओ
काणा मूर्ति ठिंडलु पकड़ी जी ओ
छोड़ पुहाला क्या इंतजामा लेणा जी ओ
से ठिंडलु पुहाला मांरदी उछाला जी ओ
ओ ठिंडलु पुहाला भेड़ बकरी दूंधा जी ओ।

हिंजू पुहाल़

हिंजू मेरा लाहौल़ा जो चलूरा
हां ओ! हिंजूआ!
चिट्टा तेरा चोल़ा काल़ा डोरा
हां ओ! हिंजूआ!
हत्थें बो नरेलू पिट्ठी त्योड़ी
हां ओ! हिंजूआ!
जल़ी जांदी जोता री चढ़ाई
हां ओ! हिंजूआ।
हिंजू मेरा जोता रा खिंडोरा
हां ओ! हिंजूआ!
धारा पई गिया बरसाल़ा
घणी घणी धूरी घणे घणे डारा
हां ओ! हिंजूआ!
जल़ी जांदी रित संघढ़ोणी
हां ओ! हिंजूआ!
जल़ी जांदा भेडल़ी रा पाल़ा
हां ओ! हिंजूआ!
हिंजू मेरा लाहौल़ा जो चलूरा
हां ओ! हिंजूआ!

भरमौरा जो गाह्णा

उच्चिया रिढ़िया बंगलू पुआयां मेरे गद्दिया
तां मैं तेरे घरा गाह्णा तेरी सौह।
उच्चिया रिढ़िया बंगलू पुआंगा मेरिए गद्दणी
तां तिज्जो घरा लई जांह्गा तेरी सौह।
सरे दी तां मैं नंगी ओ मेरे गद्दिया
नंगे सिरे घरा कियां गाह्ण तेरी सौह।
सरे जो तेरे मैं सलुआ लई देला ओ
चढ़ी बो चम्बे चली गाह्णा ओ।
ढाका दी मैं नंगी मेरे गद्दिया
कियां भरमौरा जो गाह्णा तेरी सौह।
ढाका जो मैं तेरे घघरू लई औंगा ओ
चढ़ी भरमौरा जो गाह्णा ओ।

जोतें पियूरा हीणा

जोतें पियूरा हीणा ओ ग़द्दिया!
जोतें पियूरा हीणा ओ!
चिकणू लऊरा हीणा ओ गद्दिया!
चिकणू लऊरा हीणा ओ!
जोतें पऊरा झांझा ओ रेस्सो!
जोतें पऊरा झांझा ओ!
जांधरा किंआं जाणा ओ रेस्सो!
जांधरा किंआं जाणा ओ!
जांधरा जाई भत्त खाणा ओ...
चिबड़ू रा पाणी ओ गद्दिया!
पाणी किंआं करी पीणा ओ गद्दिया!
पाणी किंआं करी पीणा ओ!
जोतें पियूरा झांझां ओ गद्दिया!
जोतें पियूरा झांझा ओ!
तेरी ओ जुआनी रा ग़म रेहा ओ!
तोस खड़ा ओ लीलो तोस खड़ा ओ!
तेरी जुआनी रा बसोस बड़ा ओ!

पैसे थीआ ओ लीलो! पैसे थीया ओ!
तेरी जुआनी रे दिन कैसे थीआ ओ!
जोतें पियूरा हीणा ओ गद्दिया!
जोतें पियूरा हीणा ओ!

पाह्लणू भेडली चरांदा

जोता पर पाह्लणू भेडली चरांदा
इन्दी जानी तरसांदा ओ।
छोह्‌रू मुरली बजांदा
इन्दी जानी तरसांदा ओ।
जोता पर पाह्लणू भेडली चरांदा
इन्दी दिले भरमांदा ओ।
छोह्‌रू बंसरी बजांदा
इन्दी जानी तरसांदा ओ।

विरह गीत

1

रित संघढ़ोणी हो

प्यारी प्यारी हो क्या लांदा मेरेया प्यारूआ
बाईं पुर भाल़ें हो तेरे दोस्त मेरेया प्यारूआ।

अबे जोते बला जोते ओ लगा सीणा मेरेया प्यारूआ
मिंजो तेरा चेता ओ लगा ईणा मेरेया प्यारूआ।

जोता री थकूरी ओ मत छेड़ैं मेरेया प्यारूआ
जोता पर भाल़े ओ मेरी पतल़िया भाखा प्यारूआ।

पकड़ी पछैणे हो मेरी भाखा मेरेया प्यारूआ
अबे जोता बला जोता हो लगा सीणा मेरेया प्यारूआ।

अज छतराड़ी ओ कल राखा मेरेया प्यारूआ।
रित संघड़ोणी हो चलैं आयां मेरेया प्यारूआ।

अज छतराड़ी ओ डेरा राखा मेरेया प्यारूआ।
मंगले खडोंरे हो बुरे बारें मेरे प्यारूआ।

भेडा बला पुछदी ओ तोड़ बकरी रे भैणे मेरेया
कातकी केह्रे बिछड़े ओ अबे मिलणा बसाखा प्यारूआ।

कातीं रे बिछड़े हो असां मिलणा कधाड़ी प्यारूआ।
कातीं रे बिछड़े हो असां मिंजरां च मिलणा प्यारूआ।

2

भेडा केरिआ पाह्लणुआ

भेडा केरिआ पाह्लणुआ, घरै जो ईयां हो
घरा जो किहां ईणा भेड़े सो लाया हो

सौ सुइयां भेड़लियां, पणसो सुइयां हो
धारा दिया पाह्लणुआं, मन सुंघड़ लग्गा हो

सुंघड़ लग्गा हो सुंघड़ौणा, मने बुरा बुरा लग्गा हो
घरा किहां ईणा भेड़ा सो लाया हो

कोढ़ा भला चितरा उरणु लई इच्छे फेरू पाणा हो
हंसु मोरू छेलु लई इच्छे, कुद्दणा पाणा हो

कुद्दणा पाणा हो जिंदड़ियां जो जिंद बणाली हो
भेड़ा भला तेरीं सोगे लाइयां घरा त्रडेरू हो

दुई भला अक्खे हंडकू रिझदा मुं केलिया खाणा हो
दो भला सेज मंजलु लाया मुं केलिया सोणा हो
भेड़ा केरिआ पाह्लणु, तू घरै जो ईयां हो।

3

पारलिया बणिया

अम्मा पुच्छदी सुण धिए मेरिए
धिए भला दुबली़ कियांह् करी होई ए।

पारलिया बणिया मोर जे बोले हो
अम्मा जी इनीं मोरे निंदर गुआई हो।

सदली बंदूकी जो सदली सकारी जो
धिए भला एहियो मोर मारी मुकाणा हो।

मोर नी मारना मोर नी मुकाणा हो
अम्माजी एहियो मोर पिंजरे च पाणा हो।

कुत्थू जांदी चानणी कुत्थू जांदे तारे हो
अम्माजी कुत्थू जांदे दिला रे सहारे हो।

छुपी जांदी चानणी छुपी जांदे तारे हो
धिए भला छुपी जांदे दिला रे प्यारे हो।

अधी अधी राति मोर चंघोरे हो
अम्माजी इनीं मोरे सुतड़ी जगाई हो।

पारलिया बणिया मोर जे बोले हो
अम्माजी इनीं मोरे निंदर गुआई हो।

4

संझां दियां भाल़ां

हाय बो मेरेया जंगला ढलियारा हो
लगी तां पईयां संझा दियां भाल़ां हो।

उआरें तां चम्बा पारे डलहौजी ओ
घरैं तां मेरे हल्की भरौजी ओ।

हाय बो मेरेया जंगला ढलियारा हो
लगी तां पईयां संझां दियां भाल़ां हो।

घा तां बढणा मैं कूणा कूणा ओ
ध्याड़ा कटणा कि तिज्जो रूणा हो।

मिंजर गीत (भौंरा)

लाल तेरा साफा

मिंजर मेले पर गाया जाने वाला गीत।

लाल तेरा साफा ओ भौंरा, मोरे केरी कलगी हो।
मोरे केरी कलगी ओ जानी, बणी बणी पुन्दी हो।

चिट्टा तेरा चोला ओ भौंरा, काल़ा तेरा डोरा हो।
भाल़ी भाल़ी खिजी ओ जानी, रोई रोई सिजी हो।

राविया दे कण्डे ओ जानी, मोटरां चलो री हो।
मोटरां चलो री ओ जानी, रौणकां लगी री हो।

चम्बे रे चुगाना ओ जानी, बीजली बलो री हो।
मिंजरा लगो री ओ जानी, रौणकां लगो री हो।
मिंजरा रे मेले ओ जानी, बणी-तुणी जाणा हो।

भटिया रा चाढ़ा

बाहर निकलेआ भटिया रा चाड़ा,
बाहर कुण माह्मणू आया भला हे।

नीली घोड़ी काठी तिल्लेदार,
बाहर अप्पू सरकार भला हे।

धपूणी लगो री मेरी जानी,
छत्तरी तानो री भला हे।

चम्बे रे चुगाना मेरी जानी,
मखमले दे थाना भला हे।

जोजणी सयाणी मेरी जानी,
दोहरा गोटा लाणा भला हे।

सड़के-सड़के घुम्मे मेरी जानी,
धूपणी लगो री भला हे।

छत्तरी तानो री मेरी जानी,
बांसुरी बजो री भला हे।

मखमले दे थाना मेरी जानी,
जोजणी सयाणी भला हे।

दोहरा गोटा लाणा मेरी जानी,
मिंजरां दिखणा जाणा भला हे।

पहाड़ां दा रहणा चंगा ओ गद्दिया

पहाड़ां दा रहणा चंगा ओ गद्दिया
पहाड़ां दा रहणा चंगा ओ...।

सहरां मझारे लुभदे नी नालू नाडू
पहाड़ां च बंगदी गंगा ओ...
पहाड़ां दा रहणा चंगा...।

झिकले सहरे बिच गरमी जे हुंदी
पहाड़ां दा सीत नी जांदा ओ...
पहाड़ां दा रहणा चंगा...।

सहरां सहरां बिच अफसर रैंहदे
पहाड़ां च कोई नी औंदा ओ...
पहाड़ां दा रैहणा चंगा...।

झिकले सहरां बिच मोटरां गडियां
पहाड़ां च टट्टू नि जांदा ओ...
पहाड़ा दा रैहणा चंगा...।

सहरां बिच होंदियां बड़ियां बेईमानियां
पहाड़ा दा धर्म ही चंगा ओ...
पहाड़ा दा रैहणा चंगा...।

पहाड़ां दा रैहणा चंगा ओ गद्दिया
पहाड़ा दा रैहणा चंगा ओ...।

करैयां बागे रियां सैरां

करेयां बागे रिया सैरां
मेरेया काल़ेया भौंरा हो।

हो बागे फुल्लणू फलोरे
हो मेरेया काल़ेया भौंरा हो
तेरी मेरी हिकलू री जोड़ी
हो तेरी मेरी हिकलू री जोड़ी
मेरेया काल़ेया भौंरा हो।

हो चिट्टे दंद खोड़े रा दंदासा
मेरेया काल़ेया भौंरा हो
कुनी पाया दंदडू रा हास्सा
मेरेया काल़ेया भौंरा हो

हो कुनी पाया दंदड़ू रा हास्सा
मेरेया काल़ेया भौंरा हो।

चम्बे सहरा मिंजरां लगूरी
मेरेया काल़ेया भौंरा जो
अस्सां मिंजरा जो जाणा
मेरेया काल़ेया भौंरा हो
हो अस्सां मिंजरा जो जाणा
हो मेरेया काल़ेया भौंरा हो।

करेयां बागे दियां सैंरां
हो मेरेया काल़ेया भौंरा हो।

कदेआं फुल्लां वाल़ी सेज

कदेयां फुल्लां वाल़ी सेज ते
फुल्ल खिड़ेया मौज बहार दा।
बागीं पक रहे दो केल़े
रब्ब बिछड़ेयां नूं मेल़े
तैनूं फट पवे तलवार दा
कदेआं फुल्ला वाली सेज ते
फुल्ल खिड़ेया मौज बहार दा।
बागीं पक रई दो छल्लियां
नी मैं केहड़े वेले दियां कल्लियां
मैनूं खतरा होया तेरी जान दा
कदेआं फुल्लां वाल़ी।
बागीं पक रही दो तोरियां
नी मैं सावरां तूं गौरियां
मैनूं खतरा होया तेरी जान दा
कदेयां फुल्लां वाल़ी सेज ते
कदेयां मौज बहार दी।

सुकरात : एक

सुकरात कुड़ियो चिड़ियो
सुकरात राजे रे बेह्ड़े हो।

सुकरात कुड़ियो चिड़ियो
सुकरात चौंह्डी रे बेह्ड़े हो।

सुकरात कुड़ियो चिड़ियो
सुकरात चम्बे रे चौगाना हो।

सुकरात कुड़ियो चिड़ियो
सुकरात लछमी नरैणा हो।

सुकरात कुड़ियो चिड़ियो
सुकरात नौणा पाणी जाणा हो।

ठण्डा पाणी कियां करी पीणा हो
तेरे नैणा हेरी हेरी जीणा हो।

सुकरात : दो

इस गीत में चंबा की रानी सुनयना के बलिदान की गाथा कही गई है जिसका बलिदान करने से चंबा में पानी आया। चैत्र मास में इस स्मृति में रानी सूही का मेला लगता है।

गुड़के चमके भाऊआ मेघा हो,
हो राणी चम्ब्याल़ी रे देसा हो।
किहां गुड़का किहां चमकां हो,
हो अम्बर भरोरे तारे हो।

कुथूये दी आई काल़ी बादली हो,
कुथूये दा बरसेया मेघा हो।
छातिए दी आई काल़ी बादली हो,
नैणा दा बरसेया मेघा हो।

सुकरात कुड़ियो-चिड़ियो हो,
सुकरात राजे दे बेहड़े हो।
सुकरात कुड़ियो-चिड़ियो हो,
सुकरात चम्बे दे चुगाना हो।

सुकरात कुड़ियो-चिड़ियो हो
सुकरात नौणा पणिहारे हो।

ठण्डा पाणी किह्‌यां पीणा हो,
तेरी नैणा हेरी-हेरी जीणा हो।

सुकरात कुड़ियो-चिड़ियो हो,
सुकरात सुई रे मढ़ा हो।
गुड़के चमके भाऊआ मेघा हो,
हो राणी चम्बयाली रे देसा हो।

अन्य गीत

कर्मो छैला

हाय बो मेरेया कर्मोआ छैला हे
तेरे साही मण्हूं भी नी हूणां हे
हाय बो मेरेया

ब्रिकु गबै लेटरी बलोरी हे
आई मामे भाणजे री जोड़ी हे
बिसु मामे मंगणी कराई हे
होरी मामे दिले री कमाई हे
हाय बो मेरेया...

बिसु मामा हट्टी पर भाले हे
होरी मामे जोता पर मारे हे
उच्ची-उच्ची धारा लगा सीणा हे
गमें दा मारोरा लगा पीणा हे
हाय बो मेरेया...

अद्धी पाणी अद्धी जेबा पाणी हे
अद्धी असां ठेके दी मंगाणी हे
ठेके जाणा पता लगी जांदा हे
थोड़ा पीणा मता लगी जांदा हे
हाय बो मेरेया...

पज-सत आये तिसुआला हे
कर्मो दी लास सुटी नाला हे
तिस्से किच्छा होया टेलिफूना हे

मोति रिया राखा होया खूना हे
हाय बो मेरेया...

पंज भाई पंज वो सपाई हे
कर्मो दी लास कुदी पाई हे
सारे वो चुराही पाई रोली हे
पुछणा लगे बो छोली छोली हे
हाय बो मेरेया...

अम्मा तेरी गाई लग्गी दुह्णा हे
झले-झले नैणा लगी रूणां हे
गाई दूही अन्दरा जो गेई हे
गस खाई सणे दुद्ध पेई हे
हाय बो मेरेया...

लेरा दिदी आई ऊमा भैणा हे
तेरे बाझी असां कियां रैणा हे
रौंदी आई हरदेई भैणी हे
मिंजर असां कुसजो भनाणी हे
हाय बो मेरेया...

बाबा तेरा लेरा लगा दैणां हे
भिड़ी भिड़ी गल लगा लाणा हे
होरे मामे लेरा लगे दैंणा हे
बिसू मामे काह्‌ली लगी ईणा हे
हाय बो मेरेया...

रौंदी बो बसन्ती झूरा गेई हे
बिना बो बियाई तेरी रेई हे
दिला री लगोरी कुनी हेरी हे
इत्ते बो बठोरी भी मैं तेरी हे
हाय बो मेरेया...

मोति रिया राखा पेया त्रेला हे
बसन्ती तेरा गीत बड़ा छैला हे

हाय बो मेरेया कर्मोआ छैला हे
तेरे साही मण्हूं भिनी हूणा हे
हाय बो मेरेया कर्मोआ छैला हे
तेरा साही मण्हूं भिनी हूणा हे।

अलबेलया ए

मेरा अलबेला कने केलंगे दा चेला,
बखत ना जाणदा बेला भलेया, अलबेलया ए।
खाणे जो नी दिंदा मूआ लाणे जो नी दिंदा,
संजा ओ गलांदा लाड़ी मेरी भलेया, अलबेलया ए।
कोदरू पुराणा मेरा खान्दा नी जुराणा,
ओ भटिया दी झिंजण मुंगाणी भलेया, अलबेलया ए।
ओ चादर-दुपट्टी मेरे देरणू दी खट्टी,
तैं के दित्तो रा सर चुल्ही भलेया, अलबेलया ए।

डुघल़ी नदी

यह गीत यौवन बीत जाने पर बुढ़ापा आने की व्यथा-कथा कहता है। जब वक्त था तो रक्त भी था। रक्त सूख गया तो वक्त भी गया, अब कोई बात नहीं पूछता।

डुघल़ी नदी रंग खोधल़ा पाणी, हेरि हेरि कायौं डरी जांदी हो
तूं कजो डरी मेरी भोल़िए कायां, इक दिन मरना जरूर हो।

खंगी खडाकी हाखरी महां पाणी, आई बुढ़ापे दी नसाणी हो
जोबन थिये ता जतन थिये, लागे थिये सब कोई हो।
जोबन सुक्के जतन मुक्के, बात न पुछदा कोई हो
रही भरोसे तेरे बो जोबनुआं, ना कीता धरमा दा भाई हो।

रकत थिये ता बक्त थिये, लागू थिये सब कोई हो
रकत सुक्के ता बकत न रहे, बात नी पुछदा कोई हो।

थोड़े बे दिनां देआ जोबनुआं, फिरि बो आयां वार धियाड़े हो
कालड़े ते केस धोलड़े होए, केसे मेरे रंग बदलाया हो।

जुग जीओ

जुग जीओ धारा रेओ गुजरो,
देओ मेरे गाडा जो बसेखा ओ।

गाड तेरा होला जंगलाती ओ,
दिने सदणा तां इंदा राती ओ।

अग लगी बंद बणा तेरे ओ,
जित्थे मेरी बेजती जे होई ओ।

ठंडा-ठंडा मगड़ू रा पाणी ओ,
कीयां-कीयां पीणा मेरी जानी ओ

ठंडा-ठंडा मगड़ू रा पाणी ओ,
छम्बे करी पीणा मेरी जानी ओ।

दुख-सुख चार ता धयाड़े ओ,
फेरी असां माह्णू बणी जाणा ओ।

मेरा कंध भरमाया

यह गीत भरमौर तथा पांगी में गाया जाता है।

देरनुआ ओ! पिटी धेरनुआ ओ!
तईं मेरा कंध भरमाया भला ए।
चीकड़ू री लाई मेरे मोचड़ू गुआए
मना मंझ बुरी बुरी आई भला ए।
देरनुआ ओ!...

चीकड़ू री लाई मेरा सोथणू गुआया
मना मंझ बुरी बुरी आई भला ए।
देरनुआ ओ!...

सद्दी बुला तस्सी कुला रे परोहते
करी दीणा सोथणू रा दान भला ए।

चीकड़ू री लाई मेरा घघरू गुआया
मेरी लुआंचड़ी गुआयी, चोल़ा गुआया
मना मंझ बुरी बुरी आई भला ए।

सद्दी बुला तस्सी कुला रे परोहता
करी दीणा घघरू रा दान भला ए।

चीकड़ू री लाई मेरा सालणू गुआया
मेरा ओढणू गुआया
मना मंझ बुरी बुरी आई भला ए।

सद्दी बुला तस्सी कुला रे परोहता
करी दीणा सालणू रा दान भला ए।

देरनुआ ओ! पिटी धेरनुआ ओ
तईं मेरा कंध भरमाया भला ए।

कूंजड़ी

ये गीत श्रावण मास में गाए जाते हैं। मिंजर मेले के अवसर पर कूंजड़ी मल्हार गीतों के गायन की परंपरा है। ये विरह गीत हैं और हृदयविदारक होते हैं।

1

उड़-उड़ कूंजड़िये, बरखा दे धियाड़े ओ।
मेरे रामा जिन्देयां दे मेले हो,
वे मना याणी मेरी जान।

उड़-उड़ कूंजड़िये, पर तेरे सूने बो मढ़ावां।
रूपे दीयां चूंजां हे,
वे मना याणी मेरी जान।

उड़-उड़ कूंजड़िये, चिकनी बुन्दा मेघ बरसे।
पर मेरे सिजे हो,
ओ मेरे रामा याणी मेरी जान।

उड़-उड़ कूंजड़िये, उच्चे पीपल पींगां पेईयां।
रल-मिल सखियां झूटन गईयां हो,
हो मेरे रामा याणी मेरी जान।

उड़-उड़ कूंजड़िये, जिन्दे रेहले फिरी मेलिले।
मुआ मिलदा न कोई हो,
वे मना याणी मेरी जान।

2

उड़ा मेरी कुजड़ियों, बरसां दे ध्याड़े हो
बरसां रे ध्याड़े हो बे मना
जींदेयां रे मेले हो मेरे रामा, जींदेया रे मेले हो बे मना
याणी मेरी जान सोह्णिए कुंजे।

उड़ी के बे मिलां, भाईयो किहीं उड़ी के बे मिलां
भाईया किहां उड़ी के बे मिलां
पर मेरे सीजे हो, मेरे रामा, पर मेरे सीजे हो, बे मना
सीजे मेरी जान, सोह्णिए कुंजे।

रूपे मढ़ले पर तेरे रूपे मढ़ले, पर तेरे रूपे मढ़ले
चुंज तेरी सोने हो, मेरे मामा चुंज तेरी सोने हो, बे मना
मढ़ा ले मेरी जान, सोह्णिए कुंजे।

पींह्गा ता पेंइया उच्चे पीपल़, पींह्गा जा पेइयां
झुट्टे लांदिया सेहियां हो, मेरे मामा झूटे लांदिया सेहियां हो बे मना
सेहियां मेरी जान, सोह्णिए कुंजे।

फिरि ओ मिलांगे, जींदे रैह्ले, फिरि ओ मिलांगे
होया जुगां रा बछोड़ा हो, मेरे रामा, होया जुगां रा बछोड़ा हो, बे मना
बछोड़ा मेरी जान, सोह्णिए कुंजे।

हो राम भजो, रामा रामे राम ओ, भजो रामे राम भजो ओ भजो
राम क्यों तैं बिसारिया, मेरे रामा, राम तैं क्यों बिसारिया, बे मना
याणी मेरी जान, सोह्णिए कुंजे।

मल्हार

चंबा में वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला।

ऐसी तो बिखमबाजी, जिया को उदासी लागी
मेरे मन में ऐसी आई, लीजियो बनवास।

हरे को मैं काट डालूं
सूखे को मैं जलाए डालूं
उपजे ना बांस, फिर बाजे ना बंसरिया।

ऐसो तो बिखमबाजी, जिया को उदासी लागी
मेरे मन में ऐसी आई, लीजियो बनवास।

झिंझोटी

इस गीत में सुंदरू नामक लुहारी का उल्लेख है जिसके बाप ने अनमेल विवाह किया औरों के विपरीत उसे बहुत दूर भेज अच्छे कपड़े, जूते भी नहीं दिए।

ढकियां चढ़ैंदे सूंदरू, छम छम रोई ओ।
अजी हो मेरिए सुंदरू लुहारिए।

होर तो धीयां बापुए नेड़े नेडे दितियां
सुंदरू तां दिती बापूए नदिया दे पार ए।
अजी हो मेरिए सुंदरू लुहारिए।

होरना जो दिते बापुए सूहे पीले़ कपड़े
सुंदरू जो दिते बापूए खदरा दे सादे
अजी हो मेरिए सुंदरू लुहारिए।

होरना जो दिते बापुए तिल्लेदार जुतियां
सुंदरू जो दिती बापूए काली़ काली़ जुतियां।
अजी हो मेरिए सुंदरू लुहारिए।

होर तां धीयां बापूए गभरू जो दितियां
सुंदरू लुहारी बापूए बुढेया जो दितियां
अजी हो सारी रात जंगले गुजारी ओ।

घुरैही

घुरैही महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गीत हैं। घुरैही नृत्य के साथ इन गीतों को गाया जाता है।

भौंरा ओ भौंरड़ुआ नार किहां प्यारी हो?
नार दे पैर छैल, नार तिंहा प्यारी हो,
नारी केरी जगां छैल, नार तिहां प्यारी हो।

भौंरा ओ भौंरड़ुआ नार किहां प्यारी हो?
नारी केरी लक छैल, नार तिहां प्यारी हो।

भौंरा ओ भौंरड़ुआ नार किहां प्यारी हो?
नारी केरी हिक छैल, नार तिहां प्यारी हो।

नारी केरी दंद छैल, नार तिहां प्यारी हो।
भौंरा ओ भौंरड़ुआ नार किहां प्यारी हो?

नारी केरी माथा छैल, नार तिहां प्यारी हो।
नारी केरी अखियां छैल, नार तिहां प्यारी हो।

सुक्किया तल़ाईया

सुक्किया तल़ाईया पाणी घूमक पेया
फिरि पिच्छै,
रामो हेरैं सिया डोबै गई हो।

के बो ताईए डूबी मेरी सिया
के बो ताई रेया
पैरां ताई डूबी मेरी सिया
होर सारी रेया हो
सुक्किया तल़ाईया...।

के बो ताईए डूबी मेरी सिया
के बो ताई रेया
गौडें ताई डूबी मेरी सिया
होर सारी रेया हो
सुक्किया तल़ाईया...।

के बो ताईए डूबी मेरी सिया
के बो ताई रेया
ढाका ताई डूबी मेरी सिया
होर सारी रेया हो
सुक्किया तल़ाईया...।

के बो ताईए डूबी मेरी सिया
के बो ताई रेया
छाती ताई डूबी मेरी सिया

होर सारी रेया
सुक्किया तल़ाईया...।

के बो ताई डूबी मेरी सिया
के बो ताई रेया
सिरा ताई डूबी तेरी सिया
होर कुछ ना रेया।

ऋतु गीत

बसोआ

सभनां ता सभनां जो सादे आए,
हो हंऊ ता बचारी बिना सादे है।

आया बसोआ माए पंजे-सत्ते
मेरे बापू जो सादे भेजे हो।
बापू ता तेरा कूड़िए विरध स्याणा,
हो उप्पुए उणा उप्पू जाणा हो।

आया बसोआ माए नेड़े-भेड़े,
मेरे भाईए जो सादे भेजे हो।

भाईया ता तेरा चंबे चाकरीया,
हो अप्पू ये ईणा अप्पू जाणा हो।

अम्मां वो मेरिए निदरदिए,
तिजो मेरी नरद न आई हो।

अम्मां वो मेरिए निदरदिए,
मेरे भाइए जो सादे भेजे हो।

भाऊआ ता तेरा कुड़िए निक्का याणा,
हो अप्पूए ईणा अप्पू जाणा हो।

पिंदड़ी ता पिंदड़ी अम्मा अप्पू खायां,
हो पिंदड़ी रे पठ्ठे मिंजो भेजे हो।

गुड़-गुड़ाणी अम्मा अप्पू पिएं,
हो गुड़े रा पाणी मिंजो भेजे हो।

बारामासा

यह चंबा क्षेत्र में गाया जाता है।

प्रथम चिंता इक हरि तेरे नाम, प्रभु तेरे नाम की,
दूसरे उपजेगी और चिंता मेरे श्याम की।

आया महिना चैत, मालती हाथ, बास न औंदी,
पिया गया परदेस, सगन मनावंदी।

आया महिना बसाख, अंगण पक्की दाख,
जीवड़ा उदास, जिवड़े नू डोलदी,
मन बिच करदी बिचार, मुख ते ना बोलदी।

आया महिना जेठ, अंबुए दे हेठ, पंखुआ मैं झोलदी,
पिया गया परदेस, जिवड़े नू डोलदी।

आया महिना हाड़, अंगण खड़ी नार,
हत्थे तलवार, देख्यां किसे मारदी,
जोबन भरया सरीर, देख्यां किसे मारदी।

आया महिना सौण, मिट्ठी-मिट्ठी पौण, पींग्हा मैं पावंदी,
सब सखीयां दे घर कंत, मैं ना पिया पाउंदी।

आया महिना भादों, घनीयर घोर,
बिजली दा जोर, लसक डरावणी,
पिया बिन होंदी सूनी सेज डरावणी।

आया महिना अस्सू, सुण मेरी सस्सू, पुत तेरा घरे नाहीं,
जिस संग करदी संगार, ओ ही पिया घर नाहीं।

आया महिना कत्तक, दयाली मैं पुजदी, कि गिट्ठा मैं बालदी,
पिया गए परदेस, मैं घड़ी-पल न्यूहालदीं।

आया महिना पोह, कि पाले पौंदे चौगुणे,
कि चनण गिट्ठा बालदी,
सेकेंगा सोह्णा जेहा स्याम, कि हवा ते बचाबंदी।

आया महिना माघ, पालेंया दे नाग, कि गिट्ठा मैं पूजदी,
पिया गया परदेस कि सगन मैं पूजदी।

आया महिना फौगण, पिया बिच मगन कि फगुआ मैं खेलदी,
उड़दे अबीर-गुलाल, कि पंजो रंग डोलदी।

एंचली

सिबा मेरे महादेवा, महादेवा बो
सिकरा मेरे महादेवा, महादेवा बो
मुंडखा खलारी नाचै, सिबा मेरे महादेवा।

हो राणी गौरजां, गौरजां बो
मरना पेटे दो पीड़ा, राणी गौरजां।
सिबा मेरे महादेवा, महादेवा
मुंडका तैं क्या लेऊदा, सिबा मेरे महादेवा।

चंबा भरमौर में एंचली गीतों में शिव तथा राम कृष्ण से संबंधित गीत गाए गाते हैं।

मुसादा गायन

मुसादा गायन में रामायण, कृष्ण लीला आदि पौराणिक कथाएं गाई जाती हैं। इस गायन की विशेषता यह है कि एक ही कलाकार तार वाद्य के साथ खंजरी बजाता हुआ गाता है। इस गायन में दो व्यक्ति होते हैं—एक तार वाद्य और खंजरी बजाते हुए गाता है तो दूसरा गाने का अगला चरण पकड़ गायन को आगे बढ़ाता है। मुसादा गायन वालों को मनौती पूरी होने पर घर में गाने के लिए आमंत्रित किया जाता है। खुले स्थान में अनाज की ढेरी लगाकर उस पर धूप जला दिया जाता है। चारों ओर श्रोता बैठ जाते हैं। अब ये गायक प्रचलित लोकगीत भी गाने लगे हैं।

सरब सैराह कोई गुजरी जरमी
गोकुल नगरी कान्हा।
जिस बो हथोडू गुजरी
तिस बो हथोडू कान्हा।

घड़ी बो मटोए, पले बो मटोए
जौ जौ जोत सुआय।
बारां ता बरसे दी गुजरी होई
बारा तां बरसे कान्हा।

अठ दस गुजरी जोड़ कितोरा
दूध दही बेचणा चलियां हो।
काणी देई गुजरी से के लगी बोलणा
हाखी भरी सुरमा दैणा भैणे
कान्ह बखो मारना नजारा।
गुजरी निकली अंदरा दी
बिजली लसकी अम्बरा दी।
छोड़ कान्हा मेरी बईं मत मरोड़े
घरे मेरा बालक याणा हा।
बालक जो तेरे देला घिलाहरा
बालका जो निंदरे सुलाला हो
गढ़ नगरा दीयो गुजरियो हे जी।

होली गीत (चंबा)

रंग दे चुनरिया रंग दे
अज मोरे पिया से...
रंगाई मंगदे।
रंग दे चुनरिया...
हमरी चुनरिया पिया की पगरिया
दोनों बसंती रंग दे, हो मेरे रामा
दोनों बसंती रंग दे
अज मोरे पिया से...।
रंगाई मंगदे, रंग दे, चुनरिया
ओ मेरे पिया, रंगाई ना देवे।
दो मण गैह्णे धर दे
अज मोरे पिया से
रंगाई मंग दे
रंग दे चुनरिया।

संस्कार गीत–यज्ञोपवीत

सुहाग–1

अप्पु मेरे सामी रि सरण जाना हो तां तिजो जदेउए मिलणा।
माता पिता केरी सेवा करला हो तां तिजो जदेउए मिलणा।
गुरु अपणे केरे चरण बन्दला हो तां तिजो जदेउए मिलणा।
सभ सभी तीर्थ न्हाला राजेआ तां तिजो जदेउए मिलणा।
नंगे विखाणी जो कपड़े देला हो तां तिजो जदेउए मिलणा।
भूखे भंगाली जो भोजन देला हो तां तिजो जदेउए मिलणा।
तरेह तरहयाए जो पाणी देला हो तां तिजो जदेउए मिलणा।
धिया धियाणी रि आसा बणला हो तां तिजो जदेउए मिलणा।

सुहाग–2

बेटिये सुहाग मंगण लक्ष्मी नाथे दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण राजे दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण बाबे दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण मामे दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण ताउए दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण चाचे दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण बोईए दे गेईऐ।
बेटिये सुहाग मंगण मौसे दे गेईऐ।

घोड़ी (चंबा)

सेहरा तैनूं मैं देयां बीरा
कलगी तेरी सास ने भेजी
बीरा मेरा पैहन के निकले
कि माली ने प्रेम से रखेया
पिला दिया भांग का प्याला
जपो श्रीराम की माला,
जपो श्रीराम की माला।
सेहरा तैनूं मैं देया बीरा
कलगी तेरी सास ने भेजी

बीरा मेरा पैहन के निकले
कि माली ने प्रेम से रखेया
पिला दिया भांग का प्याला
जपो श्रीराम की माला।
सेहरा तैंनूं मैं देयां बीरा
बाल़े तेरी सास ने भेजे
बीरा मेरा पैहन के निकले
कि माली ने प्रेम से रखेया
पिला दिया भांग का प्याला
जपो श्रीराम का प्याला
जपो श्रीराम की माला।

प्रेम गीत

भौंरा हो भौंरटुआ नार कुण देई प्यारी हो।
जिसा नारी दे नैण सहौणें नार सेहओ प्यारी हो।

भौंरा हो भौंरटुआ नार कुण देई प्यारी हो।
जिसा नारी दे होठ सहौणे नार सेहओ प्यारी हो।

भौंरा हो भौंरटुआ नार कुण देई प्यारी हो।
जिसा नारी दे दन्द सहौणे नार सेहओ प्यारी हो।

भौंरा हो भौंरटुआ नार कुण देई प्यारी हो।
जिसा नारी दे हत्थ सहौणे नार सेहओ प्यारी हो।

भौंरा हो भौंरटुआ नार कुण देई प्यारी हो।
जिसा नारी दे पैर सहौणे नार सेहओ प्यारी हो।

लोक में रचे-बसे लोक के गीत

भरमौर के लोकगीतों की अपनी एक अलग पहचान है। विरह प्रधान होने के कारण इन गीतों में जो एक कसक, एक वेदना है वह यहां की मोहक और मन को छू लेने वाली धुनों में और भी मुखर हो उठती है। गद्दी पुहाल को सदा चलते रहना है। उधर इनकी पत्नियां, परिवार अकेले रहते हैं। वियोग के क्षणों में किसी बहाने से बुलाना, न आने के बहाने और परदेस में पति के कारण वेदना इन गीतों में व्यक्त हुई है।

भरमौर के विवाह गीतों में कांगड़ा का प्रभाव है। भरमौर के गद्दी तथा परिवार सर्दियों में कांगड़ा की पालमपुर घाटी में रहते हैं। इस ओर भी युवक विवाह के बाद फौज में जाते हैं जहां वर्ष में एक बार छुट्टी मिलती है। अतः प्रवासी पति को बुलाने के लिए बहाने ढूंढ़े जाते हैं–

लिखि लिखि चिट्ठियां मैं भेजां, हां मैं भेजां।
माता तम्हारी बीमार ढोला, घरे आई जाणा।।
लिखि लिखि चिट्ठियां मैं भेजां, हां मैं भेजां।
भैण तम्हारी बीमार ढोला, घरे आई जाणा।।

विवाह गीत, जिन्हें ब्याह–शादियों में या वैसे भी बैठकर औरतें गाती हैं, 'द्रुभड़ी' या 'द्रुएं' कहा जाता है।

एक द्रुएं गीत में दामाद अपनी विवाहिता को घर बुलाता है। सास बहाने लगाती है। कभी वह कहती है कि लड़की तो पांव से नंगी है, कभी कहती है कमर से नंगी है, कभी कहती है सिर से। दामाद उसे जूते, घाघरा, चादर आदि देने का वचन देता है।

घुरैही वे लोकगीत हैं जो विवाह या अन्य अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं और इनमें एक घेरे में नृत्य भी किया जाता है। कुछ महिलाएं गाती हैं, शेष उन्हीं पंक्तियों को दोहराती हैं। विवाहादि अवसरों पर गद्दी भी गोलाकार धीमा नृत्य करते हैं जिसे डंडारस कहा जाता है।

सर्दियों के बाद गाए जाने वाले घुरैही गीतों में धार्मिक, श्रृंगारिक सभी प्रकार के होते हैं। घुरैही में 'सिया हरण' का प्रसंग बड़ा लोकप्रिय है–

राम ते लछमण चौपड़ खेले, सिया राणी कढंदी कसीदा हो।
इक बाजी बहिया, दूरी बाणे लाया पाणी केरी लंगदी प्यासा हो।।
कुण होला सुणंदा, कुण होला गुणंदा, कुण प्याला ठंडा पाणी हो।
सिआ होली सुणदी, सिआ होली गुणदी, सिया पियाली ठंडा पाणी हो।।
अते कठी भोला मेरा सीस घड़ोलू, कठी भोला नारियल बिन्ना हो।
घड़े री घड़याणी तेरा सीस घड़ोलू, कीलाणियां नारियल बिन्ना हो।।

सिया हरण के इस गीत में राम–लक्ष्मण द्वारा चौपड़ खेलना, राम को प्यास लगना, सीता द्वारा घड़े में पानी भरते समय नाक की लौंग का गुम जाना, स्वर्णमृग देखना और राम द्वारा वन–वन मृग ढूंढ़ना आदि घटनाओं का वर्णन है।

अंचली या एंचली गीत

अंचली एक धार्मिक लोकगीत है जो 'नवाला़' या 'नुआला़' के अवसर पर चार पुरुष गायकों द्वारा गाया जाता है। ढोलक, नगारा और कुंभ पर रखी थाली बजाकर ये गीत गाए जाते हैं। नुआला़ शिव पूजा का उत्सव है। किसी अभीष्ट की प्राप्ति के लिए शिवजी को नुआला की मनौती मांगी जाती है। आटे द्वारा मंडप बनाकर खानों में तिल, चावल, बबरू रखे जाते हैं। मेढे की बलि दी जाती है जिसका सिर पूजा के लिए रात भर रखा जाता है।

सारी रात चलने वाले इस उत्सव में शिव स्तुति का गायन होता है जिसे 'शिवीण' कहते हैं। रामकथा को 'रामीण' कहते हैं।

शिवीण लंबा गीत है जो दक्षिण देश में सिद्ध योगी के आगमन से आरंभ होता है। इसमें पूरी पूजन विधि वर्णन के साथ दक्षिण देश में ही मालिन द्वारा हार गूंथने का वर्णन है। शिव बाग में मालिन से मिलते हैं। भंवरे द्वारा बाग उजाड़ने पर शिवजी भंवरे को कैद कर लेते हैं और मालिन के कहने पर छोड़ देते हैं।

शिव विवाह का वर्णन विस्तार से इस गीत में किया गया है–

गौरा पुछंदी माता रणसिंगा बजंदा के आया
माता बोली "धिए तेरा बैहु लगना जो आया"
गौरां बोली "तैं कोढ़ी कलंकी रे लड़ै लाहे"
रोई रोई रोजना लाई
"मौलिया तुज्जो भाणजीरा दोष लगला
तैं भंगी सराबीरे लड़े लाई"
तां मौला बोले "रूएं मत भाणजिए
तुजो दाज सुआज भरी देला"
तां फिरी गौरा बोली "भेड़ बकरी दाज नहीं लैणी
मैं हुंदी गदेटी तां भेड़-बकरी चारी लैंदी।"

चंबा में दरबारी गायिकी भी प्रसिद्ध है जो केवल चंबा शहर में ही गाई जाती है। पहले पंजाब से गायक राजदरबार में आया करते थे जो पंजाबी में गाते थे। आज भी ये गीत पंजाबी मिश्रित चंबयाली में गाए जाते हैं जो पक्के रागों पर आधारित हैं–

बागीं खिड़ रहे दो केले, रब्ब बिच्छड़यां नूं मेले
तैनूं फट पबे तलवार दा
कदेआ फुलां वाली सेज ते कदेआ मौज बहार...

जैसे गीत इसके उदाहरण हैं।

वास्तव में लोकगीतों की आत्मा बसती है उन गीतों में जो गद्दी अपनी बांसुरी की टेर पर पहाड़ी दर पहाड़ी गाता फिरता है या जो गीत चरागाहों में, घाटियों में गाए जाते हैं, जिनमें समाज के दिलों की धड़कन बसती है।

ऐसे गीतों को 'फाटेहड़ू' कहा जाता है। जो गीत ऊंचे शिखरों, गहन घाटियों में मदमस्त होकर गाए जाते हैं, वही मन की गहराइयों से निकलते हैं। सुर (शराब) के नशे में डूबकर गाए जाने वाले गीतों में श्रृंगार हो या प्रेम, विरह या वेदना, चाहे अश्लीलता का पुट हो, ये गीत सबके मनों में बसे रहते हैं।

इन गीतों में अनाम गीतकारों ने गहन चिंतन के बाद आश्चर्यजनक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जो काव्य की ऊंचाइयों को छूते हैं।

छिम्बी

छिम्बी हो छिम्बी पाणी जो गई हो
तेरड़े सौंह छिम्बी पाणी जो गई हो।
दन्द कदेई ऐस्सा छिम्बी दे जियां खिड़े खटनालू
दन्द हेरी मत भुलै राजा जी हाऊं ता जाति री छिम्बी।।
हाखी कदेई ऐस्सा छिम्बी दी जियां सुरजे री लोई।।
हाखी हेरी मत भुल्ले राजा जी हाऊं ता जाति री छिम्बी।
हाथ कदेई ऐस्सा छिम्बी दे जियां हलुए री डाली
हाथ हेरी मत भुलै राजा जी हाऊं तां जाति री छिम्बी।।
होठ कदेई ऐस्सा छिम्बी दे जियां पाना रे पट्ठे
होठ हेरी मत भुलै राजा जी हाऊं ता जाति री छिम्बी।।
इक लख दिता तिजो दो लख दिता जाति देयां बदलाई
नि बो लैणे लख दो लख जाति नी बदलाणी।।

पानी भरने के लिए जा रही छिम्बी के सौंदर्य का वर्णन इस लोकगीत का मर्म है। छिम्बी की दंत पंक्ति ऐसी है जैसे खटनालू के फूल खिले हों। उसकी आंखें सूरज की रोशनी की तरह दमक रही हैं। हाथ ऐसे कि जैसे

हलुए (मेहंदी का पौधा) की डाली हो। होंठ जैसे पान के पत्ते।

छिम्बी अपने अंगों की प्रशंसा पर बार-बार कहती है कि हे राजा! मेरे अंगों को देखकर इस बात को मत भूल कि मैं जाति की छिम्बी हूं। अंत में राजा कहता है कि मैंने तुझे एक लाख दिया, दो लाख दिया। तू अपनी जाति बदल दे। छिम्बी का उत्तर है कि मुझे नहीं चाहिए तुम्हारे लाख-दो लाख, मैंने जाति नहीं बदलवानी।

राजा तेरे गोरखेयां ने लुटेया पहाड़
लुटेया पहाड़ गोरी दे मत्थे दा सिंगार।
तीसा लुटेया बैरा लुटेया भांदल की हार
चांजु दी चुरैहणी लुटियां लुटी बांकी नार।।
सोना लुटया चांदी लुटेया लुटेया बाज़ार
सेजां सुत्तियां कामनी लुटियां लुटी बांकी नार।।
होठां दी मैं हटड़ी बणादियां दंदां दा बाजार
जुल्फां दी मैं त्रकड़ी बणादियां नैणा दा बाजार।।
नीले पीले बांस मंगानिया बंगला पुआनियां
बंगले दे बिच वही के सजणा तेरा जस गानियां।।

राजा तेरे गोरखों ने पहाड़ लूट लिया। पहाड़, जो गोरी के माथे के श्रृंगार की भांति था। तीसा लूटा, बैरागढ़ भी लूटा, भांदल की हार भी लूटी। चांजु की चुरैहणियां लूट लीं। सोना लूटा, चांदी लूटा, पूरा बाजार का बाजार लूट लिया। सेज पर सोई हुई सुंदरियां लूट लीं।

होंठों की मैं हटड़ी (छोटी दुकान) बनाती हूं, दांतों का बाज़ार। अपनी केश राशि का तराजू, नयनों का व्यापार। नीले-पीले रंग के बांस मंगवाकर बंगला बनवाती हूं। बंगले में बैठकर हे साजन! तुम्हारे यश के गुण गाती हूं।

ऐतिहासिक घटना के साथ-साथ इस गीत में कवि ने अपनी कल्पनाशक्ति का भी परिचय दिया है।

ब्रह्मी

चिट्टी चादर बछाणें पाणी ब्रह्मीये
ढकणे के लैणा हो।
तेरी दोहड़ बछाणें पाणी ब्रह्मीये
तेरी बांही रा सराह्णा हो।

तेरी कणकां रा होया दाणा दाणा ब्रह्मीये
घरे, किह्यां जाणा हो
तेरी चादरा री होई लीरा लीरा ब्रह्मीये
घरे किह्यां जाणा हो।
रेढ़ी-रेढ़ी तां घरा जो नबेड़ी ब्रह्मीये
अबे कुनी छेड़ी हो।
तेरी मेरी तां ढिकलू री जोड़ी ब्रह्मीये
कुनी बेरिये बछौड़ी हो।

नायिका (ब्रह्मी) को संबोधित इस गीत में विभिन्नता के साथ-साथ शृंगार का मिश्रण अद्भुत है। नायक कहता है कि सफेद चादर तो बिस्तर में बिछा लेंगे किंतु ओढ़ने को क्या लेंगे। दोहड़ (पट्टू) बिछा लेंगे, सिरहाना तेरी बांह का ही लेना होगा। पहाड़ी दर पहाड़ी तुझे घर भगाया, अब फिर किसने छेड़ दिया!

तुम्हारी कणक दाना-दाना होकर बिखर गई, अब घर कैसे जाएं! तेरी चादर टुकड़ा-टुकड़ा हो गई, अब घर कैसे जाएं। तुम्हारी-मेरी ढिकलू (बकरी की तरह जानवर जो सदा हिरण की भांति जोड़ी में रहता है) की जोड़ी है, यह किसी बैरी ने बिछोड़ दी।

गुड़क चमक भाउआ मेघा हो
बरह् चम्बियाली रे देसा हो।
किहां गुड़कां किहां चमका हो
अम्बर भरोरा घणे तारे हो।
कुत्थुए री आई काली बादली हो
कुत्थुएरा बरसेया मेघा हो
छातिए री आई काली बादली हो
नैणा रा बरसेया मेघा हो
रक्त थिया भाऊआ बक्त थिया
लागू थिए सब कोई हो
रक्त नि रेया भाऊआ वक्त नि रैया
बात नि पुछदा कोई हो।

हे मेरे भाई मेघ! घुमड़-घुमड़कर चंबे की रानी के देश में बरस। बादल

कहता है, मैं कैसे घुमड़-घुमड़कर चमकूं, अंबर तो तारों से भरा है। ये काली बदली कहां से आई? कहां से मेघ बरसा? ये काली बदली छाती से आई, आंखों से मेघ बरसा। इस प्रश्नोत्तर में चंबा की रानी की कथा है जो चंबा में पानी लाने के लिए बलि हुई।

गीतकार आगे की पंक्तियों में दार्शनिक हो कहता है–

जब शरीर में रक्त था, लाली थी तभी वक्त (समय) भी था। सब लोग उस समय चाहते थे। अब जब न लाली रही, न समय रहा, कोई बात नहीं पूछता।

नैणो

बड़ा खरा धारगल़े दा पाणी हो मेरिये नैणो।
रात कट्टी कोको दे बणा हो, मेरिये नैणो।

हत्था छतरी ता मूंह्डें झोल़ा हो, मेरिये नैणो।
कुता जो चलोरा तेरा डोला हो, मेरेया मेटा।।
चंबे शहरा मिंजरां लगूरी हो, मेरेया मेटा।
साटणी दा सूट सयाई दे हो, मेरेया मेटा।।
हत्थ जोड़ी मिंजरां जो जाणा हो, मेरिये नैणो।
जगा जगा चीह्ली रे बछाणा हो, मेरिए नैणो।।
ऐ ता मेरी प्यारी दे नसाण हो, मेरिये नैणो।
चिट्टे दंद खोड़ा रा दंदासा हो, मेरिए नैणो।।
चिट्टे दंद खोड़े रा दंदासा हो मेरिये नैणो।
कुनी पाया दंदड़ू रा हासा हो, मेरिये नैणो।।
नैणो नैणो हांकां कुनी लाईयां हो मेरेया मेटा।
नैणो बैठी धारगले री बाईं हो मेरेया मेटा।।
बुरे हुंदे गाड़ जंगलाती हो मेरिये मेटा।
खुस्सी लेंदे हाथा री दराटी हो मेरेया मेटा।।
कोरा घड़ा चिलकदा लोटा हो, मेरेया मेटा।
मन कपटी ता दिल खोटा हो, मेरेया मेटा।।

मोतियों से सफेद दांत हैं और उस पर अखरोट का दंदासा लगा रखा है। मेरे मेट! नैणो-नैणो करके आवाज कौन लगा रहा है? नैणो तो धारगले की बावड़ी में बैठी हुई है।

जंगलात के गार्ड बहुत बुरे होते हैं। वे हाथ से दरांती छीन लेते हैं। मोतियों से सफेद दांत हैं जिन पर अखरोट का दंदासा लगा रखा है (जिससे होंठ सुर्ख लाल हो गए हैं) किसने मेरे दांतों की हंसी उड़ाई है।

सुरा केरे मघड़ू जो छेड़े रोआ करी गल्ला लाणी हों।
ओ सज्जण महणु घरे आए रिझ घड़ोलुआ।
त्रुड़ा मंजोलू ढिल्ली बाण दुहीं जिहणा कियां सोणा हो।
किल्हे-किल्हे मेरिए जानी दुंही जिहणा किया सोणा हो।
गल्ला लाणी गल्ला लाणी मेरी जानी।

इस हृदयग्राही गीत में साजन के घर आने की बात है। सुर (सुरा) का मघड़ू (छोटा घड़ा) तैयार कर रो-रोकर बातें करनी हैं। साजन घर आए हैं। ए घड़ोलु जल्दी पककर तैयार हो जा। चारपाई टूटी हुई है, चारपाई का बाण ढीला है, इस पर दो जने कैसे सोएंगे! अकेले-अकेले कैसे सोएं। आपसी बातचीत भी करनी है।

त्रुटि ता मेरे छिकणू री काछी बैरिया भाले हो
मुक्की ता तेरे खल्हडू री खरच बैरिया भाले हो
मुक्कु ता मेरे बिबडू रा पाणी बैरिया भाले हो
लिहसी जंघा जोत कियां लाणा बैरिया भाले हो।

कठिन जोत को लांघने की मानसिकता इस गीत में है। दो साथी या प्रेमी जोत लांघने के लिए सफर करते हैं। जोत में एक-दूसरे का सहारा अवश्य चाहिए।

एक कहता है (या कहती है) कि मेरे छिकणु (पीठ के बोझे) की काछी (रस्सी) टूट गई है, मेरी प्रतीक्षा करना। मेरी खल्हडू (खाल का झोला) का अनाज समाप्त हो गया है, मेरी प्रतीक्षा करना। मेरी बीमारी से कमजोर टांगें जोत कैसे लांघ पाएंगी, वैरी! मेरी प्रतीक्षा करना।

ऊची ऊची रेढ़ी
ऊची ऊची रेढ़ी हो बंसरी बजांदा बो बैरिया।
बजदी सुणी मुरली हो रोई रोई भिजो बो बैरिया।।
हत्था तेरे छतरी हो जाति दा तू खतरी बो बैरिया।
घरे रे बहाने हो मिली करी जायां बो बैरिया।।
हत्था बो नरेलू हो चिलम तमाकू बो बैरिया।
अग्गी रे बहाने हो मिली करी जायां बो बैरिया।।

हत्था तेरे दराटी हो घरे तेरे चाची बो बैरिया।
घाए दे बहाने हो मिली करी जायां बैरिया।।

यह गीत ऊंची पहाड़ी पर बांसुरी बजाते हुए जाते प्रेमी को समर्पित है। ऊंची पहाड़ी पर प्रेमी बांसुरी बजा रहा है। मुरली बजते हुए सुनकर प्रेमिका रो-रोकर भीगी जा रही है। तुम्हारे हाथ में छतरी है, जाति के तुम खत्री हो, घर आने के बहाने मिलकर जाना। तुम्हारे हाथ में दरांती है, घर में तुम्हारी चाची है। घास के बहाने मिलकर जाना बैरी।

मैहले दियां जातरां लोढ़ी रा पाणी।
किह्ला मत पींदा ढोला सराबिया।।
पहला डेरा लाया सरेई दे घराटा हो।
दूजा डेरा लाया चेरिये री कोठी हो।
त्रीजा डेरा लाणा लोढ़िये दे नाले हो।।
सीसे दा गलास मोतिया सराब।
किह्ला मत पींदा ढोला सराबिया।।

यह गीत मैहले की जातरा (धार्मिक यात्रा) या मेले पर जाने के निमित्त है। मैहले की जातर है और वहां बहते लोढ़ी नाले का पानी है। इस पानी को तू अकेले मत पीना मेरे प्रियतम!

पहला डेरा (पड़ाव) सरेई के घराट में लगा, दूसरा डेरा चेरिये की कोठी में और तीसरा लोढ़ी के नाले में। शीशे का गिलास है, मोतिया शराब है। मेरे प्रियतम! इसे अकेले मत पीना।

नुआल़ा

'नुआल़ा' गद्दी जनजाति का एक महत्त्वपूर्ण उत्सव है। इसे गुसैंतण, गुसैंइ या दस्यूंद भी कहा जाता है। गुसैंतण आदि नुआल़े से छोटे स्तर के उत्सव हैं। ये नुआल़े के ही संक्षिप्त रूप हैं।

'ऐंचली' एक लंबा गीत या गाथा है। इसमें शिव विवाह, रामायण, महाभारत गाए जाते हैं। कुछ धार्मिक आख्यान, जैसे-हरिश्चंद्र, गोपीचंद, मोरध्वज, नल-दमयंती के जीवन चरित्र भी गाकर सुनाए जाते हैं।

शिव विवाह नुआल़े के समय केवल रात को गाया जाता है। भयागड़ा प्रातःकाल का गायन है। रामायण रात या दिन दोनों समय गाई जा सकती है। महाभारत बारह बजे के बाद घर के बाहर या आंगन में गाई जाती है। नुआल़े

के अवसर पर महिलाएं घुरेई गाती हैं।

वाद्यों में नाद, दुबात्रा, काहल, पौंहल, नगाड़ा, घड़ा थाल, कंसी और शहनाई का प्रयोग किया जाता है।

शहनाई आम शहनाई की तरह होती है किंतु यहां इसका आकार छोटा होता है। चंबा की ओर शहनाई अपेक्षाकृत मोटा स्वर निकालती है।

नुआले के अवसर पर गाथा गायन का अंश

न थीए धरणी न थीए गासा, तां थीआ न्हेर गुवाऽऽरा न।
न थीए चन्द्र न थीए सूरज, तां थीआ न्हेर गुवाऽऽरा न।
न थीए तारा न थीए ब्याहणु, तां थीआ न्हेर गुवाऽऽरा न।
न थीए पौन न थीए पाणी, तां थीआ न्हेर गुवाऽऽरा न।
दैहणे अंगे रि सामी मैल कढ़ाइ ऐ, जिसा केरी धरणी बणाऽऽई न।
बौएं अंगे रि सामी मैल कढ़ाई ऐ, जिसा केरी मनसो बणाऽऽई न।
बरमा पुछदा बिष्णुए तांह ऐ, कुणी लैणे धरणी रे भाऽऽरे न?
बिष्णु बोलदा बरमे ताहं ऐ जिनी लैणे धरणी रे भाऽऽरे न।
नाज गुरु भछणा मनसो ब्याहणी तिनी लैणे धरणी रे भाऽऽरे न।
पहले धरती कि पहले गास? पहले धरती पिचे होए गासा।
पहले चन्द्र कि पहले सूरज? पहले चन्द्र पिचे होए सूरजा।
पहले तारा कि पहले ब्याहणु? पहले तारा पिचे होए याहणु।
पहले पौन कि पहले पाणी? पहल पौन पिचे होए पाणी।
पहले गुरु कि पहले चेला? पहले गुरु पिचे होए चेला।

पांगी के लोकगीत

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पांगी, चंबा का सबसे दूरस्थ और कटा हुआ क्षेत्र रहा है। लगभग दस वर्ष पहले पांगी जाने के लिए चंबा के बैरागढ़ से पैदल चलकर चौदह हजार फुट ऊंचा साच दर्रा पार करना पड़ता था। मनाली की ओर से रोहतांग दर्रे के बाद उदयपुर से पैदल मार्ग था। ए. डी. एम. की एकमात्र जीप हैलिकॉप्टर से ले जाई गई थी। अब जीप योग्य सड़क बन गई तथापि यह क्षेत्र केवल जून से सितंबर–अक्तूबर तक ही खुलता है।

पांगी के मुख्यालय किलाड़ में रेजिडेंट कमिश्नर बैठते हैं। किलाड़, साच और पुरथी–तीन विकास खंड हैं तो धरवास, करयास, किलाड़, सेरी भटवास, साच, सेहली, सेचू और पुरथी–सात राजस्व सर्किल हैं।

चंबा तथा भरमौर की भांति पांगी में भी कई महत्त्वपूर्ण शिलालेख मिलते हैं। संस्कृत, ब्राह्मी, खरोष्ठी, टाकरी आदि भाषाओं में लिखे इन लेखों से इतिहास को जानने में मदद मिलती है।

हिमाचल प्रदेश में सातवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक अनेक शिलालेख उपलब्ध हैं जो यहां के इतिहास को जानने में मदद करते हैं। कांगड़ा के पठियार और खनियारा के ईसा पूर्व के शिलालेखों से लेकर कुल्लू और चंबा तक इनका अस्तित्व रहा है। चंबा में विभिन्न मूर्तियों पर खुदे लेखों के अतिरिक्त पनघट शिलालेखों का अलग महत्त्व है। निरमंड का ताम्रपत्र, रानी मां की प्रतिमा का लेख, कुल्लू के देवताओं के मोहरों पर खुदे लेख, दुर्गामाता हाटकोटी लेख, मृकुला देवी लेख, भरमौर के चौरासी परिसर में लेख महत्त्वपूर्ण हैं।

यहां कुछ महत्त्वपूर्ण शिलालेखों में मिंधल माता लेख, लुज पनघट शिलालेख, सेहली पनघट शिलालेख, मृकुला देवी लेख प्रसिद्ध हैं।

पांगी : एक पुरातन क्षेत्र

पांगी में अभी भी कुछ आदि या पुरातन तरीकों का प्रयोग होता है। जैसे छत में भोजपत्र का प्रयोग किया जाता है। मिट्टी के घरों में केवल पशु बांधे जाते हैं तो दूसरी ओर खुद रहने के लिए प्रयुक्त होता है। कहीं–कहीं लकड़ी

से उस कमरे का विभाजन भी किया जाता है। रहने के साथ वहीं चूल्हा, वहीं रसोई। कोई फर्नीचर नहीं, कोई ज्यादा सामान नहीं। पशुओं के वहीं बंधे होने के कारण सर्दियों में घर गरम रहते हैं।

सात हजार से इक्कीस हजार फुट की ऊंचाई पर आबाद पांगी में बारह हजार फुट तक आबादी है। पांगी का क्षेत्रफल 1,58,198 हैक्टेयर है जिसमें 1,10,300 हैक्टेयर जंगल हैं। कृषि योग्य भूमि कुल 2,123 हैक्टेयर है। 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 15,635 है। 2001 की जनसंख्या के अनुसार पांगी की जनसंख्या 17,598 है इसमें 9,259 पुरुष तथा 8,339 स्त्रियां हैं।

पंगवाल सिर में टोपी लगाते हैं जो कैदियों की तरह की होती है। इसलिए कहा जाता है–पांगी राजा चंबा का कैदखाना था। लोगों को यहां देशनिकाला देकर कैद के तौर पर रखा जाता था। कुछ लोगों का मानना है कि पंगवाल जम्मू-कश्मीर से आए। मुगल आक्रमणकारियों से तंग आकर भद्रवाह के लोग अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए यहां आ बसे।

पंगवालों की आकृति, कदकाठी गद्दियों से भिन्न है। न ही ये लाहुलवासियों से मिलते हैं। एक अलग विशिष्टता है इनमें। बोली भी भिन्न है, गादी से या भोटी से। पुरुषों की वेशभूषा में पाजामा तथा घर में बुना और बनाया कोट है। स्त्रियां रंगदार पटटू, चुस्त पाजामा पहनती हैं। सिर पर छोटी टोपी, जिसे जोजी कहा जाता है। पटटू, ऊन से बनाया जाता है। चांदी के गहने पहनने का स्त्रियों को शौक है।

लोकगीत

पांगी में मन रम जाने का यह गीत बहुत प्रचलित है। इस गीत में पांगी में ठांगी के उगने, भोटली के नाच, भले लोगों, एलौं के शराब और जहाज की सैर का उल्लेख है। सर्दियों में लोगों के आने-जाने के लिए सरकार जहाज यानी हैलिकॉप्टर में सैर करवाती है।

पांगी दे देशा तिलमिल पाणी
मेरा मन लगा पांगी हो।

पांगी पक्की ठांगी लौहल़ पक्का जीरा
मेरा मन लगा पांगी हो।

पांगी रे देशा भोटल़ी रा नाचा
मेरा मन लगा पांगी हो।

पांगी रे देशा भले भले माह्णू
मेरा मन लगा पांगी हो।

पांगी रे देशा एलौं शराबा
मेरा मन लगा पांगी हो।

पांगी रे देशा जहाजां दी सैलां
मेरा मन लगा पांगी हो।

कोढ़ा कोढ़ा कोट

कोढ़ा कोढ़ा कोट मेरेया दर्जिया
रूमे रूमे सीणा भला ए।

रूमे रूमे सीणा मेरेया पूरणा
रूमे रूमे ईणा भला ए।

अम्मा रा कतोरा मेरे दर्जिया
बापू रा बणोरा भला ए।

हत्थ तेरे जमदियां खाए मेरे पूरणा
कोटणू बगाडू भला ए।

झिकड़ी मसीन मेरे दर्जिया
मोटे लाए टांके भला ए।

मोटे लाए टांके मेरे पूरणा
ढेरी लांदी जोजी भला ए।

ढेरी लांदी जोजी मरे पूरणा
पाणी पाणी पांदी भला ए।

प्यारी भोटलि़ए

यह गीत भोटल़ी अर्थात् लाहुली कन्या और मधु नाम के गार्ड की प्रेमकथा है जिसमें गार्ड द्वारा भोटली के लिए जोत के ऊपर सुंदर बंगला बनवाने और उसकी खिड़कियों के शीशे लगवाने की बात कही गई है। मधु गार्ड को भोटली के बिना सब सूना लगता है तो भोटली उसके लिए मां-बाप को छोड़ देती है।

प्यारी भोटलि़ए जोता पर बंगलू पुआणा हो
मधु गाडा हो बंगलू जो ताकी लुआणी हो

प्यारी भोटलि़ए ताकी जो शीशे लुआणे हो।
मधु गाडा हो लिसी जंघे जोता कियां लाणा हो
प्यारी भोटलि़ए जोता हेठ पाल़की मंगेला हो।
प्यारी भोटलि़ए तेरे बिना मुलख नमाणा हो
मधु गाडा हो तेरे पिछे छडे अम्मा बापू हो।

पांगी रे बाबू

पांगी में बाबू लोग उदास रहते हैं। वे जहाज की सैर ढूंढ़ते हैं, सात सौ सी. ए. चाहते हैं, बीवी-बच्चों को साथ रखना चाहते हैं, जीरा और ठांगी चाहते हैं।

पांगी रे बाबू उदास बाबू उदास
जहाजां दिया सैलां तोपंदे।
पांगी रे बाबू उदास बाबू उदास
बीबी बच्चे साथ तोपंदे।
पांगी रे बाबू उदास बाबू उदास
जीरा कनैं ठांगी तोपंदे।
पांगी रे बाबू उदास बाबू उदास
सात सोआ साए तोपंदे।

कठी चली हो

इस गीत में तत्कालीन इंदिरा गांधी के पहले पांगी दौरे का जिक्र है जब किलाड़ में दो-दो फ्लाइटें उतरीं। इंदिरा गांधी के गले में ठांगी की दो-दो मालाएं पहनाई गईं। लोगों ने कुछ मांगें रखीं जो 'पास' कर दी गईं। इंदिरा गांधी को धोखे से मार देने की पंक्तियां भी बाद में जोड़ दी गईं जिससे पब्लिक रोने लगी।

कठी चली हो कठी चली
दो दो फ्लाइटां कठी चली।
पहला टूरा हो, पहला टूरा हो
पांगी टूरा हो, पहला टूरा।
गल़े पाई हो गल़े पाई
ठांगी केरी माल़ा गल़े पाई हो।
सजी गई हो सजी गई हो
ठांगी केरी माल़ा सजी गई हो।
पैरे लाए हो पैरे लाए

पांगी केरी पूल़ां पैरे लाए।
सजी गई हो सजी गए
पांगी केरे पूल़ां सजी गए।
पहली मांगा हो पहली मांगा
चैहणी के सुरंगा पहली मांगा।
पास किया हो पास किया
चैहणी के सुरंगा पास किया।
दूजी मांगा हो दूजी मांगा
ग्रिफ दी सड़का दूजा मांगा।
तीजी मांगा हो तीजी मांगा
घर घर बिजल़ी तीजी मांगा।
पास किया हो पास किया
घर घर बिजल़ी पास किया।
धोखे मारी हो धोखे मारी
इन्दिरा गान्धी धोखे मारी।
रूणा लगी हो रूणा लगी
सारी बो पब्लिका रूणा लगी।
लोहा लगे हो लोहा लगे
इन्हा बो गद्दारां लोहा लगे।
धोखे मारी हो धोखे मारी
भारत माता धोखे मारी।

देआं मेरा बिजलू दराट

छोल़ी छोल़ी पुच्छे नन्दूलाल, लाल जोजी कुनी दित्ती हो
मेरी जान! लाल जोजी कुनी दित्ती हो।

पंज भाईयां दी इक भैण, लाल जोजी भाईए दित्ती हो
मेरी जान! लाल जोजी भाईए दित्ती हो।

देयां मेरा बिजलू दराज, धमणे दी पणी बढणी
मेरी जान! धमणे दी पणी बढणी।

घरे तेरे बकरी नी भेड, पणी तेरी सोगा लाणी हो
मेरी जान! पणी तेरे सोगा लाणी हो।

गल सोगे दी बणी जाणी, अज पणी तेरी लाणी हो
मेरी जान! अज पणी तेरी लाणी हो।

हत्था तेरे बिजलू दराट, मिंजो तेरा डर लगदा
नन्दूलाल! मिंजो तेरा डर लगदा।

लेई लै मेरा बालू ते बलाक, जान तेरी नैंयो छडणी
मेरी जान! जान तेरी नैंयो छडणी।

जली जांदे सड़के दे घूम, लेरा मेरी कोई नी सुणदा
मेरी जान! लेरा मेरी कोई नी सुणदा।

पैहली फट मारी नन्दूलाल, बांह सराणे बढी सुट्टी हो
ठगी जान! बांह सराणे गढी सुट्टी हो।

दूई फट मारी नन्दूलाल, धड़ मूंडी बख कीत्ती हो
लेई जान! धड़ मूंडी बख कीत्ती हो।

छोली छोली पुच्छे ठाणेदार, कितणे खून बो कित्ते
सच बोल! कितणे खून कीत्ते।

छी खून कीत्ते सरकार, सतमें दी बारी आई हो
सरकार! सतमें दी बारी आई हो।

अग्गे अग्गे बैंसनी दी लास, पिच्छे नन्दू खूनी चलेया
सुणो लोको! पिच्छे नन्दू खूनी चलेया।

लास पुज्जी डोगरे बजार, नन्दू खूनी कैद कित्तेया
सुणा लोको! नन्दू खूनी कैद कित्तेया।

पेशी लगी जजे दी कचैरी, नन्दू सामदार पुज्जेया
ठगी थे! नन्दू सामदार पुज्जेया।

हत्था हथकड़ी पैरा बेड़ी, चोबी फुट दुआल टप्पेया
मेरी जान! चोबी फुट दुआल टप्पेया।

बिगलिए बिगल बजाई, ता नन्दू पुला पार टप्पेया
मेरी जान! नन्दू पुला पार टप्पेया।

महाजण

कठी तेरे घर कठी बार बो महाजणा
कठी तेरे भेडड़ू दे गार तींडे सौं।

भटी टिकरी घर मेरे अम्मा मेरिए
लौहला़ मेरे भेडडू दे गार तींडे सौं।
देयां मेरा बीजलू दराट अम्मा मेरिए
मैं तां पाणी कहुए दी बढारी तींडे सौं।
देयां मेरी छतरी ते सोठी अम्मा मेरिए
मैं तां जाणा हिमगिरी कोठी तींडे सौं।
नीला छेलू गड्डी रा कराया अम्मा मेरिए
घोड़ा डाबू कोटे री सियाई तींडे सौं।
गड्डिया जो जंप मत लांदा ओ डरैबला
जान मेरी सख्त बमार तींडे सौं।
अग्ग लगे तेरी दरबारी अम्मा मेरिए
तैं बो मेरा लाज नी कराया थीया ओ।
हाड़े कच्छ चिट्ठी की ना पाई बो महाजणा
घरे छुट्टी लाड़ी दुपराणी तींडे सौं।
बकरी चुरासी भेडा अस्सी अम्मा मेरिए
मरी गिया भेडा रा पियासी तींडे सौं।
भेडा तेरी बाथरी उजाड़ा बो महाजणा
लास तेरी तीसे दे बजारा तींडे सौं।

मेटा हो

मेटा हो संतरामा हो, ठंडे नाला़ लेबर पुजाणी हो
मेटा हो संतरामा हो, गैंग तेरी सपड़ा जो लाणी हो।
मेटा हो संतरामा हो, पंज सौ लेबर तेरी हो
मेटा हो संतरामा हो, पत्थरां दी लाई ढेरी हो।
पारे पारे आया एक्सीना हो, दूरा कच्छ लांदा दूरबीना हो
सड़क बणाई लाया डंगा हो, सोहबो तेरी पुड़दियां बंगा हो।
सड़क बणाई घुम्मे घुम्मे हो, नथली घड़ाया अंदरूमे हो।
जोते पुर बदले दी लेसा हो, प्यारी मेरी झूरी परदेसा हो।
लोक बो गलांदे काली़ काली़ हो, प्यारी मेरी मरूए दी डाली़ हो।
मेट बो गलांदा जहर खाणा हो, प्यारी बो गलांदी मरी जाणा हो।
घड़ी घड़ी जेबा हत्थ पांदा हो, बटुए दा रोब दखांदा हो।
मेटा हो संतरामा हो, ठंडे नाला़ लेबर पुजाणी हो।

दीनेनाथ नीलमें व्योपारी हो

दीनेनाथा नीलमें व्योपारी हो दीनेनाथा हो
अंदरूनी नीलमें री खाना हो दीनेनाथा हो।

अम्मा बापू खलड़ी खिलयादें हो दीनेनाथा हो
मत कर नीलमें व्योपारा हो।

दीनेनाथा मंजणेरी नेई हो दीनेनाथा हो
खानपुर पैहरा लगोरा हो दीनेनाथा हो।

पंज किलो नीलम चुराया हो दीनेनाथा हो
पुले़ पुर पैहरा लगोरा हो, दीनेनाथा हो।

पुले़ जोड़ी पुलिसा हो दीनेनाथा हो
बुरा हुंदा नीलमें व्योपारा हो दीनेनाथा हो।

विवाह गीत

ब्याह रचंदे लाड़े लाड़ी दा ओ
परोहत सदे गंगे पारे दा ओ।

मिटिया मांगे मांगे पारे दा ओ
गोहा मांगे गंगे पारे दा ओ।

के कम्म दे गोहा के कम्मा दे
मिटिया दा ओ चुल्ला चौंका ए।

बेदी बैठे दिया नौहणा ओ
परोह्त बैठे बेदी शुभ लगे।

शादी लगे बेदी शुभ लगे
शादी लगे बेदी कौण बैठी।

कौण बैठे बेदी कौण बैठे
कौण बैठी धरती माता ओ
बेदी बैठी धरती माता ओ।

शुगली़

शुगली़ लोकगीत सवाल-जवाब के रूप में गाया जाता है। नायिका सवाल पूछती है तो नायक जवाब देता है और नायक पूछता है तो नायिका।

नायिका : दुआरे अगे फूलेया गुलाबा हो।
देयां मेरा गल्ले रा जबाबा हो।।

नायक : कियां बो देणा गल्ले रा जबाब हो
अज मेरी हालत खराबा हो।।

नायिका : जोतां पर बदल़े री लैसा हो
प्यारू मेरा दूर परदेसा हो।

नायक : किजो बो देंदी प्यारिए तू लेयेरा हो।
छपी बो छपी फोटो मेरी हेरा हो।।

नायिका : जियां सुका सपड़ेरा घासा हो।
तियां सुका जिंदड़ीरा मासा हो।।

नायक : दिले हो दिले गम मत केरा हो।
गमे हो गमे होले कम गोड़े हो।।

नायिका : नाल़े बो नाल़े उड़रिए भंवीरी हो।
तेरे पिछे पकड़ी फकीरी हो।।

नायक : नाल़े बो नाल़े उडरिए कागा हो।
मेरा कि कसूर तेरे भागा हो।।

नायिका : नाल़े नाल़े कड़ुआ पतीसा हो।
क्या तेरा नाम जगदीसा हो।।

नायक : निकी बो निकी बरखा लगोरी हो।
प्यारी मेरी छतरी तड़ोरी हो।।

नायिका : हाथे लाई सोने री चैना हो।
तेरा मेरा दिले रा परेमा हो।।

नायक : सुकी बो सपड़ा ता सैल्ली डाल़ी हो।
तैं तां मेरी छाती छड़ी जाल़ी हो।।

नायिका : चिट्ठी लिखणी ते पेन छोटा हो।
यारी रखणी ते दिल मोटा हो।।

नायक : जिस बो नाल़े कैएमलि पकोरी हो।
उस बो नाल़े भाल़ रख मेरी हो।।

नायिका : बंदा मेरा शिमले बकीला हो।
तेरा मेरा झगड़ा तसीला हो।।

नायक : जोता पुर पछी लेई ढेली हो।
आगे परमात्मा बेली हो।।

मंडी के लोकगीत

ऐतिहासिक संदर्भ : मंडी–सुकेत

मंडी की स्थापना राजा अजबर सेन ने 1499 या 1500 में की। इससे पहले मंडी का राज्य व्यास नदी के दाएं किनारे था और राजधानी पुरानी मंडी में थी।

सुकेत राजवंश

सेन वंश का मूल राज्य सुकेत था। पांडवों के वंशज माने गए सेन शासक, जो अपने को चंद्रवंशी कहते थे (सुकेत, क्योंथल और किश्तवाड़ के शासक बने। तीन सेन भाइयों में वीरसेन सुकेत, गिरिसेन क्योंथल और हमीरसेन किश्तवाड़ के शासक बने। प्रदेश के अन्य शासकों की तरह बंगाल से आए इन शासकों की यहां स्थापना कैसे हुई, यह कहना कठिन है। कनिंघम के अनुसार सुकेत में इस राजवंश की स्थापना 765 ई. में हुई।

सुकेत की राजधानी सुकेती खड्ड के किनारे थी जिसका नाम सुक्षेत्र था। हचिसन वोगल ने सुकेत का क्षेत्रफल 420 वर्गमील और जनसंख्या 58,408 बताई है। कनिंघम ने सर्वप्रथम सुकेत की वंशावली को आर्कियोलॉजिकल सर्वे में प्रकाशित किया।

आठवीं शताब्दी के अंत में वीरसेन या बीरसेन द्वारा सुकेत राज्य की स्थापना के समय राजा का प्रवेश ज्यूरी से सतलुज पार कर राणाओं को जीतते हुए बताया गया है। पहले कुनू धार पर महल बनाए और फिर पांगणा में किला बनाया। इसके कुल्लू के क्षेत्र जीते और सतलुज से व्यास के बीच राज्य स्थापित किया।

वीरसेन के बाद धीरसेन, विक्रमसेन, लक्ष्मणसेन, चंद्रसेन, विजयसेन राजा हुए। इनके बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती।

बाहुसेन द्वारा मंगलौर की स्थापना

विजयसेन के दो पुत्रों–साहुसेन और बाहुसेन (1000 ई.) में मतभेद

हो गए। बड़ा भाई होने के कारण साहुसेन को सुकेत की राजगद्दी मिली। बाहुसेन नाराज हो राज्य छोड़ कुल्लू के मंगलौर चला गया और वहां छोटा सा अलग राज्य स्थापित किया। बाहुसेन की बारहवीं पीढ़ी में मंडी राज्य की स्थापना हुई और सुकेत से भी राज्य का बड़ा भाग छीन लिया गया। इसके बाद दोनों राजवंशों राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के लिए छीनाझपटी होती रही।

इस बीच सुकेत में रतनसेन, सेवतसेन, मदनसेन, महानसेन, पर्वतसेन, करतारसेन, अर्जुनसेन, उदयसेन, दीपसेन, श्यामसेन, रामसेन, जीतसेन, गरुड़सेन, भीखमसेन, रणजीतसेन, विक्रमसेन, उग्रसेन, रुद्रसेन, अरिमर्दनसेन, दुष्टनिकंदनसेन, भीमसेन, लक्ष्मणसेन राजा हुए। मार्च, 1920 में सर एडवर्ड मेकलेगन द्वारा लक्ष्मणसेन को राजा घोषित किया और 1 नवंबर, 1921 को इस राज्य का नियंत्रण भारत सरकार को चला गया। हिमाचल के स्वाधीनता आंदोलन में सुकेत सत्याग्रह प्रसिद्ध है। 16 फरवरी, 1948 को सत्याग्रही करसोग से चले और 25 फरवरी को सुंदरनगर पहुंच गए। अगले दिन डिप्टी कमिश्नर कांगड़ा कन्हैयालाल और जालंधर के चीफ कमिश्नर लेफ्टिनेंट जनरल नगेश दत्त ने भारतीय सेना के साथ सुंदरनगर पर अधिकार कर लिया। 14 मार्च, 1948 को राजा द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर के बाद 15 अप्रैल, 1948 को सुकेत हिमाचल प्रदेश में मिला दिया गया।

मंडी राज्य का इतिहास

प्रदेश के अन्य राज्यों की तरह मंडी राज्य के बारे में स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाती। कनिंघम के अनुसार सुकेत से अलग होकर इस राज्य की स्थापना की तिथि लगभग 1000 ई. है।

एलेक्जेंडर कनिंघम ने पहली बार मंडी के इतिहास को लिपिबद्ध किया किंतु वंशावली के अलावा अधिक जानकारी नहीं जुटा पाए। मंडी के इतिहास के बारे में सरदार हरदयाल द्वारा लिखित 'मजमा-इ-तवारीख़-रियासत-ए-कोहिस्ता-इ-पंजाब', सर लेपन ग्रिफिंज का 'द राजास ऑफ पंजाब', कर्नल मैसी द्वारा 'चीफ्ज एंड फेमिलीज ऑफ नोट इन द पंजाब' और सन् 1888 में विक्रम कायस्थ द्वारा टाकरी में लिखित इतिहास हैं।

मंडी के बारे में सबसे पुराना अभिलेख त्रिलोकीनाथ मंदिर में 2264 कलियुग, 1442 शाका अर्थात् 1520 का है।

मंडी का अर्थ मंडी या व्यापार केंद्र लेने से यह पुराने समय का व्यापार मार्ग रहा है जहां यारकंद, लद्दाख, कुल्लू की ओर से आने वाले व्यापारी पड़ाव डालने के बाद होशियारपुर की ओर मैदानों में निकलते थे।

बौद्ध ग्रंथों में इस क्षेत्र को 'जोहार' कहा गया है। 'जोहार' (वर्तमान रिवालसर) गुरु पद्मसंभव से जुड़ा हुआ है। तिब्बती शासक स्रोन-इद-जान के समय पद्मसंभव यहां से होकर तिब्बत गए। यह घटना 750-800 के लगभग हुई बताई जाती है। इसके बाद बौद्ध धर्म के प्रबल विद्रोही लंग द्रमा (900 ई.) के समय बहुत से बौद्ध धर्मग्रंथ तिब्बत से रिवालसर में लाए गए।

बाणसेन के पुत्र कल्याणसेन ने व्यास के दाएं किनारे (पुरानी मंडी) में महल बनाए और सीमाएं केलटी, सगूर, सनोर तक बढ़ाईं। कहा जाता है कल्याणसेन ने 41 वर्ष तक राज्य किया। उसकी मृत्यु 1332 के आसपास हुई।

मंडी में राजधानी की स्थापना

अजबरसेन 1499 या 1500 में राजा बना। इस समय राजधानी व्यास के दाएं किनारे पुरानी मंडी में ही थी। राजा ने सधियाणा के गोकल राणा को हराया और अपनी राजधानी मंडी बनाई। अजबरसेन के विरुद्ध राणा और ठाकुरों ने इकट्ठे होकर बल्ह की ओर से हमला बोला जिसे राजा ने विफल कर दिया। राजा ने कमलाह को भी अपने अधीन कर लिया।

अजबरसेन ने सन् 1527 में मंडी को विधिवत् राजधानी बनाया और 35 वर्ष तक राज्य किया। अजबरसेन की मृत्यु 1534 में हुई।

अजबरसेन के शासनकाल में ही उसके पुत्र चतरसेन द्वारा किए गए एक युद्ध में चतरसेन घायल हो गया और तीन खत्री मारे गए। राजा ने उनकी बहादुरी से प्रसन्न होकर उनके चौथे भाई मकसूदन को ताम्रपत्र दिया। सन् 1527 के इस ताम्रपत्र में राजा के पुत्र चतरसेन के हस्ताक्षर हैं। मनमोहन ने अपने इतिहास में लिखा है कि चतरसेन की मृत्यु अजबरसेन के जीवन काल में ही हो गई। कनिंघम ने चतरसेन का राज्य बीस वर्ष (1534-1554) बताया है।

मंडी में सूरजसेन (1637) ने महल बनाए जिसे दमदमा महल कहते हैं। लगभग उसी समय में जगतसिंह ने सुल्तानपुर में बेहड़े बनाए।

सूरजसेन के अट्ठारह पुत्र हुए किंतु उनमें से कोई जीवित नहीं रहा। निराश हो राजा ने अपनी गद्दी माधोराय को सौंप दी और स्वयं उनका सेवक

बना। ठीक वैसे ही जैसे राजा जगतसिंह ने कुल्लू की राजगद्दी रघुनाथ जी को सौंपी और स्वयं उनका छड़ीबरदार बना। सूरजसेन ने माधोराय की चांदी की मूर्ति बनवाई और मंदिर का कार्य चलाने के लिए तुंगल में भूमि दी जैसे जगतसिंह ने रघुनाथ जी को भूंतर कोठी, जगतसुख कोठी की आय दी।

दमदमा महल में स्थापित माधोराय की मूर्ति में एक लेख है जिसमें लिखा है–'सूर्यसेन, पृथ्वी के स्वामी, शत्रुनाशक ने इस पावन और चक्रधारी, सभी देवताओं स्वामी माधोराय की मूर्ति सुनार भीमा द्वारा वीरवार 15 फागुन 1705 विक्रमी को बनवाई।' यह मूर्ति मार्च, 1648 में बनवाई गई।

कुल्लू दशहरा की भांति शिवरात्रि का उत्सव मंडी में मनाया जाने लगा।

सिद्धसेन (1684)

सिद्धसेन मंडी के इतिहास में एक पराक्रमी राजा हुआ जिसने अपने राज्य की सीमाएं सुकेत, कुल्लू और भंगाल; तीनों ओर बढ़ाईं। राज्य में कई सुधार कार्य किए। सिद्धसेन एक विशालकाय व्यक्ति था। इस राजा के कपड़े कुछ समय पहले तक मंडी के महल में रखे हुए थे जिनसे अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह बहुत बड़े डीलडौल वाला व्यक्ति था। उसे तांत्रिक भी माना जाता था जिसके पास रहस्यमयी शक्तियां थीं। कहा जाता है उसके पास एक रहस्यमय किताब थी जिसे उसके मरने से पहले ही व्यास नदी में फेंक दिया गया। मंडी कलम में सिद्धसेन का चित्र मिलता है जिसमें राजा को कंधे पर केवल एक सफेद गाउन सा पहने नंग-धड़ंग दिखाया गया है। गले में एक रुद्राक्ष माला और एक सोने का कंठा है। नीचे लंगोट सा लगा रखा है।

सर लेपेल ग्रिफिन ने भी लिखा है–'सत्य यह प्रतीत होता है कि सिद्धसेन अन्य लोगों से अत्यधिक बुद्धिमान था और उसकी निरंतर सफलता ने उसे अतिमानवीय शक्ति का प्रतीक बना दिया।'

सिद्धसेन का कार्यकाल तीन उपलब्धियों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। पहली (सीमाओं का विस्तार), दूसरी (गुरु गोबिंद सिंह से अच्छे संबंध और तीसरी (सुधार कार्य)।

सिद्धसेन के बाद उसके पुत्र शिवज्वालासेन का कार्यकाल कनिंघम ने 1727 से 1750 तक गिनाया है। परंपरा के अनुसार शिवज्वालासेन ने केवल तीन वर्ष राज्य किया। यह भी माना जाता है कि शिवज्वालासेन की मृत्यु 1722 में पिता सिद्धसेन की मृत्यु से पांच वर्ष पहले ही हो गई।

ईश्वरीसेन (1788)

सूरमसेन की मृत्यु के समय ईश्वरीसेन की आयु मात्र चार वर्ष थी अतः शासन व्यवस्था वजीर वैरागीराम के हाथों में रही। राजा के नाबालिग होने से मियां लोग फिर सिर उठाने लगे। अतः वैरागीराम ने कांगड़ा के संसारचंद से सहायता मांगी। लगभग 1792 में संसारचंद ने मंडी पर हमला कर मंडी को लूटा। सुकेत नरेश ने भी कांगड़ा की अधीनता स्वीकार कर हटली का क्षेत्र दे दिया।

इस हार के बाद राजा ईश्वरीसेन को सुजानपुर टिहरा ले जाकर बारह वर्ष तक बंदी बनाए रखा गया। राज्य वजीरों के आसरे छोड़ा गया और एक लाख रुपया कर लिया जाने लगा।

ईश्वरीसेन की मृत्यु के बाद भाई जालिमसेन (1826) उत्तराधिकरी हुआ और गद्दी पाने के लिए एक लाख नजराना देना पड़ा।

9 मार्च, 1846 को सिख तथा अंग्रेजों के बीच संधि होने पर सतलुज तथा व्यास नदी के बीच का क्षेत्र अंग्रेजों के अधीन हो गया। फलतः मंडी और सुकेत का क्षेत्र भी अंग्रेजों के अधीन आ गया और इसे जालंधर के कमिश्नर के अधीन कर दिया गया।

विजयसेन (1851)

विजयसेन प्रजा में बहुत प्रिय शासक रहा। अच्छा प्रशासन देने के लिए इसे सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्य संभालने पर के. सी. एस. आई. की उपाधि दी गई और इसे राजपत्र में प्रकाशित किया गया।

सन् 1864 में सरकार द्वारा राजा को ग्यारह तोपों की सलामी दी गई और 12 अक्तूबर, 1864 में वयस्क होने पर शासन कर शक्तियां सौंपी गईं। मंडी हो भूभू दर्रे से सुलतानपुर कुल्लू के लिए एक खच्चर मार्ग बनाया गया।

कंवर भवानीसेन (1903) के नाबालिग होने के कारण मि. मिलर (आई. सी. एस.) को 30 नवंबर, 1903 को राज्य का सुपरिंटेंडेंट बनाया गया। राजा को चीफ्ज कॉलेज लाहौर में पांच वर्ष तक ट्यूटर मि. ई. एम. एटकिंसन की देखरेख में शिक्षा दिलाई गई। 17 अप्रैल, 1904 को भवानीसेन कराची व मुंबई के दौरे के बाद मंडी पहुंचा। राजगद्दी संभालने पर सरकार को 1,10,000 रुपए नजराना दिया गया।

7 अक्तूबर, 1905 को मि. एंडरसन राजा को प्रशासनिक शक्तियां देकर चले गए।

जोगेंद्रसेन (1913)

विजयसेन की भांति भवानीसेन का भी कोई उत्तराधिकारी नहीं था अतः कुछ समय बाद 10 अप्रैल, 1913 को लेफ्टिनेंट गवर्नर लुईस डेन ने दरबार में निकट संबंधी मियां जोगेंद्रसिंह को जोगेंद्रसेन नाम से उत्तराधिकारी बनाया। उस समय जोगेंद्रसेन की आयु मात्र साढ़े आठ वर्ष थी अतः शिक्षा के लिए उसे क्वीन मेरी कॉलेज लाहौर भेजा गया। इस बीच सरकार ने मि. ए. एल. गार्डन को राज्य का सुपरिंटेंडेंट और मुंशी अमरसिंह को सहायक बनाया। सन् 1916 में जोगेंद्रसेन को चीफ्ज कॉलेज लाहौर में डाला गया जहां 1923 तक डिप्लोमा और न्यायिक, अधिशासी व राजस्व की ट्रेनिंग ली।

राजा के अवयस्क होने के कारण लंबे समय तक (1925) राज्य सीधे ब्रिटिश अधिकारियों के अधीन रहा। 14 मार्च, 1948 को जोगेंद्रसेन ने पहाड़ी राज्यों के एकीकरण पर हस्ताक्षर कर दिए जिसके फलस्वरूप मंडी पुराने हिमाचल प्रदेश का एक जिला बन गया।

मंडी के ऊपर की ओर कुल्लू, नीचे बिलासपुर; एक ओर शिमला तथा दूसरी ओर कांगड़ा जिला है। मंडी की बोली को मंडयाली कहा जाता है जो बिलासपुरी या कहलूरी के निकट है। मंडी शहर को छोड़कर इस जिला में करसोग, चच्योट, सनार बदार, कमरूनाग व पराशर रिवालसर जैसे क्षेत्र हैं जो संस्कृति की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं।

लोकगीत

जन्म गीत

भादों महीने न्हारी जे राती, जन्मे ओ कृष्ण मुरारी ओ मेरे रामा
सुणेया ओ भाईया नारदा, जन्मे ओ कृष्ण मुरारी ओ मेरे रामा।
जिस दिन जन्मेया दीपक बलेया
चहूं दिसे होईयां लोईयां ओ मेरे रामा
सुणेया ओ भाईया नारदा, चहूं दिसे होईयां लोईयां ओ मेरे रामा।
घोल पताशा गलसुत देंदी
सोएने दी ओ कटोरी ओ मेरे रामा
सुणेया ओ भाईया नारदा ओ, सोएने दी ओ कटोरी ओ मेरे रामा।
अगर चपण दा पलंघोड़ा जे घड़ेया

रेशम दी लाई डोरी ओ मेरे रामा
सुणेया ओ भाईया नारदा, रेशम दी लाई डोरी ओ मेरे रामा।
नंद बाबे दा बेटा, पलंघोड़े जे चढ़ेया
झल्यारे देंदी ओ जशोदा ओ मेरे रामा
सुणेया ओ भाईया नारदा, झल्यारे देंदी ओ जशोधा ओ मेरे रामा।
भादों महीने न्हारी ले राती, जन्मे ओ कृष्ण मुरारी ओ मेरे रामा।

बधाई गीत

1

बांके नसीबां वाली आई कि आज मेरे बजियां बधाईयां।
एढ़े नसीबां वाली आई कि आज मेरे बजियां बधाईयां।
बजियां बधाईयां गुरांदे नगारे, बांके नसीबां वाली आई कि...

दादे दा पोत्र पालण झूले
झल्यार देंदी माईयां कि आज मेरे बजियां बधाईयां
अपणे ताऊ चाचे रा भतीजा पालण झूले
झूटे देवे चाची ताईयां कि आज मेरे बजियां बधाईयां।
अपणे बो रा बेटा पालन झूले
झल्यारे देवे सक्की माईयां कि आज मेरे बजियां बधाईयां।
बांके नसीबां वाली आई कि आज मेरे बजियां बधाईयां।

2

किसदे हुंदे बाग बगीचे
किसदे हुंदे रंगले महल।

पुरूषां दे हुंदे बाग बगीचे
नारियां दे हुंदे रंगले महल।

केत्थी ते बसे मेरे तुलसी
केत्थी बसे मेरे राम।

रीढ़ में बसे मेरे तुलसी
मुख बिच बसदे मेरे राम।
जपिए तपिए ता जपिया राम।

भ्याई

जन्मदिन पर गाया जाने वाला : करसोग क्षेत्र

नौमीया दे दिन नौबत बाजे
नौमियां दे दिन नौबत बाजे।
जन्मेया कृष्ण पुरारी, नी माए
नौमिया दे दिन नौबत बाजे।
काहे दा ए पालणा बणेया
काहे दी ए डोर नी माए
नौमियां दे दिन नौबत बाजे।
अग्गर चंदन दा ए पालणा बणेया
रेशम दी ए डोर
नी माए नौमिया दे दिन नौबत बाजे।
माए दा पोता ए पालण बणेया
झूला दीती सकी माई
नी माए नौमिया दे दिन नौबत बाजे।
मामे दा भाणजा झूलण झूलेया
झूला दिता सकी माई
नी माए नौमियां दे दिन नौबत बाजे।

सेहरा गीत

सेहरा तेरा गुलनार लाड़ेया
चंद होर तारे मढ़ी दिते गांधिए।
हाथा बे नरेल कटार लाड़ेया
चांदिये रा बरक लगाया गांधिए।
सेहरा तेरा गुलनार लाड़ेया
काजल ता बहया तेरी हाखी भाभिए।
रूप तेरा कृष्ण मुरार लाड़ेया
संग बराती चले नची गाई के
परखदी हाखियां हजार लाड़ेया।
रूक्मण ल्योणी हुण तुध लाड़ेया
रूप तेरा कृष्ण मुरार लाड़ेया
सेहरा तेरा गुलनार लाड़ेया।

वर प्रतिष्ठा

तू तां प्होयां लाड़ेया
रतड़ें कुंगए, तू जोराओर होयां लाड़ेया।
लख बरेखे, तेरी दादी नानी सोहागणी देंदड़ी शीशा
तू जोराओर होयां लाड़ेया।
तू तां प्होयां लाड़ेया
हरी दरूभे, तू जोराओर होयां लाड़ेया।
लख बरेखे, तेरी आमा सुहागणी देंदड़ी शीशा
तू तां प्होयां लाड़ेया डुनड़ी, मठुनड़ी ए
जोओर होयां लाड़ेया
तू तां न्होयां लाड़ेया।

घोड़ी

चाओ लगा ओ सहियो लोभ लगा
ओ मेरे बनरे रे मना ओ बिच चाओ लगा।
गांधी री हाटी ओ लाड़ा की बे ढीठा
ओ एस लाड़े रे मना बिच चाओ लगा।
सन्यारा री हाटी ओ लाड़ा की बे ढीठा
ओ ए तां गैहणे बणवांदा, ओ सहियो तां बे ढीठा।
प्रोह्ता रे घरा ओ लाड़ा की बे ढीठा
ओ ए तो लंगन लखवांदा ओ सहियो तां बे ढीठा
ओ एस लाड़े रे मना बिच चाओ लगा।

बधावा

औंदियां सखियां मंगल गाया
जी कृसना जे मुरली बजाई।
दूजा बधावा सड़का जे आया
सड़का जो रखदी सजाई।
तीजा बधावा अंगणे जे आया
अंगणा रखदी लपाई।
औंदियां सखिया मंगल गाया
जी कृसणा जे बंसी बजाई।

सुहाग (मंडी)

चिट्टे तां चावल़ मेरी रूकमणी
हरे मूंगा दीये दाल; रूकमणी मेरी पाहुणी।
अज्ज फरमायां बापू कल फरमायां
परसी जो आवनी बरात; रूकमणी मेरी पाहुणी।
अज्ज फरमायां ताऊए कल फरमायां
परसी आवनी बरात; रूकमणी मेरी पाहुणी।

विदाई गीत

धीयां पाहुणी

1

धीयां पाहुणी दिन चार बाबा धीयां पाहुणी...
त्रम्बेया धरत मढ़ाई के हुण मोतिए चौक परवाओ
बाबा धीया पाहुणी।

मोतिए चौक परोई के हुण सतपुरी बेद गड़ाओ
बाबा धीया पाहुणी दिन चार बाबा...

सतपुरी बेद लगाई के हुण सकल मोर लगाओ
बाबा धीयां पाहुणी दिन चार...

सतपुरी बेद लगाई के हुण ब्रह्मा जे पंडत बुलाओ
धीयां पाहुणी दिन चार बाबा...

ब्रह्मा जे पंडत बुलाई के हुण कृशण बर भी बुलाओ
बाबा धीयां पाहुणी दिन चार...

कृशण बर तां बुलाई के हुण रूक्मिण कन्या लेयाओ
बाबा धीयां पाहुणी दिन चार...

रूक्मिणी कन्या बुलाई के हुण कन्या दान कराओ
बाबा धीयां पाहुणी दिन चार...

लई चल बाबा लाडली तेरी हुण गहरा ढोल बजाओ
बाबा धीयां पाहुणी दिन चार
धीयां पाहुणी।

2

हुण परदेसण हुई मेरी धीए तू
अज परदेसण होई।
अम्मां जे मेरी धीए छम छम रोए
बाबा भी साओण घमीर।
भाभी जे तेरी धीए छम छम रोए
भाईया भी नीर भरे।
हुण परदेसण हुई मेरी धीए तू
अज परदेसण होई।

3

तेरेयां महलां दे अंदर बे
बापूजी मेरा डोल़ा अड़ेया
तेर डोल़े दिंगे ओ छुड़ायी
धिये घार जा आपणे।

तेरेयां महलां दे अंदर बे
बापूजी मेरियां गुड्डियां रहियां
तेरियां गुड्डियां खिलाये तेरी बैहणा
धिये घार जा आपणे।

तेरेयां महलां दे अंदर बे
तेरी अम्मां रोए
तेरी अम्मां जो चुप करांगे
धिये घर जा आपणे।

4

उत्तरा का निकल़े काल़े बादरे
पश्चिमा का हुआ घमा घोरा।
काड़े न माने मेरी मेरी बेटिये
सौगे आओ बीरा सबाये।

कुण दैंदा लागा जोगणे
कुण दैंदा तरा रे तराये।

मामु तो दैंदा लागा जोगणे
बीरा दैंदा तरा रे तराये।

खड़ै ता टेको ढोले जमाणिओं
देखाणै देओ बापू ओ देशा।
रोये न रोये बेटिये
जाणा लागा शाउरी ए घौरा।

5

बापू रा देस

यह 'छिंज' गीत है किंतु इस गीत में बेटी के बाबुल के घर छोड़ने का हृदयग्राही वर्णन है। मां-बाप का देस छोड़ने के लिए पिटारियां भर चुकी हैं। अब सखियों का संग, पीपल पर लगी पींघ, गुड्डियों का खेल छोड़ देना है। नदी गहरी है फिर भी लांघनी है। वधू बार-बार पीछे मुड़कर देख रही है और छम् छम् रो रही है। हे ढोल बजाने वाले हेस्सियो! तनिक रुक जाओ, मुझे अपने बापू का देस देख लेने दो।

उच्चे उच्चे बंगले नागण जे बैठी
चौपड़ खेलदी तिन बल पांवदी।

भरियां पटारियां हो हुण होइयां त्यारियां
अज पर छोडया हो बापूए रा देस
जी हो, अम्मा रा पड़ेस जी हो।

अज पर छोडया साथणी रा साथ
पीपल़ री पींघ, गुड्डियां रा खेलणा हो।

नदी हुंदी डुघड़ी, तार हुंदा छोटड़ा हो
किहां करी लंघणा हो नदिया दे पार जी हो।

हाथा लैंदी मूंदड़ी हो गल़े लैंदी हार जी
हो लंघी जाणा पार जी हो।

अग्गे मोड़ी हांडदी पिच्छे मोड़ी देखदी हो
टुल़ पुल भाल़दी हो, छम् छम् रोंवदी हो।

खड़े होयां हेस्यिो, खड़े होयां ढोलियो!
हो, पल भी देखणा बापू रा देस हो।

भ्यागड़ा

भ्यागड़ा यानी प्रातः गीतों का प्रचलन पूरे हिमाचल में है। भ्याग अर्थात् सुबह होते ही ऐसे गीत गाए जाते हैं जिनमें अधिकतर श्रीकृष्ण लीला से संबंधित होते हैं। प्रस्तुत भ्यागड़े में भी बहू दिन निकलने के पहले दही बेचने जाती है तो उसे श्रीकृष्ण छेड़ते हैं जिस कारण उसे वापस आने में देरी हो जाती है।

पहर सवेला री गई री ओ बहुए अड़िए
गई री ओ बहुए!
दिन चढ़ने जो आया दिलोजान अड़िए।
खट्टा जे दहुंआ सासु कोई बी नी लैंदा
सासु कोई बी नी लैंदा
घरा घरा दहुंआं जमांदे, दिलोजान सासुजी!
छाड छाड कान्हां मेरियां बईंयां न मरोड़ेया
अड़ेया बंगड़ुआं न तोड़यां
घरा मेरा सौहरा सयाणा, दिलोजान कृष्णा।

सौहरे जो तेरे अड़िए हुक्का जे भराई दूं
पलंग ढुलाई दूं
तुजो घरा जाणे नी देऊं दिलोजान अड़िए।

छाड छाड कान्हां मेरियां बईंयां न मरोड़यां
अड़ेया! बंगड़ुओं न तोड़यां
घरे मेरा गुज्जर जुआन, दिलोजान कृष्णा।

गुज्जरा रा तेरे अड़िए ब्याह जे कराई दूं
नई गुजरी ल्याई दूं
आपु मुआ फिरदा कुआरा, दिलोजान कृष्णा।

सौ सठ गुजरियां ब्याही के छडियां
तेरे पिच्छे फिरदा कुआरा, दिलोजान अड़िए।

पैहर सवेला री गई नी बहुए
दिन चढ़ने जो आया दिलोजान अड़िए।

बिंदरा रे बणे मेरा बेसरू जे गुआचया
बेसरू जे गुआचया, टोलदें लागी देर, दिलोजान सासुजी।

पैहर सवेला री गई री ओ बहुए अड़िए
गई री ओ बहुए
दिन चढ़ने जो आया दिलोजान अड़िए।

गंगा रा न्हौण

गंगा रे न्हौणे जांदा मेरे मोहणा
गंगा रे न्हौणे जांदा हो।

हाथा लैंदा लोटा मंढे प धोतिया
गंगा रे न्हौणे जांदा हो।

बाही साही टुकडू, साजरा जे मक्खणा
मक्खणा खाई के जायां हो।

केसरे चारदा बाछुआ हो बाच्छियां
केसरी चारदा गाईंयां।
यसोधा रे चारदा बाच्छुआं बाच्छियां
कुब्जा री चारदा गाईंयां हो।
गंगा रे न्हौणे जांदा मेरे मोहणा
गंगा रे न्हौणे जांदा हो।

आपू नी आंवदा

आपू बी नी आंवदा प्रभुआ मेरेया
लिखी बी नी भेजदा
क्या तेरे ओ मना में, मन में छल घिरिया।

बाहरा बी ओ बरसेया प्रभुआ बी मेरेया
मथुरा जे नगरी, प्रभुआ मेरेया ओ घुलदा मलखाड़ा
आया ओ बी लोड़ी म्हारे मलखाड़े जो
अन्न बी नी खांदियां, जल बी नी पींदियां
रही बी जांदी निराहारी।

सोला़ बि सहंसरा प्रभुआ मेरेया
गोपियां आसै तेरियां
कुण झेंऊ दिया प्रभुआ मेरेया
गोपियां तैं जे परत्यागियां।

कुब्जा बी कन्नै तैं मन चित्त लाया
फूला री बी सेजा लो बछांदियां बिन्द्राबन में
कुब्जा बी हो मालणा प्रभुआ।

मेरेया जुगा री बी हुन्दी बैरन
जेस बी ओ बैरणिए प्रभु म्हारा भरमाया।

मरी ओ बी कि निं जांदी कुब्जा बी ओ मालणी
तैं म्हारा प्रभु भरमाया।

आपू बी नी औंदा प्रभुआ मेरेया
लिखी बी नी भेजदा
क्या तेरे ओ मना में, मन में छल घिरिया!

ऋतु गीत या छिंज गीत

छिंज गीत या ऋतु गीत गाने की परंपरा पूरे हिमाचल में है। मंडी में इन्हें 'छिंज' गीत भी कहा जाता है। इन गीतों को चैत्र मास आरंभ होने पर गाया जाता है। इन गीतों में प्रेम के संयोग व वियोग; दोनों पक्ष, शृंगार गीत, सास, बहू और ननद की तकरार भी देखने को मिलती है। पुराने समय में दूर ब्याही बेटियों का दर्द भी इनमें छिपा रहता है। यह गीत बहुत हृदयग्राही है।

उपरा ते पेईए डोडरिए

कुसुंभे की लालिमा लिए इंद्रधनुष के समय जब बहन के घर में भाई पाहुना आता है तो उसकी खातिरदारी करने में बहन सकुचाती है क्योंकि उसके पास पलंग, पीढ़ा, थालियां, कटोरियां, लाल चावल कुछ नहीं है।

उपरा ते पेईये डोडरिये
कि बहुती कुसुम्भेयां लाल
वीरन ता आया भैणे पाहुणा
कि केहड़े आदर देऊं।

दराणी जठाणी घरे पीढ़े पट्टड़े
मांजो वीरा मांजरू झींझण
दराणी जठाणी घरे शाली झींझण
हो मांजो वीरा कोदरे दा तोड़ा।

तीन्हां रे घरे थाड़ियां कटोरियां
हो मांजो वीरा घड़ोलुआं दा तोड़ा
खादे ता खादे वीरें सभै भोजन
कि हुण भैणे पैहिंएं जाणा।

चरखा कतांदिये सासु मेरिये
कि मांजो जीये पैहिंएं जाणा
हांऊं नी जाणदी हो बहुए तू मेरिये
जाई आपणी ननदा जो पूछ।

गुड्डियां खेलदी नणदे तू मेरिये
कि मांजो पैहिंएं भेज
हांऊं नीं जाणदी भाभिए तू मेरिये
जाई अपणे कंता जो पूछ।

घोड़लू दड़ांदेआ कंता तू मेरिया
कि मांजो पैहिंएं भेज
ल्याओ बे गुआड़ूओ पाजे दी छटियां
ऐसा री जाऊं जाऊं चुकाऊं।

पारली जे धारे हो रूग बुगिये
कि थोड़ी भैणे निंमदी होयां
तुध पिच्छे मेरी पैहिंयां पेओका
मांजो मुईए देखणे दा चाओ।

चैत्र गीत

इस गीत में भी चैत्र के महीने दूर ब्याही बेटी अपनी मां को कहती है कि मेरे गमानी भाई को भेज। मैं उसके पैर धोने के लिए दूध मिलाया पानी दूंगी, खाने को लड्डू सकोती दूंगी। थाल कटोरे सजाकर झींगल चावलों का भात बनाऊंगी, मोटे बकरे का मांस दूंगी। किंतु मेरी सास कर्कशा आग का पूला है, भाई उस पर पानी फेंकने को कहता है। भाई के जाने पर उसके घोड़े का चाबुक रह जाता है। बहन उसे घुंघरू लगाकर अपने हृदय से लगाकर रखने की बात करती है।

पीपला़ दे हेठ मेरी अम्मा खड़े हो
अम्मा खड़े वारी

झड़ झड़ पौंदे पीपल पात से...।

जाओ तू जाओ अम्मा घर आपणे
बीरना गुमानी जो भेज ए...।

आओ तू आओ बीरा! बैठ तू पाटड़े
केह्ड़े आदर देऊ ए...।

दुधे पाणियाएं बीरा पैर धुहाऊं
दंतुए पाटड़ा देऊ ए...।

लड्डे सकोतिए बीरा भोजन देऊं
झारिए देऊं ठण्डा नीर ए...।

चंदा ता देखी देखी थाल़ी घड़ाऊं
तारेया गिणदे कटोरे ए...।

झिंझणी ता छांटी छांटी भात रन्हाऊं
मिंढे मिंढे बकरे रा मास ए...।

खायां ता खायां बीरा बड्डे गराहें
आवेगी सासू कंग्यारी ए...।

सासूं ता मेरी बीरा अगनी रा पूला
ननद लसकदी बीज ए...।

अगनी दे पूले भैणे पाएगी डुलाऊं
पत्थर फोड़ूं लसकदी बीज ए...।

घोड़ा दुड़ांदा बीरा ओह गेआ, ओह गेआ
चपका गेया बरसाई ए...।

चपका ओ बीरा तेरी घंघरू लगाऊं
रखांगी जीवड़े दे नाल ए...।

आंगण साढे चंबे रा बूटा

इस गीत में दूर ब्याही बेटी आंगन में चंबे के बूटे पर बैठे कौवे से बोलती है कि मेरी मां मेरे सुखसांत का पत्र देना।

आंगन साडे चम्बे रा बूटा
तेतं बैठया काल़ा कागा।

किधिए मढ़ाऊं तेरी कालिया चूंजां
किधिए मढ़ाऊं काल़े फंखा।

सुईने मढ़ाऊं तेरी काल़ी चूंजां
रूपे मढ़ाऊं काल़े फंखा।

उड़ी जायां! उड़ी जायां! काल़ेया कागा!
इक वे सनेहा लई जायां।

कैस जो बी देणा तेरा सुख बे सनेहा
कैस जो देणी बांकी चिट्ठियां।

अम्मा जो बी देणा मेरा सुख बे सनेहा
बापू जो देणी बांकी चिट्ठियां।

किधिए दे लड़ तेरा सुख बे सनेहा
किधिए दे लड़ बांकी चिट्ठियां।

पघड़ी दे लड़ मेरा सुख बे सनेहा
पट्के दे लड़ बांकी चिट्ठियां।

बसोए रा ध्याड़ा

बैसाखी के अवसर पर कुछ ऐसे गीत भी गाए जाते हैं जिनमें प्रेम में जान दे देने के बाद दुखांत कहानी है। इस गीत में कांगड़ा के 'रांझा-फूलमू' की भांति प्रेमी की मृत्यु पर प्रेमिका द्वारा जान देने की दास्तान है। गीत में बाप द्वारा बेटी ब्याहने के बदले 'बरीणा' यानी रुपए लेने की कुप्रथा को भी लताड़ा गया है।

बसोए रा ध्याड़ा बापुआ!
जुग जुगोआ याद रेहणा मेरे बापुआ।

पारली धारा ते तिन जणे उतरे
आयी गई रे लौहल़ा जे रबारू बापुआ
बसोए रा ध्याड़ा...।

न्हाई ता धोई लौहल़ा खूब सजायीती
सबहे गैहणे पहनाई कने सुहागण बनाईती
मुकी जांदे दिला रे सारे चाव बापुआ
बसोए रा ध्याड़ा...।

एकी पास्से लाड़े री पाल्की जे सजदी
छूजे पासे लौहल़ा री अर्थी जे सजदी
आंझुआं दे बगी जांदे हड़ बापुआ
बसोए रा ध्याड़ा...।

रोकया जे कहारो मा पी लैणा पाणी
आपणी लौहल़ा जो लकड़ी मा पाणी
हुण कजो रोंदा तू मेरे बापुआ।

हुण देखेंया खांदे लोको धिऊआ रा बरीणा
मुसिकल हुई जांदा बेटिया रा जीणा
हटी के नी पिंगल़े जो आवणा बापुआ
बसोए रा ध्याड़ा बापूआ...।

होली गीत

होली गीत आधी हिंदी और आधी स्थानीय बोली में हैं। पिया के घर में न होने से भीतरी रोग लगा है जो वैद्य को बुलावा देने पर भी न जाएगा।

1

होरी के खेलण मुझे विरह सतावे
पानी जैसी पतली पीएं जैसी पीऊल़ी
जीऊड़े जो क्या दुख लगा ओ मेरी भाभिए!

मण्डिया सुकेता रे वैद मंगावो
करी लैणी जीऊड़े दी कारी मेरी भाभिए!

आई जा ओ वैदा, बैठी जायां पटड़े
अंदरा दे रोग बताया मेरा वैदा।

चांदी री पट्टियां सुईने रे पावे
पिया घर आवे मेरा सब दुख जावे।

वैद काहे को मंगाया मेरी ननदे
होरी के खेलण मुझ को विरह सतावे।

2

महाराज! रंगीली छैल खेले होली
आज रंग है ब्रज में सभी रे चलो।

महाराज! रंगीली छैल खेले होली
सब महाराज! चलो होरी खेलें।

अपने अपने मंदिर से रे निकली
हो एक सांवली दूजी गोरी
महाराज! रंगीली छैल खेले होली।

कृष्ण के सिर पर मुकुट बिराजे
राधा के सिर पर डोरी
महाराज जी! राधा के सिर पर डोरी।

भरी पिचकारी राधा सन्मुख डारी
अंगिया भीगी मेरी सारी
चुनरी भीगी गई सारी।

आज रंग है ब्रज में सभी रे चलो
महाराज! रंगीली छैल खेले होली।

बारामासा

कांगड़ा की भांति मंडी में भी बारामासा गया जाता है जिसमें बारह ऋतुओं में विरहिणी नायिका की मनोदशा का वर्णन मिलता है। चैत्र से लेकर बदलती ऋतुओं में कंत की प्रतीक्षा में विरहिणी किस तरह तड़पती है, इसका हृदयग्राही वर्णन बारामासा में मिलता है।

पिया गए परदेस, अजहूं न आंवदे
आयो महीना चैत, अम्मा मेरी
चैत चिंता मोरे मन बसी
पिया गए परदेस, अजहूं न आंवदे।

आयो महीना बसाख, आंगण पाकी दाख
जियुड़ा उदास, जियूड़े नू डोलदी
पिया गए परदेस, अजहूं न आंवदे।

आयो महीना जेठ, अंबूए दे हेठ
पखुआ मैं झोलदी
नदियां दा सुकी जांदा नीर
मछली तड़पांवदी हो मुझ पिया
रमेया परदेस, घड़ी पल न्याह्ल़दी।

आयो महीना हाड़, नदियां पहाड़
घोड़े रा सवार, हत्थ लई तलवार
देखयां केसी जो मारदा
जोबण भरी नार, देखयां केसी जो मारदा।

चलेयो महीना सावणा, मेरा घर नी आवणा
बुरा देख्यां बूझदी, पाणिए भरेया तलाब
जलथल हो रही।

आयो महीना भादों, कि घटा घनघोर
बिजल़ी रा जोर, लसके डरावणी
हो पिय बिन सूनी मेरी सेज
डसणे जो आंवदी
हो पिया गए परदेस, अजहूं न आंवदे।

आयो महीना आसू, सुणया मेरी सासु
कि पुत्तर तेरा घर नाहीं
हो जिसदा मैं करदी सिंगार
वो पिया घर नाहीं
पिया गए परदेस, अजहूं न आंवदे।

आयो महीना कातक, घर ओ दयाल़ी आई
सखियां दे घर घर कंत रोसनी मनावंदी
पिया गए परदेस, शगन मनांवदी।

आयो महीना मघर, सीत्ता कने बैर
ल्हेफ भरावंदी
हो ल्हेफ दे अंदर मेरे लाल
हवा ते बचावंदी, पिया गए परदेस।

आयो महीना पौष, पाले़ पई ओस
थर थर कांवदी
हो घड़ी घड़ी करदी सिंगार
अजहू न आंवदे, पिया गए परदेस।

आयो महीना माघ, गिठड़ा मैं बाल़दी
हो पिया गए परदेस, शगन मनावंदी।

चलेया महीना फागुन, पिया संग मगन
सातों रंग घोल़दी
हो बाजदी मैं ताल मृदंग
आज पिया घर आया।

बरखा दी झड़ियां

मिट्ठी मिट्ठी बरखा दी झड़ियां ले लगियां
तांह् झूलदी है दरिया ठण्डी बागरी
जोबणे री कलियां फुलणे जो आईयां
ओ जल़ी गई बैरिया तेरी चाकरी।

इस बेला कल्हिया न छड बैरिया
जीवणे दियां चढ़ियां खड्डां नाल़ियां
इक्क बारी आई पुज्ज बैरिया
फुक्खणा दे कन्ना दियां फुलबाल़ियां।

बछोआ ओ तेरा झलिया नीं जांदा
तांह् अजे मेरी बैरन बरेस बालड़ी
जली गई आखियां नींद न औंदी
तां लम्बी बजोगां दी रात कालड़ी।

सुक्की कने बदने दा पिंजरा होआ
कन्ने निकलि़यां मेरी हड्ड माल़ियां
इक्क बरी आई पुज्ज घरैं बेरिया
फुक्कणा दे कन्ना दिया फुलबाल़ियां।

देबकू

यह प्रेमगीत 'जिंदु देबकू' नाम से भी प्रचलित है। इसके एकाधिक रूपांतर मिलते हैं।

1

हाथा लैंदी लोटकू देबकुए
काच्छा पांदी धोति
चल मुईए न्हाओणेओ जाणा, ओ देबकुए...।

गोरे गोरे हाथड़ू देबकुए
लूचियां पकांदी
खाणे बाल़ा नजरी नी आऊंदा, ओ देबकुए...।

अगे बला जांदी मुइए पिच्छे मुड़ी देखदी
जिंदु बोले प्यारा ओ, नजरी नी आया।
जिंदु प्यारा नजरी नी आया।

तीरूये चबारूये देबकु
झांकी झांकी देखदी
जींदू प्यारा नजरी नीं आऊंदा, ओ देबकुए...।

थोड़ी थोड़ी बुरी देबकुए
जिंदुए री आऊंदी
गाहिए री बगी जांदी छुरी, ओ देबकुए...।

हाखियां ता तेरी देबकु
अम्बा रियां फालि़यां
गूठियां रौंगा दिया फालि़यां, ओ देबकुए...।

हाखियां ता तेरी देबकू आंबां रिया फाड़ियां
दांद तेरे मोतियां रे दाणे
हो दांद तेरे मोतियां दे दाणे।

2

बहुत बार गीतों के बीच में या अंत में दूसरे क्षेत्र के विरह गीत का अंतरा भी अनायास ही जुड़ जाता है। जैसे यहां अंत में कांगड़ा के 'हरिचंद और गद्दण' का अंतरा जुड़ा है।

हाथा लैंदी लोटकू देबकू काछा पांदी धोती
हो, चल मुइए नौणा पर जाणा
जिंदे मेरिए! ओ चल मुइए नौणा पर जाणा।

नौणा पर जाई देबकू गल्लां बातां कितियां
हो, जिंदड़ी रे कित्ते कौल करार
जिंदे मेरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

हाखियां तां तेरियां देबकू अम्बा रिया फाड़ियां
हो, दंद जिह्यां मोतियां रे दाणे
जिंदे मेरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

हात्था रा बी मुन्दड़ा जिंदुए खोली कने दित्ता
हो, लई छाड्ड उमर नसाणी
जिंदे मेरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

बोलियां ना मारेयां भारथिया, ठोलियां ना मारेयां
हो, मैं परदेसण नमाणी
जिंदे मंरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

अग्गे अग्गे हांडदी देबकू, पीछे मुड़ी देखदी
हो, जिंदू प्यारा नजरी नी आया
जिंदे मंरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

गोरे गोरे हत्थड़ू देबकू लुच्चियां पकांदे
हो, खाणे वाला नजरी नी आया
जिंदे मेरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

कुल्लू रियां सड़कां देबकू रोड़ियां झे कुटियां
हो, गोरे हात्था पाई जांदे छालू
जिंदे मेरिए! हो गोर हात्था पई जांदे छालू।

थोड़ी थोड़ी बुरी मुंजो तेस्स गद्दिदए री लगदी
हो, जिंदूए री लागी जांदी छुरी
जिंदे मेरिए! चल मुइए नौणा पर जाणा।

3

इस गीत में नायिका का नाम रेसमू है।

अगे अगे हांडदी रेसमुएं पिछे मुड़ी देखदी
ओ, जिंदु प्यारा नजरी नी आओंदा...
जिंदु मेरिए जिंदु प्यारा नजरी नी आओंदा।

लैंदी घड़ोलु रेसमू पाणिए जो जांदी
ओ चल मुइए नौणा पर जाणा...।

भरेया घड़ोलू रेसमुएं नौणापर रखेया
हाथ बल लांदा न कोई जिंदे मेरिए ओ...।

हाखियां ता तेरियां रेसमुए अम्बा रिया फाड़ियां
ओ दांद मोतियां रे दाणे जिंदे मेरिए हो...।

अगे अगे हांडदी रेसमुएं पिदे मुड़ी देखदी
ओ जिंदु प्यारा नजरी नी आओंदा...।

नमाणेया हंसा

केहड़ी जे बेला तैं लेया बनवास
ओ नमाणेया हंसा।

होर होर पंछी ओ हंसा, हटी फिरी औंदे
तेरी बाट झूरदी हसीं नमाणी, ओ नमाणेया हंसा
केहड़ी जे बेला तैं लेया बनवास।

होर होर पंछी ओ हंसा, डाली़ पर बैठे
तेरा पिंजरू झूरदा नमाणा, नमाणेया हंसा
केहड़ी जे बेला तैं लेया बनवास।

होर होर पंछी ओ हंसा, चुग तां चुगांदे
तेरी चुग झूरदी नमाणी, नमाणेया हंसा
केहड़ी जे बेला तैं लेया बनवास।

होर होर पंछी ओ हंसा, बचड़ू ता खल्हांदे
तेरे बचड़ू रूड़दे नमाणे, नमाणेया हंसा
केहड़ी जे बेला तैं लेया बनवास।

नैणुएं

इस गीत में नैणु प्रेमिका को कहा जा रहा है तेरे चूल्हे में न तो लकडी है, न पीने का अंजुरी भर पानी। हमने नाड्डे में नहीं रहना, कुल्लू में जाकर बसना। तू तो शहर में रहती है तेरा पंडतू याद में रोता है।

चुल्हे नीं लकड़ी तेरी नैणुएं
बले, घड़े नी गे पाणी रा चुलू हे
बले, घड़े नी गे पाणी रा चुलू हे...।

बले छाडी देणा गे नाड्डे रा
बस्सणा नैणुएं
बस्सी जाणा कुल्लू ए...।
चुल्हे नी लकड़ी तेरी नैणुएं
बले, घड़े नी गे पाणी रा चुलू हे...।

बले, आप ता रैंह्दी सैहरे नैणुए
हां बह ता ढकेया ग्वाल़ा नैणुए
हां बी ता ढकेया ग्वाल़ा हो...।

बले, पण्डतू ता रोणा बदारा भलिए
बले, पण्डतू ता रोणा बदारा हो...।

चुल्हे नी लकड़ी तेरी नैणुएं
बले, घड़े नी गे पाणी रा चुलू हे...।

रुकमणि

इस गीत में रुकमणि की व्यथा-कथा है जिसमें उसे बहू होने के कारण बलि देने के लिए उपयुक्त माना जाता है और जिंदा चिनवा दिया जाता है। गीत में रुकमणि के अंगों को चिने जाते समय उसका रुदन हृदयग्राही है।

सुपणा जे होया ओ रूकमणि
सोहरे जे सुणाया
सब अंग चिणयो भाईयो! पैरां मेरे चिणयो नां
भाभी मेरी चाली भाईयो!
पैरां मैंहदी लांदियां।

सुपणा जे होया भाईयो...
सब अंग चिणयो भाईयो! हाथां मेरे चिणयो नां
भाभी मेरी चाली भाईयो! हाथां मैंहदी लांदियां।
सुपणा जे होया भाईयो...।

सब अंग चिणयो भाईयो! जघां मत चिणदे नां
जंघा रे सोथणू गुड्डिया धिया लाणे नां।

सब अंग चिणयो भाईयो! हिक्का मत चिणदे नां
हिक्का रे मम्मे ओ भाईयो घुंघरू बेटे पीणे नां।

सब अंग चिणयो भाईयो! नक्का मत चिणदे नां
नक्का री बेसर मेरी गुड्डिया धीया लाणी नां।

सब अंग चिणयो भाईयो! कन्ना मत चिणदे नां
कन्ना री बालि़यां मेरी गुड्डिया धीया लाणी नां।

शिव स्तुति

म्हारे देऊआ तू रिशिया पराड़रा
तेरी जयजयकारा हो!

तू दाता म्हारा, तू सा स्वामी, तू पालनहार हो
तेरी जयजयकारा हो!

डूंगा डूंगा सौर तेरा, मंदर पुराणा, लाई देणा बेड़ा पार हो
तेरी जयजयकारा हो!

सतीजुग, त्रेताजुग, द्वापर सारा, कलिजुगा तैईनी पाया तेरा सार हो
तेरी जयजयकारा हो!

पर्वत व्यास रिखी, व्यास कुण्ड तीर्था, जुगे री सा याद तेरी अंत नी हो
तेरी जयजयकारा हो!

सेभी रा भला केरी, सुख देई मालका, दुख केरी दूर,
शुणा सेभी री पुकार हो
तेरी जयजयकारा हो!

सामाजिक विद्रोह का गीत (1940-50)

हिउंआ रीआं धारां ते लेणियां गवाहियां
किने किने खाह्दी रियां लोका रियां कमाईयां।

छाही रे संदेसे, होरा दूधां री ता गल क्या
फटी रे खण्दोलू बीना, लेह्फा री ता गल क्या।

पत्थरां ने घुड़देया रे, हड्ड बी ओ टूटी गये
तूजो बी ओ अन्नदाता खाणे री मनाहियां।

रूह्डूए रा हिसाब किता, च्वानियां रा ब्याज दित्ता
फेरी भी साहारियां कुड़कियां आईयां।

रूड़दियां मुण्डियां, खुडदियां मुण्डियां
मुण्डखर खेतरां बिच मुण्डियां रूड़दियां।

हिऊंआ रियां धारा ते लेणियां गवाहियां
किने किने खाह्दी रियां लोकां रियां कमाईयां।

घटना संबंधी गीत

जिला मंडी के करसोग में लुहरी नामक गांव में एक जमींदार हिमेराम की पत्नी नैणो घास काटते हुए पहाड़ी से गिर गई और नीचे बहते दरिया में बहकर मर गई। उसकी असामयिक मृत्यु पर यह गीत बना।

नैणू खशटिए

नैणू लाड़ी रा मरना हुआ, डूबी मंजी दरयाये
नैणू लाड़िए खशटिए, डूबी मंजी दरयाये।

माठे माठे तेरे शोरे छुटे, दुई छुटी लाऊदी गाये
नैणू लाड़िए खशटिए, दुई छुटी लाऊदी गाये।

होर घरेरी लो घरा ले आई, नैणू लाड़ी घरा न आई
नैणू लाड़िए खशटिए, नैणू लाड़ी घरा न आई।

बाहर निकले गो हिमेरामा, लाए न नैणू ले हाका
नैणू लाड़िए खशटिए, लाए न नैणू ले हाका।

होरे घरे रीये झींझणा लुणा, नैणुए लुणा गे काशा
नैणू लाड़िए खशटिए, नैणुए लूणा गे काशा।

भर जवानिए मरना हुआ, किया जिंदगी रा नाशा
नैणू लाड़िए खशटिए, किया जिंदगी रा नाशा।

झारू मियां-गगनू

प्रस्तुत गीत झारू मियां के अति निम्नवर्गीय गगनू से प्रेमकथा से संबंधित है। झारू मियां को सभी समझाते हैं कि नीच गगनू का साथ छोड़ दे किंतु वह प्रेम के समक्ष सामाजिक मान्यताओं की परवाह नहीं करता।

अम्मा भी समझांदी, बापू भी समझांदा
झारू ओ मियां छड्डी देणा चमारिया रा साथ।

खूहा पर सट्टेया जनेओ, झारू मियां
पकड़ेया गगनू चमारिया रा हाथ।

भाई तेरा समझांदा, भाभी समझांदी
छड्डी देणा गगनू चमारी रा साथ।

भाई भाभी लांदे ठोकरां आसां
पह्णियां देयां तिल्लेदार।

गगनू धान कूटे, भात बणाया
ऊपरा ते रखेया कट्टू रा मांस
झारू हुआ हुण असली चमार।

भाई भतीजे ड्योढी बैठे
झारू बैठा नजरी लै बाहर।

सासु देंदी लिखेआं कागदां
तेरा मुन्दड़ा होआ बड्डा जवान।

झारू मियां बोलदा, मेरा मुन्दड़ा
बियाह्यां भाई मेरे जो
हाऊं बणी गया असल चमार।

किस भी पीणा तेरे हाथे दा पाणी
किस भी पीणा तेरे नरेलु तमाखू
किस भी बिह्याणी तेरी नार।

अम्मा पीणा मेरे हाथे रा पाणी
बापू पीणा मेर नरेलु तमाखू
मेरे भाईए बिह्याणी मेरी नार
अम्मा मेरिए हाऊं हुआ असल चमार।

सब बैठे अंदर
झारू मियां ड्योढी ले बाहर।

छड्डी दे गगनू रा साथ
अम्मा भी समझांदे, बापू भी समझांदे
छड्डी देणा गगनू रा साथ।

सिर तेरा कापला

इस गीत में प्रेम में किसी की हत्या हो जाने पर उसे प्रेमी वकील द्वारा बचाए जाने की कथा है।

सिर तेरा कापला जुटू चांदी रा
लाणा माणिए ओ...।

घर ढालू हिलण चीला टांकदे
जाणा माणिए ओ...।

खूणा रे मुकदमे देणा कालू बकीला
देणा माणिए ओ...।

हाथा बे चिमटा काछा नाथेरी
झोली माणिए ओ...।

सिरे तेरा काला जुटू चांदी रा
लाणा माणिए ओ...।

डोला राम

जिला मंडी के करसोग में लुहरी गांव का यह गीत डोलाराम के बारे में है जो सड़क की कटाई के समय सुरंग दागने वालों में प्रमुख था। झुंझण की ढांक पर सुरंग लगाते समय अकस्मात् पत्थर गिरने से उसकी मृत्यु हो गई। एक मेहनती और मिलनसार इनसान पर यह गीत बना।

झुंझणा रे ढेका दे, लागे टैंडला कटाए
डोलेरामा बलास्टमैना, लागे टैंडला कटाए।

जोड़े छुटे तेरी बालके आरा, दुये छुटे मेहरबान भाये
डोलेरामा बलास्टमैना, दुये छुटे मेहरबान भाये।

एक बजे री गड्डी दै आया, दूधा रा गलासा
दुई बजे री जीपा दे आये, डोलेरामा री लाशा

धारा गैसा रा पीपलू सूका, डूगे नाळा रा सूआ
डोलेरामा बलास्टमैना, डूगे नाळा रा सूआ।

डोलेरामा री मौत आई, कीजे गजब हुआ
डोलेरामा बलास्टमैना, कीजे गजब हुआ।

लुहरी स्टोरा दे लागे, साजे किस्म शाणे
डोलेरामा बलास्टमैना, साते किस्म शाणे।

नीरता का पुलसा आई, निरमण्डा का ठाणे
डोलेरामा बलास्टमैना, निरमण्डा का ठाणे।

दिलेराम

सुंदर युवक दिलेराम प्रणय की शंका में बदनाम होने और मंडी छोड़ने पर यह गीत बना।

बाद्दिया चढ़ेया दिलेरामा
अमां खट्टेया कमाया मापेयां रे लाया।

तेरी सोह बद्दिया चढ़ेया दिलेरामा
मुईया तेरी सोह बद्दिया लाया दिलेरामा।

हाथा दब्बू रे छत्री, जाति रा तू खत्री
पंथा रा तू खत्री, ओ गलाबा रा फुल्ला ओ।

सतवाजा रे गट्टा, नील बागा रेआ गट्टा
होरनी जोबन सिंजिया, लोभी लोकें लुट्टेया।

हाथा दब्बू रे दाणा ओ, मण्डी नी रैह्णा
गलाबा रे फुल्ला, नील बागा रेआ गट्टा।

हाथा दब्बू रे परना, ओ छुरी लाई के मरना
तेरी सोह, छुरी लाई के मरना।

हाथा दब्बू रे दाणा, जाति रा तू राणा
मेरी सोह, जाति रा तू राणा।

तेरी सोह नौ सौ बाकमां, तेरी बद्दिया चढ़ेया दिलेराम
जांदा जांदा दब्बू चली ओ गया तेरी सोह।

म्हारे मनां बसूरा पाई ओ गया नी रेला चढ़ दब्बूआ
जांदा जांदा चली ओ गया।

सीरा रे सलूए लेंदा ओ गया
म्हारी नणदा कनैं रमजा मारी ओ गया।

कि रेला चढ़ दब्बूआ
कि नौ सौ बाकमा तेरी, रेला चढ़ दब्बूआ।

म्हारे माथे बिन्दुए लैंदा ओ गया
म्हारे मना बसोरा पांदा ओ गया।

मां खट्टेया कमाया तेरी सोह बद्दिया लाया दिलेरामा
मां तेरी सोह, लेखे लायां शहरा दिए द्रौमतिए।

धिया जो बनवास

दराणिए लिपया ओबरा
जेठाणियां जो गई घसराट
तेसा चपणी रा हुआ चकनाचूर
कि बहुआ जो दित्ता बनवास।

सूरगा जो जांदियो सुरगाणियों
मेरे बापे जो देणा संदेहा कि तुध आई जाणा
तेरी धिया जो हुआ बनवास।

लै, लै कुड़मणिए सुइना चांदी
मेरी धिया जो दे घर बार।

कुड़मा मेरे केथी पाणा सुइना चांदी
लै लै कुड़मा सोना चांदी
मेरी चपणी कनै सौ काम।

सुरगा जो जांदिए सुरगाणिए
मेरे चाचा जो देणा संदेहा कि चाचा जी आई जाणा
तेरी भतीजी जो हुआ बनवास।

लै, लै कुड़मणिए, गाइयां भैंसां
मेरी धिया जो दे घर बार।

मेरे केथी पाणी गाइयां भैंसां
मेरी चपणी कनै सौ काम।
सुरगा जो जांदिए सुरगाणिए
मेरे मामा जो देणा संदेहा कि मामाजी आई जाणा

तेरी भाणजी जो हुआ बनवास।
मामे ता घड़ी चपणी, मामिए फेरेया चाक
लै, लै कुड़मणिए अपणी चपणी
हिक जिकणी मुंड फूकणी
मेरी भाणजी जो दे घर बार।

लै, लै कुड़मा चपणी ओ चपणी
मेरे केथी पाणी चपणी, हिक जुकणी
मूंजो तेसा बहुआ के सौ काम।

भला हो जानी सुरजुए

इस गीत में सुरजू द्वारा गंगाजली उठा झूठी कसमें खाने और झूठी गवाहियां देने से अपना दीन-ईमान हारने की बात की है।

रज्जी के नी कित्ती गल्लां बो बच्चारिए
दिला रा नी चुकी रा चाव ओ...
भला ओ जानी सुरजुए हो...।

हाकम बी मंगदे सोह्डा ओ बच्चारिए
घर ओ बकीले लुटेया...
भला ओ जानी सुरजुए...।

मण्डी बी चकी ओ गंगाजली
लड़का ओ पिंगले़ हारेया
अच्छा ओ जानी सुरजुए...।

झूठियां बी दित्तियां गवाहियां ओ बच्चारिए
मान तैं आपणा हारेया
अच्छा ओ जानी सुरजुए...।

हरीसिंघा दयोरा ओ

यह गीत हरिसिंह देवर और प्रेमिका कौलां का है जिसमें पुलिस का पहरा होने पर हरिसिंह कौलां गद्दण को मरदाना भेष धारण कर जान की बाजी लगाने को कहता है।

ओ मेरेया हरीसिंघा देओरा हो

पुल्हे पर पुलसा री जोड़ी
तां मेरेया हरीसिंघा देओरा हो...।

किंह्या टपणा ओ पुल्हा पार
मेरेया हरीसिंघा देओरा हो...।

करी लैणा मरदाना भेस
मेरिये कौलां हो गदेटड़िए...।

केस मरना, केस जीणा
ओ मरेया हरीसिंघा देओरा हो...।

लोका मरना हो असां जीणा
मेरिये कौलां हो गदटड़िए...।

पुल्हे पर पुलसा री जोड़ी
ओ मरेया हरीसिंघा देओरा हो...।

सदा रेया मुसाफिर

सदा मुसाफिर की तरह नौकरी में रहने वाले प्रियतम के संबंध में यह गीत है जिसकी प्रतीक्षा में नायिका ब्याह के बाद बारह वर्ष से अट्ठारह की हो जाती है, प्रियतम को छुट्टी नहीं मिलती। यह बाली उम्र नहीं रहेगी, काले केश भी सदा नहीं रहते, नौकरी में 'बदलू' देकर आ जाओ।

ओ गया भी ता था साजिया बाहिया
हण आई भी लगेया चैत्र बसाख
ओ सदा रेआ महिमीआ!

ओ बागें ता तेरेयां आम्ब केले़ पाके
होर भी ता पाके सरताज
ओ सदा रेआ, महिमीआ!

बारांह ता बरसी ब्याही ढोला
ठारहां गई बाल़ड़ी बरेस
ओ सदा रेआ मुसाफिरा!

ओ बले सदा भी नी रैंह्दी बालड़ी बरेस
सदा भी नी रैंह्दे काल़ड़े केस
ओ ढोला! मेरेआ बेदर्दिया!

ओ बदलुआं भी भेजदी बिरणा तेरेआं
ओ भलेआ देओरा मेरेआं!
ओ घरैं ता आओणा दिन चार।

बदलुआं भी नी मनदे नारे मेरिए नाजो!
राजेआं दी नौकरी भी तां हुंदी करड़ी
नाजो मेरिए! नारे नाजके!

भला साधु जोगिया

यह गीत अपनी भाभी के ताने से साधु हुए एक युवक की गाथा है जिसने कांगड़ा की सीमा पर अपना धूणा रमा लिया है। जोगी की चर्चा हाट-घराट में होती है।

भला साधु जोगिया ओ...
मुया कांगड़े रे बन्ने
भलेया कांगड़े रे बन्ने
धूणा तेरा ओ जोगिया।

भला साधु जोगिया ओ...
मुया भाभिया रे टोके
जोग तैं पाया ओ जोगिया।

भला साधु जोगिया ओ...
मुया हाटे बो घराटे
गल्लां तेरी ओ जोगिया।

भला साधु जोगिया ओ...
तेरी झोलि़या रे दाणे
तेरी झोलि़या रे दाणे
ओ बांडी चुंडी खाणे
भला ओ जोगिया।

भला साधु जोगिया ओ...
कांगड़े रे बन्ने
डेरा तेरा ओ जोगिया।

शिवरात्रि गीत

मंडी में शिवरात्रि मेला मशहूर है। इस अवसर पर कई गीत गाए जाते हैं।

मण्डी लागा मेला म्हारे हो सिब दासिए
आयां लोड़ी मेले जरूर तेरी सौह...।

कियां बोला मण्डी आओणा दस मेरे सजणा
मण्डी लगदी लो बड़ी दूर तेरी सौह...।

मण्डी लागा मेला म्हारे सिब दासिए
आई लोड़ी मेले जरूर तेरी सौह...।

तेरे ताईं सड़कां बणाई सिब दासिए
मोटरा बैठी कने आओणा जरूर तेरी सौह...।

मण्डी लागा मेला म्हारे सिब दासिए
आई लोड़ी मेले जरूर तेरी सौह...।

जिउणा बी संग संग मरणा बी साओगी लो
आसे तेरा प्यार गल़ा लाया तेरी सौह...।

मण्डी लागा मेला म्हारे सिब दासिए
आई लोड़ी मेले जरूर तेरी सौह...।

भोले का विवाह

भोले म्हारे ईशर म्हारे ब्याह तो चौले
ओ गल़े माल़िया सर्पा री पाणी।

साथी आणे तु हनमंता बीरा बे
साथी लैणे तू अरजन बीरा बे।

साथी आणी घोड़ा तीर कमाणा
एक जोड़ू चौरू बख बठाए।

एक जोड़ी दखणा च बठाए
साथी आणी घोड़ा तीर कमाण बे।

पारी बाठी कुणा फुरकू आए
ए आए राणी दखणिया राजा बे।

यों नीं राणीए तेरा जुआई
यों आ राजा उत्तरीया राजा बे।

जारे बाठी जाओ राणिए तेरा जुआई
घोड़ी कासी बैहंद तां बालदा साथी आया।

मुंजी री मुंदणी सरप जै रे इस घड़ी जो बेटिया न देऊं रे।
भोले स्वामिया मुकुटा ता सात सुरज गढ़े रे
बाहर मियां केढ़े जोगी आए रे।

बाहर मियां बोलणा न था ए
अष्ट कोड़ी देवते खूमा ले पाइए।

भोले म्हारे ईश्वरा ब्याह तां चौहले
गल़े माल़ा सर्पा जाणा पाणा रे।

चुगदा चुगैंदा हिरणू

चुगदा चुगैंदा हिरणू बोलदा, हिरणू बोलदा
तू कजो बैठा टक लाई कनें मियां हेड़िया।

सींग ता मेरे कुसी राजे जो देयां महाराजे जो देयां
जेह्ड़ा रखे कन्धा पर लाई कने मियां हेड़िया।
चुगदा चुगैंदा हिरणू...।

अखां तां मेरियां कुसी राणिया जो देयां महाराणियां जो देयां
जेह्ड़ी रखे डब्बिया च पाई कने मियां हेड़िया
चुगदा चुगैंदा हिरणू...।

खला ता मेरिया कुसी साधु जो देयां साधु संते जो देया
जेह्ड़ा बैठे आसण लाई कने मियां हेड़िया
चुगदा चुगैंदा हिरणू...।

उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल

यह गीत प्रायः महफिलों में गाया जाता है जहां नृत्य होता है।

उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल
उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल।

खद्दरे रे कुरते रा इतणा गमान
होता जो मलमल, चढ़ती समान
उड़ी जाणा...।

पीतलू रे कांटे रा इतणा गमान
होते जो सोने के चढ़ती समान
उड़ी जाणा...।

पांओं में पोलड़ू रा इतना गमान
होते जे सैण्डल, चढ़ती समान
उड़ी जाणा...।

उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल
ओ उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल।

उभे बोलणी नदी माणुहा

यह गीत मंडी के सिराज इलाके में गाया जाता है जिसमें जीवन को नदी के घेरे के समान बताया गया है। प्रेमी का आना मौसमी पंछी के फेरे जैसा है। जीवन धूप-छांव, चांदनी और अंधेरे की तरह बीतता है।

उभे बोलणी नदी माणुहां
उभे नदी रा घेरा...।
तुसा थी आओणा जदी कदी माणुहां
म्हारा पंछी रा फेरा।

चंदा केढ़ी चानणी माणुहां
सूरजा केढ़ा पाखा
म्हारा थी बांडी रा रिजक माणुहां
कैसे जुगा ले रखा।

चंद थी घेरेया बदले़ माणुहां
मछी झीऊरे जाले़
आसे बी तुसे घेरे बले हो माहुणां
बांकी नारा रे ख्याले।

उभे नदी रा घेरा

तुसां थी आओणा जदी कदी माणुहां
म्हारा पंछी रा फेरा।

किने लाई चुगली

यह एक विरह गीत है जिसमें विरह का रोग सास-ससुर या ननद से न होकर एक भीतरी रोग है जिसने नायिका को सताया है। यह रोग देवर द्वारा चुगली लगाने पर हुआ है।

कोदरे रा दाणा जी जलाणा
जल़ी जांदा चकिए रा पीह्णा।

नणदे ओ मेरिए
जल़ी जांदा चकिए रा पीह्णा।

कुंगएं नी मोही, ओ सजणा!
काजल़े नी मोही
मोही रखी मीठिए जवानी।

सासे नी मारी ओ नणदे!
सौहरे नी मारी
मारी रखी अंदरा रे रोगे।
सौहरे थे नी आंवदा
प्योके ते नी आंवदा
पिण्डे थे पनपेया पापी रोग।

हाथा वित्ता मैंहदी
गल़ा मंझा हार, पैरा मंझा तोड़ा
किने लाई चुगली, किनी पाया बछोड़ा।

नणदे ओ मेरिए!
देवरे लाई चुगली
साथी पडोसिए पाया बछोड़ा।

नणदे ओ मेरिए!
जल़ी जांदा चकिए रा पिह्णा।

निरमंडा रिए ब्राह्मणिए

यह गीत निरमंड, कुल्लू क्षेत्र की ब्राह्मणी की प्रशंसा में गाया जाता है।

निरमण्डा रिए बाह्मणिए
पया बरखा रा छाल्ला भलिए
ओ निरमण्डा रिए बाह्मणिए...ओ...।

भूख लगी एसा बाह्मणि जो
खाई लैणा गर्रया रा गोल़ा भलिए
निरमण्डा रिए बाह्मणिए...ओ...।

प्यास लगी एसा बाह्मणि जो
पी लैणा जारू रा पाणी भलिए
निरमण्डा रिए बाह्मणिए...ओ...।
खीज लगी एसा बाह्मणि जो
पीपल़ा री छावां बैठी लैणा भलिए...
ओ निरमण्डा रिए बाह्मणिए।

राजे देया नौकरा

यह गीत राह चलते राजा के सेवक से गोरी और युवतियों का मोल करने को लेकर है। वह गोरी को मोल लाख टका और सांवरी का चार लाख टका लगाता है। गोरी अपने मोल से निराश हो उसे कोसती है जबकि सांवरी खुश होती है।

काहे दा हुंदा वे तेरा गंभर गड्डुआ
काहे दा हुंदा गल़े हार।

चांदी दा हुंदा गंभर गड्डुआ
सोने दा हुंदा गल़े हार नी सईयो!

कीने बे दित्ता गंभर गड्डुआ
कीने दीत्ता हो गल़े हार नी सईयो!

आमे बे दित्ता गंभर गड्डुआ
बापूए बे दित्ता गल़े हार।

पारे बी जांदेया राजे दे नौकरा
दो वे जणियां दा मुल कर जायां।

गोरी दे हाख बे कजरा बराजे
सांवली दे माथे लाल सिंदूर।
गोरिया मुल्ल लाख बे टका देऊं
सांवली दा मुल्ल लाख चार नी सईयो।

मरी की नी जांदा राजे देया नौकरा
तैं मेरा मुल्ल घटाया नी सईयो।

चार जुग जियां रोज देया नौकरा
तै मेरा मुल्ल बधाया नी सईयो!

नीं रहमतू भलिए

नीं रहमतू आजा भलिए
जान मेरी नी भला तेरी
तू आजा भलिए...।

तेरे बजारा ते बिकदा लोटा
तेरा हुस्न चंगा दिल खोटा।

नीं रहमतू भलिए
तू आजा भलिए...।

तेरे बजारा ते बिकदी थाल़ी
तू हुई मुंजो प्यारी।

नीं रहमतू आजा भलिए...।

मैं मर गई रांझा

तू कंढे कंढे जाण वाल़ेया ओ जान मेरी...
डुबणा लगी जो अणजाणे, मैं मर गई रांझा
ओ इस्क वाल़ी नहर बगदी जो जान मेरी
तू कंढे कंढे जाण वाल़ेया ओ जान मेरी।

बाबूरामा रिंजरा

यह गीत एक रेंजर का है जिसने प्रेम में नायिका को मोह लिया है।

बाल्हा री घुघिये ठुल़ी री तेरी कियाड़ी
रंगी रखेया कपड़े करनी कुलू री त्यारी
बाबूरामा लिंजरा हो...बाबूरामा...।

बाबू रे बी क्वाटरे ओ हरे ओ बीह्णा री डाली
बाबू री बबयाणी बोले कोदरे साही काल़ी
बाबूरामा लिंजरा हो बाबूरामा...।

बाबू रे बी जंगले चलदा हो आरा
टोपी पाइरी पटके, गरारा चीला रे डाल़ा
बाबूरामा लिंजरा हो बाबूरामा...।

बाबू रे बी क्वाटरे हो, काल़ी बिंडी रा छाता
थकने लाई चुगली किने दित्ता पता
रांडे लाई चुगली, छोह्‌रूए दित्ता पता
बाबूरामा लिंजरा हो...।

सराजी लोकगीत

औरे बोला तेरा घर गरांवो
पौरे पाणी रा छोआ।
छोआ लाड़िए कमला यारिए
पौरे पाणी रा छोआ।
तुलैराम लागा बोलदा कमला किलै तेरे शा लै होआ
तुलैराम बाजो कमला बांकिए
बाजो ढोल नगारे।
शाशु शौरे लागै पुछदे कमला
तौं किए हाथा रे इशारै।
घौरा पौरे थी आज लाड़ी म्हारी कमला ऊदै सामणी बागा
देशै बी देशै मन्ने देवते मामुए, सत म्हारी मामी लै नि लागा
कमला लागी म्हारी बोलदै शान्तुलै, चाल हामा घौरा लै जाणा
चीए बी लौंगी यारे तौं दरेवली, आठा बे बाजे छोड़े पराणा।

चंद घेरेया बदल़िए

यह गीत रेंजर का है जिसने प्रेम में नायिका को मोह लिया है।

चंद घेरेया बदल़िए मच्छी घेरी जाल़े
तू घेरेया मुसूआ बना रे नाल़े।
बढी लैणी कुकड़ी बिजी देणा कोदा
लाई लैणी ममता बैही लैणा गोदा।

सिमले रे साह्‌ब जतोगी रे गोरे
तैं मोही बाबुला जादू रे जोरे।

चाह्‌ड़ी लैणी खिचड़ी, गाली़ लैणी घियू
आसा जाणा जंगला जो, लाई लैणी जियू।

खोल्ही रखेया खिड़की, ता डाही रखेया मांजा
भ्याली़ रखेया चनणा, बाबू औंदा सांझा।

बाल्हा री सड़का कुटी चुन्ना रोड़ी
पांज बाहिया बैंता दी, लक दित्ता तोड़ी।

सकंदरा रे फ्हाड़े फुलेया पाजा
सकेता नी जाणा, पकड़ी लैंदा राजा।

एकी हाथा सीसा, दुजे हाथा कंघे
हाय बाबू रामा लींजरा हो...।

जयसिंघ पूरबिया का झेड़ा

मंडी बिलासपुर तथा सिरमौर में युद्धगाथाएं भी गाई जाती हैं जिन्हें 'झेड़े' कहा जाता है। इनमें प्रेम-प्रसंगों पर भी झेड़ होते हैं जिन्हें प्रेमगाथा भी कहा जा सकता है। प्रायः झेड़े लंबे होते हैं और लोकगीत की श्रेणी में न आकर लोकगाथा में आते हैं तथापि यहां 'जयसिंघ पूरबिया', 'कुंजरू' और 'हीर रांझा' प्रेमगाथाएं उदाहरण के लिए दी जा रही हैं।

अधी राती पंछी बोलदा ओ
दिल मेरा द्‌वास होएआ जयसिंघा पूरबिया!

आधिया राती घोड़ा छडेया
चल कैसी मुलखा जो जाणा ओ जयसिंघा पूरबिया!

जांदा जांदा जाई रेह्‌आ मण्डिया रे नगरा ओ
राजा चंदर जलेबां जो खनयन ओ जयसिंघा पूरबिया!

ओ जयदेवा सुणी लेआं म्हारी
ओ चंदरसैणा राजेया!
राजा बोलदा क्या
ई तिज्जो औसी क्या ई मारी, केसा औखिया तू आया?
ओ जयसिंघा पूरबिया!

जयसिंघ बोलदा सैरा बाटे रा करना गुजारा
नौकरिया देया लाई, ओ चंदरसैणा राजेया!

इतणी गल्ला सुणी राजें दित्ता सपाही बणाई
दित्ता पहरें खड़ाई, ओ जयसिंघा पूरबिया!

दूजी तां अरजां जयसिंघ करदा
तुलसी तां बसणी मिंजो ओ चंदरसैणा राजेआ!

ओ तुलसी भी जात्ति री थौण ओ राजेआ मेरेया!
इसा रा न बरस कोई, ओ राजेया चंदरसैणा!

राजे दे दुआरा गुजारा जै करदी राजेया!
ओ सुण राजेया मेरेया जी!

तीजी तां अरज करदा जयसिंघ पूरबिया
बंगलू देणा मिंजो पुआई, चंदरसैणा राजेया!

बंगलू जो सीसे लगाणे चंदरसैणा राजेया!
कुज्जू लुसाई राजिया रा धरम भाई

जयसिंघ पूरबिया रा भी छज्जू लसवाई
दित्ता धरम भाई बणाई।

तुलसी थी थौण बंगलू रैंह्दी थी
बंगले नेड़े नी आया छज्जू लसवाईयां ओ!

तुलसी थी देखणे जो बांकी
देखी कने छज्जू बंगलू फेरी लगेया पाणे सूण
छज्जू राजे सकेत लाणे
तेरा नौकर जयसिंघ पूरबिया बंगलूएं रैंहदा
नौकरिया भी नी जांदा।

इतणी चुगली राजा चंदरसैण सुणदा
दित्ता पुजाई दरयौआं पार
कारसतानी होई छज्जू लुसवाई री।

जयसिंघ नदिया पर पहरे जो गया चली
लगया आणै छज्जू बंगले रोज।

मरद जे हुंदे पर जहरां रे बुरे
रोक रपैया दित्ता तिन्हां मलाहियां जो
देयां भी मिंजो नदिया टपाई
ओ सुणयो मलाहियो!

रोक रपैया बढेलियां जो दिंदा
ओ सुणा बेलियां तुलसी तां छज्जू तं बैठी रे।

बंगले अंदरा ओ जयसिंघा!
तुलसी थौणी जो बाजा दैंदा, भीतलू देया घुआड़ी।

तुलसी भी नी अरजे करदी पूरबिया मेरेया!
मैं डरदेयां भितलूआं नी घुआड़दी।

जयसिंघ भीतां ले लाता री मारी
करी देंदा टुकड़े चार ओ जयसिंघा पूरबिया!

दूजा फट जयसिंघ पूरबिएं चलाया
तुलसिया रे हुए टुकड़े चार
ओ जयसिंघा पूरबिया!

कुंजरू (झेड़ा)

कुंजरू ने मां के मना करने पर भी राजा के पास नौकरी कर ली। जल्दी ही कुंजरू राजा का विश्वासपात्र बन गया जिससे दरबारी उससे ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने राजा से चुगली की कि कुंजरू ने रानी को अपने वश में कर लिया है। उसने राजा को बहुतेरा समझाया किंतु राजा ने उसे फांसी की सजा दे दी।

ओ चरखे कातदी, धागे बाटदी
अम्मा लाडलिए, माता समझांदी
कुंजरूआ मेरे लाडलेआ, पुत नी मिलदे उधारे।
पुत नी मिलदे हाटी बजारे, ओ कुंजरूआ!

सुणेया नी अम्मा लाडलिए
घरां भी रैंह्दी धीयां बेटियां
भैण नी जाणदी, नार भी नी मनदी
जे खाली घरा जो भी आएजी, अम्मा नीं।

सुण बेटेआ मेरेया लाडलेआ!
पुत्तर जीओ जुग जुग, घर जगीर बजीरियां बथेरी

चाकरी भी न करदे पुत्त सूरमेआ कुंजरूआ मेरेआ।
लाडलेआ! परदेसा नी जाणा
सुणेआं माता मेरिए चाकरी करदे पुत्त सूरमे
घरां सजदी बांकी नार, अम्मा मेरिए।

कौल करार कीते कुंजरू पूरे लाडले
कौल करार कीते अम्मा नी लाडलिए
मंजले मंजले चली पौंदा परदेसां कुंजरू
हाथा जोड़ी अरजां करदा नौकरी चाकरी करनी पेटा री खातर
होर नौकरी बथेरी करनी राजे री चाकरी।

कुंजरू लाडला चतर जवान करी लैंदा नौकरी राजे दी
कुंजरू लाडला जी!
हौले़ हौले़ बणी गया कुंजरू सभनी दी सरदार जी हो।

चुगली भी हुंदी तुलारी ते पैनी
लगी जांदी चुगलियां कुंजरूआ लाडलेआ जी।

घरा अम्मा निहाल़दी, कुंजरूआ लाडलेआ
घरा तेरी नार निहाल़दी किने ओ भला चुगली लाई!

लगी गई चुगली राजे कने कुंजरूआ लाडलेआ
राजे भी हुंदे हाथां बजीरां
किने तेरी चुगली लाई, किने गल काना पाई
कुंजरूआ लाडलेआ!

राजे बल फांसी चढ़दे क्या सच्चे क्या झूठे
कुंजरूआ लाडलेआ सब बोलदे
कुंजरूए तेरे बेगमा नचाई
राजे भी हुंदे काना रे काचे, सुणी लैंदे चुगली कुंजरूआ!
राजे जो भी पाई जांदी मना छरक कुंजरूआ लाडलेआ!
होई कुंजरू री राजे कने मुलाकात
सच सच बोलयां लाडलेआ क्या होई गलबात?

हाथा जोड़ी कुंजरू जे बोलदा
सुण राजेआ बीरसिंघा! मारदा भी देखयां बिण कसूरें
राजे हुंदे धरम नसाफी, बगसी देंदे जान राजेया!

सुणेयां सुणेयां कुंजरूआ लाडलेआ
सब्बी सब्बी तेरी चुगली जे लाई
सब्बी सब्बी गल्ल काना पाई
कुंजरूआ! तैं बेगमा नचाई।

हाथ जोड़ी कुंजरू अरजा करदा
झूठी झूठी बारी चुगलियां राजेआ!
झूठे सारे चुगलबाज, बे कसूरे नि देणा
कुंजरू जो फांही राजेया बीरसिंघा!

हुकम जे करदा हालियां मुहालियां
हुकम देंदा राजा कुंजरू जो फाही रैणे लाई
घारा तेरी आमा निहाल़दी कुंजरूआ!

नौकरी नी करनी धारा जगीर बजीरियां
हाली मुहाली कुंजरू जो फाही दित्ती चढ़ाई।

घरा कुंजरू री नार निहाल़दी
नौकरी नी करनी राजेयां री
घरा तेरी नार रौंदी चबारे।

जन्म जन्म कुंजरू री आमा रोंदी
कुंजरूआ भैणा तेरी तित्थे तिहारें
राजे भी हुंदे काना रे काच्चे चढ़ाई दिंदे फाही
क्या सच्चे ता क्या झूठे
सुण सुण बेटे मरेआ कुंजरूआ बे लाडलेआ।

हीर रांझा

पंजाब की प्रसिद्ध प्रेमगाथा 'हीर-रांझा' को भी पहाड़ में अपने ढंग से गाया जाता है। मंडी में भी हीर-रांझा का गायन किया जाता है।

किधरां ले आइयां हीरां तख्त रांझे
ले मेरा रांझा आया
झंग स्याले ले हीरां ओ क्या ओखटी
के ओ रांझा जै लयाया।

किधरा ते मेरा रांझणा आया
किधरा ते आइयां हीरां

तख्ता मांझे ले मेरा रांझण आया
झंग स्याले ते मेरी हीरां।

मया तां ममता मेरा रांझण लाया
दौलत लई आई मेरी हीरां हीर
भला किस रस्ते मेरा रांझण आया
किस रस्ते आइयां मेरी हीरां बे।

ओ भला आस रस्ते मेरा रांझण आया
जिस रस्ते मेरी हीरां गइयां बे।
किने लोकें मेरा रांझण मरवाया
मरो तिनां रियां जाइयां बे।

रांझण मेरा दिला रा प्यारा
बे लोकणिएं मरवाया बे।

सौ सठ सहेलियां पाणी जो उतरी
कुण सुत्तेओ ठण्डे बागें!
क्या बि तां हुंदा तेरा जातगोत
ओ क्या बि हुंदा तेरा नांव बे।

लोकणिए भरमाया रांझण मेरा
फुल्ल गुलाब हीरा चांदे री कल़ी ओ जी।
आंसे नी जाणेया राजा पतना जो आया
खबरां करदी मलाहियां।

पहले पूरे राजा मांजिया लघांदा
दूजे पूरा हीरां गोरी
चिटड़ी चादर ओढ़ी मेरे बीरे
पई सुतियां ठण्डे बागें।

सठ ओ सीलियां पाणिए जो आई बे
बिच हीरां अलबेली ओ।
सब सहेलियां पुच्छण कुण सुतीरा ए म्हारे बागें!

बालो (गंगी)

बिलासपुर की गंगी की भांति मंडी में 'बालो' गीत गाए जाते हैं। पंजाबी

टप्पों की तरह के इस गीत में प्रेमी-प्रेमिका के प्रश्न-उत्तर रहते हैं। बिलासपुर में संबोधन 'गंगी' है तो इस ओर 'बालो'।

चिट्टे चावला री तिन कणियां...
तू ता उन्दी मुइए इक बालो!
गल्लां करदी लो तिन जणियां।

घड़ा भरी लैणा ठण्डे पाणी रा...
जीणा हराम करी गई
नौखा नखरा मारजाणी रा।

सूट स्याणा धुप्प छावां रा...
जांदी जांदी लई गई दिलां जो
मिंजो पता नहीं तेरे गावां रा।

फुल्ल फुल्ली गईरा बानारे खुंगे...
बाईं पर नहालेयां पागले
तू तां आई जायां पाणी रे ऊंघे।

फुल्ल फुल्लेया डाड़े तुन्हिए...
धीरे रैह्यां घरा गे बालो!
आसां आवणा उन्हिए ठारे।

गड्डी आई गई झूंगी पांगणे...
मैं तां निवासी नायटलेरा बालो
तू तां आई जायां मेरे आंगणे।

नवीं कणका रा बेजा रखणा...
जीथी तेरा पसीना गिरगा
आसां अपणा कलेजा रखणा।

कुछ और टप्पे

गड्डी आई रोपड़ा ते...
तोला़ तोला़ खून सूकदा
भाभिया री ठोकरा ते।

पाणी भरना गरारियां कने...

जुआनी तेरी लोके लुटीरी
खाली पिंजरा बचारिया कने।

तेरे हाथ री पांज लाड़ियां...
तेरा पिच्छा नईं छडणा
चाहे लगी जाण हथकड़ियां।

खट्टा खाणा गलगला रा...
सिमले देणी चिट्ठिया
सूट सेयाणा मलमला रा।

गड्डी आई देहरादूना ते...
काच्चियां खल़ाई रोटियां
सब्जी बगैर लूणा ते।

हो, चिट्टा कुक्कड़ बनेरे फिरदा...
मेरा दिल तुध के ओ, बालो!
तेरा दिल चफेरे फिरदा।

हो, थोड़े पाणी बिच मच्छी तड़फी...
होर तो भतेरी ओ, बालो!
मेरी हाखियां बिच तू है रड़की।

हो, हरे बीह्णा से डाल़ी वाल़िए...
पारा ते तू अबारा जो आई जा
ओ डांगरे चराणे वाल़िए।

हो, डुघी नदिया ले किहां टप्पणा...
आ जा लई जाया साओगी, चन्ना!
आ ता देई जायां फोटु अपणा।

हो, तेरी गडिया जो लगे जंदरे...
हो किहां देणा फोटु आपणा
तेरे घरा आओल़े बड़े चंदरे।

लोका

'लोका' गायन मंडी, बिलासपुर से लेकर सोलन तक प्रचलित है। मुख्यतः यह विरह गीत है जो द्विपद या त्रिपद में गाए जाते हैं। यह 'गंगी' या 'बालो'

से मिलता-जुलता है।

हरी डालिए तूं हिलेयां करां
बछोड़े म्हारे करमां जानी
फेरी सुफनेआं मिलेआं करेआं।

हरी डालिए अंगूरा बालिए
दूरा ते पछैणी पागले
टेढी सेंदी संधूरा बालिए।

नाम लिखेआ कोरी कापिया
पांज महीने गए रे होए
घरा आओणा छोड़े पापिया।

पाणी भरना कोरी पारिएं
राजी रहो तेरी जिंदड़ी
असां मिलणा लख बारियां।

फुल्ल फुल्ली करी गया गासा जो
बछोड़े म्हारे कर्मा जानी
परमात्मा मलाओ असां जो।

फुल्ल फुल्लेया ओ डाळें तुन्नीएं
मिलणा ता मिल छोरिए
आसां चली जाणा ठारा उन्नीए।

फुल्ल फुल्ली कने डूली ओ गया
पैहले छोह्रू दिल लाई के
हुण छोह्रू भूली ओ गया।

जीभा रेया मिठेया दिला रेआ गैबिया
तेरे पीछे होई बदनाम जी लोका।

हाखियां रा कजला, रोई रोई डोल्हेया
रोंदिया री दर्द भी नी आई जी लोका।

तेरे काठेया ते पए बांदरू
दूरा ते पच्दयाणेया छोरिए
चीटे कापड़े ता काळे बांबरू।

तेरे डोरूए ते उड्डे शिकरे
डाल़ी सुक्की बिणा पाणिए
जान सुकी गई तेरे फिकरे।

हरी कणका री बान्ही काशिया
ठेकेदारा देईदे छुट्टियां
तेरे ठेकेयां ते आई द्बासियां।
हरी सरां लो साग लगीरा
काटी के कल़ेजा दस्सणा
तेरी ममता रा दाग लगीरा।

नवें सना रा लो आना चलीरा
देखी सुणी लाणा दिलड़ू
बेईमाना रा जमाना चली रा।

गंगी गायन

बिलासपुर की भांति मंडी में भी गंगी गाई जाती है जिसमें कुछ पद बिलासपुर के समान हैं कुछ अलग।

घड़ा भरना ओ धोई धोई के
दिन काढेया तेरे आसरे
रात काढी लैणी रोई रोई के।

गड्डी भरी लो लस्सणे री
आमा बापू क्या करणा
मेरी मरजी नीं बस्सणे री।

उच्ची रीढ़िया ते बाजा बाजणा
पैहले छोरी आपू छेड़दी
फेरी बोलदी बापू सादणा।

डब्बा भरी रा लो बासलीना रा
छूरा ते पछयाणणेया छोहरूआ
मेरा कूरता हो पापलीना रा।

डोडणी ते डोडा टीरेया
म्हारा राजीनामा छोहरूआ
गरावां बिच खुला फिरेया।

तेरे बूटा ते काले़ तसमें
पेशीया जो खड़ पागले
दावा कित्ती रा तेरे खसमें।

तेरे चादरू जो लाल कींगरी
लोका जो तू देया बकणे
तेरी मेरी इस जिंदड़ी।

तेरी बाबड़ी ते पाणी भरणा
साम्हणे ते दूर होई जा
तेरे घरे वाले़यां शक करणा।

पाणी भरी लैणा पतीलिया कनें
लौंग पाया तेरे फसके
दिन कट्टी लैणा तीलिया कनें।

फूल फूली रा लो डाले़ तूण्हीए
मिलणा ता मिल छोह्‌रिए
आसा चल्ली जाणा ठारा उन्हीए।

भात खाई लैणा चीनियां कनें
आसा केह्‌ड़े छोह्‌रू पाल़णे
आसा जी लैणा शकीनियां कनें।

माथे बिच लाल बिंदियां
मोहबतां ना लायां छोह्‌रूआ
तेरी मोहबतां खून पींदियां।

लाल रंग ओ टमाटरे रा
बालों मेरा नांव छोह्‌रूआ
दस नम्बर क्वाटरे रा।

साफा बन्हीं लैणा मेकी कने
सारे मेले टोल़यां छोह्‌रूआ
हाखी फूटी गई देखी कने।

पार धारा ते उड्‌डी चिड़िया
सैहरा नीं आसा बस्सणा
आसा बस्सी लैणा धारा रिढ़िया।

चिट्ठी कणका रा बीजा रखणा
जेत्थी तेरा खून डुली़ रा
तेत्थी काढी के कले़जा रखणा।

लामण

लामण मूलतः कुल्लू क्षेत्र में प्रचलित है। मंडी के कुल्लू के साथ लगते क्षेत्रों में कुल्लू की संस्कृति देखने को मिलती है। मोटे तौर पर मंडी शहर तथा उससे नीचे अलग संस्कृति है और कुल्लू से लगते क्षेत्रों, जैसे–सनोर बदार, सराज, करसोग, पंडोह से ऊपर के क्षेत्र कुल्लू से मिलते हैं। मंडी का करसोग और सिराज क्षेत्र भी कुल्लू से मिलता है। इन क्षेत्रों में लामण प्रचलित है।

लामण लोकगीत में किसी वाद्य का प्रयोग नहीं किया जाता। 'गंगी' या 'लोका' की भांति यह गीत लंबी टेर में खेत या जंगलों में गाए जाते हैं जहां इनकी प्रतिध्वनि दूर-दूर तक जाती है। दो पदी इन गीतों में कान पर हाथ रखकर गायन होता है जिसमें सवाल-जवाब किए जाते हैं।

मुख्यतः लामण में 'झूरी' गीत श्रृंगार गीत हैं जिनमें कभी-कभी अश्लीलता की हदें तोड़ दी जाती हैं। नायक और नायिका एक-दूसरे के पूरक बनकर पदों की रचना करते हैं। कुल्लू क्षेत्र में ब्राह्मणू तथा मंडी क्षेत्र में पंडतू भी ऐसे ही द्विपदी गीत हैं जिनमें श्रृंगार रस की प्रधानता रहती है। दोहे या टप्पे भी इसी के प्रकार हैं।

'दोहे' और 'भौरे' गीतों में भक्ति रस की प्रधानता रहती है।

जंगल में भेड़-बकरियां चराते हुए, पशु चराते हुए, लकड़ियां बीनते हुए या अन्य कोई भी कार्य करते हुए नायक गीत का एक पद गाता है। दूर नायिका उस पद का उत्तर गीत से देती है। इन गीतों का काव्य बहुत ही उत्तम है और यह कभी नहीं लगता कि ये गीत किसी अपढ़ और गांव के व्यक्ति ने रचे होंगे। गीत के बोल, गीत के भाव और गीत के छंद; सभी काव्य की दृष्टि के उत्तम हैं।

इन गीतों में दोहा, चतुष्पद, अष्टपद आदि का प्रयोग किया गया है। गीतों का भाव बहुत ही गहरा है। ये गीत उत्तम लोक काव्य का अद्‌भुत उदाहरण हैं।

कुल्लू में इस गायिकी को 'लामण' कहा जाता है। लामण के अनेक छंद लोक में प्रचलित हैं। शिमला तथा सिरमौर की ओर इन्हें 'झूरी' भी कहा जाता है। मिलन, विरह, संयोग, वियोग; प्रेम के जितने भी काव्य रूप हो सकते हैं; इन गीतों में देखने को मिलते हैं। इन गीतों से लोक कवियों की कल्पनाशक्ति और शब्दशक्ति का पता चलता है।

कुल्लू में लामण के बहुविविध रूप पाए जाते हैं। यह गायन मंडी और उससे आगे तक प्रचलित है। मंडी में बजौरा, कटौला और पूरे बाहरी सिराज में लामण समान रूप से गाई जाती है।

राजनीतिक या भौगोलिक विभाजन के अनुसार तो मुख्यालय कुल्लू से बारह किलोमीटर बजौरा से मंडी जिला लग जाता है किंतु कुल्लू की संस्कृति इधर पंडोह तक, सनोर बदार के क्षेत्र और उधर करसोग से लेकर जंजैहली होते हुए सुंदरनगर तक यात्रा करती है। इस क्षेत्र में रहन-सहन, बोली, वेशभूषा और संस्कृति एक-सी है।

लामण के कुछ पद

भोझा निकती बादल़ी, भुइण निकता तारा।
सूरजा बिछड़ी चंदर, संग बिछड़ू म्हारा।

बिजिए मेरी गोणिए, जगमग दिशो तारे।
हामे न बोलो बिछड़े, बिछड़े करम म्हारे।।

कुछ गीतों में चतुष्पद भी गाए जाते हैं जिन्हें 'चाहुट' कहा जाता है—

काल़िये काल़िये बादलिए मुईए।
बरखा रा मासा साजणा घरा न आवा।।

आग लगा तेरे चाकरियो साजणा।
मूही नी लोड़ी तेरी ओ री नावा।।

जौऊ पौके पिऊंल़े, हौरे गेहूं री सेरी।
तेरे दोहे लामणे, मोंझा बौता भलेरी।।
भेटी फूली कूसमी, बेऊड़ी फूली जूही।
छसा देई बोलणे, मिली रौहणा दूही।।

भेडा चारी पुहाल़ूए, जोता री बागरे पूणू।
उथड़ी धारा न लाणे दोहे लामण, बेढ़े लोड़ी लोभिए शूणू।।

पुहाल़ (जो भेड़ों को चराने ले जाता है) को भेड़ें चराते हुए जोत (पर्वत शिखर) की तेज़ हवा ने जैसे पुण (भेद) दिया है। ऊंची धार से दोहे और लामण लगाती हूं ताकि बेहड़े में मेरा लोभी (प्रियतम) सुन ले।

पोशा माघे री लोभी राती न, औग भौकली गेठी।
जाच़ लागी दूरा पारा री, माह्णू लोड़ी आपणे भेटी।

पौष और माघ की ठंडी रात में गीठे (घर के भीतर जलने वाला छोटा अलाव) आग जल रही है। दूर पार जाच् (मेला) लगा है। मेले का मजा तभी आएगा जब प्रियतम से भेंट होगी।

साज़ा आऊ शौइरी, मिलण हौला तौधी।
तू आणी जोता री ल्हौसर, हाऊं आणनू बाल्ह री बोदी।

सैर का संक्रांति का मेला आ रहा है, तभी मिलन होगा। तू जोत (शिखर) से ल्होसर का फूल लाना, मैं बल्ह (मैदान) से बोदी (नर्गिस) लाऊंगा।

फूली कौरला फूलटू, डाली फूलोला कूजा।
जौथी लागा मूईएं दिलड़ू, ना बी चाईदा दूजा।

फूल खिला है, डाली में कूजा फूल लगा है। जहां दिल गल जाता है, वहां दूसरा नहीं चाहिए (या तीसरा) अच्छा नहीं लगता।

गेहूं गौगरे, पीउंले़ जौऊ री काशी।
चन्द्रा सेहीं नज़री तेरी, सूरजा सेहीं पियाशी।।

तुम्हारा रंग गेहूं की तरह है और वस्त्र पक्के जौ की फसल की तरह पीले हैं। आंख चंद्रमा के समान है और मुख सूरज की तरह दमक रहा है।

झूरी रा मुहंडू निम्बला़ ज़ाइरू पाणी।
फूला सेहीं सा होल़की, गौला़ मूं बिन्हिया लाणी।

प्रेमिका का मुखड़ा निर्मल पानी की तरह है। शरीर फूल की तरह इतना हलका है कि गले में हार पिरोकर लगा दूं।

कागू नी छाड़नू, कागू देंदा चुगली पाई।
पाटू छाडूं भौंरा, बेशी देओ कुशाड़ी लाई। (भौंरू)

प्रेमिका कहती है, मैं अपना संदेश कौवे के पास नहीं भेजूंगी। कौवा तो चुगली लगा देता है। मैं भौंरे के पास पता भेजूंगी, वह बैठकर कुशल संदेश पढ़कर सुना देगा।

ठींडे री टोपी, तोड़के शी लाए।
बांठड़ो रे नौयणो, माऊए शी खाए।

ठींडे (सुंदर गठीला युवक) की टोपी तड़के की तरह सी करवा देती है। बांठड़ो (बांकी युवती) के नयन मधुमक्खी के डंक की तरह सी करवा देते हैं।

चूड़ी रा कोयरा, तेरे लोजड़े कानो।
भूखे खे देली टुकड़ा, लाली उमरा रा सानो।। (प्रणय निवेदन)

तेरे सुंदर कान चूड़धार की कस्तूरी मृगी के समान हैं। भूखे को टुकड़ा देगी तो उम्र भर का एहसान होगा।

फूली करो फुलणू, डाली फुलोला कांगो।
खाओ पिओ हामे मुकता, तेरे हाथों रा मांगो।।

फूल खिलता है, डाली पर कांगो का फूल खिला है। हमने खाया-पिया तो बहुत, तुम्हारे हाथ का मांगता हूं।

झूरी री हाखटी जिशी खुआरे री गूटी।
निमती कौर नज़रा, सारी तैं दुनिया लूटी।

प्रेमिका की आंखें जैसे रीठे की गुठली की तरह काली और गोल हैं, नजरें नीची कर सारी दुनिया लूट ली। यहां आंखों की उपमा रीठे की गुठली से करना अद्‌भुत ग्राम्य प्रयोग है।

भौर फूलला फूलणू, बूटी फूलला पाल़ा।
ज़्हारा ज़्हारा रे हाखड़ू तेरे, लाखे री दोंदे री माल़ा।

फूल खिला है, बूटे पर फूल लगे हैं। हजार-हजार की तेरी आंखें हैं, लाख-लाख की दांतों की माला। इसी तरह एक दोहे में सुनार द्वारा दांत गढ़ने और आंख किसने गढ़ी होगी जो दिल को जलाती है; ऐसा वर्णन मिलता है—

अट्टे घड़े आटढ़ू, दांदड़ू घड़े सुनारे।
कुणी घड़ी तेरी हाखटी, जीवा जलाउंदी म्हारे।
नीलीए चिड़िए पांखड़ू तेरे चरीखे।
तेरी तेईएं झूरिए हौल़ लोड़ी बौल़्द बीके।

बिलासपुर के लोकगीत

ऐतिहासिक संदर्भ

बिलासपुर का पुराना नाम कहलूर था जिसकी राजधानी कोट कहलूर में थी। कहलूर राज्य सतलुज घाटी में स्थित था जिसे सतलुज नदी दो भागों में विभक्त करती है। बिलासपुर के उत्तर में कांगड़ा तथा मंडी, पश्चिम में पंजाब का होशियारपुर, दक्षिण में हंडूर (नालागढ़) और पूर्व में सुकेत तथा भंगाल हैं। सतलुज नदी राज्य के बीचोबीच बहती है। सन् 1931 की जनगणना के अनुसार बिलासपुर की जनसंख्या 1,00,994 थी तथा क्षेत्रफल लगभग 118 वर्गमील। इस क्षेत्र में निम्न ऊंचाई की पहाड़ियां हैं।

बिलासपुर में सात धारें प्रसिद्ध हैं—नैना धार, कोट धार, त्यूनी धार, बंदला धार, झिंझियार धार, रतनपुर धार और बहादुर धार। बिलासपुर के राजा को सात धारों का राजा कहा जाता था। मुख्य धार नैना धार में कोट कहलूर पड़ता था जो वर्षों तक यहां की राजधानी रहा। इसी नाम से बिलासपुर का पुराना नाम कहलूर था। कोट कहलूर के बाद बिलासपुर की राजधानी बिलासपुर बनी।

पुरातन समय में बिलासपुर का क्षेत्र भी जालंधर में आता था। व्हेनसांग ने अपनी यात्रा में जालंधर तथा कुल्लू के साथ शतद्रु का भी उल्लेख किया है। व्हेनसांग ने शतद्रु का घेरा 200 ली बताया है। कनिंघम ने व्हेनसांग के शतद्रु को सरहिंद माना है। कनिंघम के अनुसार शतद्रु के घेरे में कहलूर भी इसका भाग रहा होगा। बिलासपुर में षण्मुखेश्वर मंदिर तथा रंगनाथ मंदिर थे जो अब झील में डूब चुके हैं। रंगनाथ मंदिर की नींव का कुछ भाग आठवीं शताब्दी का माना जाता है। ये मंदिर भाखड़ा बांध बनने के कारण झील में डूब गए हैं। इस समय जिला का मुख्यालय झील के किनारे स्थित है।

राज्य के इतिहास पर एक काव्य कवि गणेशासिंह बेदी द्वारा सं. 1946 में लिखा गया जिसमें बिलासपुर के इतिहास का काव्य में वर्णन किया गया है। कहलूर का राज्य कब स्थापित हुआ, इस बारे में निश्चित तौर पर कुछ ज्ञात

नहीं है। यहां मालवा से आए चंदेलवंशी राजपूतों ने राज्य की नींव लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में डाली। यहां का प्रथम शासक बीरचंद माना जाता है।

हिमाचल प्रदेश के अप्रैल, 1948 में गठन के बाद भी बिलासपुर स्वतंत्र रहा। इस जिले का विलय 1 जुलाई, 1954 को हिमाचल प्रदेश में हुआ। बिलासपुर की बोली को कहलूरी या बिलासपुरी कहा जाता है।

लोकगीत

जन्म गीत (भीहाई गीत)

जुड़ी मिली नी सहेलियों
गीगे देखण जाणा हो।
गीगे रा क्या देखणा
गीगा पुनया रा चन्द हो।
गीगे माई चन्दरोली होवे
बापू कृष्ण मराज हो।

जुड़ी मिली नी सहेलिया
गीगे देखण जाणा हो।
गीगे रा क्या देखणा
गीगा पुनया रा चन्द हो।
गीगे दादी चन्दरोली होवे
दादा कृष्ण मराज हो।

जुड़ी मिली नी सहेलियो
गीगे देखण जाणा हो।
गीगे रा क्या देखणा
गीगा पुनया रा चन्द हो।
गीगे नानी चन्दरोली होवे
नाना कृष्ण मराज हो।

जुड़ी मिली नी सहेलियो
गीगे देखण जाणा हो
गीगे रा क्या देखणा
गीगा पुनया रा चन्द हो।

गीगे तायी चन्दरोली होवे
ताऊ कृष्ण मराज हो।
जुड़ी मिली नी सहेलियो
गीगे देखण जाण हो
गीगे रा क्या देखणा
गीगा पुनया रा चन्द हो।
गीगे चाची चन्दरोली होवे
चाचू कृष्ण मराज हो।

गुंतराला गीत

हो मेरे दंददेईये जो नचाणे रा चौ।
गीगे नानू नानी आवेगी
गीगे क्या क्या ल्यावेगी
सिरा जो टोपू ल्यावेगी
गल़ा जो झग्गू ल्यावेगी
हत्था जो कंगणू ल्यावेगी
पैरां जो झांझर ल्यावेगी
झांझर छणमण छणकेगी
गीगा दुड़ बुड़ नच्चेगा।

हो मेरे दंददेईये जो नचाणे रा चौ।
गीगे मासड़ मासी आवेगी
गीगे क्या क्या ल्यावेगी
सिरा जो टोपू ल्यावेगी
गल़ा जो झग्गू ल्यावेगी
हत्था जो कंगणू ल्यावेगी
पैरां जो झांझर ल्यावेगी
झांझर छण मण छणकेगी
गीगा दुड़ बुड़ नच्चेगा।

हो मेरे दंददेईये जो नचाणे रा चौ।
गीगे मामा मामी आवेगी
गीगे क्या क्या ल्यावेगी

सिरा जो टोपू ल्यावेगी
गल़ा जो टोपू ल्यावेगी
हत्था जो झग्गू ल्यावेगी
पैरां जो झांझर ल्यावेगी
झांझर छण छण छणकेगी
गीगा दुड़ बुड नच्चेगा।

विवाह गीत (समूहत गीत)

दो खतरेटे मैं तेला जो भेजे, स्यो खतरेटे नी आए
थोड़ा थोड़ा तेल मेरे साथियां जो देयो होर मल़्यो अंग मेरे।

दो गुजरेटे मैं दहिंयो जो भेजे, स्यो गुजरेटे नी आए
थोड़ा थोड़ा दहीं मेरे मितरां जो देयो होर मल़्यो अंग मेरे।

दो बणजारू मैं बटणे जो भेजे, स्यो बणजारू नी आए
थोड़ा थोड़ा बटणा मेरे भाईयां जो देयो होर मल़्यो अंग मेरे।

दो झियूर मैं पाणिये जो भेजे, स्यो झियूर नी आए
थोड़ा थोड़ा नीर मेरे भाईयां जो देयो, होर डोल्यो अंग मेरे।

स्नान गीत (वर पक्ष)

गढ़ गडेरे री गुजरी दहींएं बेचण आई
बाहरे तूं आयां लाड़े रीए माए दहींऐ मुल्ल करायां
लाड़े री माई सो चजली घरैं लैंदी जमाई।
गढ़ गडेरे री...

गढ़ गडेरे री तेलण तेला बेचण आई
बाहरे तूं आयां लाड़े री माए तेला मुल्ल करायां
लाड़े री माई सो चजली पहले रखदी मंगवाई।
गढ़ गडेरे री...

गढ़ गडेरे री झीवरी पाणी बेचदी आई
बाहरे तूं आयां लाड़े री माए पाणिएं मुल्ल करायां
लाड़े री माई सो चजली गोहरे झीवरी बसाई
गढ़ गडेरे री...।

तेल (वधू पक्ष)

रणक्यां सोन कटोरड़िये पर तेले नूं इस बेले नूं
रणक्यां सोन कटोरड़िये पर पैसे नूं इस बेले नूं।

पैला तेल संजोया कुआरिया कन्या न
रणक्यां सोन कटोरड़िये पर तेले नूं इस बेले नूं
रणक्यां सोन कटोरड़िये पर पैसे नूं इस बेले नूं।

दूजा तेल संजोया लाड़े दे पाईये ने
रणक्यां सोन कटोरड़िये पर तेले नूं इस बेले नूं
रणक्यां सोन कटोरड़िये पर पैसे नूं इस बेले नूं।

तीज्जा तेल संजोया लाड़े दी पाबियां ने
रणक्यां तेल कटोरड़िये पर तेले नूं इस बेले नूं
रणक्यां तेल कटोरड़िये पर पैसे नू इस बेले नूं।

चौथा तेल संजोया लाड़े दियां मासियां ने
रणक्यां तेल कटोरड़िये पर तेले नूं इस बेले नूं
रणक्यां तेल कटोरड़िये पर पैसे नूं इस बेले नूं।

बटणा

बाये बाये नी कटोरा बटणे दा
जिंदे नी मलैंदियां दो जणियां
कि अप्पू मंजी क्या लगदियां
नी सक्कियां ओ पेनड़ियां।

बाये बाये नी कटोरा बटणे दा
जिंदे नी मलैंदियां दो जणियां
कि अप्पू मंजी क्या लगदियां
नी दराणी जट्ठाणियां।

बाये बाये नी कटोरा बटणे दा
जिंदे नी मलैंकदयां दो जणियां
कि अप्पू मंजी क्या लगदियां।

घोड़ी : एक

सतलुजा ते पार घोड़ी लस पस करदी, जक मक करदी
कौण रजादा घोड़िये चढ़ी आऊंदा ओ
आया देवकी दा जाया, जसोदा माईये दा पाल्या
ओई रजादा चढ़ी आया ओ।

सतलुजा ते पार कपड़े लस पस करदे, झल मल करदे
कौण रजादा घोड़िये चढ़ी आऊंदा ओ
आया देवकी दा जाया, जसोदा माईये दा पाल्या
ओई रजादा चढ़ी आया ओ।

सतलुजा ते पार सेरा लस पस करदा, झल मल करदा
कौण रजादा घोड़िये चढ़ी आऊंदा ओ
आया देवकी दा जाया, जसोदा माईये दा पाल्या
ओई रजादा चढ़ी आऊंदा ओ।

सतलुजा ते पार गैहणे लस लस करदे, चमचम करदे
कौण रजादा घोड़िये चढ़ी आऊंदा ओ
आया देवकी दा जाया, जसोदा माईये दा पाल्या
ओई रजादा घोड़िये चढ़ी आऊंदा ओ।

घोड़ी : दो

गरनें रा फुल्ल फुल्लया लाड़े लाडले जो देणा
लिखी के परवाना लाड़े रे बाबे जो देणा।
सोहणी जेई घोड़ी बाबा जी दूरा ते ल्यौणी

गरनें रा फुल्ल फुल्लया लाड़े लाडले जो देणा
लिखी ने परवाना लाड़े रे मामे जो देणा
सोहणा जेया सेहरा मामाजी दूराते ल्यौणा।

गरनें रा फुल्ल फुल्लया लाड़े लाडले जो देणा
लिखी के परवाना लाड़े री भैणा जो देणा
सोहणे जे कपड़े भैण जी शहरा ते ल्यौणे
गरनें रा फुल्ल फुल्लया लाड़े लाडले जो देणा।

घोड़ी : तीन

किधर देसे ते घोड़ली आई मैं बारी जां
भला किधर देसे नूं जाणा मनेरिए कुंदनों
दखण देसे ते घोड़ली आई, मैं बारी जां
भला दखण देसे नूं जाणा मनेरिए कुंदनों।

कौ लख घोड़िया दा मुल्ल जे किया मैं बारी जां
भला कौ लख बाबले देणा मनेरिए कुंदनों।
अठ लख घोड़ी मुल जे किया मैं बारी जां
भला नौ लख बाबेल देणा मनेरिए कुंदनों।

तेरिया तेजणी मत्थे बिंदली मैं बारी जां
लसकैंदी तेजणी आई मनेदरिए कुंदनों।
तेरिया तेजणी दे नक्कें बेसर मैं बारी जां
छणकैंदड़ी तेजणी आई मनेरिए कुंदनों।

अंदरे बाह्र जे फिरदी, मैं बारी जां
नखरेलड़ी लाड़े दी सस, मनेरिए कुंदनों।
नगरे बिच नगरोटड़ा, मैं बारी जां
भला एह्ड़ा हुंदा सौह्रा, मैं बारी जां।

लाड़ा ता पुच्छदा लाड़ला मैं बारी जां
भला केह्ड़ी हुंदड़ी नार मनेरिए कुंदनों।
सालुआं वालियां सालियां मामियां, मैं बारी जां
भला रीढ़े वालड़ी हुंदी नार, मैं बारी जां।

इस तरह गीत में सभी रिश्तेदारों को संबोधित किया जाता है।

सुहाग : एक

खुआ पर बैठिये नीं तूं अड्डियां मल्मल् धोए
अम्मां नीं सुण मेरिये कोई बाबे जो समझावे।
धियां होइयां जवानड़ियां कोई हंसा रे लड़ लावे
धिये नीं सुण मेरिये औखे बोल नीं बोल वे
बारा बरसां ज्यों कटियां हुण चार क ध्याड़े होर वे।
अम्मा नीं सुण मेरिये मैं बारा बरसां यों कटियां

ज्यों जला बिन मच्छली होए वे
खुआ पर बैठिये नीं तूं अड्डियां मल़मल़ धोए।

सुहाग : दो

इमली रा बूटा नीवां नीवां डालू
तिस्स बैठ्या पंछी रूदन करे।
अम्मां बोले बेटी बडयां जो देणी
पल़ंगा पर बैठी बेटी राज करे।

इमली रा बेटा नीवां नीवां डालू
तिस्स पर बैठया पंछी रूदन करे।
चाची बोले बेटी बडयां जो देणी
पल़ंगा पर बैठी बेटी राज करे।

इमली रा बूटा नीवां नीवां डालू
तिस्स पर बैठया पंछी रूदन करे।
मामी बोले बेटी बडयां जो देणी
पल़ंगा पर बैठी बेटी राज करे।

सुहाग : तीन

सुण्याजी सयाण्या कंता, मेरी बौरां याणी नूं
कोई चंगा वर चाहिए, हिंचला श्रीभोलेनाथ।
घर चंगा, वर चंगा, कुल सुच्चा चाहिए
हिंचले दिया कन्या नूं कोई चंगा वर चाहिए
हिंचला श्रीभोलेनाथ।
अठ द्वीप नौ खंड, चारों वेद पढ़ैंदा
हिंचले दिया कन्या नूं कोई चंगा वर चाहिए
हिंचला श्रीभोलेनाथ।
अठ मुट्ठी भंगा पींदा, नौ बी ता धतूरा
भूतां दा सहेला नी माए कल्हा उठी जांदा
हिंचला श्रीभोलेनाथ।
डिमक डिमक डौरू बाजे, छोटे बड़े सब देखण आए
आप चढ़े शंभू बैल सवारी, नाद बजाए के

हिंचला श्रीभोलेनाथ।
एक मृगछाला हेठ बछांदा, ऊपर ना लैंदा माए
ज्यू तरसांदा, हिंचला श्रीभोलेनाथ।
सुण्याजी सयाण्या कंता, मेरी बौरां याणी नूं
कोई वर चंगा चाहिए, हिंचला भोलेनाथ।
किसे देवां अरघ मैं, किये देवां धूपां
जानी जवाइंए दा इक्को जेहा रूपा
हिंचले दिया कन्या नूं कोई चंगा वर चाहिए
हिंचला श्रीभोलेनाथ।
सुध्याजी सण्याण्या कंता, मंरी गौरां याणी नू
कोई चंगा वर चाहिए, हिंचला श्रीभोलेनाथ।

बधावा : एक

चारों बधावे सबद सुहावे
चऊं ही देसां ते होई आए, राम।

पैह्ला बधावा घर मंदाग्नि दे
परसरामे रूपे होई आया, राम।

असर संधारे, दैतां मारे
संह्सरबाहुए दा सिर लिया, राम।

धन बड़ी भागण माता ए रेणुका
पुत अनोखा जाया, राम।

तीया बधावा घर बसुदेवे दे
जमना लंघी घरा आया, राम।

असर संघारे दैतां मारे
कंसे दा सर लीया, राम।

धन बड़ी भागण माता ए देवकी
पुत अनोखा जाया, राम।

दूआ बधावा घर जशरथे दे
रामचंद्र रूपे होइ आया, राम।

असर संघारे दैतां मारे
रावणे दा सर लीया, राम।

धन बड़ी भागण तामा ए कौसल्या
पुत ओखा जाया, राम।

सिया बहोड़ी गढ़ लंका जे तोड़ी
राज बभीछणे नू दीया, राम।

चौथा बधावा घर नंद मैहरे दे
जमना लंघी घरें आया, राम।

धन बड़ी भागण माता जसोधा
जिसा रा दुध पल्याया, राम।

सुणो भाइयो साधो, हरजी देओ भगतो
हरि जस गुण गायो, राम।

बधावा : दो

ओ मेरे कंता मैली करिईयां
नंद मराज जी दे करिसण जन्मेया
गोकुल बजियां बधाईयां।

बारे खड़े बसुदेव जच्चा मेरी क्या मंगदी
अंदरा ते करड़े जबाब जच्चा मेरी घीऊ मंगदी
ओ मेरे कंता...।

बारा ते पुछदा रजादा जच्चा मेरी क्या मंगदी
अंदरा ते करड़े जबाब जच्चा मेरी दूध मंगदी
ओ मेरे कंता...।

बारा ते पुछदा रजादा जच्चा मेरी क्या मंगदी
अंदरा ते करड़े जबाब मेरी पथा मंगदी
ओ मेरे कंता...।

बधावा : तीन

दो बणजारू मैं बटणे जो भेजे
स्यो बणजारू नीं आए।

थोड़ा थोड़ा बटणा मेरे भाईयां देओ
होर मल़यो अंग मेरे।

दो खतरेटे मैं तेला जो भेजे
स्यो खतरेटे नी आए।
थोड़ा थोड़ा तेल मेरे साथियां जो देओ
होर मल़यो अंग मेरे।

दो गुजरेटे मैं दहिंया जो भेजे
स्यो गुजरेटे नी आए।
थोड़ा थोड़ा दहीं मेरे मितरां जो देओ
होर मल़यो अंग मेरे।

दो झियूर मैं पाणिए जो भेजे
स्यो झियूर नी आए।
थोड़ा थोड़ा नीर मेरे भाईयां जो देओ
होर मल़यो अंग मेरे।

दाड़नी दे बूट

दाड़नी दे बूट बापू पींह्गां पइयां
सहियां सहेलियां सब पींह्गण पइयां
मैं बी पींह्गण जाणा।
पींह्गणे नी जाणा धीए, शावरे जाणा।
बिखड़े पहाड़े बापू जी
मांह कल्हिया कियां रैहणा
सहियां सहेलियां पींह्गणे गइयां
मैं बी पींह्गणे जाणा।
बागे जे देऊंगा धीए, ब्यौरा देखी रैह्णा
बिखड़े पहाड़ै चाचाजी
मांह कल्हिया कियां रैह्णा।
टाकणे जे देऊंगा धीए, थालियां देखी रैहणा।
बिखड़े पहाड़े तायाजी
मांह कल्हिया कियां रैहणा
गऊंआं जे देऊंगा धीए, बछिया देखी रैह्णा।

सांद गीत (शांति हवन)

मामा का इंतजार

मैं न्याल़दी, मैं न्याल़दी
अज्ज नीं आया अम्मां जाया वीर मेरा
कोठे चढ़ी ने देखदी
हल्लीं नीं आया अम्मा जाया वीरे मेरा।

मामा का आगमन

1

मैं भी आया भैंणे बड़ेयां समाने
गड्ड अड़ी तेरे गोहरें।
कित्त तां आयां भाईया बड़ेयां समाने
कित्त रहयां घर आपणे।
मैं तां आया भैंणे बड़ेयां समान
गड्ड अड़ी तेरे गोहरें।
पहले पहनायां वीरा पण्डत पण्डत्याणी दो जणे
फेरी पहनायां वीरा जेठ जठाणी दा जणे।
पहले पहनायां वीरा दओर दराणी दो जणे।
फेरी पहनायां वीरा चाचा चाची दो जणे।
मैं भी आया भैणे...।

2

लाड़े रा मामा दूरा ते आया
सांद सांद पुकारे।
आई जा मामाजी बईजा पटड़े
बईजा पटड़े खोल खट्ठड़े
तेरी धर्मा री बेला आई जी
लाड़े रा मामा दूरा ते आया
सांद सांद पुकारे।

मामा को गालियां

देख्या नीं ब्यात्तिये तेरा बीर
हत्था विच चिमटा असल फकीर।

देखा जी ब्यात्तया तेरे बीर
स्यूने रे कण्ठे असल अमीर।

पुरोहित को गालियां

सांद कराई लौ पाधाजी सांद कराई लो
कोठा भराई लो पाधाजी कोठा भराई लो।
आटा चुराई लो पाधाजी आटा चुराई लो
लड़ विच पाई लो पाधाजी लड़ विच पाई लो।
घरें जांदे जो पध्याणी पुच्छदी, पाध्या ए क्या!
पध्याणिये आटा! पाध्या इन्हें गलें पत जांदी
जांदी प्रतीत, जांदी जजमानां रेयां घरें जांदी
ओम् स्वाहा!
सांद कराई लो...सांद कराई लो...।
कुंगू चुराई लो पाधाजी कुंगू चुराई लो
पुड़िया च पाई लो पाधाजी, जेबा च पाई लो।
घरें जाई ने पध्याणी पुच्छदी, पाध्या एह क्या!
पध्याणिए कुंगू! पध्या, इन्हें गले पत जांदी।
प्रतीत जांदी, जजमानां रेयां घरें जांदीं
ओम् स्वाहा!

बारात को गालियां

1

सेर क चंणेयां दाल मूईए
रिझी कोरिया ठीकरिया।
कुड़म बैठया खाण मूईए
जोरा चढ़ गई घुगलिया
भोंदू बैठया खाण मूईए
जोरा चढ़ गई घुगलिया।
हाड़े करदा, सदके करदा, मिन्तां करदा
बकरे सुखदा चार मूईए
उत्तर नी परमेसरिए।

2

खाने के बाद मुंह धोने पर

कुड़म झूड्डू चुली लगावे, चुली लगावे
जोरा तमाचा मारेया
रे आ रे।

सुहाग गीत

किने जे रंगी मेरी सूई चुनरिया
किने पर दित्ती बेटी दूर बे।
अम्मा जे रंगी मेरी सूई चुनरिया
बापूए जे दिती बेटी दूर बे।

साम्बेयां नीं साम्बेयां अम्मा जंदेयां जे कुंजियां
मैं चली बगाने देस बे।
देस न बोलेयां धीए परदेस न बोलेयां
देखी लैणा बापू जी दी देस बे।

भाबिये जे रंगी मेरी सूई चुनरिया
भाईये जे दिती बेटी दूर बे।
साम्बेयां जी साम्बेयां भाबी चुह्ला जे चौका
मैं चली बगाने देस बे।
देस न बोलेयां धीए परदेस न बोलेयां
देखी लैणा भाई जी दा देस बे।

ताईये जे रंगी मेरी लाल चुनरिया
ताऊए जे दित्ती बेटी दूर बे।
साम्बेयां नी साम्बेयां घरे जे बारे
मैं चली बगाने देस बे।
देस न बालेयां परदेस न बालेयां
देखी लैणा ताऊजी दा देस बे।

दाड़नी दे बूट

दाड़नी दे बूट बापू पींह्गां पइयां
सहियां सहेलियां सब पींह्गण पइयां

मैं बी पींह्गण जाणा।
पींह्गणे नी जाणा धीए, शावरे जाणा।
बिखड़े पहाड़े बापू जी
मांह कल्हिया कियां रैहणा
सहियां सहेलियां पींह्गणे गइयां
मैं बी पींह्गणे जाणा।
बागे जे देऊंगा धीए, ब्यौरा देखी रैह्णा
बिखड़े पहाड़ै चाचाजी
मांह कल्हिया कियां रैह्णा।
टाकणे जे देऊंगा धीए, थालियां देखी रैहणा।
बिखड़े पहाड़े तायाजी
मांह कल्हिया कियां रैहणा
गऊंआं जे देऊंगा धीए, बछिया देखी रैह्णा।

पहिया गीत

प्रदेश के निचले क्षेत्र बिलासपुर आदि में अश्विन मास में अष्टमी से पूर्णमासी तक कन्याओं द्वारा पहिया खेल खेला जाता था। मिट्टी या चकोतरे के खोल का पहिया बनाया जाता जिसमें आधे-आधे गोले एक-दूसरे पर ठीक बिठाए जाते। ऊपर के भाग में हवा की आवाजाही के लिए झरोखे रखे जाते ताकि उसके भीतर रखा दीपक जलता रहे। एक कन्या को आकर्षक घाघरा पहना पहिया उसके सिर पर रख दिया जाता। अन्य कन्याएं गाती हैं और गोलाकार घूमती हैं। बैठी हुई कन्या को 'घुरड़ी' कहते हैं। कन्याओं की टोली शाम को घर-घर जाकर गाती है। इन्हें नकद पैसे या कुछ अन्य वस्तु दी जाती हैं। अब यह खेल देखने को नहीं मिलता।

1

बड़े घरे राजे बेह्ड़े सलामियां
भाभियां कांतो बेलणूए छाया, फुलणूए जड़त जड़ा
ओ नाचर पहिया रे।
काहे दी ए ओबरी नी ओबरी बारी, काहे दे खंबे गड़े
ओ नाचर पहिया रे।
सुइने दी ओबरी, नी ओबरी, रूपे दे खंबे गड़े
ओ नाचर पहिया रे।

कौण सुता इसा ओबरी, नी ओबरी बारी, कौण झेले ठंडी बार
ओ नाचर पहिया रे।
घरे आला़ सुता इसा ओबरी बारी, लाड़ी झोले ठंडी बार
ओ नाचर पहिया रे।
बाल झोलैंदिया दी बांह दुखे, नी बांह दुखे, बारी
नैणा नूं आवे ठंडी निंद, ओ नाचर पहिया रे।
बाहियां नूं तेरियां नूं लाल चूड़ा, नी लाल चूड़ा, बारी
नैणा नूं सुरमे सलाई
ओ नाचर पहिया रे।
जागो जागो घरे आल़ेया, बेह्ड़े आल़ेयो, बारी
पहिया खड़ा दरबार, ओ नाचर पहिया रे।
पहिया नाचे सारी रात, ओ नाचर पहिया रे।
घुरड़ी नाचे सारी रात, ओ नाचर पहिया रे।
पहिया खाबे म्हारा घ्यूं खिचड़ी, ओ घ्यूं खिचड़ी बारी
दीपक मांगे तेल, ओ नाचर पहिया रे।
पैरें लागी ठांडड़ी बारी
सिरें लागी म्हारे मोतीहार, ओ नाचर पहिया रे।
अंबर छाया तारेयां, ओ नाचर पहिया रे।
छप्पर नागरबेल, ओ नाचर पहिया रे।
पैसा टका असां ना लैणा ओ ना लैणा बारी
पंज रपइए दो पान, ओ नाचर पहिया रे।

2

चंदे दी चानणी, चंदे दी चानणी
सरपर पहिया अम्मा, कुड़िया खेलण नूं जांदियां।
अम्मा दे आंगण अम्मा दे आंगणे
बापू दीया देवली, बोह्त खेली सावरे
खेलण नां देंदी ओ।
चंदे दी चानणी...

ताई दे आंगणे, ताई दे आंगणे
ताऊ दीया देवली, बौह्त खेली ओ सावरे

खेलण ना देंदी ओ।
चंदे दी चानणी...

चाची दे आंगणे, चाची दे आंगणे
चाचे दीया देवली, बौह्त खेली ओ सावरे
खेलण ना देंदी ओ।
चंदे दी चानणी...

दिने नूं बटदी, दिने नूं बटदी
दिनें नूं बटदी, पुणिया मां रैनी नू
चरखे डाह्दियां।
चंदे दी चानणी...

चरखे आवंदी, चरखे आवंदी
टुलणियां मां नणदां टोके
दे देंदियां।
टोके दे देंदियां, टोके दे देंदियां
ओ नणदा ओ नणदा मां टोके
दे देंदियां
इतणे दुखड़े इतणे दुखड़े
सैंह्दियां मां जितणे कीकर पते बे।
चंदे दी चानणी...

मोहणा

बिलासपुर का यह एक प्रसिद्ध गीत है जिसमें मोहणा नाम के युवक का अपने भाई की खातिर फांसी चढ़ जाने का कारुणिक वर्णन है। एक भोले-भाले युवक ने अपने भाई का जुर्म अपने सिर ले लिया जिसके फलस्वरूप उसे राजा ने फांसी के तख्त पर चढ़ा दिया।

आया मरना ओ मोहणा, आया मरना
तेरे भाईयां रीया कित्तिया आया मरना।

रोया करदी ओ मोहणा, रोया करदी
तेरी बालक बलेसरू रोया करदी।

खाई लै फुलकू ओ मोहणा, खाई लै फुलकू
अपणी अम्मा रेआं हत्था रा खाई लै फुलकू।

मैं नीं खाणा ओ लोको, मैं नीं खाणा
मेरी घड़ी पल मरने री मैं नीं खाणा।

किनी रैहणा ओ मोहणा, किनी रैहणा
तेरे रंगलूए बंगलूए किनी रैहणा।
मेरे रंगलूए बंगलूए भाईयें रैहणा।

गड्डे थम्बड़े मोहणा, गड्डे थम्बड़े
बेड़िया रे रेतडा च गड्डे थम्बड़े।

चढ़ी जा तख्ते ओ मोहणा, चढ़ी जा तख्ते
दम दम दित्तिया चढ़ी जा तख्ते।

बारा बजी गै ओ मोहणा, बारा बजी गै
इस राजे रीया घड़िया बारा बजी गै।

बाह्मणा रा छोरू

बाह्मणा रेया छोहरूआ
बोलो परदेसी मुलखे, माऊंआ सुणी जा
परदेसी बोलो तेरे, तूं तो बेईमान रे बाबुआ।

बाह्मण रेया छोहरूआ
इशा लागा बुरा माऊंआ, रोऊ ज्यूआ दे
तू बोलो दोहरू जरूर बे मिल्या।

बाह्मणा देया छोहरूआ
हामे बोलो परदेसी, तेरे मुलखे
तुमे बोलो छोहरू दया बे राखणा।

बाह्मणा रेया छोहरूआ
हां बोलो भरिए बंदूके, माऊंआ बे बैरी फिरदे
जाने बोलो मेरिए, नींवे बोलो नींवे हौंडणा।

बाह्मणा रेया छोहरूआ
हां बोलो घासा री लुणाई, माऊंआ ते मेरा न्यूंदा
माऊंआ बोलो आओला, न रहोला बे [illegible]ब्रता।

लोका

1

लोका रीये छोह्‌रिए ज्यू, त्यूए ते बी उकाई ओ
जिना पिच्छे छड्‌डे ओ घर बार जी लोका।

जिने गल्लैं बरजां, तेरियां गल्लां कीतियां
जिने गल्ले हुई गै दिल दूर जी लोका।

देख्या करयां दूरा ते तां, सद्‌यां करयां काहजो
कालजू दे पांदे ओ काले, दाग जी लोका।

चिट्‌टे तेरे कपड़े नीला तेरा कड़लू
उड़ी जांदी गिरा तां गवार जी लोका।

होर होर पंछी ओ हंसा, चुग तां चुगांदे
तेरी चुग झूरदी नमाणी, जमाणेया ओ हंसा
केहड़ी जे बेला लेया बनवास।

होर होर पंछी ओ हंसा, बचड़ू ता खलांदे
तेरे बचड़ू रूलदे नमाणे, नमाणेया ओ हंसा
केहड़ी जे बेला तैं लेया बनवास।

2

छोटे छोटे गुड्‌डू छम्म छम्म हण्डदी
मैं दूरा ते पच्छाणी चाल जी लोका।

कच्ची कच्ची तोड़ी गया बिच बाणे सुट्‌टी गया
पापां ते न डरया बेईमान जी लोका।

आपू चलया शिमले जो मैं रोंदी आंजू
रोंदया दरद न आई जी लोका।

कोई हुन्दी जोड़ियां, कोई हुन्दे जोड़वें
कोई हुन्दे जिवे जो जलाणे जी लोका।

गंभरी

गंभरी बिलासपुर की प्रसिद्ध गायिका रही हैं। वह बिलासपुर में विभिन्न अवसरों पर अपने गायन और नृत्य से जनमानस का मन मोह

लेती थी। गंभरी का कार्यक्रम देखने दूर-दूर से लोग आते थे। गंभरी के साथ उसका प्रेमी बसंता ढोलक बजाता था जो अपने समय का मशहूर पहलवान था।

खाणा पीणा नंद लैणी ओ गंभरिये
खाणा पीणा नंद लैणी हो।

खसम मरे कोई होर घर करिये
द्योर मरे कियां जीणा, ओ गंभरिये
खाणा पीणा नंद लैणी हो।

कपड़े फटे तां दर्जी ते सधावां
दिल जे फटे किया सीणा ओ गंभरिये
खाणा पीणा नंद लैणी हो।

मंडी की ओर गाए जाने वाले टप्पे

मा नी खाणे तेरे खटड़े गे मिठड़े
खाणे बागा रे केल़े...
खाणा पीणा नंद लैणी हो गम्भरिए
जिन्द चार दिनां दे मेल़े।

खटड़े नी खाणे मिठड़े नी खाणे
खाणे बागा रे केल़े
ओ गम्भरिए खाणे बागा रे केल़े
ओं गम्भरिए खाणे बागा रे केल़े।

किने खोह्ली तेरे बंगले री खिड़की
किने मारेया खंगारा

चत्तरे खोली मेरे बंगले री खिड़की
मूरखे मारेया खंगारा, ओ।
ओ गम्भरिए मूरखे मारेया खंगारा ओ।

आसे ता पास्से बोले दुसमण बसदे
सजना रा प्यार है न्यारा ओ गम्भरिए
सजना रा प्यार है न्यारा

खाणा पीणा नंद लैणी ओ गम्भरिए
खाणा पीणा नंद लैणी हो।

नचणे तां नची गई बंदले री गम्भरी
छींजा रचाई गिया रंगीया हो
कियां करी चढ़नी बंदले री कुआली
रूमे रूमे आई कमजोरी हो।

खाणा पीणा नंद लैणी ओ गम्भरिए!
खाणा पीणा नंद लैणी हो।

गिद्धा

सोलन की भांति गिद्धा गीत बिलासपुर में भी नृत्य के समय गाए जाते हैं। इन गीतों में सोलन से मामूली अंतर है।

उड़ी जाणा भौरा

कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।
उड़ उड़ भौरा मेरे कन्ना ते बैठया
कांटे रा करी गिया चूरा चूरा
कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी उड़ी भौरा मेरे मात्थे पर बैठया
बिंदिया दी करी गिया चूरा चूरा
ओ कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ उड़ भौरा मेरे नक्के ते बैठया
बालुए दा करी गिया चूरा चूरा
ओ कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी ड़ी भौरा मेरी बांही ते बैठया
गजरे दा करी गिया चूरा चूरा
ओ कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी उड़ी भौरा मेरे हत्थे पर बैठया
मंदिया दा होई गिया चूरा चूरा
कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उच्चिया धारा

उच्चिया धारा रेआ पिपलुआ, ओ मोया!
तैं क्या रूण झुण लाई
इक बरी फिरी झुली लै।

होर होर फूलणू, सब बणे फूली गए
धारा फूली गोभी
खाणे पीणे रे लाल़च नइयो
तेरे बांकेआं नैणा रे लोभी
इक बरी फिरी झुली लै।

होर होर फूलणू सब बणे फूली गए
बागें पाके केल़े
राजी रेयां मुइए गंभरिएं बजारिए
जिऊंदे जुगा रे मेल
इक बरी फिरी फूली लै।

होर होर फूलणू सब बणे फूल गए
धारा फुलेया गरना
राजी रेयां मुइए गम्भरिए बचारिए
किन्ने जीऊणा किन्ने मरणा
इक बरी फिरी झुली लै।

कूसू मूसण

मूसूए री मूसण, मूसूए ते काल़ी
ओ तिन मंगे कपड़े, रपइये चाल़ी।

मूसूए री मूसण मूसूए ते छोटी
दो मंगे सबजी तां चुपड़ी री रोटी।

मूसूए री मूसण, मूसूए ते मोटी
ओ इक मंगे थान, बणाणे ओ कोटी।

मूसूए री मूसण, चल्ली री दिल्ली
दो मंगे गजरू तां नक्का ओ तिल्ली

फरंगु

इस बे फरंगुए कैहर कमाया
शिमले दी सड़क सपाटुए मलाई

देश दोहाइयां दे रहे लोको
डाडड़ा राज फरंगुए दा।

इस बे फरंगुए कैहर कमाया
महलां दी इट चबारे नूं लाई
देश दोहाइयां...।

इसा बो सस्सु कैहर कमाया
खाणे रीया बेला नूं चरखा ढलाया
देश दोहाइयां...।

इसा बो सौकणी कैहर कमाया
सौणे रीया बेला नूं गो धूम मचाया
देश दोहाइयां...।

लोक देंदे बदनामी

वैशाखी के बाद यह छिंज गीत गाया जाता है।

लोक देंदे बदनामी तेरी, सुणा तेरी, जिंदे
मैं बरान होईयां।

अंगणा नी बैणा तेरे ब्यूए पनी बैणा
लोक देंदे बदनामी तेरी, सुणा तेरी, जिंदे
मैं बरान होईयां।

कोदरूए दा दाणा सानू लगदा पराणा
पल़मा ते चिंजण मंगादी, सुणा तेरी जिंदे
मैं बरान होईयां।

मारकंडे रा मेला

ठण्ड्ड़ा मिठड़ा पाणी हो
मारकण्डे रे मेले जो
चल्लणा मेरे हाणी हो।

चूड़ियां पाणियां हण्डोला झूटणा
मेले रा मजा आसां लुटणा
रज्जी कने गिद्दा पाणा हो।

छैल़ छैल़ कपड़े लाणे
बाल़ बणाणे फबदे फबदे
नक्का बेसर पाणी हो।

ठण्ड्ड़ा मिठड़ा पाणी हो
मारकण्डे रे मेले जो
चल्लणा मेरे हाणी हो।

खत सजणा दा

काल़ीए कोयले बोल सबेरे
खत सजणा रा आया हो
काल़ीए कोयले...

उसैं बेलैं मैं फाड़ लफाफा
नाल़ सीने दे लगाया हो।

नां मैं मरदी नां मैं जींदी
नां मेरी होस ठकाणे हो।

चिट्टी चादर चार कनारे
कितणी की मल़ मल़ धोआं हो।

अज देयां बिछड़ेयां फिरी कदी मिलणा
होई जांदा दूर ठकाणा हो।

काल़ीए कोयले बोल सबेरे
खत सजणा रा आया हो।

धूप्पू गीत

1

झिला मिला चांनणियां राती
ओ तारेयां भरी रो पराती।

ओ चंदे री चली रे बराती
ओ सारे खड़ी रे बराती।

फुली पीली़ पीली़ सरूंआं
ओ इक फुल्ल मिंजो बी देआ।

ओ बीरा री पगड़िया लाणा
ओ बापूए रे साफे लाणा।

2

कात्तक नी जाओ जी मघैर न्याह्ल़यो
कात्तक महीने दयाल़ी मनाईये
दयाल़ी ते बाद फिरी धूप्पू गांवदे।

3

सईयो धूप्पू लै सईयो धूप्पू लै
भाबो तां जांदी तेलियां ने
मैं जांदी गजरेड़े, सईयो धूप्पू लै।

भाबो जांदी तेल पलिएं
मैं आंदा घिउए थाल, सईयो धूप्पू लै।।

भाबो रे आए पौह्णे
म्हारे आया सगा बीर, सईयो धूप्पू लै।

भाबो तां रिन्हीं घिउ खिचड़ी
मैं भी रिन्हीं आते ढेल, सईयो धूप्पू लै।

भाबो तां कुट्टी मुंगरिए
मैं भी चकिया बड़ा डांग, सईयो धूप्पू लै।

4

यह गीत दीवाली के अवसर पर गाया जाता है।

धुप्पू ता मेरा पंजरंगा भाई पंजरंगा
सहियो धुप्पू लै।

भाभो तां जांदी कुम्हार हटड़े, कुम्हार हटड़े
मैं बी गई गजरेड़े, सहियो...

भाभो तां ल्यांदे कुजमलू, कुजमलू
मैं बी ल्यांदा थाल, सहियो...

भाभो दे आए पांवनड़े, पांवनड़े
मेरा बी आया सका भैड़, सहियो...

भाभो बी जांदी तेलिया दे तेलिया दे
मैं बी गई गजरेड़े, सहियो...

भाभो ल्यांदी तेल पली, तेल पली
मैं बी अंदा घ्यूए पेड़ा, सहियो...

भाभो बी रिन्ही तिल खिचड़ी, तिल खिचड़ी
मैं बी रिन्ह्या भता ढेला, सहियो...

भाभो तां कुट्टी मुंगरिए मुंगरिए
मैं बी चक्या कड़ा डींग, सहियो...

भाभो तां सुती ओबरिया, ओबरिया
मैं बी सुती चंगे पौड़े, सहियो...।

होली गीत

1

होली खेले रघुबीर
अवध में होली खेले रघुबीर।
राम के हाथ कनक पिचकारी
सीता के हाथ गुलाल अबीर।

2

फगण महीने झट आयां श्यामा
फुल्ल फुल्ले घणे बे
मोती चम्पा प्यारे मोहन बंसी वाले
हार भतेरे बे।
होली आई खेलो होली
भरी भरी पिचकारियां जी
तुध बाह्जी नी खरी लगदी
होली भी इस बारी जी।
आओ कृष्ण तुसां झट आओ

राधा अज पुकारदी बे।
बणा बणा फिरदी मारी मारी
श्याम श्याम पुकारदी बे।

काल़ी घघरी

यह एक बहुत मशहूर गाना है जिसमें प्रेमिका शिमला से काल़ी घघरी लाने का अनुरोध करती है। इसमें प्रेमी से नौकरी छोड़ जल्दी घर आ जाने की भी गुहार है।

सोह्णी सोह्णी सिमले री सड़कां जिंदे
हाय! छैल छबीली सड़कां जिंदे
काल़ी घघरी लेयोंयां हो...।

उड़ी जा ओ कागा, मेरा लई जा स्नेहा
लई जा स्नेहा हो...
सुणदी सासु री झिड़का जिंदे
रोंदी रोंदी मैं दुधा जो रिड़कां जिंदे
काल़ी घघरी लेयोंया हो...।

सौण महीना आई बरखां बहारां
हवा पाणी सौगी आई ठण्डियां फुहारा
ठण्डियां फुहारां हो...
राती राती ओ द्वार मेरा खड़के जिंदे
काल़े बद्दल़ा च बिजली कड़के जिंदे
काल़ी घघरी लेयोंयां हो...।

नौकरी जो छडी हुण छोड़े घरां आयां
छोड़े घरें आयां, फेरी कदी बी ना जायां
कदी बी ना जायां हो...
औंदा कोई पारलिए सड़का जिंदे
दिल रही रही मेरा धड़के जिंदे
काल़ी घघरी लेयोंयां ओ
काल़ी घघरी लेयोंयां...काल़ी घघरी लेयोंयां।

किने मारेया मेरा मोर

जंगल बासी ओ किने मारेया मेरा मोर।

उड़ उड़ मोरा, बागा मंझ बैठी जा
निंबुआ दे हेठ लुकाई रखदी
ओ छुपाई रखदी, किने मारेया मेरा मोर।

उड़ उड़ मोरा डाली पर बैठी जा
पत्तेयां हेठ लुकाई रखदी
ओ छुपाई रखदी, किने मारेया मेरा मो
जंगल बासी ओ किने मारेया मेरा मोर।

उड़ उड़ मोरा मेरे हत्था पर बैठी जा
गजरे हेठ लुकाई रखदी
ओ छुपार्ठ रखदी, किने मारेया मेरा मोर
जंगल बासी ओ किने मारेया मेरा मोर।

तेरी बंगा दी छुणमुण

तेरी बंगा री छुणमुण काल़जू जो डसदी
छुटी जांदी हत्था री दराटी, ओ मेरी भ्याणिएं!
तेरी बंगा री छुणमुण काल़जू जो डसदी।

होर गल्लां छडी दे तू मेरी गल्ल सुणी लै
मुल्का जो छडणे रा इक ध्याड़ा चुणी लै
होर तो गलांदे मुइए मोटा माड़ा सुणी लै
ए हलके भुलेखे असां करने मलेखे
रही लोड़ी उमरा दी रासी ओ मेरी भ्याणिएं!
तेरी बंगा री छुणमुण काल़जू जो डसदी।

बिंदिया री गल्लां तेरी दूर तक किती मैं
आदरा री जगह तिजो काल़जू च दित्ती मैं
दिलां जो ए पता मुइए कियां जिती मैं
तुझ बाह्जी जीणा मेरा जीह्या सौणा रा हनेरा
रही लोड़ी उमरा उी दासी ओ मेरी भ्याणिएं!
तेरी बंगा री छुणमुण काल़जू जो डसदी।

तेरी बंगा री छुण मुण काल़ज़ू जो डसदी
छुटी जांदी हत्था री दराटी, ओ मेरी भ्याणिएं!

लंबड़ा झलंबडा

हो मेले जाणे नी देंदा...
हो मेले जाणे नी देंदा...।
लम्बड़ा झलम्बड़ा बहुत बुरा
हो मेल जाणे नी देंदो...।

अंगुल़ियां जे मेरियां रौंगां दियां फल़ियां
छल्ला मुंदी पाणे नी देंदा
हो मेले जाणे नी देंदा...।

मत्था बे मेरा बदली दा चंद बे
टिकलू बिंदलू लाणे नी देंदा
हो मेले जाणे नी देंदा।

हखीं जे मेरियां अम्बू रियां पाखियां
कजला सुरमा पाणे नी देंदा
हो मेले जाणे नी देंदा।

लम्बड़ा झलम्बड़ा बहुत बुरा
हो मेले जाणे नी देंदा।

घड़े जो बाल

पारिए जांदेया भलेया राजे देया नौकरा!
घड़े जो बाल जायां लाईं।

चकेया घड़ोलू गोरी पाणिए जो जांदी
कि हुण घड़े जो बाल नी लांदा कोई।

हाऊं भी तां हुंदा भाभिए देवर तेरा
कि तू भी हुंदी भाभी मेरी।

अग्गे जे जांदी पैर जे घरसाठिया
घड़े री हुई जांदी ठिकरीं।

अग्गे जे जांदी सौहरा जे झिड़कदा
सासु जे झिड़की, देवर देंदा दिलासा बे।

टके टके रा घडा तेरा जे भजेया
लख टके री भाभी मेरी ओ।

पाणिए जांदेया भलेया राजे देया नौकरा
घड़े जो बाल जायां लाई।

महलां रे हेठिए जांदेया

महलां रे हेठिए जांदेया ओ जुआना
जांदेया ओ जुआना
महले तू आई लै जरूर
काल़ेया कुण्डला वाल़ेया ओ नौकरा।

महलां तां तेरेयां गोरिए कियां ओआं
ओ गोरिए कियां ओआं तोता बड़ा चुगलीबाज
सबज दप्पटे वाल़िए ओ गोरिए।

कीने रंगी तेरी पागड़ी ओ जुआना
कीने रंगेआ एह रूमाल
काल़ेया कुण्डला वाल़ेया ओ नौकरा।

भाभिए रंगी मेरी पागड़ी ओ गोरिए
नारें रंगेया एह रूमाल
सबज दप्पटे वाल़िए ओ गोरिए।

केह्ड़ी तां उमरा री जुआना भाबो तेरी
ओ जुआना भाबो तेरी
ओ केह्ड़ी तां बरहे री तेरी नार।

तिजो ते बधिया गोरिए भाबो मेरी
ओ जानी भाबो मेरी
बालड़ी बरेस री मेरी नार।

भाभिया तेरिया पर बिजल़ी पए ओ जुआना
बिजल़ी पए ओ जुआना

नारा जो डसे काल़ा नाग
काल़ेया कुण्डला वाल़ेया ओ नौकरा।

बिजल़ी ता मेरी ओ गोरिए धरमा री बैहण
ओ गोरिए धरमा री बैहण
नाग कुले रा प्रोहत
सबज दप्पटे वालि़ए ओ गोरिए।

मकर संक्रांति (लोहड़ी) पर गाए जाने वाले गीत

कांगड़ा की भांति बिलासपुर में भी लोहड़ी का त्योहार हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यहां भी लोहड़ी से पहले बच्चे घर-घर जाकर लोहड़ी मांगते हैं। बच्चों द्वारा गाए जाने वाले गीत कांगड़ा की भांति तुकबंदी से बनाए जाते हैं।

डण्डी भई डण्डी
असें गये मण्डी।

मण्डी म्हारे सयौरी
धना मेरा जवाई
धने रिह्नी खिचड़ी
मैं पाया घयो
खाओ मेरे बच्चयो
राजी रईंगा जीऊ।

लम्मियां भई लम्मियां
शेर कणका जम्मियां
कणकां विच बटेरे
दोनों साधु मेरे
चल भई साधु घा जो
घा हुएया थोड़ा
जिया मेरा घोड़ा
घोड़े की काठी
अग्गे मिलेया हाथी
हाथिए फिचके दंद
जय सियाराम चंद।

पुराने समय में लोहड़ी के अवसर पर निम्न गीत भी गाया जाता था जिसमें बच्चे के जन्म पर बधाई का उल्लेख आता है–

आइयो भाभीए लोहड़ी, आई हो
क्या क्या लाई हो भाभीए
क्या क्या लाई हो...।

मुंगिया धबटा हो भाभीए
मुंगिया धबटा हो।

झग्गू टोपू लाई हो भाभीए
झग्गू टोपू लाई हो।

केस केस नूं पन्हाई ओ भाभीए
केस केस नूं पन्हाई हो।

घीघे नूं पन्हाई ओ भाभीए
घीघे नूं पन्हाई हो।

घीघे रे सिरा टोपी ओ भाभीए
पहने राजा गोपी हो।

टोपी नूं पे गेया छिंडा हो भाभीए
बोलो मुंडयो हिम्बा।

हिम्बे रे पैरां कड़ियां हो भाभीए
किने सुनारे घडियां हो भाभीए
किने सुनारे घडियां हो।

घड़ने वाला़ हीरा हो भाभीए
घड़ने वाला हीरा हो।

लगी माघा री झड़ियां ओ भाभीए
लगी माघा री झड़ियां देया हो जी
लोहड़िए नी घीघा मोड़िए नी।

घीघा जमेया था, गुड़ बंडेया था
गुड़ रयोड़ियां थी, भाईयो जोड़ियां थी
भाइए घुंघरू घड़ाए, बोबो रे हाथा पाए।

बोबो झणमण करदी आई
लिति सेर भर बधाई।

तेरी थालि़या बिच केसर
तेरा भला करे परमेसर
देया हो जी!

वार बजी बंसरी ता पार बजेया ढोल
देणा ता देई देया आसा जो लगेया छोड़।

ऋतु गीत (चमासा)

बिलासपुर में गाए जाने वाले इस ऋतु गीत में बारह बरस बाद पति के आगमन पर वह पत्नी के गले में पंजलड़ी हार देखता है। वह मां, बहन, भाभी सबसे पूछता है कि ये हार किसने दिया। अंत में पत्नी उसे स्वयं बताती है कि यह हार उसे देवर ने दिया है। वह छोटे भाई को मारने पर उतारू हो जाता है।

बारहें बरसें कंत घर आया, आई रह्या ठंडे बाग
मरूए दी छाया ओ बारी, मेरी जान मरूए दी छाया ओ बारी।
इक्की हत्थें लोटा दूए हत्थे झारी, जाई रही ठंडे बाग
मरूए दी छाया ओ बारी, मेरी जान मरूए दी ठंडी छाया ओ बारी।
पखुआ झुलांदिया दा पलुआ जे गिरेया, नजरी पया गल़हार
गल़े माला किने तितड़ी मेरी जान, पंजलड़ी किने दितड़ी।
पलंग बहिठिए अम्मां नी मेरिए, नाजो दे गल़े विज हार
गल़े माला किने दितड़ी अम्मांजी पंजलड़ी किने दितड़ी।
हऊं क्या जाणू बेटेया तू मेरेया, जाई अपणी भाभी नूं पूछ।
चरखे बहिठिए भाभो नी मेरिए, नाजो दे गल़े बिच हार।
गल़े माल़ा किने दितड़ी, भाभिए नी पंजलड़ी किने दितड़ी
हऊं क्या जाणू द्योराजी मेरेया, जाई अपणी भैणा नूं पूछ।
गुड़ियां खल्हांदिए बोबो नी मेरिए, नाजों दे गल़े बिच हार
गल़े माल़ा किने दितड़ी, भैणेजी पंजलड़ी किने दितड़ी।
सच गलाइए सुरगे नूं जाईए, झूठेयां दा बेड़ा वार ना पार।

ल्यायां मेरी ढाल ल्यांयां मेरी तलवार, छोटा भाई बढी सटणा
कि गल़े माल़ा जिने दितड़ी मेरी जान, पंजलड़ी किने दितड़ी।

छोटा भाई ना ही ओ बढणा, बढी देणी घरा दी नार
तुध ब्याह ही होर करना, मेरी जान, तुध ब्याह ही होर करना।

पींघ गीत

1

किस किस मुलखा ते आए परोहणे
ढोल तां लगेया अंबर बी बजाणे।
रिम झिम लगियां बरखां झड़ियां
खेत भरे पाणिए करसाण लग्या हसणे।
उच्चे उच्चे पीपल़ पींघा पईयां
द्राणियां जठाणियां लगी पींघा झुटणे।
ठंडे ठंड पाणी कन्नै डाल़ डाल़ नौंह्दे
खड्डा लगी रूण झुण, रूण झुण नचणे।
छुट्टी गिया दिलड़ू चढ़ेया समाणे
उडी गिया हवा कन्नै मुलख बगाने।

2

काहे दी मेरी पींघ लड़ी, काहे केहड़े ऐ डाल़े!
सहियो काहे केहड़े ए डाल़े।
रेसम दी मेरी पींघ लड़ी, चनण केहड़े ए डाल़े
सहियो चनण केहड़ेए ए डाल़े।

3

सावन मास में जब बादल घुमड़ते हैं तो गांव में पींघें डालने की रुत आती है। नायिकाएं अपनी सखी-सहेलियों सहित पींघे झूलती हैं। इस अवसर पर बहू को भी पींघ झूलने का अवसर मिलता है। बहू घटा से अनुरोध करती है कि वह उसके बापू के देस में बरसे। घने अनारों की छाया में हमारा घर है। उन्हें मेरा स्मरण हो जाएगा और सावन के महीने में उसे लिवाने के लिए दूर भाई आता दिखता है।

काल़ी काल़ी पील़िए बादलिए!
बरसो मेरे बापू दे देस
अनारां दे हेठ
रंगी सईयां चूनड़ियां।

उड़ी जायां काल़्या कागा
जाई बोल्यां पेके
सौण महीना धी डीकदी।

केहा जेया तेरी माई
केहा जेये तेरे भाई
केहे जेये तेरे बीरे
भैनां नू मिलन नी आंवदे।

गंगा सरस्वती मेरी माई
तीरथ जे मेरे बापूजी
चंदा सूरज मेरे बीरे
भैणा नू मिलन जरूर आंवगे।

रंगेया नी अम्मा, सूईया चूनड़िया
अलनी मजीठ नी
भैणा नू मिलन असी जावणा।

पारिए ते जांदे नी माए दो जणे
नी सस्सू मेरिए
इक तां नाइया दुआ बीर सावन आया रे!

दिलड़ू नी लाणा

दिलड़ू नी लाणा लोको! दिलड़ू नी लाणा हो
दिलड़ू लगाई कने असे गए हार हो...
दिलड़ू नी लाणा लोको!...

तुझे कने बीती गए दिन मेरे हासी के...
सौगी जिऊंणे मरने रे वादे सै कित्ती रे
हुण नइयो आऊणे सै दिन दूजी बार
दिलड़ू लगाई कने असे गए हार हो...।

सौंणा री न्हेरी रातां खाणे जो पौंदियां
चोरी चोरी मिलणे री यादां सै औंदियां
भूली के नी करना लोको किसी कने प्यार हो
दिलड़ू लगाई कने असे गए हार हो...।

पीपल़ा री छावां थल्ले पींघा सै पांदे थे...
धारा पर बैठी कने गंगी आसे गांदे थे
हुण किती आऊणे सै दिन दूजी बार
दिलड़ू लगाई कने असे गए हार हो...।

प्यारा रियां गल्ला

गल्लां तेरे प्यारा रियां, दिलां रे करारा रियां
करी लै तू करी लै, करार गोरिए...
हसी के न गल्लां टाल़ गोरिए...।

पल पल जिंदड़ी मुकी मुकी जाणी
चढ़दी जवानी तेरी हटी के नी औणी
चार दिन फुल खिली, फेरी माटिए मिलदे
सब कुछ खाई जांदा काल गोरिए...
हंसी के न गल्लां टाल़ गोरिए।

चिट्टे तेरे दांदड़ू, चम्बे रियां कल़ियां
गासला ही जाणे, तेरी आखी कियांह् बणियां
मैं भी छैल गभरू, इक कम्म कर तू
प्यारा पंछी पिंजरे च पाल़ गोरिए...
हसी के न गल्लां टाल़ गोरिए।

झिंझोटी

झिंझोटी गायन में सुकेत के राजा भीमसेन और बंदी बनाए कायस्थ की झिंझोटी गाई जाती है। प्रेमिका कुब्जा लुहारिन कायस्थ को रोटियां पहुंचाती थी। कायस्थ को बंदी बना लिया और जिन हाथों से वह कलम से लिखता था, रोड़ी कूटने लगा। राजा भीमसेन की शोभा यात्रा आने पर राजा ने झिंझोटी सुनी तो कायस्थ को मुक्त कर दिया।

बुरा नी बोलणा ओ मंदा नी बोलणा
कलम दवात ओ कायथा जगतखाने रूल़दे
छुटी जांदी पुलसा री जोड़ी कायथा।

कुब्जा लुहारी ओ कायथा रोटियां पुजांदी
हाथड़ुआं लायां हो भगवां भेस कायथा।

कलमा रे हात्थ ओ कायथा रोड़ियां तू जुकदा
देखी लेयां हात्था रे नसाण कायथा।

भीमसेन राजे री कायथ जलेब जे आओंदी
सुणी लैणी तेरी झिंझोटी कायथा।

हथकड़ी बेड़ियां कायथा, सब जे खुलाई
सुणी कने तेरी झिझोटी कायथा।

भला ओ चंदो ब्राह्मणिए

निम्न गीत हिमाचल अकादमी द्वारा निर्मित कैसेट में पूर्व खेलमंत्री ठाकुर रामलाल द्वारा गाया गया है।

भला के चंदो ब्राह्मणिए बाईं पर रोया तेरा लच्छिया
भलिए ओ बाईं पर रोया तेरा लच्छिया
चंदो ब्राह्मणिए हो...।
भला के चंदो...

भला के चंदो ब्राह्मणिए किनी ओ बजाई बांकी मुरली
भलिए ओ किनी ओ बजाई बांकी मुरली
चंदो ब्राह्मणिए हो...।
भला के चंदो...

भला के चंदो ब्राह्मणिए गद्दिए बजाई बांकी मुरली
भलिए ओ गद्दिएं बजाई बांकी मुरली
चंदो ब्राह्मणिए हो...।
भला के चंदो...

भला के चंदो ब्राह्मणिए कच्चियां खुल़ाई गई ओ जलि़यां रोटियां
भलिए ओ कच्चियां खुल़ाई गई ओ जलि़यां रोटियां
चंदो ब्राह्मणिए हो...।
भला के चंदो ब्राह्मणिए बाईं पर रोया तेरा लच्छिया
भलिए ओ बाईं पर रोया तेरा लच्छिया
चंदो ब्राह्मणिए हो...।

भला नीं बांकिए छोरिए

निम्न दो गीत लैहरूराम सांख्यायन द्वारा हिमाचल अकादमी द्वारा निर्मित कैसेट में गाए गए हैं।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
ओ भलिए ओ बाईं पर निहाल़े ओ तेरा रसिया
छोहरिए ओ बाईं पर निहाल़े ओ तेरा रसिया
पाणी जो तू आयां वे...।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
डेहरा रे पुल़ा पर बैठी के
ओ भलिए डेहरा रे पुल़ा पर बैठी के
छम्म छम्म रौंदी वे...।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
ओ मूईए बिच बगी सतलुज नदिया
ओ भलिए बिच बगी सतलुज नदिया
पार कियां औणा वे...।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
ओ भलिए ओ बैरियां भरियां बंदूकां
छोहरिए ओ बैरियां भरियां बंदूकां
मिलने नीं देंदे वे...।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
नी भलिए ओ धारा पर टप्परू तेरा
छोहरिए ओ धारा पर टप्परू तेरा
ठण्डी होवा लाणी वे...।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
ओ भलिए ओ डेहरा रे पुल़ा पर बैठी के
छोहरिए ओ डेहरा रे पुल़ा पर बैठी के
छम्म छम्म रौंदी वे...।

भला नीं बांकिए तू छोहरिए...
बाईं पर निहाल़े तेरा रसिया

छोहरिए बाईं पर निहाले ओ तेरा रसिया
पाणी जो तू आयां वे...।

पाणी भरदिए चुलबुलिए

पाणी भरदिए नीं चुलबुलिए
पाणिए रा घुटडू पल़ायां भलिए
हस्सी के इयां टाल़ गोरिए
दूरा ते-मुसाफिर आया ओ भलिए।

भरी कने गागरू बन्नी उते रक्खी दे
लोटा नीं गलास मूईए हत्था कने लट्टी दे
छामें छामें पाणी तू पल़ाया भलिए
दूरा ते मुसाफिर आया ओ भलिए।

निक्के निक्के हत्थडू निक्का जेहा घघ्घरू
सुले सुले हण्डयां नीं ता सिजी जाणा चादरू
घुंघटा ते ओ घुंघटा ते मुखड़ा हटाया भलिए
दूरा ते मुसाफिर आया भलिए।

गोरी गोरी बांहे बिच बंगां छैल लगदी
मात्थे री बींदी तिजो बड़ी भारी सजदी
हाखियां च ओ हाखियां च कजला तू लायां भलिए
दूरा ते मुसाफिर आए ओ भलिए।

पाणी भरदिए नीं चुलबुलिए
पाणिए रा घुटडू पलायां ओ भलिए।
हस्सी के इयां टाल़ गोरिए
दूरा ते मुसाफिर आया ओ भलिए।

उड़ी जायां

उड़ी जायां पंछिया उड़ी जायां हो...
बैठी जायां डाल़ी डाल़ियां हो...
गल्लां मोया दिलां दी सुनाणियां हो
बैठी जायां डाल़ी डाल़िया हो...।

चिट्टे चिट्टे चादरू जो लाणा गोटा
कियांह् लाणा दिलडू जमाना खोटा

उड़ी जायां पंछिया उड़ी जायां हो...
बैठी जायां डाली डालिया हो...।

जंगलां दे रोंदे मोर पांदे पाळां
कल्ली भाऊवां जिंदड़ी जमाना खोटा
उड़ी जायां पंछिया उड़ी जायां हो...
बैठी जायां बंदले री धारा हो...।

अम्बूए री डालिया ते बोली कोयला
इसा भरी दुनिया च मेरा कोई ना
उड़ी जायां पंछिया उड़ी जायां हो...
किसी ने नी ममता लाणियां हो...।

तेरा बछोड़ा

तेरा बछोड़ा झल्या नी जांदा
अपणा ही आप अप्पू जो खांदा।

सामखिया रातिं द्युआ बाली बाली देखदी
कल बी नी आया, अज बी नी औंदा
तेरा बछोड़ा झल्या नी जांदा।

तोड़ियां ओ हाणिया कैं पकियां सैं कीतियां
तरस नी आया, कैं तरसांदा
तेरा बछोड़ा झल्या नी जांदा।

कदी बी नी औंदी क्या, याद मेरी बैरिया
हरफ नी लिखेया, लिखी बी नी पांदा
तेरा बछोड़ा झल्या नी जांदा।

बीतणी ए सारी जिंद, ईयां ही क्या हाणियां
फेरे तां लाए, हुण फेरी नी पांदा
तेरा बछोड़ा झल्या नी जांदा।

नलवाड़ी रा मेला

बिलासपुर में प्रसिद्ध नलवाड़ी का मेला हर वर्ष होता है जिसमें मनुष्यों के मिलन के साथ मुख्यतः पशु व्यापार होता है। मेले में प्रियतमा को बुलावा दिया जाता है।

नलवाड़िया रे मेले जो आयां मेरी जान
आयां मेरी जान, तू आयां मेरी जान
तू आयां मेरी जान...।

तू आपणा वादा निभायां मेरी जान
नलवाड़िया रे मेले तू आयां मेरी जान।

लाल लाल चूड़ा बाईं तेरी सजदा
तू चूड़े जो पहनी कने आयां मेरी जान
नलवाड़िया रे मेले तू आयां मेरी जान।

गोरा गोरा मुख तेरा पुन्या रा चन्द्रमा
तू नक्के बिच बालू पायां मेरी जान
नलवाड़िया रे मेले तू आयां मेरी जान।

मेल री मिठाई तिजो कदी तक रखणी
तू आपू आई कने खायां मेरी जान
नलवाड़िया रे मेले तू आयां मेरी जान।

लाल लाल सूट तिजो बड़ा बांका सजदा
तू सूटे जो पहनी कने आयां मेरी जान
नलवड़िया रे मेले तू आयां मेरी जान।

बेड़िया रे ठेकेदारा

बिलासपुर में भाखड़ा डैम के बनने पर गोबिंद सागर नाम की झील का निर्माण हुआ जिससे यहां सांडू नाम के मैदान सहित बहुत सा क्षेत्र पानी में डूब गया। पार जाने के लिए किश्ती का प्रयोग होने लगा। इस घटना पर भी कुछ गीत बने।

बेड़िया रे ठेकेदारा आयां वारा जो
भाईया नेयां पारा जो
आसां पईयां विपतां।

भाखड़े रा डैम आई गया म्हारे सांडुए
म्हारे पुंगरे
उमरां री विपता सै कदी नीं गईयां
ओ लोको! कदी नीं गईयां

आसां पई विपतां।
बेड़िया रे ठेकेदारा...

घर डूबी गए ओ लोको! घराट डूबी गए
घराट डूबी गए
उमरां री विपता सै कदी नीं गईयां
भाईयो! कदी नीं गईयां
आसां पई विपतां।

बेड़िया रे ठेकेदारा आयां वारा जो
भाईया नेयां पारा जो
आसां पईयां विपतां।

डैमा रा पाणी

डैमा रा निल्ला पाणी हो
चल ओ चलिए रमजानी हो।

हौल्यां हौल्यां बोले किस्ती चलाणी लो
डैमा रा निल्ला पाणी हो।

बेड़ी घाट सः इत्थी जे था
अल़ी रा पाट सः इत्थी जे था।
बांका घराट सः इत्थी जे था
जित्थी सब्बीं कणक छल्लियां पह्याणी हो।

इत्थी जे था सः झल्ला रा पत्तन
वारे पारे जो जाणे रा जे था जतन।
लोका रियां जिन्दी रा सः रतन
जित्थी मिल़ी जंता किस्ती चलाणी हो।

इत्थी ले थे सः कलरा रे खेतर
बास्मति पजणे वाल़े सेतर।
लोका री आसां लोकां रे नेतर
इत्थी जे होंगा सः पुल भुजाणी लो।

इत्थी जे थे मंदर खनखेसर
सुक्या दिनां सः बरखां रे घर।

मींह कदी नी बरघा जेकर
द्रायूवा पुजाणा सिवां रा सः पाणी लो।

इत्थी था मंदर रंगनाथा रा
त्वारे मंगले औणा जाता रा।
ठौर ठकाणा शीतला माता रा
मेले जो हण्डोल्यां री लैण लगाणी लो।

इत्थी जे था प्यारा सांडू असां रा
खेल तमास्यां रा सांडू असां रा।
मेल्यां रा सांडू, असां रा सांडू
बैठी असां जित्थी गल्ल सुणाणी लो।

हाए मेरया दिलड़ूआ

हाए मेरेया दिलड़ूआ हो, कुज्जे रेया फुलड़ूआ हो।

घर सै पुराणे जित्थी हस्सेया खेलेया तू
हस्सदेया खेलदेया जित्थी बड्डा होया तू
भूली जायां दिलड़ूआ हो
हाय! मेरेया दिलड़ूआ हो...।

सांडू रे मदाना झीला रा पाणी
हुण सै नलवाड़ी अस्सां कित्थी लाणी
दस्सी देयां दिलड़ूआ हो
हाय! मेरेया दिलड़ूआ हो...।

गलियां च पाणी जित्थी खेलां पाईयां तैं
बड़ सै पुराणी पींगां पाईयां तैं
भूली जायां दिलड़ूआ हो
हाय! मेरेया दिलड़ूआ हो...।

इस गीत में झील बनने से बिलासपुर के डूब जाने का दर्द झलकता है।

भुली जायां ओ

इस गीत में मेला लगने के सांडू मैदान में झील का पानी आ जाने से मेला मनाने की चिंता और दुःख इस गीत में दिखाई देता है।

भुली जायां दिलड़ूआ ओ!
टूटी रेआ फलड़ूआ ओ!
सांडू रे मदाना झीला रा पाणी
असां सै नलवाड़ी हुण किथी लाणी
दस्सी देआं दिलड़ूआ ओ...।

डूबी गये घर बार आई गया पाणी
चल मेरी जिंदे नवीं दुनियां बसाणी
म्हारे बुजुर्गा री रखियां नसाणियां
म्हारे ही साह्मणे बणियां क्हाणियां
भुली जायां ओ...।

सांडू री नलवड़ी रंगनाथा रे मेले
मुकी गे हुण बेड़ी घाटा रे फेरे
भुली जायां दिलड़ूआ ओ...।

भला साधु जोगिया

यह गीत मंडी की तरह बिलासपुर में भी गाया जाता है।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया कांगड़े बन्ने, भलेया कांगड़े दे बन्ने
धूणा तेरा बो जोगिया।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया बालक जनाना, घरैं बैठी रोए बो तेरी अम्मा
घरै जो तू आयां बो जोगिया।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया भाभिया दे टोक्या, भलेया भाभिया दे टोक्या
जोग ध्याया ओ जोगिया।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया हट्टी ते घराटी, गल्लां तेरी बो जोगिया
भला साधु जोगिया।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया घरैं रोए तेरी नार, उजड़ेया जिसा दा संसार
घरै तू आयां बो जोगिया।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया अलख जगायां, भलेया ओ मुड़ी फेरा पायां
घरै जो तू आयां ओ जोगिया।

भला साधु जोगिया...
बो मुएया किकरी दे डाले, भलेया किकरी दे डाले
झोल़ी तूम्बा तेरा ओ जोगिया
झोल़ी तूम्बा तेरा ओ जोगिया।

माता नैणा देवी की भेंट

1

भला हो मां देया लाडलेया
ओ चल मंदरां जो जाणा
भगता! नैणाजी देयां मंदरां जो जाणा
ओ उत्थी जाई करी दुखड़ा सुणाणा
दरसण पाणे हो...।

पान सुपारी ओ मैय्या धजा ओ नरेल़ा
पैहलड़ी भेंट चढ़ाणी
दरसण पाणे हो...।

भला हो मां देया...
अंगणे च तेरे ओ मैय्या पिपल़े रा बूटा
पत्तेयां ने रूणझुण लाई
भगता पत्तेयां ने रूणझुण लाई
दरसण पाणे हो...।
भला हो मां देया...।

बीरचंदे राजे तेरा मंदर बणाया
नागरवेले छाया
भगता नागरवेले छाया
दरसण पाणे हो...।

भला हो मां देया लाडलेया
ओ चल मंदरां जो जाणा

भगता नैणाजी दे मंदरां जो जाणा
दरसण पाणे हो...।

2

दुपट्टा गुलानारी

किने रंगेया दुपट्टा गुलानारी
ओ मां तेरा किने रंगेया
चुन्नी लगे तेरी भगतां जो प्यारी
ओ मां तेरा किने रंगेया।

एह दुपट्टा मेरा रामजी ने रंगेया
मैयूया सीता ने लाई कनारी
ओ मां तेरा किने रंगेया।

एह दुपट्टा मेरा श्यामजी ने रंगेया
मैयूया राधा ले लाई कनारी
ओ मां तेरा किने रंगेया।

हार पिरोया मैयूया संतरंगी फुल्लां रा
फुल चुणी चुणी मेरी फुलवारी
ओ मां तेरा किने रंगेया।

किने रंगेया दुपट्टा गुलानारी
ओ मां तेरा किने रंगेया
चुन्नी लगे तेरी भगतां जो प्यारी
ओ मां तेरा किने रंगेया।

गंगी

बिलासपुर, मंडी और कांगड़ा तक गाई जाने वाली गंगी में बहुत से टप्पे हैं। कुछेक यहां दिए जा रहे हैं–

हरी डालि़ए तू रैह्यां हिलदी
नी ओ हरी
डालि़ए तू रैह्यां हिलदी
लोकां जो तू देयां मरणे ओ मेरी

गंगिए तू रैह्यां मिलदी
लोकां जो तू देयां मरणे ओ मेरी...।

हरी डालि़या जो देयां हिलणे
नी वे हरी
डालि़या जो देयां हिलणे
बैरियां बंदूकां भरी री ओ इन्हां
बैरियां नी देणे मिलणे
बैरियां बंदूकां भरियां ओ इन्हां...।

हरी डालि़या से लागे दाघले
लागे दाघले
डालि़या से लागे दाघले
कन्न लाई सुणेआं सजणा
म्हारे घर माऊंआ दाड़ी दाबले।

चीटे कपड़े वे धोई धोई के
नी ओ चीटे
कपड़े ओ धोई धोई के
दिन काटया तेरे आसरे ओ रात
काटी मूईए रोई रोई के
दिन काटया तेरे आसरे ओ रात...।

पाणी छडणा फीम दाणे जो
नी दाणे जो
छडणा फीम दाणे जो
दूरा री ओ मुईए गंगिए
दिल करदा नी घरा जाणे जो...।

मेरे दिलड़ू जो दुख तेरा दित्तूरा
नी तेरा दित्तूरा
दुख तेरा दित्तूरा
बाटा ते कनारे हटी जा
म्हारा खून तू भतेरा पित्तूरा...।

कुछ अन्य पद

हरिए डालिए तू किह्यां बढणी
किह्यां बढणी
इक ता तेरा पाप लगदा
दूजे दिखी कें तू किह्यां छडणी।

चिट्टे चोल खाणे चीनियां कने
चीनीयां कने
काम तेरे खाओ खसमा ओ जानी
असां जीणा सकीनियां कने।

चिट्टे चओल़ा री पकाणी खिचड़ी
पकाणी खिचड़ी
एक तेरा घर साह्मणे ओ जानी
दूजे बालका री जोड़ी बिछड़ी।

आटा गुन्हीं के पकाणे फुलके
पकाणे फलके
टुटी गै हन कच्चे रिसते।

तेरे कोठे ते बझे बकरे
बझे बकरे
खून पीत्ते लाल चादरूए
मास खादे तेरे नखरे।

तेरे कोठे ते पइयां बिंदियां
पइयां बिंदियां
देखी सोची लायां ममता
एह ममतां खून पींदियां।

चंद चढ़या तारा देखी ने
तारा देखी ने
घर बार छडे छोहरिए
तेरे नैणा रा नजारा देखी ने।

चीट्टा चादरू से धुप छावां रा
धुप छांवा रा
जांदी जांदी लाई गई ममता
मिंजो पता नीं हा तेरे गांवां रा।

घड़ा भरना गागरियां कने
गागरियां कने
खून सुक्के फिकरे ओ जानी
झुले पिंजरा लमारिया कने।

फुल्ल फुल्लेया डाले़ तुण्हिए
डाले़ तुण्हिए
लिखी लिखी कजो भेजदी ओ जानी
मा ता आओणा ठाह्रे उन्हिए।

फुल्ल फुलेया तोरिया रे डाले़
तेरिया रे डाले़
सभ रोग झल्ली जांदे ओ जानी
रोग झल्ले नीं जांदे बछोड़े ओ वाले़।

फुल्ल फुलेया डाले़ कीकरे
डाले़ कीकरे
लोक बोलदे ताप लगूरे ओ जानी
मेरा खून सुक्के तेरे फिकरे।

थाली़ रखूरी खीर खाणे जो
खीर खाणे जो
मापेयां रे घरें जमूरी तू
म्हारे काल़जूए तीर लाणे जो।

चीट्टे कुरते री बाहां अधिया
बाहां अधिया
बार बार बोलयां सजणा
छड घरे मुकाई दे कजिया।

अंडा बोसकी रा सयाणा कुरता
सयाणा कुरता
छम छम रोई साह्मणे
तिजो दरद नीं आई मूरखा।

घर बन्हीं लैणा चीट्टी टीना रा
चीट्टी टीना रा
अस्सां किह्यां औणा पागले
पैहरा लगूरा राती दिनां रा।

इसा माल़ा रे पैंती मणके
पैंती मणके
बेरियां जो देयां मरने
असां मिली लैणा पैंछी बणी के।

चंद चढ़ी रा तारा देखी ने
घर बार छड्डे छोह्‌रिए
तेरे नैणा रा नजारा देखी ने।

चिट्टा कुरता सियाणा अधिया
बार बार बोलेया सजणा
छड ममता मुकाई दे कजिया।

घर बन्हीं लैणा चिट्टी टीना रा
असां किआं औणा पागले
पहरा लगूरा थी राती दिना रा।

काल़े बादल़ा रे टिल्ले आई गै
असां चले परदेसां जो
तेरे दिन बो सबल्ले आई गो।
इस माल़ा पैंती मणके
बैरिया जो दियां मरणे
असां मिली जाणा पैंछी बणी के।

लंबी पट्टियां जो हल़ देई जा
चार दिन आई जा छुट्टियां
मेरी जीऊआ री सम्भाल़ लई जा।

चिट्टी बैटरी सरहाणे रखूरी
राजी रखे परमात्मा
म्हारी ममता तां है नी टुटूरी।

पाणी छडणा फीम दाने जो
दूरा दीए मुईए गंगीए!
दिल बोलदा न घरा जाणे जो।

पत्ता पानो रा बे चरोखे रखी रा
देख्या बेईमानी करदी
दिल तेरे भरोसे रखी रा।

चिट्टे कापड़े सियां दरजी
लामड़े करार देतुरी
हुण मिलणे जो हुई री मरजी।

चिट्टा कुरता सलवारी कने
लगया दिल नई मुड़दा
भावें बढी दे तलवारी कने।

तेरी हट्टियां ते बिके पिसता
डूबे ज्यूना कठण गया
तेरी सक्ला रा कोई नी दिसदा।

तेरे कोठे ते पईयां तुल्लियां
चिट्टे तेरे दंदड़ू छोह्री
आईजा सोने दी बणाई फुल्लियां।

हरी चीली रे चीर तख्ते
हखी रा इसारा जाणी जा
असी जिभा जे नी बोली सकदे।

पाणी भरी लैणा गागरी कने
सड़का रे मोड़ टुटीगे
तेरे हरे पीले चादरू कने।

सोलन के लोकगीत

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अंग्रेजी राज के समय पर्वतीय क्षेत्र की राजनीतिक इकाई को 'शिमला हिल स्टेट्स' के नाम से जाना जाता था। शिमला क्षेत्र में जो रियासतें थीं, उन्हें शिमला हिल स्टेट्स कहा जाता और जो क्षेत्र पंजाब थे (जिन्हें जालंधर डिविजन भी कहा जाता था), उन्हें 'पंजाब हिल स्टेट्स'। इधर सिरमौर, नालागढ़ और उस ओर मंडी, बिलासपुर, कांगड़ा, चंबा के पर्वतीय क्षेत्र होते हुए भी शिमला में शामिल राज्यों का अलग नाम और महत्त्व रहा। हिमाचल प्रदेश के गठन में शिमला हिल्ज की तीस रियासतों का विशेष योगदान रहा। शिमला के ऊपर अट्ठारह ठकुराइयां थीं और शिमला से नीचे बारह।

अट्ठारह और बारह ठकुराइयों के नाम और संख्या यूरोपियन यात्रियों और यहां तैनात पॉलिटिकल एजेंटों, असिस्टेंट कमिश्नरों ने अलग-अलग दी हैं।

जिला महासू जिन शिमला हिल्ज के एकीकरण से अस्तित्व में आया उनकी संख्या इतिहासकारों ने अलग-अलग दी है। यह संभव है कि छोटी रियासतों के बड़ी रियासतों के अधीन हो जाने पर यह संख्या घटती-बढ़ती रही हो। मोटे तौर पर इनकी संख्या अट्ठारह और बारह मानी जाती है जिससे कुल तीस ठकुराइयां बनती हैं।

अट्ठारह और बारह ठकुराइयों की अलग-अलग सूचियां निम्न प्रकार से मिलती हैं। मुख्य रूप से बारह ठकुराइयां निम्न थीं—क्योंथल, कुठाड़, भज्जी, बाघल, कुनिहार, धामी, महलोग, क्यारी, ठियोग, कोटी, कोटगुरु, बघाट।

जेम्स बेली फ्रेजर और कैप्टन रॉस द्वारा दी गई बारह ठकुराइयों की सूचियां एक सी हैं। ये हैं—क्योंथल, कुठाड़, भज्जी, बाघल, कुनिहार, धामी, महलोग, क्यारी, ठियोग, कोटी, कोटगुरु या कुम्हारसेन और बघाट। कैप्टन रॉस ने केवल दो रियासतों के नाम बदले हैं। उन्होंने ठियोग की जगह मांगल; कोटगुरु की जगह कुम्हारसेन लिखा है।

क्योंथल, बारह ठकुराइयों में सबसे बड़ी रियासत थी। इस रियासत का

क्षेत्रफल सौ वर्गमील, जनसंख्या 30,000 से ज्यादा और आमदनी चालीस हजार रुपए थी। ठियोग, मधाण, कोटी, घूंड और रतेश आदि छोटी रियासतें क्योंथल के अधीन थीं।

मुस्लिम काल में क्योंथल द्वारा मुसलमानों को एक हजार रुपए वार्षिक कर दिया जाता था।

बाघल रियासत सतलुज की सहायक नदी गंभर की घाटी में स्थित थी। इसकी सीमाएं काला सेरी (बिलासपुर) से जतोग (शिमला) और कुनिहार से मांगल तक फैली हुई थीं। बघाट की स्थापना धारानगरी से आए अजयदेव के छोटे भाई विजयदेव ने की किंतु इन शासकों ने 'देव' उपनाम न लगाकर 'पाल' उपनाम लगाया। इनमें चालीसवें शासक अंकरपाल के बाद सोलह शासकों ने अपने नाम के साथ 'सेन' लगाया। इसके बाद पुनः 'पाल' लगाया गया। बघाट रियासत अश्विनी और गंभर नदियों के बीच में स्थित थी। बारह घाट होने के कारण इसे बघाट कहते थे। सोलन से सपाटू और कसौली तक इसका क्षेत्र था। रियासत का क्षेत्रफल 60 वर्गमील, जनसंख्या 8000 थी और वार्षिक आय लगभग दस हजार रुपए। धामी परंपरा के अनुसार धामी के ठाकुर अपने को दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान के वंशज मानते हैं। पंजाब गजेटियर में उल्लेख है कि सन् 1192 में पृथ्वीराज चौहान की मुहम्मद गौरी के हाथों पराजय के बाद ये लोग दिल्ली से भागकर रायपुर आ गए जहां से धामी आ बसे। इस राजवंश की स्थापना लगभग तेरहवीं शताब्दी में हुई होगी। धामी का क्षेत्रफल 30 वर्गमील, जनसंख्या 3000 और आय लगभग 8000 रुपए थी। यह ठकुराई शिमला से लगभग पच्चीस किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित थी और कहलूर के अधीन रही।

लगभग बारहवीं शताब्दी के अंत में किश्तवाड़ राजौरी से आया सूरतचंद का संस्थापक राणा माना जाता है। मुस्लिम आक्रमण के समय सूरतचंद ने यहां के मावी लोगों को हराकर ठकुराई स्थापित की। कुठाड़ सपाटू के पास कुठाड़ नदी की घाटी में एक छोटी रियासत थी जो कहलूर, हंडूर या क्योंथल की करद रही।

पंजाब गजेटियर के अनुसार कुनिहार का संस्थापक अभोजदेव बारहवीं शताब्दी में अखनूर, जम्मू से आया। परंपरा कहती है कि अभोजदेव कुछ साहसी व्यक्तियों के साथ इस ओर आया तो रास्ते में पता चला कि कहलूर में विद्रोह हुआ है अतः वह कुनिहार आ पहुंचा। छोटी ठकुराई होने के कारण इस बाघल और क्योंथल का अधिकार रहा। इस ठकुराई का क्षेत्रफल नौ

वर्गमील था और जनसंख्या 2000 से भी कम। वार्षिक आय चार हजार रुपए थी और एक सौ अस्सी रुपए वार्षिक कर दिया जाता था।

कुनिहार के साथ महलोग, बेजा, मांगल गोरखों के शासन की समाप्ति के बाद अंग्रेज सरकार द्वारा सभी शासकों का उनके हक-हकूक वापस किए गए। रियासतें पुश्त दर पुश्त के लिए लौटाई गईं और बेगार के बदले रियासत की वार्षिक आय आंकने के बाद तदनुसार खिराज या कर निर्धारित किया गया। शासकों को वयस्क होने पर ही गद्दीनशीं किया गया।

वर्तमान जिला सोलन के उत्तर में शिमला, पश्चिम में बिलासपुर और पूर्व पश्चिम में जिला बिलासपुर पड़ता है। यहां क्योंथल, बघाट, बाघल, कुनिहार, कुठाड़, बेजा आदि रियासतों में लोकगायकों को प्रोत्साहन मिलने से लोकगायिकी भी समृद्ध रही।

लोकगीत

भक्ति गीत (कृष्ण गीत)

1

तेरी बंसी रा नजारा कृष्णा
तेरी बंसी रा नजारा हो।

आगे आगे बोलो कृष्ण चालो
पाछे गोपिया रा लारा हो...
एकी गुठी पांदे परवत चकेया
चकेया भरमांड सारा हो।

तेरी बंसी रा नजारा कृष्णा
तेरी बंसी रा नजारा हो।

2

गंगा बी जागे जमना बी जागे, करत अस्नान बेला होइया
कृष्णजी तुसे जागदे क्यूं नईं!
राधा खड़िए...

ब्रह्मा बी जागे बिष्णु बी जागे, वेद पढ़न बेला होइया
कृष्णजी तुसे जागदे क्यूं नईं!
राधा खड़िए...

शिबजी बी जागे पारबती बी जागे? तप करन बेला होइयां
कृष्णजी तुसे जागदे क्यूं नई!
राधा खड़ीए...

बृंदावन दीयां गोपियां जागे, शुरू रसाण बेलां होइयां
कृष्णजी तुसे जागदे क्यूं नई!
राधा खड़िए...

गऊंआं बछड़े दोनों जागे, दूध दुहन बेला होइयां
कृष्णजी तुसे जागदे क्यूं नई!
राधा खड़िए...।

जालपा माता

मूल जल अंदर है ओ देवी जालपा बंदेया।
ओ जलो ते पन्नी बो माता कांगड़े आइयां
किले कांगड़े बो तेरा पौण पणाहियां
कांगड़े ते चली बो माता किधर आइयां।
इन्ने कमराडुवे ध्याई बो माता इन्ने...
देखे मनसाऊणीया रे चाले लुंगा गईयां सातुए प्याले
मूल जल अंदर है ओ देवी जालपा बंदेया।

प्रसव पूर्व का गीत

प्रसव पूर्व के इस गीत में युवती को कमर में दर्द होना, दाई को बुलावा और पुत्र जन्म, पुत्र या पुत्री जन्म पर दाई को अलग-अलग पुरस्कार दिए जाने का वर्णन किया गया है। यह गीत प्रश्नोत्तर में है।

क्या तेरा मैलड़ा पेख
नाजो! गोरी क्या तेरा मेलड़ा पेख!

हां जी हां कहां तेरे दरद होई!
लाज शरम की बात लालाजी
मरद पासे कैसे कहूं! हां जी हां...

मेरा तेरा अंतर एक नाजो गोरी
तुम मेरे पासे बोल धरो, हां जी हां...

सिर मेरे कोमर कोर लालाजी
कमर मोरे दरद होई, हां जी हां
कमर मोरे दरद होई...

ढूंढो नगर बाजार लालाजी
चतुर दाई कहां बसे हां जी हां...

आप चले घोड़े स्वार लालाजी
नफर संग साथ लिए, हां जी हां...

खोलो दर से किवाड़ दाई माई
लाला तोरे द्वारे खड़ा, हां जी हां...

किस राजे का पुत्र तू लालाजी
क्या ही तेरा नाम धरो, हां जी हां...

राजा दसरथ का मैं पुत्र दाई माई
रामचन्द्र मेरा नाम धरो, हां जी हां...

जे तोरे जन्मेगा पुत्र लालाजी
तू दाईया नो क्या ई देवे, हां जी हां...

शठ चिंजण का पेड़ू दाई माई
अशरफी मैं रोक धरूं, हां जी हां...

जे तेरे जन्मेगी धीया लालाजी
तू दाईया नो क्या देवे, हां जी हां...

पिऊंल़ी पिऊंल़ी चणेया दी दाल़ दाई माई
रूपैया मैं रोक धरूं, हां जी हां...

बिना खण्डे तलवार लालाजी
जच्चा राणी खूब लड़े, हां जी हां...।

पुत्र जन्म पर बिहाई (बधाई) गीत

1

तन मथुराजी में जरम्या गोकल बजिया बधाईयां
जी मेरा गिरिधर सोले पालणे...

कढ़ाया नंद जो पालणा
अपणे कन्हैये जुग जीवे जी
कढ़ाया जसोधा पालणा
अपणे कन्हैये जुग जीवे जी
कढ़ाया सुभद्रा पालणा
अपणे कन्हैये जुग जीवे जी।

2

मथुरा इक बालक जणम्या गोकल बजियां बधाईयां
नी गोरी बणी दा जाया।
मत देंदियो सैयो गाली, मत देंदियो सैयो गाली
नी गोरी बणी दा जाया।
काये दी मैं गुड़सट देऊं, काये दी कटोरी
पैंणों काये दी कटोरी
नी गोरी बणी दा जाया।
मत दैंदियो सईयो गाली
फूल पतासे गुड़सट देऊं
सूइने दी कटोरी, नी गोरी बणी...
काये दा मैं चगल सिआऊं
काये जड़त जड़ाऊं, नी गोरी बणी
रेशम दा मैं चगल सिआऊं
सूच्चा जड़त जड़ाऊं, नी गोरी बणी
काय दा मैं पलण कढ़ाऊं
काये डोरा लाऊं, नी गोरी बणी
अग्गर चंदन का मैं पलण कढ़ाऊं
रेशम डोरा लाऊं, नी गोरी बणी।

3

कौन घड़ी रामा जन्म लीना
कौन घड़ी राजा रामजी भये
चल मेरी सजनी जुध्या नगरी
राजा दशरथ घर रामजी भये

हरे हरे गोवे रामा अंगन लपाऊं
गज मोतियान चौका पराऊं रामा
चल मेरी सजनी अब धन घर को
दसरथ घरे रामजी भये
राम जी दी माता अंदर सों नगसी
हीरे रतन लुटाए रहे।

4

मधुवन मधुवन कर रहे महाराजेआजी
मधुवन हुये बेईमान, सदा बलिहारिएजी
देवकी पाणिए नो जांदी महाराजेआजी
जसोदा खड़ी एक पाणिहार सदा बलिहारी
जसोधा पूछदी देविकिए पैणे मेरिएजी
दुबली किने गुणे होई
जरमेथे सेयो कंसे पछाड़े पैणे मेरिए
जी दुबली इने गुणे होईजी।

5

हार लै लो हमेला लै लो पतीजुवे बधाइयां
हार मेरे घरे बथेरे मां डोरिया लै के जाणा पाबो
बागे लै लो बेऊर लै लो पतीजुवे बधाइयां
बागे मरे घरे बथेरे, मुझे डोरिया लै जाणा पाबो
टोकणे लै लो टोकणियां लै लो पतीजुवे बधाइयां
टोकणे मेरे घरे बथेरे मां डोरियां लै जाणा पाबो
गौवां लै लो मैया लै लो पतीजुवे बधाइयां।

6

मां की उपेक्षा के गीत

बधाइयों के इस अवसर पर अलग कमरे में पड़ी मां अपने को उपेक्षित समझती है–

सुन सुन सासू सुहागन तू बड़भागन तू
अपने बेटे लेयो जगाये, खबर मोरी कौन लेवे!

खबर लैवे गोरी दी सासु गोरी
खबर लैवे गोरी दा सौरा गोरी
सुन सुन बहूजी सवागण तू बड़ीभागन
जे मेरे जरमेगा पुतर तू क्या कीजे!
जे तेरे जरमेगा पुतर बहूजी, दाम मैं खरचूंगी।
केस रा ये बाग बगीचा
केस रे रंग मैह्ल।
अम्मां रा ये बाग बगीचा
बापूए दे रंग मैह्ल।
जेती बालक खेले बधाईयां।

7

बहन द्वारा गाया जाने वाला गीत–

घुंघरू घड़ाह्रे मैंने पीयू नु जाणा
मेरे भैया दे पुत्तर जमेया।
भगोजो कहारा डोरी बैठ के
पीयू घर जाऊंगी
भैया दे पुत्तर जमेया।

8

शिशु के जन्म पर नानी, बुआ आदि कंगन, बालियां वगैरह लेकर आई हैं।

होलरे दी नानी आई, क्या कुछ ल्याई बे
आथा नों कांगण ल्याई, कानां नों बशगर ल्यायी
पईरा नों सल्वांगण ल्याई, होलर नाच्चे दुड़बूड़ दुड़बूड़
हालेरे दा बुआ आई, क्या कुछ ल्याई बे
आथा नों कांगण ल्याई, कानां नों बशगर ल्याई
पईरा नों सल्वांगण, होलर नाच्चे दुड़बुड़ दुड़बुड़।

यज्ञोपवीत गीत (भयाई)

गढ़ मथुरापुरी शंख बाजेया, गोकुला बजिया बधाइयां
गढ़ मथुरापुरी शंख बाजेया कृष्ण लियो अवतार।
मेरी विमाता तुथड़िए तुष्पा सूरजनहार

मेरे सुयने होरे ओबरूआ रूपे लगे साख दरवाजे
मेर सुयने होरे पंलागिरिए रूपे लगे चारों पावें
जीत पर बंठड़े यो दो जणे, तिया मेरे राम ने दिया।
है मेरी ससुजी सपुतड़िए, हम संग रूठिया ना जाओ
घेरे माहरे गुड़ घियू, गुड़ शूं घोली घोली खाओ।
हे मेरी दराण, जाइणियों हम संग रूठिया ना जाओ
घरे माहरे गाया, छंवारे मेवा लई घरे जाओ
हे मेरी नणदे, लड़कीए हम संग रूठिया ना जाओ
घरे माहरे वागे और व्यौर, पैहनी ओढ़ी घरे जाओजी
हे मेरी सहियो सहेलड़ियो हम संग रूठिया न जाओजी
घरे माहरे गुड़ तिला चाचल के चाव लई घरे जाओजी।

वर की तलाश

कचुनार बैठी बीवी पान चाबे बिनती करेंदी बाबे पास
बाबाजी वर टोलिए।
एक रात रहियो उनकी जात पूछियो उनका गोत पुछियो
ताईं तो लगन गणाइयो।
कचुनार बैठी बीवी पान चाबे विनती करेंदी चाचे पास
चाचाजी वर टोलिए।
देस परदेस पर देना जाइयो हमारी जोड़ी दा वर टोलियो
चाचाजी वर टोलिए।

विवाह में दूल्हे या दुल्हन को तेल डालने का गीत

तेलिया मेलिया तेल पाए
माता सुहागन तेल लगाए।
बहना सुहागन तेल पाए
साते सुहागन तेल पाए।

उबटन गीत

1

वाह वाह कटोरा बटणे दा
इक्क बटणा दूजा जौआ दा आटा

तीजा वाया पाणी
के बटणा मैं न मलेया।

2

बटणे बिच पावांगी बलांवा
जुग जुग जीवे तेरी भांवा
बटणा अंगे मलिए।

तेल (अर्की क्षेत्र)

बा बा कटोरा बटणे दा
बा बा मलैदियां दो जणियां
बा बा कि सक्कियां भैनड़ियां।

मामा का आगमन

मामा पक्ष के लोग धाम लेकर आते हैं। कहीं बहनें भी खाना देती हैं। इसे जून कहते हैं। दूल्हे की मां फूल-अक्षत लेकर उनका स्वागत करती है।

किस दे सोयलडे कौण आईया पई किसदे सोयलडे
पाण्जूए सोयलडे ये मामियां आई पई
किन्ने एओ सादडिया किन्ने बनवाईया पई
नणदे ऐओ सादाईया
नण्देइये बनवाईया पई।
तन्न एओ बाटड़िया जिस तुर आईया
कौण ए हीर पट्टी करैण राजा
नणद हीर पट्टी नणदोईया राजा।
बारात की प्रस्थान

1

किस ने बन्ना तेनो घोड़ी मंगाई
किस ने भी पूरे मोल...नौ रंगे घोड़िया
बापूए ने तों घोड़ी मंगाई
भैया ते पूरे मोल...नौ रंगे घोड़िया।

2

बन्ना खस्सी बईढेया आ, मां नीं जाणा सावरिया
आंगण खड़के बापू पूछेओ कोठे चढ़के आम्मा पूछे
क्यों न जाणा बेटा सावरिया।

दस्स पढ़ी नार चाईए, आईने वाल़ी कार चाईए
तेबे जाणा आम्मा सावरिया।

बधावा या बधाई गीत

बधावड़ेया ओ बधावड़ेया ओ
बीड़ा रणकि जे चलेआ
सानों तेरा चाव बे
आज राजे बेड़े ओ काल़
राणियां महले ओ
परसु साईया बधाईया
सानों तेरा चाव बे
आज बापुए बेड़े ओ काल़
आम्मा कअरे ओ
परसु साईया बधाईया बे
सानों तेरा चाव बे।

स्वागत बारात

आओजी जणेतियो आओ जी...
बइठी जाओजी जणेतियो
बइठी जाओजी...।
केथा ते ये जणेती आए, केथा ते आए साहजी...
दूरा ते जणेती आए, तेथा ते आए साहजी...।

भात बांधना (युवतियों द्वारा गायन)

प्हात दे बोटिया ऐड्डी देर न लाया...
ये साह दूरा ते आएजी।
नई संहदे प्हूख जी...
खाणे ते पहले हाथ नी त्होए, ना त्होए पैर जी...।

बइठे मूए प्हूखे
इन्ना री बान्ही पातल सारी
सारा बान्नेया प्हात बे...
दाल़ बी बाह्नी, सब्जी बी बाह्नी
बाह्ने इन्ना रे टुंडू जी...
साथे बाह्ने मुंह बे...।

भात खा रहे किसी बाराती द्वारा उत्तर–

प्हला किया कड़मेटियों जे तुस्से बाह्नेआ म्हारा खाण
कि बाह्नेया खाण नी खांदा कोई
कि बइठे जानी हाथ संगोई
भले जी...
कि लाड़े दे सिर सेहरा, कि देवी रे सिर छत
कि खाओ जणेतियो क्हियू शक्कर मण्डे प्हतः
कि बोलो रामो राम।

सीठणी

निम्न गालियों में बारातियों का नाम लेकर मजाक उड़ाया जाता है–

1

सेर की छोलेआ री दाल़ मुइए
रीजी कोरिया डिबड़िया।
जणेती बइठे खाण मुइए
बूबा चढ़ रइया क्हूगलि़या।
हाइड़े करदा सामा करदा चार मुइए
उतरेआ मेरिए पुरबलिए पणमेसरिए...।

2

ओ जी बदरिया!
तू आपणिया बूबा क्यूं नी लेआया! (सवाल)
नांगी थी जी नांगी (जबाब)
ओ मयां नालि़ए ल्यायूणी थी होर
त्हारे लइ जाणी थी

तेबे ट्हक्णी थी त्याम्बल़ी रे पाच्चे
होर तेबे देणी थी म्हारे दादे खे
तेस ल्याणुए थे बांके टाल्ले
ना जी ना
चल मुआ च्हूठा!

3

इन्ना चावला बिचे बंद कीड़ा बोलदा
वे इन्ना चावला बिचे...
म्हारे बोटिए भात रिन्या, भात रिन्या
इन्ने जणेतिए काह्डे दंद, आहा...
आज खादा भात, कीड़ा बोलदा बे...।

4

दमलड़ चरखा फिरदा मैं किस मिल पावां पूणियां
ए रे बदरिया, तेरिया जोरूआ खे ग्रए, ग्रए जी ग्रए
नौ मण लोहा ल्यावणा था तेतरी छुरी घड़णी थी
पांडेया खे मणशाणी भी, डफ्फ बाजे डफ्फ...।

5

चीड़ो चीड़ो नी बेबो खट्टी ले गया गलावां
ए जी बदरिया तेरिया खुट्टिया दे पांवां गलावां
गलावां जी गलावां...।

6

दंद बीड़ी लग्गी...लग्गी ओ मेरी जान
दंद तोड़ी लणे दो चार
दंद बीड़ी लगी...
म्हारे भाइया रे मुएं लौंग सपारी
इन्ना बरातियां दे मुएं शुक्का हाड
दंद बीड़ी लगी...
म्हारे चाचे रे मुएं लौंग सपारी
लाड़े रे चाचे रे मुएं शुक्का हाड
दंद बीड़ी लगी...।

ब्याहने जाने के समय 'घोड़ी'

1

घोड़ी तेरी वे लाड़ेया, काठी ने मौजा बणाइया
चंदा बैठणा लागया तारेया जलामल लाइया।
कपड़े तेरे वे लाड़ेया तारेयां जलामल लाइया
चंदा पैहनणे लागया तारेयां जलामल लाइया।
गैहणे तेरे वे लाड़ेया तारेयां जलामल लाइया
चंदा पैहनणे लागया तारेया जलामल लाइया।
सेहरा तेरा वे लोड़ेया कलगी ने मौजा बणाइया
चंदा पैहनणे लागया तारेया जलामल लाइया।

2

मैं तैनूं बोलदी पंडतो केरेया बेटेया
राये बीच चंगा लगन गणाओ।
आओगे मेरे बन्ने केरे जानिया मैं मानियां
राहे बीचे चंगा लगन गणाओ।
मैं तैंनू बोलदी भाभी केरेया बेटेया
राहे बीच चंगा बंगलू बणाओ।
जाओगे मेरे बन्ने केरे जानिया मैं मानियां
बंगलू लऊंगे पड़ेजा राये बीच चंगा लगन गणाओ।
मैं तैंनू बोलदी सौदागर केरे बेटेया राहे बीच घोड़ी खरीदणी
घोड़ली ल्याओगे पड़ेजा राहे बीच चंगा लगन गणाओ।

3

लाड़ा मंगदा घोड़ली आसा घोड़िया चढ़ के जाणा जी
शाहजादे बण के जाणा जी।
शाबाश बन्ने नो जंगल हिरणू चंग रहिए
लाड़ा मंगदा कपड़े आसा कपड़े लैण जाणा जी।
लाड़ा मंगदा पगड़ी आसा पगड़ी लैण जाणा जी
लाड़ा मंगदा सेहरा आसा सेहरा लैण जाणा जी।

4

दिल्ली लाल्या दा लड़का साथे घोड़ी मंगदा
असी दे दिया जुबाब यह जरूर मंगदा।
चिट्टे दंद गुलाबी होंठ मुंह पान चबदा
सिरे दे लंबे लंबे केश बांगी चीर कढदा।

5

श्रीपत स्यास सुखदाई, जहां कारण घोड़ी मोले मंगवाई
आऊंदी गूंदी घोड़ी दर है खड़ौती लाल लगे गज मोती
घोड़ी चढ़ेया मेरा कंवर कन्हैया, साथे संग बलभद्र भैया।
सब कुंदनापुर जाई पहुंचे, देव जागे दानव सब सुते
हरी कुंदनापुर लगिया रसोई, जै जैकार करे सब कोई
ब्रह्मा वैष्णू जणैती आये, वेद रचे त्रिया मंगल गाये
कान कुण्डल गले है रूण्डमाला, मुरली की तुनक तुनां तुन बाजे
अमृत भोजन रूची ने लीना, निर्मल नीर गंगाजल पीना।

मिलनी के समय गीत

ऊंचे तो मण्डल बापू सोयणे वारी
ऊपर बैठा काला काग बे।
केई ते आए बापू पावणे वारी
केई ते आई बरात बे।
दखणा ते आए धीये पावणे वारी
पछमा ते आई बरात बे।
केई बठयालू इन्ना पावणयां वारी
केई बठयाल़ू ये बरात बे।
महले बठयालो धीये पावणयां वारी
बागे बठयालो ये बरात बे।
क्या ही परीऊं इन्नां पावणयां वारी
क्या ही परीऊं ये बरात बे।
गरियां छवांरया इन्ना पावणयां वारी
अलणी दाल़े बरात बे।
तैंनू ना आने बाप मेवणा वारी

मैंनू ना आवे मंदी गाल वे।
चंगी ता बापू गऊंआं वारी
पतीले पतिलियां दे नाल़ वे
चंगी ता बापू गऊंआं वारी
बच्छूआं बच्छियां दे नाल वे।

कन्यादान

हल्दी दी गांठ, सिंदूरे दिया पुड़िया
केसर दी छटकारी राम...।

थरियर थरिया कांबे राम, बेटिया दा बापू
हूण होई तरमें दा बेला राम...।

गऊंदा दा दान बापू नित उठी करदे, पयागा उठी करदे
चंदर गरह्‌ण बापू नित उठी लगदा, सदा सदा लगदा
सूरज गरह्‌ण आज पारी राम...।

हल्दी री गांठ, सिंदूरे री पुड़िया।
थरियर थरियर कांबे बेटिया री आम्मा...
हूण होई धरमें दी बेला राम...

गऊंदा दा दान आम्मा नित उठी करदी पयागा उठी करदी
कन्या दा दान आज पारी राम...।
चन्दर गरह्‌ण आम्मा नित उठी लगदा
सदा सदा लगदा...

सूरज गरह्‌ण आज पारी राम...
हल्दी दी गांठ...।

विदाई गीत

1

आस्सै पाड़ा रिया चिड़िया बे
बाप्पूजी आस्सा उड़ चलिया।

तेरे मैह्‌ला ते अंदर बे बाप्पूजी मेरा डोल़ अड़ेया
मेरे डोले नों मैं कहार पेजूंगा, धीये करे जाया आपणे।

तेरे मैह्ला ते अंदर बे बाप्पूजी मेरी आम्मा रोये
तेरी आम्मा नों मैं चूप कराऊंगा, धीये करे जाया आपणे।

2

माता ने अंदर तेरी सांति कराई कन्या
पिता ने कराई वेद
तूं आज बेटी पावनी जा घर आपणे।

3

मेरा गुड़िया पटारू बे नी बापू तेरे कौण खेले!
मेरे पोतियां बथेरी बे नी धीये घरे जा आपणे।
तेरे चूल्हा जे चौका बे नी बापू हुण कौना करे!
मेरे बहुआं बथेरियां बे नी धीये घरे जा आपणे।
तेरेयां मैहला ते अंदर बे नी बापू मेरी अम्मा रोये
तेरी आम्मां नू चुपाई राखूंगे धीये घरे जा आपणे।

कन्या की संवेदनाओं के गीत

1

इस हृदयग्राही गीत में कन्या द्वारा पिता का देश देखने के लिए ऊंची धार से नीचे हो जाने का आग्रह किया जाता है।

हरीये नी रस भरिए खजूरे
किने बे लाई ठण्डे बाग बे
नियूंडी होया पैणे कालीए धारे
देखी लैणा बापूजी दा देश बे
बापू तो तेरा गढ़ दिल्लीया रा नौकर
उन पर दित्ती बेटी दूर बे
अम्मा दा छोड़या धीये चूल्हा जे चौका
बापू दी छोड़ी राम रसोई बे।
चाचा ता तेरा गढ़ दिल्लीया रा नौकर
उन पर दित्ती बेटी दूर बे
चाची दा छोड़या धीये चूल्हा जे चौका
चाचा दी छोड़ी राम रसोई बे।

2

कन्या : दाड़नी दे बूटे बापू पिंगा पाइंया
सखियां सहेलियां सब पींगण गइयां
मैं भी पिंगणे जाणा...
बिखड़ पहाड़ बापूजी मां कलिया कियां रैहणा!
सहियां सहेलियां पींगणे गइयां मैं भी पिंगणे जाणा।

पिता : बागे जे देऊगा धीये व्यौरा देखी रैहणा
बिखड़ पहाड़े चाचाजी मां कल्लीया कियां रैहणा!
टोकणे जे देऊंगा धीये थालि़या देखी रैहणा।
बिखड़े पहाड़े तायाजी मां कल्लीया किया रैहणा!
गऊंआं दैऊंगा धीये बछिया देखी रैहणा।

3

आंगण तेरा बापूजी परबत होया, बाहर होया परदेस बे
ए लओ बाबा घर आपणा, मैं ता चली बगाने देस बे
बेटी दा मंडुवा चावो ए...।

अम्मा तो तेरी घुलघुल रोए, बाबा रोए मन बे
अम्मा दा भीग्या सूआ चोलणा, तेरे बाबा दा भीग्या रूमाल बे
बेटी दा मंडवा चावो ए...।

रहिया मेरिया गुड्डिया बाहरे कल्लियां, रैया मेरा हार बे
साथो रिया सहेलिया भी बिछड़ियां, मैं तो चल्ली बगाने देस बे
बेटी दा मंडवा चावो ए...।

दादी तो तेरी ढुलमुल रोए, दादा रोए मन मन बे
दादिया रा भीग्या सूआ चोलणा, तेरे दादे दा भीग्या रूमाल बे
बेटी दा मुंडवा चावो ए...।

बापू! तेरा आंगन पर्वत हो गया, बाहर परदेस। मां तो सामने छमछम रोती है, बापू मन में रोता है।

विवाह के समय गाए जाने वाले अन्य गीत

इत बहलड़ा मंगल करे हरे, हरे राम ते आयेया
तेल हंसी मेरी रूकमणी हरीजी का दरशन पायेया।

दरशन तो पायेया कृष्ण घेरा मूंदी खड़ी हर हंसिया
सोयला सिंगा किया कामन मने हमे वदहंसिया।
तनमन तो हमारा उन्हें ही लिया आप जल गहरिया
पैणे हे भवानी पदा ये आन्नद इत मंगल पहलेया।
इत दुआड़े मंगल हरी तैनू बटणा लगायेया
कस्तूरिए पीरमल पेण मसखर रलायेया।
आणू को चंबा और भरूआ फूल लयाओ कूजेया
भैणे हे भवानी पैया आन्नद मंगल दूजेया।

ऋतु गीत

यह एक लोअर महासू का पुरातन गीत है जिसमें वसंत का वर्णन किया गया है। वसंत के विभिन्न फूलों के अंकुरण को और पेड़-पौधों को देवताओं का अवतार बताया गया है।

वसंत गीत

हां रे, रित बी ना मौली जो देवा वे सुहावणी
रे ना, भईया ए आई बी रितु मेरे बाली न बसंता
हरे ना, ए समुद्रा केरी जिगा जे हुंदा सबाल
फूलो रे ना, भईया ऐ कैंवल नरपति
राजे लिया हां उतारा ना।
हां रे पिपल बी ना मौल्या जो देवा बे सेहरे
बणे बे हां, भईया ए पिपल ब्रह्मा विष्णुए लिया हां उतारा
हरे ना, बड़ोटा बी ना मौल्या जो देवा बे सुहावणा।
रे हां, भईया बड़ोटा बी ना जाती रा
महादेवे लिया हां उतारा, हरे ना।
हां रे, केलो बी ना मौली जो देवा वे सुहावनी,
रे ना, भईया ऐ केलो बी पांजे तिने पांडवे लिया हां उतारा हरे ना।
हां रे, चिया केरे गोभू जे हुंदे वे सुहावणे
रे ना, भईया ए चील बी जाती री सठें कौरवें लिया हा उतारा, हरे ना।
हा रे, तुलसी बी ना मौली जो देवा बे सुहावणी
रे ना, भईया ए तुलसी बी जाती री बरागी एक लिया हां उतारा, हरे ना।

बारामासा (अर्की क्षेत्र)

1

आया महीना चैत, सरसों दे खेत
बागे फूली मालती, जिनां दे पिए घर होए
हार गुंदादियां।

आया महीना बशाख, दाड़ू मौले दाख
बगिया बहार बे, जिनां दे पिए घर होए
बहारां मनावदियां।

आया महीना जेठ, अम्बूए दे हेठ
सूई मेरी चोली बे, जिनां दे पिए घर होए
पखुआ झूलांदियां।

आया महीना हाड़, खुली जांदे बाड़
हाड़ पुकारदी, जिनां दे पिए घर होए
स्यो कागा उड़ादियां।

आया महीना शावण, रिमझिम नांवण
पींगां प्यारेया पड़रैया, जिनां दे पिए घर होए
स्यो पींगा झूलांदियां।

आया महीना भादों, खड़लू बी शादो
खड़लू बी नीसरे, जिनां दे पिए घर होए
तिनां दे सब दुख बिसरे।

आया महीना शौज, बामणा री मौज
श्राद्ध प्यारेया हो रहे, जिनां दे पिए घर होए
स्यो पितरां मनांदियां।

आया महीना कतक, नेहरे दिती दस्तक
दयाली प्यारेया हो रही, जिनां दे पिए घर होए
दयालि़या मनांदियां।

आया महीना मग्गर, बैंदियो चाए बंजर
मग्गर सिर गुदांदियां, जिनां दे पिए घर होए
स्यो ल्हेफ भरांदियां।

आया महीना पौष, ठण्डी उड़ाई ओश
पाल़े पड़ी चौगुणे, जिनां दे पिए घर होए
तिनां दे भाग सौगुणे।

आया महीना माघ, बण बोले बाघ
मगर मैं नहांवदी, जिनां दे पिए घर होए
दानां करांदियां।

आया महीना फागण, होल़ी खेले सुहागण
होल़ी प्यारे हो रही, जिनां दे पिए घर होए
होल़ी मनांदियां।

2

चैत चमेली खिड़ रही साजन
तुज बिन क्यों चित उदास किया
सूखे बन में राधा बोली
मोरे चकोरे वनबास लिया
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

वैशाख महीने शावण मौले
बागे पड़ियां बहार सैयो
कंत वालियां हंस हंस मांगे
फूल गुलाबी हार सैयो
वैशाख चौंर गुदाऊं मैं
घडीणू लख्याऊं
अखियां छम्म छम्म नीर बहाए
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

जेठ जेठाणियां दे संग रैंदी
मैहले पलंग डल़ाती हूं
सेजा नी चढ़दी मैं, पांव नी धरती
अपणा आप बचाती हूं
बिना उन संग क्या बोलूं
क्या लगाऊं कण्ठो ते
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

हाड़ महीने कहिए नी अरजूं
तैनो छोड़ूं सब वन में
खिली धूप में सिर अपणे
भस्म करूं सारे तन को
खोलूं जटा सिर को खरल्याऊं
इस विध पौऊंदी उदासी मैनूं
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

श्रावण महीने समझ न तैनूं
काली घटा पिया चूक रैयो
बिजली लसके, चमके डरावनी
तुझ बिन जींदड़ी शुक गईयो
गनियर गरजे, मेघा बरसे
सबी लुक गईया किस पास
मैं कूक शुणाऊं, कोई नी शुणदी बैण मेरी
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

भादो भड़क दी मन में चाव
दिल आपणे को चैन नईं
कृष्ण श्याम मैं ढूंढूं मन्दिर में
जमुना जी वणखण्ड लिया
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

आशुए महीने आसा पनी रैणा
चलणा संग फकीरां दे
लट्ठा थासे मलमल खासा
फाड़ शेटूं इन्हां लीरां
कान फड़ाऊं, मुंदरां पाऊं
कटूं कलेजा, बांटू पेड़े
अब आसा जिऊंणेरी चूक गई
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

कतक महीने सब बन ढूंढू
किस विधि पौनदी दुआसी मैनूं

पक्षी, बिरूए, कश्यावणे, नित उठी बोले
किस दे पागे बास मैंनू
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

मंगर महीने सेजा सुन्नियां सुन्नियां
पिया बिन नींद नहीं आती है
हलक हंदोला दाता बालम
हवा नाल तपाती है
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

पो पलकी पाले पाऊंदी
हुण क्या श्याम नूं केणा जी
कटूं कलेजा बांटूं पेड़े
उसनो लेपन लांदिए
आसा क्या जिऊंणेरी चूक गई
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

माघ महीने आसा करे आऊंणा
किस विध सिर गूंदलईयो
जूल्फा दे बिच बिच्छूए सोए
प्यारे नाल बना लईयो
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।
दाम खर्च के ऊंट मैं मंगवाऊं
इस विध सीस गुंदाती हूं
मैहल आपणे बिठाती हूं
कृष्ण श्याम मूड़ी घर नहीं आए।

फाल्गुन महीने सुहागण खेले होली
रल मिल छिड़कूं रंग सैयो
केसर गडुआ मैं भरदी
रल मिल छिड़कूं रंग सैयो
कृष्ण श्याम मूड़ी घर आए
होली खेलूं उन संग सैयो।

सावन गीत

1. (सावन का आगमन)

सब रस सावण आया सैयो, घन और गरजे सौ सैयो।
घन और गरजे मेघा बरसे, नदिया उच्छल आईया
सैयो सावण आएया।
कपड़े तो तोये रस्से धोबिए, सैयो...
कोयल सोती अंबे डालिया, मोरा ने कूका जगाईया।
फिर मोया मोरा कलच्छणा तैं मेरी निंदा गवाईया।
जाइ पक्वारूं दिलड़िया राए दामोदर पासे
राए दामोदर न्याय कित्ता, क्या बगाड़ा बगाड़ेया
कोयल सोती अंगे डालिया मोरा ने कूका जगाईया।
सैयो सावण आएगा।

2

श्रावण मास में नववधू अपनी मां को संदेश भेजती है कि श्रावण मास आ रहा है, उसे पीहर बुला लो, यह तो पलक झपकते ही बीत जाएगा। मां कहती है उसके पिता तो परदेस में हैं, वह कैसे बुलाए! कन्या अपने पिता को कोसती है कि और बहनें तो उसने पास-पास अच्छे घरों में ब्याही, दाम के लोभ में उसका विवाह दूर पहाड़ में गरीब घर में कर दिया।

शादेयां नी शादेयां आम्मा मेरिए
शावण दे दिन चार, शावण आएया।

मैं कियां शदूं धीए मेरिए
बापू तो तेरा परदेश, शावण आएया।

पीपला पपलोटुआ ओ! तेरिया छांवां मैं खड़ी
खड़ियां ना सुखौंदड़ा ओ, काले काले केश बे।

भला मेरे बापुआ ओ दम देया लोबिया
ओरो पैणा दितियां ओ नेड़े नेड़े दितियां

आऊं पैण दीतड़ी बिखड़े पहाड़ा बे
भला मेरे बापुआ ओ दम देया लोभिया।

ओरो पैणा पैनदियां सूए सूए सूट बे
आऊं पैण पैनदी शाशूए दे त्वार बे।

ओरो पैणा खांदियां चिन्जणी दा भात बे
आऊं पैण खांदड़ी ओ बिथुए दा शाग बे।
भला मेरे बापुआ ओ दम देयां लोभिया।

3. (कन्या द्वारा सावन में मायके बुलाने या पति से आने का आग्रह)

शाद्या नी शाद्या अम्मा मेरिए
सावण के दिन चार, सावण आयेगा।

मैं कियां शादूं धीये मेरिए बापू तो तेरा परदेस
सावण आयेगा।

रूदड़ राओ सावण आयेया
नदिया नो दूई भजू तारूआ
बापूजी घरे आओ सावण आयेगा।

मैं कियां आऊं धीये मेरिये नौकरी तो देणी बगार
सावण आयेगा।
कणका दे लगी जांदी सूसरी पिया सांवरे
चावला दे लगी जांदे कूण कि तुसे घरे आइए।

कणका दे करेया गोरिये बाबरू नाजो गोरिए
चावला री करी लैया धाम, कि आसा पनी आऊंणा।

कोरे ता लिखी भेजूं कागदा पिया सांवरे
घरे तेरे नाजो जी दी रोग कि तुसे घरे आइए।

चंगा तो मंगवाया गोरिये वैद कि नाजो गोरिये
चंगड़ा लाज कराया कि आसा पनी आऊंणा।

4

इस गीत में विरहन नायिका अपने देवर का विवाह भले घर में करवाने की बात कहती है।

सब रस शावण आया सहियो, सब रस शावण आया बे।
घनियर तो गरजे सोहाणा सहियो, घनियर तो गरजे सोहावा बे।

घनिया तो गरजे मेहा बरसे, नदियां उछल आईयां बे।
कपड़े तो रस धोए धोबी, सखियो शावण आया बे।

हे मेरी सहियो सहेलड़ियो, है मेरा देवरू कंवारा बे।
देवरू आपणे दा मैं ब्याह कराऊं, ये दम खरचूंगी पालेदा।

काले़ तो पिऊंले़ और धवले, और भरियां पटारिया।
देवरू आपणे दा मैं ब्याह कराऊं, भले घरा दिया बेटिया।

कोयल सुती अम्बे डालि़या, मोरे कूक जगाइया।
फिट मैंया मोरा कलच्छणेया, तैं मेरी नींद उड़ाई बे।

जाई पुकारूं दिल दिया गल्ला, दिल्ली दामोदरे पास बे।
जुग जुग जियो शावण भादों भाई, जिने भाईए बैणा बुलाई बे।

पैण शदाई डोले़ आई, धन पैणे तेरा आवणा।
सर्व सुहागण तेरी पाभो, बैठी भाईए पैण बुलाई बे।

5

यह चौमासा श्रावण गीत है।

ए नी मेरी मां, चमासा शावण आएया
ए नी मेरी मां, देवली ऊपर ईंट न रखियो।

ईंट छूटेगी तो मरेगी, तो मरेगी दूर नी
ए नी मेरी मां, चमासा शावण आएया।
ए नी मेरी मां, शावरड़े नी भेज
चमासा शावण आएया।

ए नी मेरी मां, कुणियां पछुणियां पड़ी रहूंगी
शावरे मत भेज, चमासा शावण आएया।
ए नी मेरी मां, शावरड़े दे लोक बुरे
अखियां रखदे न्हेर नी
ए नी मेरी मां, चमासा सावण आएया।

ए नी मेरी मां, शाशुए जाए बौत सारे
मण पकाया, मण खल्वाया, पास बचेगा एक फुल्कू
ए नी मेरी मां, चमासा शावण आएया।

ए नी मेरी मां, छोटा देवरू
बौत लाडला, से बी मंगदा फुल्कू
चमासा शावण आएया।

ए नी मेरी मां, पीपल पूजण मैं चली
हाथ में गुगल धूप नी, चमासा शावण आएया।
धूप जले, गुगल की सुगन्ध आए
मन मन भर हो जाए उदासनी, चमासा शावण आएया।
ए नी मेरी मां, चमासा शावण आएया।

6

इस श्रावण गीत में नायिका के विरह का वर्णन है।

शावण आया सैयो शावण आया रे
मैं परदेशण मेरा लाल सिपाहिया
मेरी बदिया दी सार न छोड़ी
छोड़ी तो छोड़ी चीरे वालेया सिपाहिया
मैं परदेशण मेरा लाल सिपाहिया।

घड़ी दे सनयारा मेरे पैरा रे गुठड़े
गुठड़ेयादे कारण मेरे बढ़ी जांदे दुख
मेरी बदिया दी सार न छोड़ी
मैं परदेशण मेरा लाल सिपाहिया।

घड़ी दे सनयारा मेरे हाथा दे गजरे
गजरेया दे कारण मेरे पै जांदे झगड़े
मेरी बदिया दी सार न छोड़ी
मैं परदेशण मेरा लाल सिपाहिया।

छोड़ी ता छोड़ी चीरे वालेया सिपाहिया
मैं परदेशण मेरा लाल सिपाहिया
मेरी बदिया दी सार न छोड़ी
छोड़ी तो छोड़ी चीरे वालेया सिपाहिया।

लोहड़ी गीत

माघ संक्रांति को मनाई जाने वाली लोहड़ी सोलन क्षेत्र में भी प्रचलित

है और इस दिन बच्चों द्वारा लोहड़ी मांगते हुए निम्न गीत गाया जाता है–

लोहड़िए नी गीगा मोड़िये नी
गीगा जम्या था, गुड़ बंड्या था
गुड़ रेवड़ियां थिया
भाइयां जोड़िया थिया, भाई ल्याऊंदा था
भाभो लैंदी थी, भाइए घूंघरू कढ़ाए, भाभो हत्थ पैर पाये
भाभो छुणमुण करदी आई।
तिल फड़ाक्की दे दे
चावल मोड़ी दे दे, जीयो तुस्सा रे झग्गे वाले
जीयो तुसा रे टोपे वाले, भरमर ल्याऊ छज्ज
बरशां दे ध्याड़े, कुड़ियां आइयां अज्ज
चलो री कुडियो मेले, रूपये साड्डे पाले
रूपये दी मैं शक्कर मंगवावां, शक्कर मंगवांवा
आग्गे तेरी आम्मा तां डोरिया ल्यावां
गुलाब दा दाणा, गुलाब दा दाणा
अस्सी कुड़मा दे पंडोरे, सानू छींक दे डोरे।
देओ पाइयो तलूएं देओ
पाइसरें दाडू खोड़।

अन्य प्रचलित गीत

1

कौआ नी कौआ तेरी लम्मियां उडारां
जाई तां आयां मेरे पेक्के, मैं बारी जां
जाई तां आयां मेरे पेक्के।
अम्मां मेरिया नूं तूं गल्ल मत दस्सदा
चरखे बैठी अम्मां रोंवदी, बारी जां।

बापूए मेरे नूं तूं गल्ल मत दस्सदा
कचैरिया जांदा बापू झूरदा, बारी जां।

भाबो मेरिया नूं तूं गल्ला मत दस्सदा
कुड़ेयां दर भाबो जाई हस्सदी, मैं बारी जां।
भाईए मेरे नूं तूं गल्ल मत दस्सदा

कीयां तां भैणां तेरी रैंवदी
सुक्की रूखी रोटी भाईजी डंगरा दा खाणा
ऐही तां सस्स मिंजो देंवदी, मैं बारी जां

फटेया पुराणा भाईजी डोमां दा लाणा
ऐही तां सस्स मिंजो देंवदी।

2

छल्लि पांदोरिए बागोरिए, हाले लाम्बिए चीए बेरे
पशुरी जी बेदरगो चुफिए, झेल्ली राक्खि मोए जीबे बेरो।

आक्खिदा तेरे काजुल सज्जा, मांज माथे दी बिंदी बेरे
बाग प्रोली होईदी आपणी आखी, तूए बोल पाऊ किन्दी बेरे।

छाल्ली पांदेरे को फढ़ूरा पारणी पंछिए पीआ बेरे
ताहे खातरे सारा जम्माना, हाम्मे बैरी कीयां बेरो।

डाक्को पांदी रीए लदिए बोलू, छल्लि पांदो रो काबा बेरे
देशे मुलखे हांडा कथेरा, दिलड़ू कोई नो लग्गस बेरो।

राज मिलो तु तब बि दूर, जीओदी बास्सिदी अस्सो पराई
करमो लिखिदी मेढई कस्सरे कब्बो केत्थी बोल तू ए बेरो।

अब घरे आइए

इस गीत में नववधू पति को कई बहाने लगाकर बुलवाती है किंतु कोई न कोई बहाना कर देता है। अंत में जब वह अपने बीमार होने की बात लिखती है तब पति तुरंत घर की राह पकड़ता है।

कणका नो लगी जांदी सूसरी, पिया सांवरे
चावला नो लगी जांदे कूण, कि अब घर आईए
कणका दे देयां गोरिए, नीऊंदे नाजो गोरिए
चावला दे देई देया तग, कि आसा नी आवणा।

कोरे तो लिखी पेंजूं कागदा, पिया सांवले
घरे तेरे वीराजी दा ब्याह, कि अब घरे आईए
चंगे तो फटाया गोरिए बाकरेया नाजो गोरिए
चिंजण तू पाया रसोई कि आसा नी ओ आवणा।

कोरे तो लिखी पेजूं कागदा, पिया सांवले

घरे तेरी मायाजी दा रोग, कि अब घरे आईए
चंगे जे लाया बैदया, नाजो गोरिए
चंगड़ा लाज करायां कि आसा नी ओ आवणा।

कोरे तो लिखी पेंजूं कागदा, पिया सांवले
घरे तेरी माताजी दा शोग कि अब घरे आईए
चन्नण मंगवायां गोरिए चिता चण्यायां, नाजो गोरिए
देखी लयां धूएं दी तूं रोल, कि आसा नी ओ आवणा।

कोरे तो लिखी पेजूं कागजा, पिया सांवले
घरे तेरी नाजोजी दा शोग कि अब घरे आईए
हाथों ते छुटिया गोरिए कलमा, नाजो गोरिए
आंजूए भीगीगा रमाल कि अब घरे आईए।

ए लौ रावा अपणी नौकरी, घरे मेरी नाजोजी दा रोग
कि अब घरे जाइए,
पलंगों ते उतरी नाजो, पीढ़े जे बैठी, पिया सांवले
मुसकांदी करदी सलाम, नाजो गोरिए
कि अब घरे आईए।

साजन प्यारी

यह गीत कांगड़ा की ओर गाए जाने वाले 'बारां तां बरसां' की तरह है। बारह बरस बाद जब पति घर लौटता है तो उसे अपनी पत्नी नजर नहीं आती। सास उसकी प्रेयसी को खाने में जहर मिलाकर मार देती है। पति उसके वियोग में जोगी हो जाता है।

ओरी दिने देंदी शाशुए एक जे टिकिया
आज क्यों दिया थाल परोसा!

औरी दिने लगी बहुए सबी ते बूरी
आज लगी पूतो ते प्यारी।

खीर बी खाई बहुए नींद बी आई
नींद बी आई, केई टाल़या लाल पलंगुआ।

कोठे ते अंदर बहुए कोठड़ी कहिए
तेती टाल़या लाल पलंगुआ।

बारिए जे बरसें कन्त घरे आया
आई बैठ्या ठण्डिया छावां।

आम्मा बी दिशुओ बोबो बी दिशओ
एक नीं दिशुओ साजन प्यारी।

कोठे अंदर कोठड़ी कहिए
तेती सुती साजन प्यारी।

ओरे दे आम्मा लौंगा दी पुड़िया
ओर फुलां दी छड़िया
आप जगाऊं साजन प्यारी।

छड़िया बी बाईया आमा जाग न आऊंदी
मरी पड़ी साजन प्यारी।

दे मरने पूता साजन प्यारी
सात कराऊं तेरे ब्याह बे।

एक ले आऊं पूता गोरे रंगो री
एक ले आऊं काल़े रंगो री।
न चाईयो आम्मा गोरे रंगो री
न चाईयो काल़े रंगो री।

ओरे जे ल्याओ आम्मा तीनों जे कपड़े
दान कराऊं साजन प्यारी
चन्ण चण्याऊं आमा चिता चण्याऊं
अपणे आप जलाऊं साजन प्यारी।

तूं तो है माय मेरी, क्या बोलूं ताखे
ओरे जे ल्याओ आम्मा भगुंआं जे कपड़े

दर दर अलख जगाऊं
साथे साजन प्यारी दा नवारण कराऊं।

करमो

इस गीत में वेदना की मार सहते प्रेमी की व्यथा है जो पशु के समान अपनी स्थिति बताने में असमर्थ है। प्रिया के बिना काग और गीध की तरह दुनिया घूमकर भी मन कहीं नहीं लगता।

करमो लिखिदा मेढ्डई कस्सरे
छाल्ली पांदोरिए बागोरिए।

हाले लाम्बे चीए बेरे
परशुदी जी बेदणो चुफिए
झेली राक्खि मोए जीबे बेरे।

आक्खिदा तेरे काजुल सज्जा
मांण माथे दी बिन्दी बे रे
बागप्रोली होईदी आपर्णी आखी
तूए बोल पाऊ किन्दी बे रे।

छाल्ली पांदेरे को फढ़ूरा
पाणी पंठिए पीआ बे रे
ताहे खातरे सारा जम्माना
हाम्मे बैरी कियां बे रे।

डाक्को पांदो रीए लदिए बोलू
छाल्ली पांदी रो कागो बे रे
देशे मुलखे हाण्डा बथेरा
दिलडू केई ना लग्गा बे रे।

रोजे मिलो तु सुब बि दूर
जीओ दी बास्सदी अस्सो पराई
करमो लिखिदी मेढ्ढई कस्सरे
कब्बो केत्थी बोल तू ए बे रे।
ठण्डा पाणी मेरे क्यारो रा

यह एक लोकप्रिय गीत है जिसमें बरसात के आने पर नायक नायिका को धान के खेत को रोपने का आमंत्रण देता है।

ठण्डा पाणी मेरे क्यारो रा
आईजा संतिए धान रूमणे।

तेरे गल़ा दे सुने री कण्ठी
मेरे गल़ा दे टाई हो
मेरे गल़ा दे टाई।

दिने दुपैहरे तेरी हाखिए
दुनिया लुटी रो खाई।

साजनू

इस गीत के दूसरे बंध के बोल 'लामण' की तरह हैं यद्यपि इन्हें अंत में दो पंक्तियां और देकर बढ़ाया गया है। चूड़चांदनी के शिखर का ठंडा पानी पीने के लिए पत्तों की नाली बनानी पड़ती है। नायक कांगू व कात्थी के फूलने पर साजणु प्रेमिका से मिलना चाहता है।

ठाण्डा पाणी चूड़ियां पाणी रा
लाणा पातरू रा नाल़ा
नाल़ा मेरिए साजणुआं
लाणा पातरू रा नाल़ा।
फुल्लिया रोला फुलटू फुलटू
डाल़ी फुल्लो लो कांगू
खाया पीया तौ मुकता हाम्मे
तेरे हाथो रा मांगू।
मांगू मेरिए साजणुआं
तेरे हाथो रा मांगू।

फुल्ली करीला फुलटू दाड़िए
डाल़ी फुलणी कात्थी
तुम्मो चाली हाम्मो छाड़िरो पोरे
म्हारे चालणा था सात्थी।
सात्थी मेरिए साजणुआं
म्हारे चालणा था साथी।

फुल्ली करीला फुलटू फुलटू
डाल़ी फुलणी धतुरा
किशा झिलो मैं तेरा बछोड़ा
लग्गा काल़जे दा छुरा।

बागोरिए

यह एक विरह गीत है जिसमें टिब्बे की हवा को संबोधित कर कहा गया है कि तुम चीड़ के पेड़ों को हिलाती रहो। मेरे साजन को मुझसे अलग

कर दिया गया है।

गीरें टिब्बे रिए बागोरिए
मेरिए हिल्ले लम्बिए चीए
गोंपे मेरिए छात्तिए ढाओ करे
हामो गम्पणि खे कींए।

बुरा नि सुंचणा तेस्सा बिम्हारे
जीणीए जीओ दे टुकड़े कींए
हामो खे आश्शुरा गोहण देइरो
मांईगे छाड्डा ना कीएं।

तेरे जीओ री बेदण कस्सरे
जाणनि कोएं न तेरा
फाट्टे दे भाग आस्सो तेरे जिन्हो
साजन दूरो खे न्हीए।

आक्खिरे आश्शु नि पाणि रे टिप्पेई
अस्सो इ मोती रे दाणे
कई बार इन्ने कई रे बिछड़े
फुलटू नाड़ी खे आणे।

मोह्या मेरा दिलड़ू

नायिका के नयनों के काजल ने मन मोह लिया है। छाया में भी दिल जल रहा है। मुझे मझधार में छोड़कर न जाओ। चाशा फूल खिले हैं, तुम्हारी बाट जोहते-जोहते मेरी आंखों के आगे जाला छाता जा रहा है।

मोह्या मेरा दिलड़ू नैना
तेरे बोलो काल़े काजले।
ठांडिया छावां दे दिलड़ू जल़दा
नीर मेरी आखटी दा बे ढल़दा
घेरी मेरी जिंदडी बोलो नैना
पूरबो रेला बादले।

आड़गी न लाई नैना, भोई जी बटू धाई जा
कि तू मेरे मरीणे रा जतनो बताई जा।

बारी बारी री खुटी रामा
सलामों होये पारवले
घोरो गे नैना फूला बेलुबा याशा
चूटी चूटी पोड़ी सबे साथो री आशा।

बाटो आंखी पड़े जाले देखियो देखियो
मोह्या मेरा दिलड़ू नैना
तेरे बोलो काले काजले।

मेरे चादरू

मेरे चादरू दे किंगरी लवाई दे।

माखे नवां सूट स्याई दे
मा मेले जो कियां जाणा हो।
जेठाणी मेरी ताने देंदी तू पैर
झांझर कएं नी पांदी...
माखे पैरा खे झणंझरां ल्याई दे
मा मेले जो कियां जाणा हो।

शिब्बी का गीत

प्रेमिका शिब्बी को संबोधित कर कहा गया है जिंदगी दो दिनों का मेला है। तुम शिखर पर बंगला बनवाना जिसमें खिड़की रखकर संसार को देखना। हमारा प्यार प्रेम-पत्रों पर निर्भर है किंतु मैं तुम्हें मिलने का प्रयास करूंगा। अन्न को देखने से भूख नहीं मिटती और न ही ओस चाटे प्यास बुझती है।

शिब्बिए दुई दिनां दे मेले़
तेरे बागां दे जमटू पाक्के
मेरे बागां दे केले़।
भला करीरो बुरा नी होणा
रई जीओ रे खेले।

घाटलि पांदे मोए बंगला चीरणे
राखे गिरदे खे मोरी
दुनियां देखे तु राज्जि रो दाड़िए
इणजे मले करले।

चिट्ठी लिक्खिरी जीवण किश्शे
मिलणे आईरा आप्पी
भुखा रजदा नी नाज देखी रो
चीश्शा रजदा नि तेल़े।

नाटी : शायली रे जंगले

शायली रे जंगले चिकणी माटी
बैठी लओ भुइयां दे शुणी लओ नाटी।
शायली रे जंगले फूली करयालो
आगले माणुओ पिछलेया न्यालो।
शायली रे जंगले चिकणी माटी
माया रे खसमे घरो ते पट्टी।
शायली रे जंगले दिवा शलाई
आई बलाई मेरे शिरे पाई।

गिद्धा

पंजाब की भांति सोलन में भी गिद्धा नृत्य के साथ एक लोकप्रिय गायन है। गिद्धा के गीत नृत्य के समय सोलन, बिलासपुर में समान रूप से गाए जाते हैं।

गल़ो रा हार

तू बे जानी मेरो गल़ो रा हार।

तेरी तेरी खातर खाणा बणाया
तेरी तेरी खातर...
खाई के खल़ाई के तू लंघी जाणा पार
तू बे जानी मेरो गल़ो रा हार।

सूईने री गड़बी गंगाजल पाणी
सूईने री गड़बी...
पी के पल़ाई के तू लंघी जाण पार
तू बे जानी मेरो गल़ो रा हार।

चुन चुन कल़ियां मैं सेज बछाई
सई के सुल़ाई के तू लंघी जाणा पार
तू बे जानी मेरो गल़ो रा हार।

गल्लां लाई लो मेरे साजणा

असां केह्ड़े रोज मिलणा
गल्लां लाई लो मेरे साजणा।

तेरी तेरी खातर पाणी भराया
तेरी तेरी खातर...
पाणी पी लो मेरे साजणा

असां केह्ड़े रोज मिलणा।
तेरी तेरी खातर खाणा बणाया
तेरी तेरी खातर...
खाणा खाई लो मेरे साजणा
असां केह्ड़े रोज मिलणा।

चुन चुन कलियां मैं हार परोया
चुन चुन कलियां...
हार पैह्नी लो मेरे साजणा
असां केह्ड़े रोज मिलणा।

चुन चुन कलियां मैं सेज बछाई
चुन चुन कलियां...
सेजा सोई लो मेरा साजणा
असां केह्ड़े रोज मिलणा।

असां केह्ड़े रोज मिलणा
गल्लां लाई मेरे साजणा।

उड़ी जाणा भौरा

कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ उड़ भौरा मेरे कन्ना ते बैठया
कांटे रा करी गिया चूरा चूरा
कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी उड़ी भौरा मेरे मात्थे पर बैठया
बिंदिया दी करी गिया चूरा चूरा
ओ कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ उड़ भौरा मेरे नक्के ते बैठया
बालुए दा करी गिया चूरा चूरा
ओ कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी ड़ी भौरा मेरी बांही ते बैठया
गजरे दा करी गिया चूरा चूरा
ओ कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी उड़ी भौरा मेरे हत्थे पर बैठया
मंदिया दा होई गिया चूरा चूरा
कल उड़ी जाणा भौरा दूरा दूरा।

उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल

उड़ी जाणा बसंतिएं तेरा रमाल।

एस खद्दरे री कुरती रा इतणा गमान
जे हुंदी ए रेसम की उड़ती समान
उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल।

खद्दरा रा चादरू लो इतणा गमान
जे हुंदा एक रेसम का उड़ती समान
उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल।

खद्दरा री सुथ्थण लो इतणा गमान
जे होती ए रेसम की उड़ती समान
उड़ी जाणा बसंतिए तेरा रमाल।

सिंधिया जमाना

सिंधिया जमाना रे तेरे नैणा रे लोभी
जमाना सिंधिया...हाय जमाना सिंधिया!

मास खाया तेरी माथे री त्यूड़िए
लोहू पीया तेरी हाखी
जमाना सिंधिया...हाय जमाना सिंणिया!

वार सामणा शिमला शिमला पार सामणा जाखा
बोली चाली की आई बे छोरिए केसी जोगा ना राखा
जमाना सिंधिया...हाय...हाय...जमाना सिंधिया!

सोलणी बजारे नीमू

सोलणी रे बजारे दे बोलूं
पाया पापणिए डेरा बे दाड़िये
राजी तो रैणा मेरी निमूए।

भला नी होगा बे कांशीरामा रा
जिन्ने तू परदेशा खे दित्ती बे दाड़िए
राजी तो रैणा मेरी निमूए।

भला नी होगा बे ठाणेदारा रा
जिन्ने तूं परदेशा खे दवाई बे दाड़िए
राजी ता रैणा मेरी निमूए
सोलणी रे बजारा दे बोलू...।

पब्बर विद्रोह

नजरूए पब्बरवाले तेरा भवन चणाया था
चुप्पे मुए छोरूओ तूसे आऊं मरवाया था।
नजरूए पब्बरवाले तेरा भवन चणाया था।
बावें ते एक शंखिया आया तिन्ने मान पटाया
मोलू मैहर खरा चंगा फाट चलाया
पीरूओ ने तलवारा चलिया फूल्मू कैद कराया
जुग जुग जीयो थोलो मांगता जिन्ने कवित्त बणाया।

खाणा पीणा नंद लैणी

लोकगीत एक क्षेत्र से दूसरे में यात्रा करते हैं। इसी तरह लोकगायक भी एक सीमा में न बंधकर दूर तक अपना आधिपत्य स्थापित करते हैं। बिलासपुर की मशहूर गायिका गंभरी के गीत सोलन में भी अपनी बोली में परिवर्तित कर गाए जाते हैं। यहां भी कहा जाता है नृत्य तो बंदले की गंभरी ही कर गई और ढोलक केवल बसंता (गंभरी का प्रेमी) ही बजा गया, अर्थात् दूसरा उनके मुकाबले में कोई नहीं।

खाणा पीणा नंद लैणी ओ गम्भरिए
खाणा पीणा नंद लैणी ओ।
नचणे खे नाची गी बंदले री गम्भरी
छिंजा रचाई गिया बसंता हो

खाणा पीणा नंद लैणी ओ गम्भरिए
खाणा पीणा नंद लैणी ओ।
नचणे खे नाची गी बंदले री गम्भरी
ढोलकी बजाईगा बसंता बे गम्भरिए
ढोलकी बजाईगा बसंता ओ।

बस्सा दे आई

यह तीन गीत सुश्री भुवनेश्वरी तनवार सुपुत्री हेतराम तनवार ने हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी के 'हिमाचल के लोकगीत' कैसेट में गाए हैं।

बस्सा दे आई ओ तेरी याद
फोटू रहिगा तेरे कमरे
बस्सा दे आई ओ तेरी याद।

तेरी तेरी खातिर खाणा बणाया
खांदे खांदे आई ओ तेरी याद
फोटो रहिगा...।

तेरी तेरी खातिर पाणी भराया
पींदे पींदे आई ओ तेरी याद
फोटो रहिगा...।

तेरी तेरी खातिर बाग लगाया
बागा बिच आई ओ तेरी याद
फोटो रहिगा...।

तेरी तेरी खातिर मोटर मंगाई
जांदे जादे आई ओ तेरी याद
फोटो रहिगा तेरे कमरे
बस्सा दे आई ओ तेरी याद।

हरिया कमीचा वाल़ेया

हरिया कमीचा चाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया
हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया।

सोलनी रा टिकट कटाया सपाठूए जाई उतरेया
हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया।

शिमले रा टिकट कटाया कुम्हारसेन जाई उतरेया
हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया।

कालका रा टिकट कटाया ओ चण्डीगढ़ जाई उतरेया
हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया।

नाल़ा रा टिकट कटाया ओ दिल्लिया जाई उतरेया
हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया।

हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया
हरिया कमीचा वाल़ेया ओ बागें जाई उतरेया।

अज्ज दिन मसां

अज्ज दिन मसां ल्याया मेरेया माहिया
अज्ज दिन मसां ल्याया ओ मरेया माहिया।

मैं जो गई थी मैहल चौबारे
जांदिया न छेड़ेयां रे मेरे माहिया
अज्ज दिन...

मैं जो गई थी पाणि भरनियां
पींदिया न छेड़ेयां ओ मरे माहिया
अज्ज दिन...

मैं जो गई थी बाग तमाशे
जांदिया ल बोल्यां रे मेरे माहिया
अज्ज दिन...

मैं जो गई थी खाणा खाणे
खांदेयां न छेड़ेयां रे मेरे माहिया

अज्ज दिन मसां ल्याया ओ मेरेया माहिया
अज्ज दिन मसां ल्याया ओ मेरेया माहिया।

कांदो पांदे बंदूकड़ी

इस गीत में नायक की पूर्व प्रेयसी के विरह का वर्णन है।

कांदो पांदे बंदूकड़ी
अस्सी कमरे छुरा बे रे

तुम्मे चाले पोरे घराखे
हाम्मो लागणा बूरा बे रे।

सित्ती हाण्डो बोलो हिरणो
बिक्करी दे मोरो बे रे
हाम्मे कीए नौरे बद्दिखे म्यां
ताहे साजनो होशे बे रे।

छाल्ली पांदे आस्सो देवरा
तिन्दी गिरदी मोरी बे रे
हाम्मे तरशे देखणी खे
तुम्मे फेरी आक्खि पोरी बे रे।

हरी शेरो शू भुलवा हो बो
शुक्कि शेरी रा तेलो बे रे
तुम्मी साई लाया दिलड़ू जो
शल़ी पांदे राखो टांगी बे रे।

एक्की हाथो दे छतरी

इस गीत में दाड़वी गांव का घमंडी माठिया अपनी प्रेमिका या पत्नी की रीत नहीं काटता यानी उसे 'रीत' के रिवाज के अनुसार तलाक नहीं देता। सुंदरू की सहेली उसके नए प्रेम पर गीत बनाती जिससे सबको पता चल जाता है किंतु माठिया रीत की रस्म पूरी नहीं करता जबकि सुंदरू को अपनी जवानी ढल जाने का भय है।

एक्कि हाथो दे छतरि तेरे
एक्को हात्थो दे गलाब्बो
रीत बी ना काटदा माठेया!
इश्शा दाड़बी रा न बाबो।

सेरी बिचो बोल्लि अज गेरी
हरी कुकड़ी रे डाण्डे
हाम्मे ना गाई तू सुंदरूआ
गाई तु गंगिए राण्डे।

एक्कि हात्थो दे लोटड़ी अस्सो
दुज्जो हात्थो दे करंडी

राती काटणो खे मुकरी गोआ
इश्शा माठिया घमण्डी।

एक्किक हात्थो दे गलास तेरे
दुज्जे हात्थो दे दुवान्नी
उश्शेई खिड्डुणी लग्गिदी मेरी
इश्शी चज्जोरी जवानी।

मामटिया बोलूं दयारामा

ये दो गीत श्री हेतराम तनवार ने हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी के 'हिमाचल के लोकगीत' कैसेट में गाए हैं। ये दोनों गीत उन्हीं द्वारा लिखे गए हैं जो लोकगीतों के निरंतर परंपरा के पोषक हैं।

मामटिया बोलूं दयारामा चल घरा खे जाणा
ओ मामटिया बोलूं दयारामा चल घरा खे जाणा
घरा की ताखे बूरी ओ लागी
जाई रो दिलड़ू लाणा
ओ...

ताते पाणी री पालखी पालखी
थकी थकी रो जाणा
न्हाई धोई रो तिरथ कित्ते
पुणिया दिलड़ू लाणा
ओ...

शीमले री बोलूं सड़के सड़के
चकरो रा लाणा फेरा
टुटू स्टेशना टिकट कटाणा
दिल्लिया लाणा डेरा
ओ...

मामाटिया बोलूं दयारामा
देख्या ज्वाणसा रा चाला़
कल जो दिते धरमखाते
अज्ज कित्ता मुंह काला़
ओ...

मामटिया बोलूं दयारामा चल घरा खे जाणा
ओ मामाटिया बोलूं दयारामा चल घरा खे जाणा।

खाड्डे कूणिए

हो नी मूईए खाड्डे कूणिए
हाय...हो नी मूईए खाड्डे कूणिए
हो नी मूईए...

कोई उआर खड़ीरे कोई पार खड़ीरे
उआर पार लंघणे ते सब लोक डरीरे
सब लोक डरीरे
लोकां जो डराया न करे
हाय...लोकां जो डराए न करे
हो नी मूईए खाउ्डे कूणिए।

ऐबे पुल़ पड़ी गेया
आ...
ऐबे पुल़ पड़ी गेया
कीने बी न पुच्छणी
पुल़ा पर चढ़ी के
छोह्‌रूआं गूठी दस्सणी
शरमा बी आया बे करे
ओ नी मूईए खाड्डे कूणिए।

अर्की के राजा सुरेंद्रसिंह का गीत

अर्की के लोकप्रिय राजा सुरेंद्रसिंह की हरिद्वार जाकर मृत्यु हो जाती है तो लोग उसकी याद में रोते हैं।

ओ नी मूईए बांक्की बाग ले
तेरी यादे मेरी जीऊ जे सको।

सरेंदरसिंग राज़े तेरी शान बढ़ाई
हरिद्वार जाई करी जान गंवाई
बागला रा सुणी करी बच्चा बच्चा रोया
तेरी जे यादे...।

लुटरू ते मुटरू शिवजी राडे रा
राजे रे मईले दिल मोया मेरा
राज़े रे जाणे ते बाद ऐती सबेरा न होया
तेरी यादे मेरा...।

साका

सिरमौर की भांति सोलन में भी साका गीत प्रचलित हैं। एक उदाहरण–

मोह्या मेरा दिलड़ू नैना, तेरे बोलो काले़ काजले़
ठांडिया छांवां दे दिलड़ू जल़दा।
नीर मेरी आंखीटी दा बे डुल़दा
घेरी मेरी जिंदड़ी बोलो नैना पुरबो रेला बादले़।
अड़गी ना लाई लैना भोई जीवटू धाई जा
कि तू मेरो मरीणे रा जतनो बताई जा।

पौड़े हामे नैना तेरे गमो रे पाले़
पाणी मेरा मजनुआं पूरबो के पांगे
होरे झूरो होरी नैना हमें तांगे।

बारी बारी री चूटी रामा सलामों होये पाखले
घोरो में नैना फूला बेलूवा चाशा
चूटी चूटी पोड़ी एबे साथो री आशा।
बाटो आंखी पड़े जाले देखियो देखियो
मोह्या मेरा दिलड़ू नैना तेरे बोलो काले़ काजले़।

गंगी

गंगी एक लोकप्रिय गीत है जो कांगड़ा से लेकर बिलासपुर होता हुआ सोलन तक गाया जाता है। इस गीत में नायक-नायिका द्वारा कविता के माध्यम से अपनी व्यथा-कथा कही जाती है। गीत में बहुत से बोल एक से हैं, केवल बोली का अंतर है।

हरी डालिए तू हिलया बे करे
जेबे छोरी बुरा लगो गा
माखे छुप्पी छुपी मिलया बे करे।

हो डुग्गी डाबरी दे लाणे टेक्के

सच्च बे बताएं छोरिए
केस दुखा री तू आई पेओके।

हो आटा बाटी खे पकाणे फुलके
मिलणे खे आए बे छोरिए
मा काल जाणा बे पराए मुलखे।

हो टिकट कटाई लो जयपुरा रा
तेरा तो कसूर कोई न
चे तो खेल सारा तकदीरा रा।

हो तेरे आंगणा दे माटी चिकणी
लिखणे रा पेन देई दे
मा सजणा खे चिट्ठी लिखणी।

प्रदेश के अन्य क्षेत्रों की तरह सोलन में भी मृत्यु गीत गाए जाते हैं। पहले सयापा करने का भी रिवाज था। अब महिलाएं मृतक के घर के समीप आने पर करुण स्वर में मृतक को (रिश्ते को) संबोधित करते हुए जोर-जोर गाती हैं और कुछ कदम चलने के बाद पुनः दोहराती हैं–

हाय मेरेया बच्चुआ
केत्था देखूं ताखे
तू ता बड़ी पारिया गल्लां करो था।
हाय मेरेया मालका
केत्था देखूं ताखे
ऐबे केई जाऊं
केसगे छाडिगा माखे।

शिमला (महासू) के लोकगीत

पर्वत राग

जिस तरह पर्वतों से कल-कल करते झरने बहे, उसी तरह यहां से अनेक राग-रागनियों ने अंतरिक्ष में नाद भरा। यहां हर मनुष्य गाता है, हर मनुष्य नाचता है। पर्वतीय क्षेत्र में लोक-नाच बचपन में ही घुट्टी के साथ पिलाया जाता है। इसी तरह पहाड़ी बालक या बालिका लोकगीत गुनगुनाने लगते हैं। आरंभ में पिछड़ा प्रदेश होने के कारण लोकगायिकी के स्वर पर्वतों से बाहर नहीं निकल पाए किंतु पर्वतों द्वारा मार्ग खोलने के बाद गायिकी या कलाकारी छिपी नहीं रह सकी और बहुत से कलाकारों ने पहाड़ों को लांघ दूर-दूर तक नाम कमाया।

लोकगीत बहुत दूर तक यात्रा करते हैं। एक बार टी. वी. देख रहा था तो लगा कांगड़ा के लोकगीतों का प्रोग्राम आ रहा है। उस समय पूरे पहाड़ी क्षेत्र के लिए एकमात्र रेडियो और टी. वी. जालंधर था। देर तक देखने के बाद ज्ञात हुआ, यह लाहौर टेलीविजन लगा हुआ है। उस जमाने में एंटिना हिलाने से एक बार जालंधर आता था तो दूसरी बार हिलाने से लाहौर। कांगड़ा के बहुत से गीत पंजाब होते हुए लाहौर और मुलतान तक यात्रा करते हैं। ऐसे ही आजकल कांगड़ा का एक गीत 'कूंजां' (कूंजा जाई पुजियां पपरोले़, भाभो रोंदी डुगड़े खोलें़) पाकिस्तान की महिला गायकों द्वारा गाया जा रहा है और बहुत पॉपुलर हुआ है जो यू-ट्यूब पर भी आ रहा है।

रियासती समय में राणा कुठाड़, कोटी, धामी, जुणगा, ठियोग, बाघल, बघाट आदि ने भी लोकगायिकी को प्रोत्साहन दिया। गायक अनंतराम चौधरी राणा कुठाड़ के पास उस्ताद बूटे खां से संगीत सीखते थे। राणा द्वारा पर्याप्त सहायता दी जाती थी। इन्होंने राणा ठियोग के पास संगीतकार के रूप में नौकरी भी की। राणा ने इन्हें सत्रह बीघे ज़मीन भेंट में दी। अनंतराम चौधरी (1925-1984) वैसे होशियारपुर के थे जो ज्यादातर हिमाचल में रहे। चार वर्ष की वय में चेचक के कारण इनकी आंखें जाती रहीं। आकाशवाणी में 1952 में शास्त्रीय गायन परीक्षा पास करने के बाद वे आकाशवाणी दिल्ली,

जालंधर और शिमला से गाते रहे। इनका विवाह 1953 में अरुणा देवी से हुआ था जो उस समय महाविद्यालय सोलन में सितारवादन पढ़ाती थीं।

काकूराम (1896-1956) जिला सोलन में कंडाघाट तहसील के मही गांव के वासी थे। इनके गीत आकाशवाणी जालंधर से प्रसारित होते रहे। इन्हें बचपन से गाने का शौक था और जब ये अट्ठारह वर्ष के थे, इनके गीतों को एच. एम. वी. द्वारा रिकॉर्ड किया गया। इन गीतों में 'बाह्मणा रेआ छोरूआ', 'बेलुआ बेलुआ बे', 'लागा ढोलो रा ढमाका' आदि थे। ये बाघल, बघाट और क्योंथल रियासतों में गाते रहे।

चंबा के गायक प्रेमसिंह (1899-1988) लोकगीतों के साथ सुगम शास्त्रीय गीत गाने में माहिर थे। वे लोकनाट्यों तथा समारोहों पर गाते थे। हारमोनियम में सिद्धहस्त होने के साथ वे अर्धशास्त्रीय और आम लोकगीत गाया करते थे। चंबा मिंजर के अवसर पर कूंजड़ी मेघ-मल्हार गाकर ये श्रोताओं को मुग्ध कर देते। ये मजहबी सिख थे और चंबा शहर के धड़ोघ मुहल्ला के वासी थे।

लोकगायिकी में कृष्णसिंह ठाकुर का गाया 'लागा ढोलो रा ढमाका, म्हारा हिमाचल बड़ा बांका' गाना बहुत प्रसिद्ध हुआ। यह गीत हिमाचल बनने के समय का है जब ऐसे गीतों की अपने प्रदेश के प्रति मोह जगाने के लिए बड़ी जरूरत थी। कृष्णसिंह ठाकुर (1919-1997) जिला सिरमौर के कोटला बांगी गांव के थे। आकाशवाणी शिमला के माध्यम से ये लोकगायिकी में प्रसिद्ध हुए। इन द्वारा गांव के समारोहों, विवाहादि के अवसर पर गायन के अतिरिक्त राज्य स्तरीय मेलों आदि में भी गाते रहे।

23 जनवरी, 1927 को गांव नलेटी तहसील देहरा में जन्मे कांगड़ा के प्रसिद्ध गीत 'जीणा कांगड़े दा' के रचयिता तथा गायक प्रतापचंद शर्मा ने धंतारू यानी इकतारे को अपना साज बनाकर लोकगायिकी को नया आयाम दिया है। पहले वे मास्टर श्यामसुंदर के साथ गाया करते थे। नूरपुर के मास्टर श्यामसुंदर वायलिन बजाते थे। ये दोनों लोक संपर्क विभाग में कैजुअल आर्टिस्ट के तौर पर भी कार्यरत रहे और 1986 तक सेवारत रहे। सन् 1984 में वे दूरदर्शन जालंधर से गाने लगे। इन्होंने सौ से अधिक गीत लिखे और गाए। 'दो नारां वे लोको लस्कदियां तलवारां', 'खाणे जो मिलदा भत्त भटूरू', 'मैयाजी बैकुंठ बणाया' आदि इनके प्रसिद्ध गीत हैं। प्रतापचंद की मृत्यु 27 जनवरी, 2018 को हुई।

इस परंपरा में जिला सोलन के हेतराम तनवार भी जाने-माने गायक हैं जिनके 'मोहणा', 'मामटिया बोलो दया रामा' आदि गाने प्रसिद्ध हैं। इन्होंने

म्यूजिक टुडे के लिए भी गाया और इन्हें संगीत नाटक अकादमी दिल्ली से पुरस्कृत किया गया। नंदलाल गर्ग, मोहन राठौर (ठियोग), प्रेमप्रकाश निहालटा (शिमला), कृष्णलाल सहगल (सिरमौर), पं. ज्वालाप्रसाद (बिलासपुर), इंद्रपाल छावड़ा, अच्छर सिंह परमार (मंडी), लेहरूराम सांख्यायन (बिलासपुर), पीयूषराज (चंबा), करनैलराणा (कांगड़ा), धीरज शर्मा (कांगड़ा) आदि के साथ कुछ नए गायक भी इस समय इस परंपरा को बनाए हुए हैं हालांकि बेशुमार कैसेट और सी. डी. के चलन से इनमें प्रदूषण आया है।

प्रेमप्रकाश निहालटा को हिमाचल अकादमी से निष्पादन कला सम्मान और मोहन राठौर को सर्वोच्च शिखर सम्मान भी मिला।

पुरानी लोक गायिकाओं में कबूतरी देवी, कुब्जा, कमला रानी, रोशनी देवी तथा वर्तमान में गंभरी देवी, बसंती देवी के नाम उल्लेखनीय हैं।

कबूतरी देवी सुकेत रियासत में मशहूर नर्तकी और गायिका थी। कबूतरी देवी का विवाह छोटी उम्र में आतुराम से हुआ जो सुकेत के राजा लक्ष्मणसेन के दरबार में शहनाई बजाता था। तहसील ठियोग के पराला गांव में जन्मी कुब्जा (1897-1977) को बचपन से ही संगीत नृत्य का शौक था। जुणगा के राजा विजयसिंह ने कुब्जा को अपने खर्चे पर गढ़शंकर के उस्ताद बूटे खां के पास प्रशिक्षण के लिए भेजा। बूटे खां के पहाड़ में तमाम शिष्यों में कुब्जा ने शीघ्र अपनी धाक जमा ली और पहाड़ी रियासतों में अपने फन का जादू बिखेरने लगी। इस पर ठियोग के राणा पद्मचंद ने उसे अपनी रियासत में बुला लिया। कुब्जा ने इन रियासतों के कई जाने-माने समारोहों में भाग लिया और कई राग गाकर लोगों को मंत्रमुग्ध किया। कुब्जा का विवाह ठियोग के ही मशहूर तूरी सिंधिया से हुआ जो उससे उम्र में छोटा किंतु अच्छा एक बजंतरी था। हिमाचल के गठन पर डॉ. वाई. एस. परमार की अध्यक्षता में हुए समारोह में कुब्जा को नृत्य के लिए आमंत्रित किया गया था।

कमला रानी (1920-1989) भी उस्ताद बूटे खां की शिष्या रही हैं। वे भी रियासती समय में महाराजा पटियाला, महाराजा नेपाल, राणा कुठाड़, राणा बाघल आदि के यहां अपनी बुलंद आवाज़ से गायिकी से अपना कला-कौशल दिखाती रहीं। सन् 1955 में आकाशवाणी शिमला की स्थापना पर कमला रानी ऐसी प्रथम गायिका थीं जिन्होंने यहां लोकगीत, भजन तथा गिद्धे गाकर अपनी धाक जमाई। उनका गाया 'लोका' गीत तथा 'बाह्मणा रेआ छोरूआ' अपने में बेजोड़ था।

ऐसी ही बुलंद आवाज़ की धनी प्रसिद्ध गायिका रोशनी देवी (1944-1995) थीं। बाघल (जिला सोलन) रियासत के क्यार गांव में जन्मी रोशनी देवी बचपन से ही गिद्धा नाचने और गीत गाने लग गई थी। रोशनी देवी पंचम स्वर की मंझी हुई गायिका थी। उसने एक नाटक मंडली का गठन किया और कार्यक्रम देने लगी। रोशनी भी 'लोका गीत' गाने में सिद्धहस्त थी। लोका का मशहूर गीत 'राती आइयां न्हेरियां, गल्ला सुणेयां मेरिया', 'बाह्मणा रेया छोरूआ' तथा गिद्धा गीत 'ते बे जानी मेरिए, गल़ो रा हार' जैसे गीतों में समां बांधना रोशनी का ही फ़न था। रोशनी देवी ने बाद में वर्ष 1969 से केंद्रीय गीत एवं नाटक प्रभाग में कलाकार के रूप में सेवा भी की। रोशनी के गीत दिल्ली, श्रीनगर, मथुरा, जालंधर के साथ शिमला के आकाशवाणी केंद्रों में बजते रहे। इन्हें म्यूजिक टुडे में गाने के साथ-साथ पं. नेहरू तथा इंदिरा गांधी के समक्ष गाने का भी अवसर मिला।

'खाणा पीणा नंद लैणी ओ गंभरिए' मशहूर गीत की रचयिता और गायिका गंभरी देवी इस समय अस्सी के लगभग की वय में भी लोकगायिकी की मशाल बनी हुई हैं। इसे 'बंदले री धार' की गंभरी कहा जाता है। जन्म बिलासपुर की बंदले की धार में गिरदित्तू के घर हुआ, कब हुआ यह ज्ञात नहीं। गंभरी गांव में जन्मी, पली और नाच-गाना सीखा। कुछ विद्या उस्ताद गंगाराम खत्री से भी सीखी। फिर एक दिन बसंता नाम के पहलवान के साथ भाग गई लेकिन शादी नहीं रचाई। बसंते के साथ कई कार्यक्रम दिए। जब गंभरी ने पंजाबी गायिका सुरेंद्र कौर के साथ जालंधर छावनी में फौजियों के लिए कार्यक्रम दिया तो उसे 'शिमले वाली पहाड़न' कहा करते थे।

बसंती देवी का जन्म ठियोग (शिमला) के बलग गांव में लगभग 1947 में हुआ। बसंती के पिता सरियाराम करियाल़ा करते थे और मां मैना देवी गायिका थी। इस विरासत से बसंती देवी बचपन से ही गायन नृत्य के प्रति आसक्त हुई। बसंती का विवाह देवठी मंझगांव के कलाकार माठाराम से हुआ। इसी बीच बसंती की कला की धूम शिमला तथा सिरमौर तक फैल गई। कुछ समय बाद माठाराम से तलाक और घूंड के कलाकार गरीबूराम से विवाह हुआ। बसंती ने आकाशवाणी शिमला से लोकगीत गाने आरंभ किए और कई आयोजनों में कार्यक्रम देने आरंभ किए। इन्होंने इंडिया टुडे के लिए गाया। 'चैंखी' गीत इनका सशक्त गीत है। 'हे रे दासिए', 'नेगिया लच्छीरामा' आदि इनके बेहतरीन गीत हैं।

अन्य प्रसिद्ध व सिद्धहस्त गायिकाओं में, जो इस समय गा रही हैं (शांति बिष्ट, शांति हेटा (शिमला), रविकांता कश्यप (मंडी), कली देवी (करसोग), मनसा पंडित, कौशल्या देवी (बिलासपुर), संगीता भारद्वाज, कृष्णा कपूर, मीना वर्मा, मेघा, वर्षा कटोच, निशा बिष्ट, भुवनेश्वरी तनवार आदि हैं। कृष्णा ठाकुर (कुल्लू), लीला ठाकुर (कुल्लू), प्रभा ठाकुर (करसोग), गुलपाल (शिमला) भी उभरते हुए गायक हैं जिन्होंने आकाशवाणी, दूरदर्शन से गाया है और जिनके कैसेट भी बने हैं। वर्षा कटोच के बहुत से कैसेट बने जब कैसेट का ज़माना था।

लोकगीतों के कैसेट निर्माण में सोमदेव कश्यप के योगदान का उल्लेख किया जा सकता है। मंडी के मूलवासी श्री कश्यप ने 'कोबरा' आदि कुछ फिल्मों में भी संगीत दिया है। टी. वी. सीरियलों में भी मुख्य संगीत दिया। हिमाचल में लोकगीत कैसेट निर्माण में इन्होंने बंबई से अपने और सविता साथी के स्वर में पहला पहाड़ी गीतों और नाटी का कैसेट बनाया जो बहुत लोकप्रिय हुआ। कुछ वर्ष पूर्व वे बंबई छोड़कर हिमाचल में आ गए। पहले सकरोहा में, अब पनारसा (मंडी) में 'साउंड एंड साउंड' स्टूडियो की स्थापना कर इन्होंने लोकगीतों के सैकड़ों कैसेट बनाए जिससे लोकगीतों का संरक्षण तो हुआ ही, अनेक उभरते हुए कलाकारों को भी प्रोत्साहन मिला।

जबकि पहले समय में दिल्ली में ही गीतों की रिकॉर्डिंग हो पाती थी और सोमदेव कश्यप का पहला स्टूडियो सकरोहा मंडी में बना था (अब गीतों की रिकॉर्डिंग के बहुत से स्टूडियोज यहां बन चुके हैं। हमने अकादमी की ओर से इंडिया टुडे के साथ मिलाकर लोकगीतों की रिकॉर्डिंग दिल्ली में करवाई और चंबा पर बने कैसेट की रिकॉर्डिंग सकरोहा मंडी में ही करवाई थी।

हिमाचल के लोक में नर्तन और गायक जन्मघुट्टी के साथ पिलाया जाता है। ऊपरी हिमाचल में बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी नृत्य करते हैं। गाते भी सभी हैं चाहे उनका स्वर अच्छा हो या न हो। वैसे भी लोकगायिकी में स्वर की मधुरता नहीं देखी जाती। गला खोल पंचम स्वर में गाना ही लोकगायिकी है।

इस परंपरा ने बहुतों को लोकगायक बनाया। हमीरपुर और कांगड़ा में भजन मंडलियों की परंपरा भी रही। भजनी रात-रात भर गाकर भजन व अन्य लोकगीत सुनाया करते थे। मनोरंजन के अन्य साधन न होने पर फुरसत के समय में लोग इन्हें न्यौता देते और घरों में रात-रात भर महफिल चलती रहती। हमीरपुर के गिरधारी लाल (15.11.1955-04.04.2019) ने गीतों की महफिलें सजाकर पारंपरिक गीतों को जीवित रखा। हमीरपुर और कांगड़ा में भजन मंडलियों की परंपरा भी रही। भजनी रात-रात भर गाकर भजन व अन्य

लोकगीत सुनाया करते थे।

कांग्रेस सरकार में मंत्री रहे ठाकुरसिंह भरमौरी, भरमौर के गद्दी समुदाय से संबंध रखते हैं। वे एक अच्छे लोकगायक हैं। एक अन्य मंत्री रहे रामलाल ठाकुर जो बिलासपुर से हैं, रेडियो के लिए गाते रहे। इनके गाए दो गीत इस संकलन में भी लिए गए हैं। अन्य वरिष्ठ मंत्री स्व. सागरचंद नैयर (चंबा) और चंद्रकुमार (कांगड़ा) को भी गाते सुना है।

करनैल राणा, जो लोक संपर्क विभाग में कार्यरत हैं, कांगड़ी गीतों के लिए बहुत प्रसिद्ध रहे हैं जिन्होंने कांगड़ी पारंपरिक गीतों को आगे बढ़ाया।

हाल ही में पुलवामा आतंकी हमले में शहीद सी. आर. पी. एफ. जवान तिलकराज को भी कबड्डी खेलने के साथ-साथ गाने का बहुत शौक था। ज्वाली निवासी तिलकराज गद्दी समुदाय से संबंध रखते थे। उनका गाया 'मेरा सिद्धू' गीत यू-ट्यूब पर तेरह लाख से अधिक लोगों ने सुना। इन्होंने तीन वीडियो अपलोड किए। अपनी शहादत से पहले 6 नवंबर, 2018 को इन्होंने 'तिलकशानू प्रोडक्शन' नाम से पत्नी के नाम प्रोडक्शन बनाई। इनके नीलिमा गद्दण गाने को एक लाख सत्रह हजार से ज्यादा लोगों ने देखा। 2009 में 'वॉयस ऑफ हिमालय' के विजेता कुल्लू (भुंतर) निवासी रमेश ठाकुर के गाने 'बांकी पौटू आलि़ए' को बारह लाख पचास हजार लोगों ने देखा।

आजकल मंच पर, सी. डी., यू-ट्यूब में गाने वालों में विक्की चौहान, कुलदीप शर्मा (ऊपरी शिमला), गीता भारद्वाज (जंजैहली, मंडी), कृतिका तनवर (सोलन), सुधीर शर्मा (कांगड़ा), ठाकुरदास राठी, इंद्रजीत (कुल्लू) हैं। इधर मेले-उत्सवों में मंच पर लोकगीत गाने की परंपरा बढ़ी है हालांकि मंचीय कार्यक्रमों की उछलकूद से पारंपरिक गायन में प्रदूषण के खतरे बढ़े हैं। मंच गायकों में विक्की चौहान (जुब्बल, शिमला), ठाकुरदास राठी (कुल्लू) को 'नाटी किंग' कहा जाने लगा। उभरते हुए गायकों में कुलदीप शर्मा (ठियोग), रोशनी शर्मा (कुम्हारसेन), कृतिका तनवार (सोलन), संजीव दीक्षित (कांगड़ा), केदार नेगी (किन्नौर) आदि गायक सामने आए।

यू-ट्यूब के वर्तमान युग में लोकगीतों को अधिमान मिल रहा है, यह अच्छी बात है। मंचीय कार्यक्रमों के अलावा यू-ट्यूब एक सशक्त माध्यम बन गया है। शहीद जवान तिलकराज के गाए गीतों को लाखों ने देखा-सुना। इसी माध्यम से हंसराज रघुवंशी ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। बेशक इनके मंचीय आयोजन भी बहुत पसंद किए जाते हैं। इनके गीत सुनने के लिए युवाओं में एक पागलपन देखा गया। इनका गाया 'मेरा भोला है भंडारी'

गाना सौ मिलियन लोगों ने देखा। गाना रिलीज होते ही चौबीस घंटों में एक मिलियन व्यूअर्स मिले। युवाओं ने 'डमरूवाला' के टेटू बनवा डाले और टी-शर्ट्स बिकने लगीं।

आज, मंचीय कार्यक्रमों, वीडियो और यू-ट्यूब जैसे संचार माध्यमों ने ठेठ गीतों में प्रदूषण फैलाया है जिससे वर्तमान के लोकगायक बच नहीं पाए। मंचों पर लोकगीत आरंभ कर बीच में फिल्मी गाने बोल जोड़ दिए जाते हैं जिससे न तो लोकगीत की आत्मा जीवित रहती है और न ही फिल्मी गाना ठीक से गाया जाता है। जैसे पंजाबी गीतों में अब लेखक, गीतकार, गायक, संगीतकार, नर्तक सब कुछ गाने वाला ही होता है वैसे ही देखादेखी में, पहाड़ी में भी किया जाने लगा है। हालांकि पहाड़ी गीतों की कमी नहीं है। उन्हें ही ठीक ढंग से गाया जा सके तो बहुत है। जैसे सिने जगत के हिमाचली पार्श्व गायक मोहित चौहान का गाया 'पारलिया बणिया मोर जे बोले' गीत बहुत सुहाना लगता है। इस गीत का सानी कोई दूसरा गीत नहीं हो सकता।

लोकगीत पर किसी का हक नहीं बनता और न ही लोक गीतकारों ने अपने नाम ही आगे किए। हां, कुछ कवियों ने स्वयं गीत लिखे और वे मशहूर हुए किंतु अधिकांश लोग उन लोक गीतकारों को नहीं जानते। जैसे खेमराज गुप्त सागर का एक गीत है–'सायं सायं करदिए राविए'। यह रेडियो पर प्रसिद्ध हुआ। कइयों ने गाया। आज बहुतेरे लोग ये ही नहीं जानते कि ये खेमराज गुप्त का लिखा हुआ है। इसी तरह आजकल 'इन्हां बड़ियां जो तुड़का लायां ओ ठेकेदारनिए' बहुत प्रसिद्ध हुआ। लोग या गायक भी ये नहीं जानते कि यह गीत चंबा के चंचल सरोलवी का लिखा हुआ है जिनके लिखे बहुत से गीत बहुत पॉपुलर हुए हैं। इस गीत को नाटी किंग विक्की चौहान ने गाया तो लोग उसी का गीत समझने लगे। यह परंपरा आज की नहीं, पुरानी है। जब लता मंगेशकर ने 'ऐ मेरे वतन के लोगो' गाया तो इतना प्रसिद्ध हुआ कि बहुत से लोग नहीं जानते यह गीत कवि प्रदीप का लिखा हुआ है। ऐसे ही एक बहुत प्रसिद्ध पंजाबी गाना है–'किन्ने जम्मियां ते किन्ने लै जाणिया' जो सुरेंद्र कौर ने गाया और बहुत ही प्रसिद्ध हुआ। वास्तव में यह गीत चन्न जंडियालवी ने लिखा था जब वे दसवीं में पढ़ते थे। उन्होंने इस गीत को परामर्श के लिए मशहूर गीतकार नंदलाल नूरपुरी के पास भेजा। वहां से लेकर सुरेंद्र कौर ने इसे गाया और इसे सुरेंद्र कौर द्वारा लिखा ही समझा जाने लगा। अब पंजाबी गायकों ने यह झगड़ा ही खत्म कर दिया है। वे खुद ही लिखते हैं, खुद ही गाते हैं, खुद ही नाचते हैं और हर गीत में अपना नाम देते हैं।

शिमला में कलाकारों का जमावड़ा

शिमला कलाकारों की कर्मभूमि रहा है। सन् 1817 में स्कॉच अधिकारियों ने जिसे एक मझोला सा गांव कहा, बाद में 'बड़ी सरकार' की समर कैपिटल बना। सन् 1830 में हिल स्टेट्स के पॉलिटिकल एजेंट मेजर केनेडी ने, जो सुबाथू में थे, राजा क्योंथल से तेरह गांवों की यह पहाड़ी ली और केनेडी हाउस का निर्माण किया जो यहां बनने वाली पहली इमारत थी।

शिमला में सन् 1887 में ऐतिहासिक गेयटी थियेटर का निर्माण हुआ और यहां 9 जून, 1887 को प्रथम नाटक 'टाइम विल टेल' खेला गया। इस नाटक के किरदार थे कर्नल स्टीवर्ट, कर्नल हैंडर्सन, कैप्टन संडाल, डेविस, मिस कार्टर और मिस फ्लेचर। यहां इस थियेटर में विदेशी कलाकारों के नाम गिनाना मकसद नहीं है किंतु सन् 1888 में एमेच्योर ड्रामेटिक क्लब का गठन महत्त्वपूर्ण रहा। इस क्लब को 1860 के अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत करवाया गया। थियेटर के निर्माण और क्लब के गठन से यहां देश के नामी-गिरामी रंगकर्मियों ने नाटक खेले।

यहां यह उल्लेखनीय है कि भाषा-संस्कृति विभाग के माध्यम से गेयटी थियेटर के जीर्णोद्धार का कार्य लगभग पांच वर्ष पहले आरंभ किया गया था जो इस वर्ष पूरा हुआ। 25 जून, 2009 को प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा इसे पुनः कलाकारों को समर्पित किया गया।

शिमला आरंभ से लेकर कलाकारों का आवास बना रहा। किसी न किसी कारण से यहां प्रबुद्ध कलाकार बने रहे।

बहुत कम लोग जानते हैं कि हिंदी सिनेमा में गायिकी के सरताज कुंदन लाल सहगल (1904-1947) शिमला में रहे। वे यहां रेमिंगटन टाइपराइटर कंपनी में काम करते थे जिसका कार्यालय वर्तमान भागड़ा निवास, लिफ्ट के नजदीक था। सहगल शिमला के ए. डी. सी. के माध्यम से गेयटी थियेटर में अपने गीत सुनाते थे। इसी थियेटर में उन्होंने नाटकों में भी भाग लिया। शिमलावासी श्री ए. एन. वालिया के अनुसार गेयटी थियेटर में इनके अभिनय

और गायन से प्रभावित होकर झालावाड़ के महाराजा ने सहगल को माल रोड़ की फ़र्म 'रैंकन एंड कंपनी–ड्रेपर एंड टेलर्ज' से एक कीमती सूट सिलवाकर दिया। सहगल के साथ मास्टर मोहन, मास्टर अमरनाथ, मास्टर होमी भी शामिल होते थे। सहगल 1931 में कलकत्ता जाने से पहले तीन वर्ष शिमला में रहे। शिमला से जाने पर ही वे कलकत्ता में 'न्यू थियेटर्स' में लगे जो उस समय सबसे बड़ी फिल्म कंपनी थी। फिल्मों में आने के बाद भी सहगल शिमला आते रहे। सन् 1936 में कालीबाड़ी हॉल में उनका एक शो हुआ जहां उन्होंने अपने गीत सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

मात्र आठ वर्ष की वय में साग़र निज़ामी की लिखी मात्र दो ग़ज़लों के गाने से लोगों का मन मोह लेने वाले मास्टर मदन (1927–1942) शिमला के लोअर बाजार में न्यू बुटेल बिल्डिंग में रहते थे। 28 दिसंबर, 1927 को जालंधर के ख़ानख़ाना गांव सरदार अमरसिंह के घर जन्मे मास्टर मदन का अधिकांश समय शिमला में बीता। मास्टर मोहन उनके बड़े भाई थे। मास्टर मोहन ठुमरी और सबद के मंजे हुए गायक थे। आकाशवाणी दिल्ली से गायन के अतिरिक्त इनके 'गोरी गोरी बहियां', 'मोरी विनती मानो कान्ह रे', 'मन कही मन मा ही रही', 'चेतना है तो चेत लो', 'रावी दे परले', 'बागां बिच पींघा पइयां' छह रिकॉर्ड भी बने।

तीन वर्ष के होने पर ही मास्टर मदन में संगीत प्रतिभा नज़र आने लगी थी। इन्होंने धर्मपुर सेनेटोरियम में अपने प्रथम कार्यक्रम में ध्रुपद शैली में गायन किया और 'हे शारदा नमन करूं' सुनाया तो कला पारखी दिल थामकर बैठ गए। इसके बाद इन्होंने अपने बड़े भाई मास्टर मोहन के साथ कई तत्कालीन रियासतों में कार्यक्रम दिए। शिमला में सनातन धर्म स्कूल में पढ़ने के बाद इन्होंने दिल्ली से मैट्रिक और एफ. ए. किया। आकाशवाणी के प्रमुख कलाकार बनने के साथ इन्हें फिल्मों में भूमिका करने के न्यौते भी आए।

इनका अंतिम अखिल भारतीय स्तर का कार्यक्रम कलकत्ता में हुआ। राग बागेश्वरी में अद्‌भुत गायन के बाद उन्हें नौ स्वर्ण पदक देने की घोषणा की गई। कहा जाता है, इस सफल आयोजन के बाद इन्हें किसी ने दूध में पारा खिला दिया जिससे ये बीमार रहने लगे। गर्मियों में इन्हें शिमला ले आए और 5 जून, 1942 को इनकी मृत्यु हो गई।

मास्टर मदन के बड़े भाई मास्टर मोहन गायन की दुनिया में एक मशहूर हस्ती थे जिनकी ख्याति चौदह वर्ष की उम्र में ही दूर-दूर तक फैल गई।

इनका जन्म भी जालंधर के ख़ानख़ाना में 1 दिसंबर, 1914 को हुआ। इन्होंने पूरे भारत में अपनी गायिकी की धाक जमाई और कई राजघरानों, महात्मा गांधी, भारत के वायसराय, पंजाब के गवर्नर, सरकार की परिषद् के सदस्यों तक को अपनी गायिकी का स्वाद चखाया।

मास्टर मोहन (1914-1975) तीस-पैंतीस वर्ष तक शिमला में रहे। पिता सरदार अमरसिंह भारत सरकार में कार्यरत थे, अतः गर्मियों में छह महीने शिमला में रहा करते थे। शिमला के लोअर बाजार में बुटेल बिल्डिंग में अभी भी उनके बेटे रहते हैं। मास्टर मोहन ने गायिकी दिल्ली के मोहनलाल देहलवी से सीखी। राणा कुनिहार ने अपने दरबारी गायक मास्टर गोपाल को अपने खर्चे पर मास्टर मोहन को सिखाने के लिए तैनात किया। मास्टर मोहन ने आठ वर्ष के होने पर हर बल्लभ संगीत में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। राजा जुणगा महेंद्रसेन इन्हें गायन के लिए आमंत्रित करते थे। इन्होंने मास्टर मोहन को कुसुंपटी के समीप चौदह बीघे ज़मीन भेंट की। दस वर्ष की उम्र में ही 'द ग्रामोफोन कंपनी ऑफ इंडिया' ने इनके रिकॉर्ड बना लिए। मास्टर मोहन ने गेयटी थियेटर में भी अपने कार्यक्रम दिए। अपने छोटे भाई मास्टर मदन के देहावसान से दुखी हो इन्होंने बाहर कार्यक्रम देने बंद कर दिए और शिमला व आसपास ही रहकर तालीम देना शुरू किया।

मई, 1912 को कुठाड़ में जन्मे मास्टर लच्छीराम (1912-1965) राणा कुठाड़ जगजीत चंद के यहां रहते थे। इनके पिता गणपतराम रियासत में कर्मचारी थे जिनका देहांत उस समय हो गया जब लच्छीराम मात्र छह-सात वर्ष के थे। गढ़शंकर के उस्ताद बूटे खां कुठाड़ आते-जाते रहते थे। राणा साहिब कुठाड़ ने इन्हें बूटे खां से तालीम दिलाई। बूटे खां के तीन शिष्यों (कमला रानी तथा चौधरी अनंतराम) में ये तीसरे थे। तालीम के बाद लच्छीराम ने गायन आरंभ किया। उस समय की प्रसिद्ध कंपनी 'हिज़ मास्टर्ज वाइस' द्वारा इनके छह गाने रिकॉर्ड किए गए। इन गानों में दो ग़ज़लें, दो भजन और दो पहाड़ी गीत थे। इन्होंने एच. एम. वी. में लगभग नौ-दस वर्ष काम किया।

मुंबई में मास्टर लच्छीराम 'रणजीत मूवीटोन' में संगीत निर्देशक के तौर पर तैनात हुए और फिल्म 'मधुबाला' के संगीत में सहयोजित रहे। इसके अतिरिक्त 'महारानी झांसी', 'अमीर', 'शहीदे आज़म', 'भगतसिंह', 'दो शहजादे', 'रज़िया सुलतान', 'मैं सुहागिन हूं' आदि फिल्मों में इन्होंने संगीत

निर्देशन किया। 'मैं सुहागिन हूं' में संगीत देने के साथ वे संगीतकारों में पूर्णतया स्थापित हो गए किंतु शीघ्र ही इनका मुंबई में निधन हो गया।

मूक फिल्मों से अभिनय शुरू करने वालों में शिमला के पंडित विजय कुमार (1905-1977) का नाम उल्लेखनीय है। पंडित विजय कुमार का जन्म पंडित कांशीराम के घर शगीण में हुआ। इनका शिमला में घोड़ों का कारोबार था। शिमला में मैट्रिक करने के बाद महेंद्रा कॉलेज से एफ. ए. और एस. डी. कॉलेज लाहौर से बी. ए. पास किया। स्कूल में आठवीं कक्षा में ही इन्होंने एक नाटक में अभिनय किया। शिमला के ए. डी. सी. तथा गेयटी थियेटर से भी इन्हें प्रेरणा मिली।

लाहौर में कॉलेज की पढ़ाई के दौरान ही इन्हें एक मूक चित्र 'दुख्तरे ज़माना' में काम करने का अवसर मिल गया जिसके निर्देशक गोपालकृष्ण मेहता थे। कॉलेज की पढ़ाई के बाद इन्होंने मुंबई की ओर रुख किया और पहली फिल्म 'संजीव मूर्ति' की, जो मूक नहीं थी। थियेटर से भी संबंधित रहने के कारण इन्हें फिल्मों के कई प्रस्ताव आने लगे। इनकी अगली फिल्म 'आज़ादी' आई जिसमें सहायक संगीत निर्देशक एस. डी. बातिश थे। इसके बाद 'अभागिन' में काम किया। इस फिल्म में नायिका कमलेश कुमारी थीं और इनके साथ पृथ्वीराज कपूर ने भी काम किया। एक अन्य फिल्म जिसमें ये नायक रहे 'शादी की रात' थी। इसके बाद 1936 में ये कलकत्ता चले गए और 'फिल्म कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया' के साथ 'सुनहरा सपना', 'हरि कीर्तन', 'मेरी आशा' फिल्में कीं। 'सुनहरा संसार' फिल्म के लिए इन्होंने सत्रह गीत भी लिखे। इन्होंने मेगाफोन रिकॉर्ड कंपनी के लिए दो पहाड़ी गीत भी गाए। 'मेरी आशा' फिल्म के बाद पिता की बीमारी की खबर सुन ये कलकत्ता से घर वापस आ गए और पिता की लंबी बीमारी के कारण वापस नहीं जा सके। 1955 में आकाशवाणी शिमला की स्थापना के साथ वे इससे जुड़ गए।

रणधीर चौहान के पिता शिमला में 'साहिब सिंह एंड संज' में काम करते थे। यहीं से रणधीर चौहान स्कूली शिक्षा के दौरान भागकर लाहौर चले गए। कुछ समय दिल्ली में आकाशवाणी में भी काम किया और अंत में मुंबई जा पहुंचे जहां अभिनेता श्याम ने उन्हें फिल्मों में काम दिलवाया। उन्होंने 'किस्मत', 'चांदनी', 'पतंगा', 'हलचल', 'दाग' फिल्मों में चरित्र अभिनेता के रूप में काम किया। एक फिल्म 'गुनाहों का देवता' नाहन में भी फिल्माई गई।

रणधीर चौहान का जन्म भी नाहन में ही हुआ था। जन्मतिथि ज्ञात नहीं है। यह 1918 या 1919 हो सकता है। इनकी मृत्यु 14 सितंबर, 1982 को हुई।

फिल्म इंस्टीट्यूट पूना से अभिनय कोर्स किया राकेश पांडेय नाहन से हैं जिनके पिता भवानीदत्त पांडेय महाराज सिरमौर के गुरु थे। 9 अप्रैल, 1946 को नाहन में जन्मे राकेश पांडेय को बचपन से ही नाटकों का शौक था। इनकी पहली फिल्म 'आंसू बन गए फूल' थी जो सत्यसेन बोस द्वारा निर्देशित थी। 'सारा आकाश' में भी ये हीरो रहे। इन्होंने कई भोजपुरी फिल्मों में भी काम किया।

अभिनेता प्राण 1939 में माल रोड शिमला में 'देहली स्टूडियो' में सहायक कैमरामैन के तौर पर काम करते थे। यहां से वे लाहौर गए और सन् 1941 में पंचोली फिल्म्ज़ की फिल्म 'खानदान' में नायक बने। नूरजहां इसमें नायिका थी और मनोरमा खलनायिका। इसके बाद ये मुंबई गए और खलनायक के तौर पर अपना मुकाम हासिल किया।

अभिनेता प्रेम चोपड़ा भी शिमला में रहे। उनकी शिक्षा भार्गव कॉलेज में हुई। ये नाभा में रहते थे। इनके पिता स्थानीय नगरपालिका में थे। ये भी मुंबई जाकर जाने-माने खलनायक बने।

अमरीश पुरी भी शिमला के भार्गव कॉलेज में पढ़े। वे शिमला में नाटकों में भाग लेते थे। अमरीश पुरी, चमन पुरी और मदन पुरी तीनों शिमला में रहते थे।

सतीश छाबड़ा, जो धर्मशाला जिला कांगड़ा के रहने वाले थे, ने लाहौर में फिल्म 'झुमके' में काम किया। इसके अतिरिक्त मुंबई में याकूब के निर्देशन में 'हर लास्ट डिजायर', जे. के. नंदा के निर्देशन में 'इशारा' और फिल्म 'नज़ारे' में काम किया। इन्होंने कई पंजाबी फिल्मों में नायक के तौर पर काम किया।

शिमला के बैज शर्मा, मैसी, अमरजीत और ऊना के बलवंत सिंह, नादौन के अर्जुनदेव रश्क आदि ने भी फिल्मों में चरित्र अभिनेता के तौर पर कार्य किया। अमरजीत शिमला नगरपालिका में कार्यरत थे। सन् 1952 में इन्होंने देवानंद की 'नवकेतन फिल्म कंपनी' में शामिल होकर 'जोरू का भाई', 'नौ दो ग्यारह', 'हम दोनों' और 'तीन देवियां' में संवाद और पटकथा लिखी।

भरवाईं जिला ऊना के बी. आर. इशारा ने 1970 में फिल्म 'चेतना' के निर्देशन के साथ-साथ संवाद और पटकथा भी स्वयं लिखी। ये सफल फिल्म

निर्देशक रहे हैं। फिल्म निर्देशकों में हमीरपुर के तेजनाथ ज़ार ने कहानी, संवाद और पटकथा लेखन भी किया।

ठाकुरद्वारा, पालमपुर जिला कांगड़ा के जुगल किशोर ने नायक और निर्देशक के रूप में कार्य किया। बचपन में ही ये घर से भाग गए और कुछ समय अमृतसर रहकर मुंबई की ओर रुख किया! इन्होंने हिंदी के साथ-साथ पंजाबी फिल्मों का भी निर्देशन किया। 'जुगल प्रोडक्शन' के बैनर तले इन्होंने 'शिमला रोड', 'लाल बंगला' आदि फिल्में शत्रुघ्न सिन्हा जैसे कलाकारों को लेकर बनाईं। पंजाबी फिल्म 'भंगड़ा' बहुत चली। इन्होंने पालमपुर के आसपास फिल्मों की शूटिंग की।

जयसिंहपुर जिला कांगड़ा के सुदर्शन नाग ने, जिनके पिता रत्नलाल नाग शिमला के होटल व्यवसायी रहे हैं, 1962 में सिनेमॉटोग्राफी का कोर्स कर बी. आर. इशारा के साथ फिल्मों में सिनेमॉटोग्राफर का काम किया। इन्होंने 'असली नकली', 'इंसाफ कौन करेगा', 'शंकरा' आदि फिल्मों का निर्देशन किया। इन्हें बलराज साहनी अवार्ड भी मिला।

गीतकारों में राजेंद्रकृष्ण (1919-1988) का नाम उल्लेखनीय है जो नगरपालिका शिमला में काम करते थे। पश्चिमी पंजाब के कस्बा जलालपुर जट्टा में जन्मे राजेंद्रकृष्ण लगभग 1934 में शिमला आए जहां इनके बड़े भाई पहले से ही नगरपालिका में थे। लगभग आठ वर्ष यहां रहे।

'सुनो सुनो ए दुनिया वालो, बापू की यह अमर कहानी' गीत को लिखने वाले राजेंद्रकृष्ण 1942 में नगरपालिका की नौकरी छोड़ मुंबई चले गए। मुंबई में दो-तीन सालों बाद ही उन्हें गीत लिखने का काम मिल गया। इन्होंने 1946 में बनी पहली फिल्म 'आज की रात' में गीत लिखे जिसे हुस्नलाल भगतराम की जोड़ी ने संगीत दिया और सुरैया ने गाने गाए जो बहुत प्रसिद्ध हुए। 'चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है' गाना बहुत चला। किसी समय राजेंद्रकृष्ण सबसे अधिक पारिश्रमिक लेने वाले गीतकार बन गए और संवाद भी लिखने लगे। इन्होंने सी. रामचंद्र, हेमंत कुमार, एस. डी. बर्मन, सलिल चौधरी, मदन मोहन, अनिल विश्वास, ओ. पी. नैयर जैसों के लिए गीत लिखे। 'अनारकली' से 'जहांआरा' तक इनके लिखे गानों ने शोहरत की बुलंदियों को छुआ। 'जाग दर्दे इश्क़ जाग' और 'फिर वही शाम, वही ग़म वही तनहाई है' जैसे गीतों को लिखने वाले राजेंद्रकृष्ण का देहावसान 23 सितंबर, 1988 को हुआ।

शिमला से ही एक और गीतकार हुए हैं अरमान शहाबी जिन्होंने फिल्म

'अपने देश पराए लोग' तथा 'साहिबां' में गीत लिखे। इन्होंने कुछ सीरियलों में भी कहानी और संवाद लिखे हैं।

आकाशवाणी के माध्यम से लोकगीत, संगीत तथा लोकनाट्य को प्रोत्साहन देने तथा आगे लाने के लिए शिवशरण सिंह ठाकुर (1915-1996) एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व हुए। 11 मई, 1915 को जन्मे शिवशरण सिंह कॉलेज की पढ़ाई के तुरंत बाद प्रसारण की दुनिया में आ गए और लगभग 1936 से अपनी आवाज़ रेडियो को दी। आकाशवाणी दिल्ली में ठाकुर ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सन् 1955 में आकाशवाणी शिमला की स्थापना पर ये यहां प्रोड्यूसर तैनात किए गए। यहां इन्होंने 'हिमाचल कार्यक्रम' में 'नानकू' की भूमिका की, जो विशेष चर्चित रही। इनके द्वारा आकाशवाणी में हिमाचली संगीत को विशेष महत्ता मिली। हिमाचल के लोकनाट्य 'करियाला़' को इन्होंने उस समय प्रदर्शित करवाया जब दूरदर्शन का बहुत महत्त्व था। इन्होंने करियाला पर एक पुस्तक 'करियाला़–फ़ोक ड्रामा ऑफ हिमाचल प्रदेश' भी लिखी। एक पुस्तक 'हिमाचल लोक लहरी' का संपादन किया।

सन् 1987 में इन्हें हिमाचल सरकार की ओर से 'राज्य सम्मान', 1991 में संगीत नाटक अकादमी की ओर से सम्मान तथा 1995 में हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी की ओर से शिखर सम्मान प्राप्त हुआ।

आकाशवाणी से ही जुड़े ऐसे दूसरे व्यक्तित्व हैं एस. शशि। इन्होंने आकाशवाणी से 'इस मास का गीत', 'पर्वत की गूंज', 'धारा रे गीत' जैसे कार्यक्रम आरंभ किए जिससे पहाड़ी गीत तथा संगीत को एक मंच मिला। एस. शशि का जन्म अर्की (जिला सोलन) के पास बातल गांव में 22 मार्च, 1936 को श्री नत्थूराम के घर हुआ। इनके पिता को गाने-बजाने का शौक था और इनके यहां संगीत की महफिलें होती रहती थीं। इनके दादा भी गायक थे। इनके पिता के निधन के बाद घर की परिस्थितियां कुछ ऐसी रहीं कि ये घर से भाग गए और अमृतसर जा पहुंचे। वहां इन्होंने संस्कृत न पढ़कर गाना सीखा। वहां इन्हें संगीत की महफिलों में काम मिलने लगा। शिमला में जब आकाशवाणी केंद्र खुला तो शिवशरण सिंह ठाकुर द्वारा इन्हें गाने का कांट्रेक्ट मिलने लगा। अंतत: इन्हें आकाशवाणी जालंधर में नौकरी मिल गई जहां इन्होंने 'इस मास का गीत' आरंभ किया क्योंकि हिमाचल का कांगड़ा आदि पंजाब में था अत: जालंधर से 'पर्वत की गूंज' कार्यक्रम आरंभ हुआ जिसमें हिमाचल के गीत बजते थे। इन्होंने पंजाब के लोकसंगीत पर भी खूब काम

किया। जालंधर के बाद ये शिमला आकाशवाणी में आए और नए कार्यक्रमों की शुरुआत की। इन्होंने संगीत निर्देशन का कार्य किया और कई कलाकारों को मंच प्रदान किया। इन्होंने एच. एम. वी. के लिए भी गाया।

लोकगीत

शिवरात्रि पर गाया जाने वाला गीत

शिवरात्रि में शिव के स्वागत में यह गीत खंजरी के साथ दो जोड़ियों में गाया जाता है। शिखर से शिव हमारे पाहुणे आए हैं। हम उनका स्वागत करेंगे।

सैयो आजा पारकी टीरौ रै
सैयो गाशै छौतरा फीरौ रै
सैयो आजे शीड़ी रै पादै रै
आछे कोरो सैंयो रै छादै रै
सैयो आजा तौगौ रै थूंडे रे
खाडू काटो फेरूबे मूंडे रै
सैयो आजा देवली पांदे रै
आच्छे कौरौ सैयो रै छांदे रै
सैयो आजे पाहुणा म्हारा रै
बड़े बाबरै ढालि देवी खारी रै।

कृष्ण जन्म गीत

शिवरात्रि के अवसर पर कृष्ण जन्म संबंधी गीत भी गाए जाते हैं। इन्हें ब्रह्मखाड़ा या भजन कहा जाता है। इस गीत में वसुदेव व देवकी को जेल में बंद करने, भाद्रमास के कृष्ण पक्ष में बुधवार को कृष्ण जन्म और जेल के ताले खुल जाने पर वसुदेव द्वारा कृष्ण को गोकुल ले जाने का वर्णन है।

बसुए बरिदै न्हेरी आबेरी हूड़ा बसूवा देवा
गाशै पौड़ि भद्रा शीला बसुवा देवा
दोहर सोहरी बसुआ आगली बसुवा देवा
संगै पौड़ै लोहे रे कनीला बसुवा देवा
संगै पौड़ि भौद्रा शीला बसुवा देवा
कन्हैया लाला कुत्ते पेहरू पौड़े बसुवा देवा
बिल्ली बैहरू घोड़े सिंहौ सर्पा पैरू पौड़े बसुवा देवा

आईं गोबा नौलानरत्रा बसुवा देवा
आईं गोवा कृष्ण पक्षा बसुवा देवा
आई गोवा बुधबारा बसुवा देवा
छूई गोवा कृष्ण अवतारा बसुवा देवा
चुटि गोवै लौहे रै कनीला बसुवा देवा
फुटी गोई भद्रा शीला बसुवा देवा
सिंहा पैहरू सूते बसुवा देवा
सर्पो पैहरू सूतै बसुवा देवा
कुत्तै पैहरू सूतै बसुवा देवा
बिल्ली पैहरू सूती बसुवा देवा
पिता बसुवा बहाणा लेई जा पारै
गोकुल पारे आपणे घौरे
पीछे दो सिंह गर्जे हां हूं करै
आगे जमना का नीर बसुवा देवा
माता जमुना पैरू पड़ै कन्हैया जन्म लिया
ज्यादा गर्व तू मत कर जमना माईं
ज्यादा गर्व हरनाकश ने किया जमना माईं
नरसिंह अबतार संहार किया जमना माईं
ज्यादा गर्व रावण ने किया, रामा अवतार संहार किया
पैरू हुए घटा यमुना रा नीर बसुवा देवा।

जागरे में महासू देवता स्तुति

जुब्बल, रोहड़ू व सिरमौर में भाद्रपद की चौथ व पंचमी की रात को जागरा मनाया जाता है जिसमें महासू देवता की स्तुति में यह गीत गाया जाता है। गीत में महासू देवता की यशोगाथा गाई जाती है कि महासू ने राक्षसों का नाश कर यहां शांति स्थापित की।

ब्रह्मा न जाए रे बिरशुआ, ब्रह्मा न जाए
बिरशुरे माउड़े राजा, चिड़के रानी
ओबरे दे बाकरे राजा, बाबड़े दो ब्रागो
ब्रह्मा न जाए रे बिरुआ, ब्रह्मा न जाए।

बिरशुआ ठणियां, एजी का हूईं

गाबी सूई पन्द्रह राजा, बाछटू दूई
ब्रह्मा न जाए रे बिरशुआ, ब्रह्मा न जाए।

काटी लै बाकरी गाढ़ी लै ताम्बै
बारह बिसो भाउरी भरो, बौठा री ताबै
ब्रह्मा न जाए रे बिरशुआ, ब्रह्मा न जाए।

महासू रे मावेड़, चिड़िया चड़के राणे
ऊटै लाई डांगरै, ऊची फुकुणो पाणे
ब्रह्मा न जाए रे बिरशुआ, ब्रह्मा न जाए।

चारै महासू डेबै तौसो रे तालौ
दिल्ली छाये महासबे करे राजा रै जाए
पोटे दे सुंगटू भरे ब्रह्मा न जाए बिरशुआ ब्रह्मा न जाए।

भैगड़ा

विवाहादि के अवसर पर प्रातः गीत

1

जांगो जांगो कुड़े पारोएथा, रैणा हुई गोई ओ भैणा
जांगो जांगो कुड़े पारोएथा, मंडला देई बाटिया बाड़ावे
रात्रड़े ते लागी कुशमा शांदड़ी, चिड़ूए चुरा पुरा लाए।
रात्रड़े ता लागी कुशमा शांदड़ी माखिए रूड़ा भूड़ा लायी।

2

कौस घौरे शुभ लागा कारोजा
कौस घौरे होरे बांढो दारूबा।
बापू रे घौरे लागा शुभ कारोजा
बेटा घौरे बांदी दारूबा।
आमा रे घौरे लागा शुभ कारोजा
आमे घौरे होरी बांडी दारूबा।
चाचा चाची भाई भाभी
पोलका नियोंदा, कोस देणा बेटेया
जिनी बिना कारोजा नी छौंहदा

पोलका नियोंदा कुड़ा देणा देवता
जौस बिना कारोजा नी हौंदा।
दुजा नियोदा कौस देणा
जिना बिना कारोजा नीं हौंदा।
दूजा नियोदा कुला देणा पुरोहिता
जौस बिना कारोजा नीं हौंदा।
किदा का आए ए शोडशामात्री
किदा होंदा इन्हां रा बासा
परबता ते आई शोडशामात्री
ऊंचे टिब्बे इन्हां रा डेरा।
हौथे लेयै बैटेया फूल फालावोरे
इन्हां रा पूजाणा कराए।

आंचड़ी या एंचली गायन

चंबा में गाई जाने वाली 'एंचली' की भांति ऊपरी महासू में भी एंचली गायन की परंपरा है जिसे 'आंचड़ी' कहा जाता है। शिवगाथा का यह एक लंबा गायन है जिसके कुछ अंश यहां दिए जा रहे हैं–

1

सांमी आजे पाहुणे म्हारे, सांमी आजे पाहुणे म्हारे।
केथे आजे नेड़ी के दूरो, केथे आजे नेड़ी के दूरो,
सांमी आजे पोरे गो दूरो, सांमी आजे पोरे गो दूरो।
सांमी के मोढड़ो पूरो, सांमी आजे पोरे गो दूरो।
सांमी आजे पारेखी टीरो, सांमी आजे पारेखी टीरो।
सूने रो छोतरो पीरो, सूने रो छोतरो पीरो।
सांमी आजे बाबड़ी बागे, सांमी आजे बाबड़ी बागे।
छेडू छोटी कोदके लागे, छेडू छोटी कोदके लागे।
भोड़े बाबा भोड़े बाबा, भोड़े बाबा भोड़े बाबा।

सांमी आजे शीड़ीए झोटे, सांमी आजे शीड़ीए झोटे।
खाडू काटो बाकोरे मोटे, खाडू काटो बाकोरे मोटे।
भोड़े बाबा भोड़े बाबा, भोड़े बाबा भोड़े बाबा।

सांमी आजे देवोड़ी गाशे, सांमी आजे देवोड़ी गाशे।
सांमी पूजो चावड़े माशे, सांमी पूजो चावड़े माशे।
सांमी म्हारे मोढड़े बैशै, सांमी म्हारे मोढड़े बैशै।
सांमी म्हारे घौरो रे धोरिए बेशै, सांमी म्हारे घौरो रे धोरिए बेशै।
औरे बोले कोयदे रोणसिया, औरे बोले कोयदे रोणसिया।
बाकोरे तेरे केतरे ओरो बोले कोयदे रोणसिया।
ओरे आरे बोले दिल्ली दो तेरो, ओरे आरे बोले दिल्ली दो तेरो।

केजे महीने जागरे बरागरे, केजे महीने जागरे बरागरे।
केजे महीने शिवरात्रा हो, केजे महीने शिवरात्रा हो।
ज्येठो शाहड़ो जागरो बरागरा, ज्येठो शाहड़ो जागरो बरागरा।
माघे फाल्गुनो महीने शिवरात्रा, माघे फाल्गुनो महीने शिवरात्रा।

भोडे बाबा भोड़े बाबा, भोडे बाबा भोड़े बाबा।

2

इन गीतों में पहले भक्तिगीत और बाद में वीर रस के गीत भी गाए जाते हैं। प्रस्तुत है एक अंश–

सिया राणी पाणी ले चाली रामजी
सिया राणी पाणी ले चाली।
पीठी पाई किली घड़ोली लै राणियै पीठी पाई किली घड़ोली
हातै पाओ पीतली लोटा लै राणियै, हातै पाओ पीतली लोटा।
बैणे मौने सूंचदी लागी लै रामजी, बैणे मौने सूंचदी लागदी।
जै ता होमू लै कोपटी रामजी, जै होमे रामा लै कोपटी
मुई लोड़ी घौरा लै आई ला रामजी, मुई घौरा लै आई।
सिया राणी चालदी हुई ला रामजी, सिया राणी चालदी हुई
जाये पौड़ी आधली बाटै लै रामजी, जाये पौड़ी आधली बाटे।

दीवाली के अवसर पर राम-रावण युद्ध गीत

दीवाली के अवसर पर नृत्य करते हुए एक गीत गाया जाता है जिसमें सीताहरण के बाद श्रीराम की सेना का एकत्रित होने का वर्णन है। रावण की पत्नी उसे समझाती है कि सीता को लौटाकर श्रीराम से अपने अपराधों की क्षमा मांग लो। किंतु रावण नहीं माना।

सिया डेबे रामौ री हारौ
डेबे रामा अटको पारौ
धोबी पड़े रामो रे ताम्बू रे
धोबी हालौ पानी रे लम्बू रे
रामै रि आरती हुई रे
जैंई ए तांदे थुराने कराह रे
पोरी नीये एसरी सीयै रे
धोबी कोरे पड़दा जाइ रे
भोला राजा औसो हिन्दु रे
ताखै तौबै जाला घनाई रे
एकि सीए नीए एसारी रे
दुजी नीए सोने री बनाई रे
रानी दामोद्रीए बोलू रे
दोने शुणे कानडू लाई रे
करे शांकू समुद्रौ
हांफे लांके रि ठाई रे
रणो डेबे नी बीछियै
कुम्भो देवै करणो भाई रे
रणो काटौ लै बीछियै
कम्भौ काटोलै करणौ भाई रे।

शिव नृत्य (एक अंश)

इशर नाचौ अंग अंग मोड़े
सुलै नाचौ लाधत्री न चोड़े
पैरे नाचौ पैताली रानी
डिंडै नाचौ ढनेसरा रानी
जानू नाचौ जानका देवी
हीयै नाचौ हिडिम्बा देवी
गले नाचौ ऐ रूण्ड माला
साथी नाचौ ऐ सरपो काला
काने नाचौ मुंदरो बाले़

शिरै नाचौ गांगौ रो पाणी
बांबी नाचौ पार्वती राणी
हाथै नाचौ दगधे तीरौ
दांवी नाचौ हनुमंत बीरौ
ईशर नाचौ अकेलि ऐ अकेला
संगे नाचौ नौ लख चेला।

वैशाखी मेले पर गीत (बीशुए जाणा)

जदौन में लगे बीशु या वैशाखी के मेले में जाने के बहाने प्रेमी-प्रेमिका के इस प्रणय गीत में प्रिय गोपी को यह मशविरा दिया जाता है कि वह मेले में न जाए, उसका सौंदर्य बांटने की वस्तु नहीं है।

ताणा बुनी ला बाणा, बीशु तौ लागौ डालिए जदौने रो
मेरे बीशुए जाणा, बीशु...।
लागी पन्द्रह पींगौ, बीशु
देखे डांगरू रींगौ, बीशुए न डेवे गोपिए जदौने रै
घुड़ हेगिया माटा, बीशु तो लागौ मोणीए जदौने रो
देखे राओगे काठा, बीशुए न डेवे डालिए जदोने रे
डुमौ आजा सनाटा, देव तौ आजा गोपिए मानाणे रा
लागौ मेरे औ शाटा, दूख तौ पौड़ा गोपिए जींवदै रा
जीपे दीता झलारा, फिरानू ऐते गोपिए मोड़ो दा
तेरा हरा गरारा, दूरै परेणु बांठणै गोपिए
खाया मुलकौ सारा लीऊरी हेरे गोपिए आखिऐ
चैंई बरशुऔ आए, बीशु तौ लागौ डालिऐ जदोने रो
तेरे जीवरे बाए, दुनिया देखे गोपिए मुकतै।

बीशु लागा रिंजटा

रेजंटा में बीशु का मेला लगा है। इस मेले में झगड़ा होने की संभावना है अतः तैयारी से चलना होगा। साथियों को तैयार करने के लिए बंदूकें दाग दो।

बिशु लागा रिंजटा मोरने रा खेलो भाईया
घीयू जौलो घेवलीयै
बाटी दो न तेलो भाईया...

जागा बड़ि नाओरे हिबणो रो पाणी भाईया
ठाहरी मूले ठैकरे खुमलि पाए भाईया...
जागह ओतरी नाओरौ देआ ले किशो भाईया जागा
दे न खूंदा बिछुए हारते दिशो भाईया...
फागिया लाए कोलिया नगारे दे काछू भाईया...
चौड़ा हुंदा खौशिया फिरदा नी पाछू भाईया...
एहरो लागा बोलदा से रण्टा ज्यादा भाईया...
लाणी दा एथा कडले छोड़ना मोहाला भाईया...
ऊंची जागह नाऊरौ किया औ मुहाला भाईया...
सूता हुन्दा खौशिया जिलकी न जाला भाईया...।

विवाह गीत

यूं तो ऊपरी शिमला में विवाह गीतों की परंपरा नहीं के बराबर है तथापि ऐसे अवसरों पर रामपुर व साथ लगे क्षेत्रों के ब्राह्मण परिवारों में विवाह गीत गाए जाते हैं। ठियोग क्षेत्र में भी विवाह गीतों की परंपरा है। लामणू या लामण गायन की परंपरा भी विवाह के अवसर पर पाई जाती है। विवाह गीतों की परंपरा निचले क्षेत्रों, जैसे–कांगड़ा आदि में अधिक है। यहां की विवाह परंपरा निचले क्षेत्रों से भिन्न है। इस ओर कन्यादान की परंपरा नहीं रही। बहुपति प्रथा के साथ सतीप्रथा का भी चलन रहा। सतलुज के इस ओर निरमंड, दलाश आदि स्थानों में भी विवाह के अवसर पर गीत गाए जाते हैं।

सतलुज क्षेत्र के विवाह गीत

विवाह में शांति स्थापना व शांति हवन के लिए यह गीत गाया जाता है–

आकाशे थापो जो सूरज, तिनि किओ आकाशो राजो आंजी
पैताल़ा थापो जो भागसू, तिनी किओ पेताड़ो राजो आंजी
ब्राह्म्हा नहीं तो बिशनु नहीं तो बशेंद्रा देआं आंजी
गोयले आणो बशेन्द्रा थापे माए अंगनियां कुंडे आंजी।

आमंत्रण गीत

नगरे वसंतियो धरीयो गृहे अपनी बेदो बड़ाए
तिना बेदो बेदो पंडिता जसो बिना घड़ीए न होए
गृहे हमरिए बेदो बेठाए तिना बेदो।

तेलगीत (कोटखाई)

तेलौ लाये तेलिये तेल मामूए सो जाए
तेलौ लाये तेलिये तेल मामीए सो जाए
मामी तेरी सुहागिणो मामी तेलिया सो जाए
जुग जीयो मामी तेरे।
तेलौ लाये तेलिये तेल भाई सो जाए
तेलौ लाये तेलिये तेल भाबिये सो जाये
भाबी तेरी सुहागिणो भाबी तेलिया सो जाये।

मामा का स्वागत

कुणजे आए छत्रे जमाणे
कुणजे आए चढ़ घोड़ी बे
मामे जे आए छत्रे जमाणे
मामू जे आए चढ़ घोड़ी बे।

तेल बटणा

तेलु केरी द्रुब केरी डालिए
विनायक सिरे तेलो पाए।
कुण सपुरूषा कुण सपुरूषा
विनायक सिरे तेलो पाए आं।
तेरो मामु सपुरूषा, मामु सपुरूषा
विनायक सिरे तेलो पाए आं।

कन्यादान

त्रीणा छेदे, त्रीणा छेदे बापुआ
छेदे हरे द्रुबु केरे डाले।
इज़ी बापुका उऋण हुए
घौरा बौणा का उऋण हुए।
त्रीणा छेदे, त्रीणा छेदे बापुआ।

विदाई

1

उड़े उड़े मेरी कुंजरिए, आज मेरे आमा न मिले बे
मिले मिले मेरी आमीएं, आज मेरे शाऊरे जाणा बे।

मिले मिले मेरे बापुआ, आज मेरे शाऊरे जाणा बे
उड़े उड़े मेरी कुंजरिए, आज तेरे शाऊरे जाणा।

2

खड़ी होए आमीए, आंगणे आपणे
बेटी के मेंह्दी सज़ोए।
आज की संझे बेटिए बापू ज़ीए मैह्ले
कल जाणा सौहरिए घरै।
सौह्रिए घरै बापुआ, मैं नहीं जाणा
मैं रहणा जनमा कौ घरै।
जनमा कुआरी बेटिए, रही बी ना सकदी
रही बी ना रामा री सिया।

वधू प्रवेश

किदे आओ लाड़ी केरो जुगो जमाणा
किदे आओ लाड़ी केरो भाए
आगे आओ लाड़ी केरो जुगो जमाणा
पाछे आओ लाड़ी केरो भाए।

विवाह गीत (कुमारसेन, कोटगढ़ क्षेत्र)

ठियोग, ऊपरी महासू का प्रवेशद्वार है। यहां से एक ओर तो किन्नौर जाने का मार्ग है तो दूसरी तरफ छैला की ओर नीचे उतरकर कोटखाई होते हुए जुब्बल, रोहड़ू आदि से उत्तराखंड के लिए मार्ग है। ठियोग से आगे, रामपुर से पीछे कुमारसेन और कोटगढ़ के क्षेत्र पड़ते हैं। इन क्षेत्रों में विवाह गीतों की परंपरा विद्यमान है और विवाह संस्कार निचले क्षेत्रों से मिलते-जुलते हैं।

ठियोग क्षेत्र (विवाह से पूर्व मंगल गायन)

इस गीत में देवताओं का आवाहन, बेदी की स्थापना और कार्य निर्विघ्न होने की प्रार्थना की जाती है। गीतों में राम विवाह, जनक, जानकी का वर्णन किया जाता है।

पहलिका शबिदा हो कुड़ौ रै दैणे देबी देबतै
जिनो बीणी कारज न हो हौंदा।

बोईणा आई चैंई ओ कुड़ौ रै देबी देबता
बेटे रे बधावै शुभ करै ओ बे आ. ओ।

दुजड़ा शबिदा हो चांद जाणेअ सूरज
जिनरी किरणी परीथवी दो हो पोड़ी।

चीजड़ा शबिदा हो तीरथा गाणी गांगोडी
जेई बीणी बेदिए रे गनाबो हौंदे हो।

पौलखा बधावै रा शबिदा हो कुड़ौ रै गाणे परोधा
जिन बीणी बेदिरा हुंदा नी बचारा ओ।

आधिए बेये हो आधिए घड़िए
शुभ परोथा बेदिरा करै बचारा ओ।

विवाह से पूर्व वर-वधू द्वारा मां के दूध से उऋण होने तथा दूध की लाज रखने के गीत भी गाए जाते हैं–

दश मिनै बेटियै रौगे रौगे मुंएं ओ
खुनौ री पाई गौरबे आज केरी उऋण ओ देउ ओ
दश मिनै बेटियै ओ गौरबे मुंएं पाड़ियै
संगै हैरा जल्मैया ओ देया ओ
जल्मैया देया बेटियै दशियै मिनै गौरबे द
भाठ धारो दुधा री बेटा पिलाई ओ
भाठ धारौ दूधा री पिलाई ओ जल्मै ओ री बेटियै
छौये मिनै झूलै दी झलाई ओ
छौए मिनै झुलै झलाई ओ
जल्मैओ री बेटियै
बारह मिनै कौड़ियै खलाई ओ
भाठ धारौ बेटियै ओ दुधा री पिलाई ओ
दुध मेरा हीणा न हो पाये ओ।

तेल बटणा

बापुआ दे मेलै बेटियै ओ आम्बूए दा बूटा
आम्बूए दा बूटा

मैलै ओ राधे रूपे कौण बैठी ए
बापुआ दे मैलै बेटियै ओ आम्बूए दा बूटा
आम्बूए दा बूटा

बेटिया ओ कियां परोणा किया संजोणा ओ
केईयै सजोणा बापूआ आम्बूए दा बूटा
आम्बूए दा बूटा

केईयै ओ बेटियै तेल संजोणा ओ
भाईयै संजोणा बापुआ आम्बूए दा बूटा
आम्बूए दा बूटा

हरियै जुबे ओ बेटी जो तेला संजोणा ओ।

सेहरा

लाड़ा बोला ओ शुण मामु मेरी
आणु बेओ शीरो रो ताजो

शीरो रो ताजो भाणेजा ओ आपू मुं आणू
तूबी होए पैनदा तैयारा ओ

केई बामै रामा ओ भगूए कापड़ै
केई किया साधु दा ओ भेषा ओ

भगूए कापड़ै ओ जानका जाणा पुरी के
ईये बैणे के साधु रा भेषा ओ।

बारात के पहुंचने पर शिव धनुष तोड़ने का वर्णन–

जानक ऋषिए रामौ के दिता नियूंदा
धनुषा हामा तोड़ने देओ बेड़ा ओ
उतावड़ै न होवे ये ओ सीया सोहेली
धनुजा आजा राम तोड़दा तैयारा।

कुमारसेन, कोटगढ़ क्षेत्र में कुछ अंतर के साथ इन गीतों का गायन किया जाता है यद्यपि यहां भी राम, लक्ष्मण जती का वर्णन आता है–

एक जती होंदो कुएं करो मीडको
एऊ पोरू जती नेईं कोईदू

दूजो जती होंदो मोर कड़ाई
एऊ न देंदो हे रामा चन्द्रा
एऊ बिना बागा गोंदी शूनी
के जती मांगा के जती देउ
घोरे जती लक्ष्मण भाई।

ठियोग क्षेत्र के संस्कार गीत (यज्ञोपवीत संस्कार गीत)

कुणीए काटेया कुणीए बाटेया
किनो पाया गौड़े जाणेवा
बापूए पाया गौड़े जाणेवा।
बेटा बोलोदा ए शुण गुरूआ मेरेया
मेरे कोरणो जलमा काया
जोलमा काया कोरदी न बेटेया
खोड़ी लागा भीखमा कवाड़ी।
बेटा! जै बोलाए गुरूजी ओ आपणे
मेरे बोणनो जोगी।
गुरू जै बोला चैले जै आपणे
किले तेरे बोणनो जोगी
चेला जे बोलो गुरूजी आपणे
देश मेरे घूमदे जाणा
तीदे तेरे बहणा होंदी।
बेटा बोला बापूए जी मेरेया
केणा होआ साधुआ रो रूपा
काना दे कुंडला, अंगा दे विभूति
जौई हौआ साधुआ रा वेशा।
शिरे लाओ जोकटा मौकटा ए
हाथै टिमरी टोई जोई हौआ
साधुआ रा वेशा।

विवाह गीत (तेलगीत)

कुड़िएं बशैड़ा ए दातों रे पाटड़े
कुड़े किया बैया रा कमामा

कपूए बशौड़ा ए दांतों रे पाटड़े
आम्मीए किया ए बैया रा कमामा।
जुगे जुगे जिबें बेटेया आमां बापू तेरे
जुड़िए किया इतना कमामा।
आंगड़े आपणे खोड़े रोहे बापूआ
बेटे रे सिरे तेला साजोए
तेला साजोए बापूआ।
बोड़े तेरा धारोमो होदी
तेला होंदा आजको गागें जोबना श्नाना।

मामा का स्वागत

तुम्हां पूछू हो नागोरी रे लोगुओ!
तुम्हें ता देखा मामू डेऊओ हाटे बाजारे।
कोड़यो का गेया ए नीयोदारू जाई
जाई बेशे मामू जीया रे घौरे
काडेयो कागेया नियो दारू जाए
मामू मेरे नियोजियो आणी।
गेटा दी खोड़े रोहे मामूजीआ मेरेया
तेरा लेणा स्वागत कौरे।
हाचीए घोड़िए ए हाजिए बेले
मामा हुई भाणजा रे मेला शुभ।

बटणा गीत

कुणी आणी मेहंदी बोटणा
कैऊ दिनी कारजे जायी।

मामूए आणा ए मेहंदी बोटणा
शुभा दिन कारजै लायी।

कैथो आणी मामूआ ए मेहंदी बोटणा
कुड़ी दिनी हाथै लायी।

शाकुटीबे मेहंदी री बोटिणा
तेथों भाणजा मेहंदी लायी।

आंगड़े आपणे खोड़े रोहे मामूआ
भाणजे हाथे मेंहदी साज़ोई।

हाथा दी पहनी कांगणा सनागणा
भाणजे हाथे मेंहदी साजोई।
बोड़ा तेरा धौरमा होया।

सीसेदा बोटणा आंगे आंगे मलाऊ
कुणी आणी मेंहदी बोटणा।
कैऊ दिनी कारजे जायीं।

स्नान

उड़ो चालो गोरियो पाणी ले आइयो
तेलेये मलियो बोटणा मालाइए
बोटणा जै बिचे राड़ियो बदामा
सारेजगे जिवे बेटेया तेरी जौ आमा
जिने आगे बोटणा मलायो।

सारे जूगे जिवे बेटेया तेरे जो बूबा
किने कितीयो आंगणे चीकड़ा
कुणे कितीया...।

बापू दे लाडले नाहणा कितेयो
आंगोणा चिकड़े तिना कितीयो।
ऐऊ पणिये तिना कितीयो।

ऐऊ पणिये मुना ना नहादो मामूआ
डोडिये छूआ।
नई छूआ डडिये भाणजा
शूची गंगा रो पाणी।

ऐऊ पाणियो मुना नहादो मामाआ
कौऊए छूओं।
नई छूओं कोऊए भाणजा
गंगा गया रो पाणी।

शांति हवन

काशी रे पौण्डता ओ कुड़ा रे पुरोहिता
कुण्डा देवता सर्पशणा कोरे।
बारह बोरशे बारह बोरशे बिजू काटी बौणादी
रामे तपीए दुनिया जागाए।
राजे दोशरथे घौरे तिने लौआ
हवना कराए।
केंईं री लाकड़िए हवना कराओ
केंईं री आहुता दैणी।
नैवरा चानणा रे लाकाड़ी हवन कराऊणा
घीओ रे आहुता दैणी।
सौरगे पूछा ए सैंसरा गौपी
केयो लागी मीठे धूपूं रे बासो
मातड़ोगे बैआ लागो रामा रो
तैथो लागी मीठे धूपू रे बासे।

सेहरा बंधी (सेहरा बंदी)

काशी रे पोण्डोता ए कुड़े लगाई
बेटे रे शीरा लगाई।
औरू दे मामूजी ओ
शीशे रा ताज़ा मेरे होणो
शावारीय घौरें तैयारा।
मामू बेटे रा ए बोड़ा होंदा घोरायी
जूंडी आणो शीशा रो ताज़ा
सुतिया मामू आए जागदे होऊ
शीरे दैयी बोगता लगाई।
हाजिए घोड़िए शुभे बेले
शीश रा मुकटा लागाई।
चानण गोटे चानण गोटे हे रघुबीरा
माथे दिनों तिलका लगाई।
खुबा बोड़िये आगोणे चीखोड़े

खुबा बोड़िये।
ओरो दे मामूआ ए लोगना दे कापड़ू
मेरे हुई शावरी के बेरा।
लोगना रे कापड़े हो
मेरे देवें भाण्डजा
तू भी होए पहनादा तैयार
बेटा बोला बापूजी आपणे
घोड़ा करो पालकी तैयारा।

कन्यादान के समय वेदी में पूजन

रामा सीता दोने बेशे बैदिये
हाथा जोड़ा रामा जो सीता
सोबी देबता ध्यान जो कोरा
हाथे लेवो तिलाचावल औच्छता
गणपति देबता पूजना कराओ।
इन्द्रे पूछा इन्द्रे राजा
केथो पौढ़ा शास्त्राए बेदा।
जानका पूरे हो सीते रा स्वयंवरा
तीदी पौढ़ा शास्त्राए बेदा।
पैंइंताड़े पूछा ए तासाकी नागा
केथों लोगी मीठे धूपा रे बासा
माताड़ोगे हो बैया रामा सीता से
सैये लागी मीठे धूपा रे बासा।
हाथे लैयोए गंगा जोले पाणिए
सौबी देबते स्नान कोरोबो
हाथे लैओ ओ फूला फलवारा शोडशमात्री
पूजना कराओ।

बारात का स्वागत

कुण जै रास्ते ए रामा जोआ आए
सैई रोस्ता कैईए साजावी!
जीऊ रास्ता रामा जी आए

सैई रोस्ता कुंगुंए साजाई।
जैऊ रोस्ता रामा जी आए
सैई रोस्ता गुड़े मोतिये साजावी।
बापू रे आंगणे कुण जौगी आए
इन्हां रा स्वागत करावें।
एखी जै रोगें एकी ओ रूपे
कौस देसा औरगा कौस देणा जो धूपा
एकी जै रोगें एकी जै रूपे
रामा दै ओरगा, लक्ष्मणा धूपा
गेटो दे खोड़ रामा ओ लखना
इन्हां रो स्वागत कोरो।
रामा जै आये घोड़ा री सवारिये
लखणा हाथी री सवारी।
मीठड़े धूपूए मुण्डे मोती माल़ें
इन्हां रा स्वागत कोरो।
हाजिए घोड़िए शुभ रे बेड़े
इन्हां रा स्वागत कोरो।

लग्न बेदी गीत

रामा सीता बेदी हुए खोड़े
भाइयो मेरे, मेवे बरसावो।
देखो देखो लोगुओं भाइए मेरे
इन्हदा का मेवे बरसावो।
पहली लांवी लांवी पहनीए
भाई ए रामे लोगना गीनिया
मुंह से अमृत बोलिए।
तीजी लांवी लांवी फहनीए
नारा, सवेलिए, भाई ए रामे लोगणा गीनिए
मुंह से अमृत बोलिए।
चौथी लांवा लांवी फहनीए
रामा सीता जुएं खेला चौपड़े

भाई रे रामे लोगण गीनिए
मुंह से अमृत बोलिए।

कन्यादान गीत

1

आकाश कांपे पैइताड़ा कांपे
तू क्यों कांपे मेरे बापू!
सोना चांदी रा ए दाणा दिनों बापूए
आज किया कोन्या रो दाणा।
होर दाणा ए भोरी किया बापूए
साथी दिनों कोन्या रा दाणा।
केशा का मोनशे कोन्या कुंवारी
पूछां दा कोंपला गाए।
ऐणे मोनशा ए बापू जीया तुस तो
जैणी मोनशी कोपला गाये।
सोखा देंदा बापूआ कोया कुंवारी ले
एऊ दाणा हीणें न पाए।
सजे बेज़े बाडा देया बेटिए
एऊ दाणा हिणे न पाई।

2

बेटी जै बेशी पीपड़ा री छैइंए
आमा बापू जो दाणा जो मांगा।
बापू जै तेरा बेटिए धोर्मा जै कोरदा
दैये बापूआ कोन्या के दाणा।
दैये दैये बापूजी ओ आज को दाणा
दाणा हौंदा आजाको गांगे जोबने शानाना।
सूना चांदी रा ए दाणा देयी बापूआ
भूमि दाणा भाई दैये मेरे, मूल दैये
सूना चांदी रा दाणा।
आंगणे आपणे खोड़े रोहे आमीए
बेटी लै दाणा जो दैंदी

दाणा होंदा आजाको चोऊ हौंदा तीर्था स्नाना
बेटे जो बेशे पीपड़ा री छैड़िएं
सूनै चांदी रे बोरखा हुई।
दैओ दैओ मामूआ बेटे ले दाणा
दाणा होंदो आजाको गांगो जोबने स्नाना।
दैओ दैओ लोगुओ बेटी रा दाणा
दाणा होंदा आजको गांगो जोगने शनाना।

विदाई

1

हुकमा देदी जोलमी री आमिए
मेरे जाणा शावरिए घोरा।
हुकुम ता देऊ मेरे बेटेया
घिणा मारी द्वारेदा छाड़ी
आपू ता चालो राम सीता बिहाईदों
कुण कोरा योध्या दी राजा।
राजा तो कोरा जोड़ी भाई भोरता
सौ ही होदां योध्या रो राजा।
आपू ता चालो रामा जनकापुर
कुछ कोरा योध्या दी राजा
राजा ता कोरा माता काशोल्या
सै ही होंदी योध्या री राणी।
बेटा बोल बापू आपणे घोड़ा कोरी
पालकी तैयारा
घोड़ा पोलगी मेरी कोरणी बेटेया
तू भी होई रोभदें तैयारा।
शुणे ता धीशे यौध्या रे ठाये
अखली न कोरे बेटेया काहड़ी
साथी भेजू लोक्ष्मणा भाई।
तैऊ ता जा घौरे बेटेया
जैऊ घौरे शाशाड़ी घाणीरे।

पूजा कराओ
आकाशा देवते पूजना कराओ
बेटा ता हौंदा मेरे लाडला ए
ढाल भी न जाणा कौरे।
हुकमा देदी जोलमा रे बापूआ
मेरे जाणा शाओरी रे घौरे।

2

हुकमा जै दैयी मेरी आमीए
जाणा पौड़ो शावरीए घौरे।
शावरिए घौरे शोई जाई बेटिए
घिणा मारी दौरदा न छाड़ी।
सौंगीबी ता छूटी बेटिए साथाणी
छूटी गोओ गुड़िया रो खेला।
चिशा रा नी कोरी बेटिए काड़ी
जाला की भेजू मूं सारी।
भूखा री न कोरी बेटिए काड़ी
साथी भेजू ओदमा ले रोटी।
एखली न कौरी बेटिए काड़ी
साथी भेजू भाईया रे जोड़ी।
हुकमा जै देई मेरे बापूओ
मेरे जाणा शाचरी ए घौरा।
बेटी बोला बापू के आपणे
घोड़ा कोरी पौलाकी तैयार।
बेटी बोला बापू के आपणे
घोड़ा कोरे आपणी तैयार।
हुकमा जै दैयी मेरी आमीए
जाणा पौड़ो शावरीए घौरे।

युद्ध गीत

युद्ध गीतों में एक राज्य का दूसरे की सीमा पर आक्रमण और वीर पुरुषों के पराक्रम की गाथा गाई जाती रही है। महासू के क्षेत्र में वीर पुरुषों को

'खूंद' कहा जाता था। किन्नौर तो सात 'खूंदों' में विभक्त था। ऐसे ही यहां के खश भी पराक्रम में प्रसिद्ध रहे हैं। खश अपने डांगरे के साथ शत्रु के लहू के प्यासे रहते थे। ऐसा कौन है जो खश का मुकाबला कर सके, इस भाव के गीत भी गाए जाते थे–

उशी कौरा खौशिया तूमो रे रीशा
त्हारे लागा डांकरा लोऊ रे चीशा
और कौर खौशिया गौरला ओ बाता
त्हारे नाईं पाईंदा पाणी दे लाता।

1. बुशहर जुब्बल युद्ध

इस गीत में जुब्बल सीमा पर हाटकोटी में आक्रमण, राणा द्वारा बढ़ाली खूंदों द्वारा हमलावरों को खदेड़ने का वर्णन है। वे नदी तक बढ़ते चले गए जहां एक ओर जुब्बल और दूसरी ओर बुशहर की सीमा है।

देवरै लागी महलौ दी नै बाने री भूशो
जांहते बजीरो रो न आनंडू तूशौ

खूंदा बढ़ालिया माखै रा गाला
हाट छाड़ा चौंकी दा बाने जगाला

खूदै बढ़ालिये मांजा कटोरा
बानैं गाईं जूझौ खूंदौ खोशो रा पौरा

मिसली कौरो फौरदी न बानै री बोई
बाके री जोखी कौंटुआ एबे न रोई

गाड़ा पूचै घुघतुए रेका फरैबी
हाटो रे कोछड़े दे लाऊ जरेबौ

खूंदे बढ़ालिये बोलणो बोले
उबे कौरौ शांगलो कुत्ते खि होले

बना निआं जीतियो नोदी कनारे
आरे बोली जुब्बलो बसाहरौ पारै।

2. जुब्बल में विद्रोह का दमन

इस गीत में बलसन के राणा और उसके पुत्र द्वारा जुब्बल के गीगू ठंडू

नाम के ठाकुर द्वारा जुब्बल के सीमावर्ती भाग पर अधिकार कर लिया। किंतु युद्ध होने पर नौतिया वीर ने गीगू को मार गिराया और क्षेत्र को पुनः अपने अधिकार में ले लिया।

झीने तू औरिए कौटकौ खेड़ो
रातै स्याणी खि आम्बलौ बैड़ो
थोथी रे बागौ दा बाजी दमामा
तू मेरा नी भाणजा आं तेरा नी मामा
माठौ लागौ औरिया आम्बलौ रो धीऔ
हांसने खेलणे ले गीगू री धीओ
तू जाए ने ओरिया आम्बलो रा हीला
तेरे बोल्हे नी खाईंदा गौई ठाकरै रा टीला
जौले मौरोली नौतिया तेरी लुजड़ी बाओ
राजे रै गांव दा केई दे मुआ घाओ
खाये हेडे औरिया एनिये बागणे रे रीडे
बुड भाषौ जुब्बलौ खै सून रे ठीठे
बागनै दू नौतिए तौबे लाई धाओ
गूले मुआ बकरा कोये बे इये बी खाओ।

3. सरदार दरसू का आक्रमण

सरदार दरसू ने जुब्बल की ऊपरी सीमा में दयार के जंगलों को काटकर अधिकार करना चाहा किंतु जुब्बलवासियों ने उसका काम तमाम कर दिया।

बौड़े लाये दोरसूए घुघलियों नाटे
साथी जे न निणने मरे जुब्बलौ रे काटे।
जीठ लाये बीजिए दे हाथ पा तैगे
कनालौ रे पूचै छांरू कोट लाये बेगे।
टांरा आं बीजिया थाले ओ माशै
पीड़ी रा परौली दे लूदी रे पाशै।

स्वाधीनता के निमित्त वीरगाथा गीत

महासू व सिरमौर में रणबांकुरों के गीत भी गाए जाते हैं जो अपनी मातृभूमि के लिए लड़े। ऐसा ही एक गीत श्रीगुल देवता का है जो मुस्लिम

काल में अन्याय और शोषण के विरुद्ध मुगलों से दिल्ली जाकर लड़ा। शिरगुल देवता दिल्ली पहुंचा। वहां घमासान युद्ध में उसने अनेक मुगलों को मार गिराया।

देवता शिरगुल का पराक्रम

दिल्ली रौहै नौगरौ बे मुगल आये
शीगा आजे शिरगुला दिल्ली हैड़े खाये
रूखे शूखे टुकड़े हैडै शिरगुले खाये
चाली लोणा खायआं मेरे दिल्ली खै जाये
चूड़ी रे ठाकरे माणड़ा औ होऔ
जाय गोवा शिरगुला दिल्ली रै बीलो
तालकटोरे बागो दे घुनी हेड़े लाये
खिरौ री टोकणी बेलनी लाये
पुजेगा मुगलो पूचौ गाओ लाए धाये
नौरकौ रे टुकड़े लाए घुनी दे लाए
थागड़े ठोकने देवै रोशोरी ताणे
मुगलो रो टाबरे लाए चाणयो घाड़े
दिल्ली रे बागो दे ढिमा ढामे होए
एखली देव शिरगुले लाए मुगलौ दोये।

रणसी बीर का पराक्रम

रणसी नाम का वीर मुगलों से लड़ा। उसे व उसके बहनोई को दिल्ली और आगरा में बंदी बनाकर रखा गया। रणसी ने अपने देव महादेव से प्रार्थना की। उसके घर में भी शिवरात्रि को महादेव पूजा की गई। महादेव ने प्रकट होकर इन्हें मुगलों से छुड़ाया।

दिल्ली रूधै आगरे सैयां दूए साल़े बाणोएं
बांदी मौड़ै बादलू सैयां दूए साल़े बाणोए
भाभी देखी बहणा रोआ देखी बाणोए
ऐआ बंदी का उखला दे सैयां खारकारे पाऊ बोदे
खलकाणडु गीउंआ रो जोआरो खारकेट पाऊ बौंदे
खल मांडू धाना रो माशा रो खारकोर पाऊ बौदे
ऐणों पूछा रणसीआ बीरा घीऊ तेला के तेरो तेरे
घीऊ तेला मुकते सैयां ढाई घोड़ी घौराटा रींगा

खाडू बाकरे मुकते सैयां रूली ढुली डैऊए शींगा
सार चाणो गीऊआरो जोआरा शीरे दीनें मंडले लाई
खार चावलो माशा रो रणसीए शीरे मंडले लाई
खाडू काटो बाकरे रणसीए शीरे दीनें मंडले लाई
चाचे चाची काटी, बहू काटी छैओड़ी छोटी शीरे दी
मंडले लाई, बारो नीकाली रणसीआ बीरा रातरी तोईए नी भौमि।

अंग्रेज वन अधिकारी गिबसन को मारने की योजना

मुगलों के बाद अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई के गीत भी पाए जाते हैं। अंग्रेजों के समय रामपुर में वन अधिकारी गिबसन को मारने की योजना बनी। गोली गिबसन की जगह उसकी कुतिया को लगी और आंदोलनकारी पकड़े गए।

घारौ तौ गाई कशौठो गाई, नाउरौ रै नालि रै
टिकरौ गाई मा पौहिले, गाई कुपड़ौ रि कालि रे
भाटौरी मैरी भाटणे तू ओरि खै न बोले रे
झांगणो म्हारे गिबसणौ बौलो ढाकड़ू रै औलि रे
ऐट गै मेरिए नालटीये तू बड़े कमागै रे
छाड़ै थिये गिबसणौ खि कुत्तियो दे लागि रे
गिबसणौ बोलौ साहिबो री मौरो ले रांडि रे
कुत्ती री ताईं तिनै पापीये दुनिया दि भांडि रे।

पद्मसिंह का गीत

प्रथम महायुद्ध में भारत की ओर से लड़े एक सैनिक पद्मसिंह का गीत भी गाया जाता है जो युद्ध में देश के लिए शहीद हुआ। प्रथम महायुद्ध के लिए अंग्रेजों ने सैनिक मांगे तो खनेटी, वर्तमान कोटखाई रियासत में भी राणा अमीरचंद ने प्रजा में ये संदेश सुनाया। एक नवयुवक पद्मसिंह ने युद्ध में जाने की पेशकश की। राणा ने उसे सौ रुपए और जमीन का एक टुकड़ा इनाम स्वरूप दिया। उस वीर की याद में आज भी यह गीत गाया जाता है।

लिखयौ री कागली गोई देवरी कि आए
ठाकरै देई मौषचदै बांचणी लाए।
इस आजी कागली दी फारशी ग्रेजी
नवै नवै छौकरे ऊटे भरती खि बैदी

सड़की रै शाकरे खूबौ नौटो रै बालु
औरै आणो बौदिया शिलू, लांवगी परालु
सारी गोई पब्लिक खाणे म्हारे खि होए
केली जानि रै मामले डैवंदा न कोए
बैटा दैयो कौलै रा सैमी आपणो नांव
भरती खि राजीआ ऐरे डेऊ ला हांव
जैमी कौरे पदैमा भाईया ऐतनी कामौ
शौ देऊ रूपयै साथी घमदर नामौ
आच्छा ढबौ पदैमा भाईया छेई के छता
बाप मेरे कौले खि लाए मी न पता
बापौ दैओला कौला तेरा हलकिय राड़ी
कजा मेरा बाढुआ जो जबरीय छाड़ौ
जबरीय न छाड़दा दाड़ा दैवरी रा राणा
भरती खि बापुआ मैरै शौकीरा जाणा
जटौरा कहानु मैरी बहणा सुखी
का लागी पदैमा माईया भरती री दुखी
मां रूणो ली पदैमा तेरी घुगती गुणै
साथी संगी खि पदैमा बीया तईय न कुणै
भूशौ लाये ला पदैमा भाईया अकली री बाती
शिव राम समकारठु चालो कानिया भाटौ।

स्टोक्स का गीत

अमेरिकन पादरी सैमुअल स्टोक्स कोटगढ़ में सेब उत्पादन व देशभक्ति के लिए जाने जाते हैं। इनका हिंदू नाम सत्यानंद स्टोक्स हुआ। पहाड़ के लोकजीवन में उनका नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। शिमला से आगे नारकंडा क्षेत्र में बाड़ूबाग उन्हें भा गया। यहां सेब उत्पादन कर उन्होंने पहाड़ की काया पलट दी। आज हिमाचल को सेब राज्य उन्हीं की बदौलत माना जाता है।

हिमाचला री माईए बोला झालारू बाणो
साहबा स्टोका बोला पहाड़ा ले जाणो
शिमला का डेवंदो लागौ नारकण्डा बीले

तिंदरा का नौज़रा लागी बारूबागी बीले
बारूबागा री बागूरी लागी साहिबा का चीते
साहबा स्टोका आओ कोटगढ़ी हांदी भीते
साहबा स्टोका आओ मुल्का रो लाटा
कोटगढ़ा री सड़की लागो आदमियों रो साटा
स्टोक साहबा अमरिकियों आओ ओसारी हरि
सेबे आणी बीजा के तीनी मोटरे भरी
एक गाणौ साहबा दूजी गाणी सो मीमा
स्टोक साहबे दौसी भाईयो सेबो री स्कीमा
सेबा दी भाईयो म्हारे पाई लैणी खादा
स्टोक साहबे कीओ भाईयो देशौ आजादा।

देशभक्ति, स्वाधीनता व हिमाचल निर्माण के गीत

भारत माता का गीत

यह गीत जन्मभूमि की प्रशंसा में है। जन्मभूमि भारतमाता जान से प्यारी है। हम अपने प्राण तुझ पर न्यौछावर करते हैं। युग बदले, राज बदले, हम तुम्हारे पुत्र हैं। कैलास तेरा मुकुट है, चरणों में समुद्र लहराता है। तेरा यश बनाए रखने के लिए मैं अपना लहू बहा दूंगा।

मेरिया गौरती भाटिआ लो, सदा करूं बंदगे तेरे
मेरा बसि मनादे लो, हुए रौहे जीवादे मेरे
भारत री माटीआ लरे, तू ओले म्हारो ठाणो
जनी का मारे गौरते लो, तखा म्हारो लो प्राणा
जलमा री माटिआ लो, माथो टेकू तांका हऊं
ज्ञाना शीलू कृष्णा लो, कामा रामा रो लो हऊं
केती बदला जुगा लो, केती बदला धत्री राजा
बदा तेरा छोरू था, बदा था तेरे प्रजा
हिंबपति शिखरा हुंदी लो, कालो समुदरा पाणी
सिंधुवाले झेलमा लो, कृष्ण आमा ब्रह्मपुत्र जाणी
जैई तौई जिंदड़े लो, तेई जऊं थऊ ठाणा
लोहू देऊ आपणो लो, थऊ लो मारो माना।

महात्मा गांधी का गीत

महात्मा गांधी की आज़ादी की लड़ाई की गूंज पहाड़ों में भी सुनाई दी। महात्मा गांधी के स्मरण में यह गीत गाया जाने लगा।

म्हारे देशो रै महात्मा गांधिया, तू थिया बड़ा सैणा रे।
ऐनक, घड़ी, धोती लाएअ, एस देशा रा बाबा बणा रे

चला सचाई गाशे उमीर भरौ, जूठ कबि न बोला रे
राने हरि चन्दर रा ही तू, जाणु अवतार होला रे

म्हारा देश आंगरेजौ द, केश करिए था छड़ाया रे
भूखा रौआ और जेलां दा डेवा, तुई सुख न पाया रे

भगाए देशों द गोरे आदमी, देश त आजाद कराया रे
आपणे राज आफी करौ एबे, काम एरा बताया रे

जाति पाति रा भेद मटावा, सबै एक बणावे रे
हरिजन म्हारे सके भईअ, एजै संदेशे शणावे रे

नांव राखा तुई दुनियां दा, सबी रा बापू रे
जबै आवली याद तेरी हामै रोऊंगे बापू रे।

नेहरू का गीत

इस गीत में पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ सुभाष, कृपलानी, पटेल जैसे नेताओं का भी उल्लेख किया है जिन्होंने देश आजाद कराया।

1

हाथै की नेहरूआ घोड़े री लगामो
देशो मेरे भाईयो औसो गुलामो

घोड़ा जाणी नेहरू रा बागुरी दा खेलौ
सुभाषौ, कृपलानी चाचा शेरो पटैलो

सौरि दिति बोंइणियै रौखड़ी बाहनी
हुकमौ शुणे गांधी रो गरेजो रो न मानी

तौंगे जाणी मोहलो रे फीरे ला फेरे
कामो जाणी काखड़े ए केरियो न मेरे

बौइतों तेरी लछमी निकलो ली तौंगै
आंबी मेरे भाईया आजू ली सौंगे
बाशे मेरे कुखडुआ डौरे लो केई
सारो लागो टाबरा आं देशी तौईं।

2

पंचवर्षीय योजना के फलस्वरूप देश फले-फूले, प्रगति हो। गांधी जी ने दूरदर्शिता से भारत के शासन का भार नेहरू को सौंपा है।

फूले फौले मुलका योजने रे जोरे
देई टाले महात्मे देशौ दौ गोरै।
जगहे खुले जगहे दै कालजौ स्कूलौ
विदेशी आजौ पाउणा देखिए भूलौ।
धैन बापूआ तेरा दूर ख्यालौ
राजौ किया सामने खि जवाहरा लालौ।

हिमाचल निर्माण का गीत

अनेक रियासतों के विलय से हिमाचल प्रदेश के निर्माण तथा इसकी प्रगति पर भी गीत बने जिसका उदाहरण निम्न गीत है।

कई ताज टलै, सब राज रलै, बणा देश हिमाचल रे
बणी मिगे, घूरौ बादले, गेणी भरवी तारै
फूल भरूबै केसरै, रोने धानै भरूबै सारै
शोको काल टलै, बागौ भरै फलै, तुभी तैतै चलाचल रे
कई ताज टलै...।

गैणी तारै, बणो मिर्गे, भरे राम
मादरी देखौ तीनौ री, जीन दुई हाथै कीये कामे
ज़मीदारौ रे हल़ै, खेच़ौ भरै खलै, सब नाज तलातल रे
कई ताज टलै...।

बाऔ दी बीजणी, हेरो दो खाणी, सुखी कुणे नी जाणो
नवै खेच़ौ खोदियौ, कमाबियो अपणे हाथे चैंई खाणो
बाओ लेपड़े टलै, बाओ हाढ़ही गलै, सब कुछ मुका चल रे
कई ताज टलै, सब राज रलै, बणा देश हिमाचल रे।

हिमाचल प्रगति का गीत

पद्मू नाम के जनसेवक को संबोधित इस गीत में हिमाचल में हो रही प्रगति का बखान किया गया है। पहाड़ों की सुंदरता के साथ गांव भी सुंदर होने चाहिए। साफ-सफाई हो, पैदावार बढ़े, स्कूल खुलें, ऐसी कामना इस गीत में की गई है।

ऊंचे ऊंचे टिब्बै होले लो ऊंची ऊंची धारा
स्याणा बोलो पद्मुआ लो कोरी ला गांवों सुधारा।
पहाड़ौ रे बासा दे होवो देखणे कि नज़ारा
हुंदी उबी फूलिटू फूले ऐसा साजना मुलकौ हमारा
स्याणा बोलो पद्मुआ...।

गांवां दे केती केती मौरा ला पाणिये नि चीशा
कूलो आड़णी आणी कूलो नाजे घोरा पीशा
स्याणा बोलो पद्मुआ...।

भोले बाबले बे लोका, अनपढ़ा लो सारे
नव्वै नव्वै स्कूला लो खौलै एजी बे अरजा म्हारे
स्याणा बोलो पद्मुआ...।

छोटड़े छोटड़े घौरा ला होन्दे जाणी ली डेरे
गांव दे होई लोणे बे दूरां बड़े बड़े ला फेरे
स्याणा बोलो पद्मुआ...।

गोली तुंगो दी सबै ठांवो री सफाई
पहाड़ो रा बासा ठावों देवता री मुल्काई
स्याणा बोलो पद्मुआ लो कोरी ला गांवों रा सुधारा।

देशसेवा का गीत

इस गीत में देशसेवा की ओर प्रेरित किया गया है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब भाई-भाई हैं। हमें एकता से काम करना चाहिए।

मिलयौ करौ भाईया देशो री सेवा
म्हारी कौरौ मौदिद नारणौ देवा।
पौहले सभी साथैरी मित्रताई जौड़ौ
जैजा आजौ बढ़ियौ तेसरे दांदड़ू चोड़ौ।

बुरी हुऔ भाईयो आपू भांजिवी फूटौ
घर फूटौ अपणौ बौरी मिलो लूटौ।
हिन्दु मां मुसल्ले सिख या इसाई
बेटै बादे भारतौ रे भारतौ सभी री भाई।
आपू माजे भाईयौ एरा कौरो एका
जैजा आजौ चौडियो तेसरा जाला देखा।

वीर सूरतराम का गीत

वीर सूरतराम ने भारत के पाकिस्तान युद्ध में बहादुरी से लड़ते हुए प्राण त्याग दिए। सूरतराम के पूर्वजों ने बुशहर में गोरखों को मार भगाया था अतः उन्हें राजा बुशहर की ओर से जागीर मिली थी। अब सूरतराम ने पाकिस्तान के विरुद्ध लोहा लिया।

सेजा गाई मौरदो जू रौणे दा पौड़ौ
गाई सेजे छेउड़े जू मैहस्ते जौलो
वीर मौरद सूरतराम देइलै गाये
समाणा जू रौणदा नेक नामे पाये
गाई आमै सूरतराम जू रौणै दा पौड़ा
बोरी साथी रौणदा जू डौटियो लाडैजा
बीर मोरद सूरताराम जू रौणै दा पौड़ा
पाकिस्तान बोरी खू जू चोंगा डौरा
दादे एसरे अचलू हीरे गोरखिए थिये गाड़ै
शिमले रै पहाड़ै दै म्हारे जू एक नाईं पौहड़े
जागीर मिले तोई मामले माफै खानदानै खी त्हारै
मांगी कटियो गोरिखिये आछै कोरे जू घरै
बोरे रामे पाकिस्तान दुजा चायना मिला
धोखाबाज चायना बौड़ा जू तौई था हिला
शेर मोरदे सूरतराम छाड़ौ बादै री नांऔ
देश मुल्क पौरजा तौंई बादै गौड़े ग्राओं
छोड़ो भारतै शिमले ऐ हिमाचले ऐ नाओं
नाओं छाड़ो तौंई तेगटा ऐ, करासा नगरी गाओ
जुड़ै थै बोदे दूई जू निकियौ पौ गाड़ै

भारतै री सिंगे दै जू बाल भर न छाडो
धोखा दिणा मेरे पाकिस्ताने तौई चायना बोड़ा
शेर बबर भारत म्हारा जू नांई इन दा औड़ा
शेखे मारौ था पाकिस्तान जू हराइयो पौछाड़ा
भारतै री सिंगे जू बाल भर न छाड़ै
म्हारा भारत बोरी साथी खब डौटियौ लौड़ा
वीर मेरा पाकिस्तान ऐबै हारियौ पौड़ा।

अन्य प्रचलित गीत (कांडै रा मेला)

कांडै के मेले में रंग-बिरंगे सेब बिक रहे हैं। मेले में प्रेमिका को तो जरूर आना था। उसके न आने से मन में आग लगी है।

ओ लालिए ओ लालिए ओ!
कांडै रे मेले खिं आओ पदम देव
कांडै रे मेले खिं बांके ससते सेब
ओ लालिए ओ! कांडै रे मेले खिं आओ पाणी बरूरा
ओ लालिए ओ! कांडै रे मेले खिं आए चैंई जरूर
ओ लालिए ओ! हाटी पजौले ठांडे पाणी ओ नालू
ओ लालिए ओ! रीशे रे कारण हिंग हिंग मेरे फूटौ चनालू
ओ लालिए ओ! हाटी पजौले मीठे सेबौ रै बूदे
ओ लालिए ओ! रीशै रे कारण हिंगे हीकड़ै फूटै।

मलकू

यह एक प्रणय गीत है जिसमें नायक और नायिका का संवाद काव्यमयी भाषा में दिया गया है। नायिका अपने प्रेमी मलकू को लाल रंग के 'झिंझड़ी' चावल का भात बनाकर बुलाती है। नायक जोर की वर्षा होने के कारण न आ पाने की बात कहता है।

नायिका : *हिज बेदा ता मलकू सैयां हिज केई न आओ*
भात चाणो तो जिरी झिंझड़ी रो
आशु ओलणे खाओ।

नायक : *हिज आजू ता सानड़ी पौड़ियौ*
आजो दुड़कू पाणी

होरे नाएिबे लोगु री बांठिणे
आजो दुड़कू पाणी।

नायिका : *पाणी दुड़कू मलकू सैयां*
मुएं छाडौ तो जाणो
तेरे हुंदे डाबली पाणी
दिंदा मुंडै डाबली पाणी

नायक : *मुंडै डाबली खैनी तेरो*
मुंई छाडी थी पाई
इणो बोलो तोघरौ रा घरिया
किंदा मोरे ला जाई

नायिका : *जाणे दे मेरे मलकूआ*
सानो सेतूई फेरी
बागी मांजूए सरपो सैया
टांगो टुकौ लै तेरी

नायक : *नालौ घाटो दी बांशली बाजी*
धारौ धारौ दा बिमू
तेरी झौरिए शुकदा लागा
जिणा काति रा कीमू

नायिका : *डुंगी नालौ री कुंगशिए*
सदा हरिए हरे
कि जाणा मेरे मलूक रै
कि मूकणा मौरे

मास्टर लायकराम

मास्टर लायकराम टिकर नामक स्थान में अध्यापक नियुक्त हुआ जहां उसे एक युवती से प्रेम हो गया। मां उसकी बदली साबड़ा करवाना चाहती थी किंतु उसे इस प्रेम के कारण किसी ने मार दिया। मां रोती है और पूछती है कि अब इन बच्चों का क्या होगा।

बोलो बै देखणे रा लायकरामौ सूतरौ रा धागा
टिकरौ स्कूलो दा लायकू मास्टरौ लागा

टिकरौ दू बदली बेटा सावड़ै कराओ
इहरौ सै बोल्दे लागी लायकू रि माऔ
देखो नहीं इजीयै तोएं टीकरौ स्कूलो
इणे चमको सुरजौ जाणी कौंलो रो फूलौ
खांगटै रै खौले दि लागि रिमझिम नाटी
आछा नाचै मास्टरा कल हेरना काटी
मां रूओ लायकरामौ रि घूघति जे गुणै
माटीय पणमेसरा इन्हौ लोकड़ौ रा कुणौ।

सती चैंखी

सती चैंखी की गाथा यूं तो लंबी है किंतु इसे संक्षिप्त रूप में गाया जाता है। युद्ध में पति की मृत्यु के बाद चैंखी सती हो जाती है। यह गीत लगभग दो सौ वर्ष पुराना है।

हाटुए पौड़ी टीरौ गाय भंवरू धूंई
कालिए रांडै बादलीयै कोदिए न मुंई

टजी मौरू टंजी गोये हट औ री टीगै
कादेडू आछा माटिए पवारिआ बजीरौ

बशदे डैवि चैंखिए आगुए थाटै
एकि आओ आदमी बै कोटली बाटै

सौंगी लाई हौजरूऐ धाबड़ी नौखी
और आयै सारै सारै बिष्टै मोखी

भाईया बोलूं मदनू वा सोचियों का तेरै
छुरी कटारौ आणी ओरू चौलणौ मेरै

धैनै तेरो देखिए सिंहणी रौ हीयो
छुरे कटार संगै जौहरौ कीयो।

सिंधिया जवान

सिंधिया के बिना युवती को पशु चराना अच्छा नहीं लगता। बर्फ गिरने पर, तूफान आने पर उसकी मिलन इच्छा तीव्र हो जाती है।

हाय जवाना सिंधिया! बांके जवाना सिंधिया!
आर धारौ दि बाकरी चौरौ, पारि पारौ दे गोरू

ताईं बिना सिंधिया होव जलि जलि मौरू
हाय जवाना सिंधिया...
पारलै गांवा री बागुरो नाएं चीली री पड़ी चटाव
घौरै आए देखदोरहा में मिलणे रा चाव
हाय जवाना सिंधिया...।

विरह गीत

प्रेयसी घर में ताला लगा मेला देखने चली गई है और प्रेमी उसकी याद में कई सपने बुनता है।

फुले तो कौरौला ऐरे फुलाडू, डाले फुलो असोर राए
असोर राए गै नैनो लाड़िए, डाले फुलौ असोर राए।
आपु तौ चालेगै घनी जातरै, घरै झाड़ा शाणाटु लाए।
शाणाटु लाएबै नैनो लाडिए...।

हुंदी तौमेरिए हैरं नदीए, ऊबे मलै गीरै लै कबैगै
गीरै लै कबैगै नेनो लाड़िए...।
छाती तौ लाऊ में हेरे घुडिऔ, बुरा तौ भाजौला तबै लौ
भाजोला बबैगै नैनो लाड़िए...।

बडै तौ नहीं गै हेरे गीरना, आदैमे हुऔ लै सबैरै
आदमे सबैगै नैनो लाडिए...।

चीणैअ नीऊगै हैरे भी खरै, ढालिऔ आणौ पतालै तो
आणो पतालै लौ नैनो लाड़िए...।

माणु तो चैईगै, जीऊ, लागदै, घरौ चैई खिड़ाकी हालै लो
खिड़ाकी हालै गौ नेनौ नाड़िए...।

हाथौ बोलौ जोड़ऐ करू अरेज़ा, जीऊ न भोलै रा जाले लौ
मेरे तु जीऊरा हैरे संगटो, आपणी छातिए रालै लौ।

नीलिमा

यह एक बहुत ही प्रचलित गीत है जो मेलों में तथा नाटी के समय गाया जाता है।

नीलिमा–नीलिमा भई नीलिमा–नीलिमा
नीलिमा–नीलिमा भई नीलिमा नीलिमा।

नीलिमा बौड़ी बांकी, भई नीलिमा बौड़ी बांकी
भई शिमले कोठी टांकी, भई शिमले कोठी टांकी।

भई शिमले कोठी मोरौ, भई शिमले कोठी मोरौ
भई नीलिमा बौड़ी चोरौ, भई नीलिमा बौड़ी चोरौ।

नीलिमा भौजी रामौं, भई नीलिमा भौजी रामौ
शिमले कोठी कामौ, भई शिमले कोठी कामौ।

पाणी री लागी बरूरौ, भई पाणी री लागी बरूरौ
तेरो पेवकौ बौड़ो दूरौ, तेरो पेवकौ बौड़ी दूरौ।

ओरू दे भाभिए

यह एक प्रचलित नाटी गीत है जो कुछ प्रकारांतर के साथ कुल्लू तक गाया जाता है।

ओरू दे भाभिए मेरी दाची।...ओरू दे...
देवा न रेहणू लाणे पाची।...देवा न...
बिंदरे बौणे भाशोला काओ।...बिंदरे बौणे...
मेरे लागो माहटी भाभी रा चाओ।...मेरे लागो...
बिंदरे बौणे भाशोले शैरी।...बिंदरे बौणे...
मेरे लागी नाचणा रे तेरी। मेरे लागे...।

लाड़ी शांवणिए

लाड़ी शांवणिए! किया तेराड़ो नाओं, कुण होंदी जातीए
बालै खौशटुआ! रूपदासी मेरो नाओं, जाती री ब्राह्मणी।

लाड़ी शावणिए! तेरे नाकौ री तीली, केणी बांकी शोभाली
बालै खौशटुआ! अबै देखणी दिल्ली, देखे हेरो शिमलौ।

लाड़ी शावणिए! नारकौली ना मिली, सारे हांडी शौहरा
बालै खौशटुआ! हुंदी बोली सबाटू, ऊबी बोली शिमला।

लाड़ी शावणिए! शांगो केणखे काटू तेरिए तैंइएं।

बालै खौशटुआ! डाली भाषौदा काओ, बूरा नहीं मानणा
लाड़ी शावणिए! लागौ हाखी रा चाओ, तेरी इणा लींबरी।

मेरिया ठियोगा

मेरिया ठियोगा चतर देशा
कोलेरामा चतर देशा।

खाचरी गाशौ भौहिंदा बेशा
कोलेरामा भौहिंदा बैशा।

संधूरी धारी दी खीडएं चौणे
कोलेरामा खीडुएं चौणे।

साथौ रे आदमी पन्द्रह झौणे
कोलेराम पन्द्रह झौणे।

हीरा कमला

केडली हुइए रेडी जातरै, हीरा कमला, रेडी जातरै
मेले लै आओ तेरी खातरै, हीरा कमला, तेरी खातरै।

बाबू रे क्वाटरै चाय गौरमा, हीरा कमला, चाय गौरमा
ओरू कोरे हथडू लाणा धौरमा, हीरा कमला, लाणा धौरमा
नाटिए नाचदै लागे शौरमा, हीरा कमला, लागे शौरमा।

बाबू रे क्वटरे खुली खिड़की, हीरा कमला, खुली खिड़की
भौरिए जवानिए देशे रिड़की, हीरा कमला, देशे रिड़की।

चाली थी खौडू लै आणी शुहणी, हीराकमला, आणी शूहणी
घौर के गाऔ दूहणी, हीरा कमला, गाओ दूहणी।

बिंची

चैत्र संक्रांति और दूसरे दिन महासू क्षेत्र में गाया जाता है। यह बिंची कन्या के विवाह के संबंध में है।

राईए कोटे जौमी बेटड़ी हो...।
बेटियो आणो भाटा पौंडता हो...
पौंडता ता होंदौ मेरो शेवरो हो...
गूंठी का खाई काले बिंचुए हो...
बेटियो आणो भाटा गारडी हो...

गारडो ता होंदौ मेरो जोठियो हो...
बिंची लै आए म्हारे पारगू हो...
केऊ देशे आए बाबा पारगू हो...।
उबीयै आऐ बी सराजटै हो...
तेऊ देशै लाई खाई के बाबुआ हो...
जौआ रे खाई बी जारीगड़ै हो...
ऊना रे लाई बेटा ढीगलै हो...
तेऊ देशे जांदी ना बाबुआ हो...
बिंची लै आए म्हारे पारगू हो...
भौजीयै आए भी भजालटै हो...
तेऊ देशे लाई खाई के बाबुआ हो...
भाता रै खाई बेटा थालटै हो...
छोटै छोटै पैहनी बेटा कपड़ै हो...
तेऊ देशे मेरे जाणा बे जाई हो...।

शुकी धारा

शुकी धारा रे गौरू हो
आमा मोरिए नईं चारिंदे।
सीनी छीड़ी रा धुआं हो
आमा मेरिए नईं संहिदा।
सुकी छौली री रोटी हो
आमा मेरिए नईं खाईंदी।
काढ़े खेचौ रे आलू हो
आमा मेरिए नईं खौणिदे।

शिमला (महासू) में अरण्य गायिकी—लामण व झूरी

कुल्लू की भांति शिमला (महासू) क्षेत्र में भी लामण या झूरी का प्रचलन है। लामण एक प्रेमगीत है जो दो प्रेमियों के मध्य गाया जाता है। लंबी तान में गाए जाने वाले प्रणय गीतों में लामण व झूरी प्रसिद्ध हैं।

झूरी का अर्थ प्रेमिका है जो प्रेयसी, पत्नी या कोई और भी हो सकती है। गीत के बोलों में प्रेमिका को झूरी कहकर संबोधित किया जाता है। सघन जंगल में पशु चराती बार, खेतों में काम करते हुए, घास काटते हुए ये गीत

गाए जाते हैं। इन गीतों में असंख्य दोहे, चतुष्पद प्रचलित हैं जिनमें नए-नए पद भी जुड़ते जाते हैं। इनमें प्रेमिका की आंखों की सुंदरता, उसकी देहयष्टि का वर्णन, नखशिख वर्णन किया जाता है और उससे मिलन व विछोह का चित्रण होता है।

कुछ उदाहरण

तेरी आखटी नानीयै जिन्है मोता रे दामै
हाथ पाकड़ै साथी रो एबै नी अधमौ पाणै।

तेरी आंखें मोती की तरह हैं, मुझे आधे रास्ते में न छोड़ देना।

तेरी आखटी नानियै जिन्है रामौ रै तीरौ
भोले री लागौ छातिए, सुरनौ बासिए फीरौ।

तेरी आंखें तीर की तरह लगकर बेहोश कर देती हैं जिससे मुझे बहुत देर बाद होश आता है।

आखी लांदी सूरमा गोरे दांदुए मौशी
लोगू दिंदी बोलने मेरे रौहे मनौ दी बौसी।

टीपलू रे आंगणै दै बान्ही बानो रै हौलौ
छाड़ै दे लि आखि रै मौटके देखे डांगरू ढोलौ।

झीशिए भौलकौ कान्शीयै भेजिए कामै
हाथौ भीजै ओशै मूंहटू दीयै रै धामै।

ऊबै देशौ री बाबड़ी हून्दे देशौ रे कूएं
झूठे दितै वचनौ नहलदै मूंए।

चौरौ छाड़ै आंगणै चौरौ पाछुआ डोभा
राजै रि छोछै नौकरी तेरे नैयनौ दा लोभा।
कौ तेरे पाहुणे को तेरे बबारे
रोटी खाणे चणिऔ आबणे पाहुणे म्हारे।

सिरमौर के लोकगीत

ऐतिहासिक संदर्भ

सिरमौर इधर महासू (शिमला), सोलन और उधर उत्तराखंड से घिरा हुआ है। यमुना नदी के पार देहरादून व हरिद्वार पड़ते हैं तो ऊपर तौंस नदी के पार उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र। नाहन इसका एकमात्र पहाड़ी शहर और जिला मुख्यालय है तो पौंटा साहिब एक समतल इलाका। पुरातन समय में महासू की जुब्बल रियासत से सटा होने से यह क्षेत्र शिमला के चौपाल से भी सांस्कृतिक रूप से जुड़ा हुआ है। जुब्बल के राठौड़ शासक ही सिरमौर के शासक थे और उस समय की राजधानी सिरमौरी ताल थी। जनश्रुति है कि गिरि नदी में बाढ़ आने से राज्य नष्ट हो गया और जैसलमेर से राजा शालिवाहन द्वितीय (1168-1200) के तीसरे पुत्र हांसू को यहां भेजा गया जिसकी आते हुए सरहिंद में ही मृत्यु हो गई। इसकी गर्भवती पत्नी से पलास के नीचे पैदा होने से एक पुत्र पलासू हुआ जिसका नाम सुभंग प्रकाश हुआ और इसी ने सिरमौर राज्य की स्थापना की।

सुभंग प्रकाश से सिरमौर के राजाओं की वंशावलियां मिलती हैं जिनमें राजेंद्र प्रकाश (1933-1948) तक पैंतीस से चवालीस राजाओं के नाम मिलते हैं। ये राजा अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाते रहे। सिरमौरी ताल के बाद यमुना और तौंस के संगम पर कालसी, रतेश, हाटकोटी और अंततः नाहन राजधानी बनी।

विभिन्न राजाओं के समय राज्य विस्तार के समय सिरमौर के हिमाचल की रियासतों–जुब्बल, कोटखाई, क्योंथल, बलसन, थरोच, बिलासपुर, हिंडूर और उधर गढ़वाल से संबंध रहा। अतः इन पड़ौसी क्षेत्रों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी बना रहा।

गढ़वाल की दो वीरगाथाओं में सिरमौर व इसके राजाओं का उल्लेख आता है। विभिन्न युद्धों की वीरगाथाएं बनती गईं जिन्हें 'हार' कहा जाता था। 'हौकू मियां की हार', 'सामा सोहिनी की हार' ऐसी ही वीरगाथाएं हैं।

सिरमौर में स्वाधीनता आंदोलन के समय प्रजामंडल आंदोलन प्रसिद्ध है जिसमें पझौता आंदोलन का विशेष स्थान है। इस रियासत का अंतिम शासक राजेंद्र प्रकाश (1933-1948) हुआ। 13 मार्च, 1948 को यह राज्य भारत संघ में विलीन कर दिया गया।

सिरमौर महासू (जिला शिमला) से सटा क्षेत्र है जिसकी संस्कृति महासू से भिन्न नहीं है। यहां के लोकनृत्य, लोक संगीत, गीत व बोली महासू की तरह है यद्यपि नृत्य की वेशभूषा व लोकवाद्यों में भिन्नता है। लोकनर्तक नीचे चूड़ीदार पाजामा व ऊपर फ्रॉकनुमा चोला पहनते हैं जो लय और लोच के साथ घूमता है। एक वाद्य 'हुड़क' विशेष वाद्य है जो गायन के समय एक अलग तान प्रस्तुत करता है। सिरमौरी नाच में एक अलग लास्य है जो महासूई में नहीं है।

सिरमौर में युद्धगाथाएं, जिन्हें 'हार' या 'हारूल' कहा जाता है, पर्याप्त मात्रा में प्रचलित हैं। ये युद्ध के नायकों के पराक्रम की गाथाएं हैं। इनमें 'मियां होकू रावत', 'सूरमा मदना', 'सामा सैण का' आदि प्रसिद्ध हैं। यहां गाथाएं न देकर केवल गीत ही दिए जा रहे हैं।

लोकगीत

रेणुका माई स्तुति

रेणुका में रेणुका झील के साथ परशुराम का मंदिर है। झील को रेणुका माई माना जाता है।

1

जेठी माई मोर रेणुका गाणी, गाणा काणीछा तालो
तालो तालो मेरिए भाणतीए गाणा काणीछा तालो
मेला आया रेणुका रे, उदे मेले खे चालो
माई मारे रेणुका खे मोर कोरणी ढालो
ताती ताती जुलेबी खाइके, उबे हेरणे मालो।

2

रेणुका माईये, महामाईये देऊ तेरा जागरा चेरशी
दिबे कोरू बाती रो रात परैशी
दुई हाथो जोड़ी रो कोरू ढालो
शुचे पाणी री पाणी छालो।

3

तेरी सरणै सौबी ए आओ
जै जै देबी माता रेणुका।
मना री पूरी, सौबी रै कौरी
जै जै देबी माता रेणुका।
तेरी मानता सौबी ए कौरी
जै जै देबी माता रेणुका।
तेरे मिलणे री सौबी री इच्छा
जै जै देबी माता रेणुका।
बलि बतेरे सौबी ए कौरो
इस देबी माता रेणुका।

शिरगुल देवता स्तुति

शिमला से नज़र आने वाली सिरमौर की सबसे ऊंची धार 'चूड़धार' पर शिरगुल देवता का मंदिर स्थित है। देवता के पास जाने की चाह सबके मन में रहती है।

तेरे आऊंगा हां
चुड़ी देवा शिरगुला रे
चुड़ी आऊंगा हां तेरे, मुनो री कामना कोरे
पुरी देवा शिरगुला रे

ऊबी धारो बे चुड़ी री, उदा मानीलो रा गांव
देवा शिरगुला रे

गांव मानीलो रे लोंदे, शिगुलो रा नाव
देवा शिरगुला रे

धारो जाणी बे चुड़ी रे, शेले पाणी री बाऊं
देवा शिरगुला रे।

लागा ढोलो रा ढमाका

सिरमौर के मशहूर गायक प्रेमसिंह द्वारा गाया यह एक बहु-प्रचलित गीत है जो हिमाचल के अस्तित्व में आने पर सभी समारोहों में गाया जाता था।

लागा ढोलो रा ढमाका
मेरा (या म्हारा) हिमाचलो बड़ा बांका

आलू धानौ री हामें खेचड़ी करौ
लाऔ सेबो रे बगीचे
बामणी खै म्हारे लोईया सुथ्थणू
पांदे लाण खै गलीचे।

ऊंची ऊंची बोलो घाएटू जानी
जड़ी बूटी रै जखीरे
तिंदी चौरी म्हारे भैडो औ बाकरी
पोड़ो मौहिषी रे डेरे।

लागा ढोलो रा ढमाका
म्हारा हिमाचलो बड़ा बांका।

बींची री बौली़

हिमाचल प्रदेश के चंबा, कांगड़ा आदि में पानी के लिए नारी बलिदान की कथाएं प्रचलित हैं। सिरमौर के महीपुर लाणे नामक स्थान में भी ऐसे नारी बलिदान का गान प्रचलित है जहां राजपूत घर में छोटे पुत्र की पत्नी बींची का बलिदान हुआ और पानी की कुल्ह निकली। गीत में चिने जाने के समय बींची द्वारा बच्चे को दूध पिलाने के लिए छाती को खुले रखने, मां द्वारा रोटी देने के लिए मुंह को खुले रखने के प्रसंग हृदयग्राही हैं।

कूल शूकी मलावणोरी जीरी, शुकी झींजड़ी जू फूली
कूलो भी जान्दी जाणे के, देवी बोलो लागो बोली।

बेटानी बड़िया आं देंदी बोहू आवणी रोटी लेयो
बींची बोलो मेरी काणछी बोहू बौली़ के वे दियो।

बींची डेई बाडीयाग जोपो बाडी देनी बोलो लाई
शाशु रे लकोटोरा बींची लागा पता सोचे बाती चित पाई।

बाड़ीया तू चीणी पोरा छाती रो मूंड छाडी नांगा
बेटा आवला मेरा न्हानड़ा परउआ दूधो पांडा।

आमा आणी मेरी आमा कोरली बाडिया चोटी
आवणे मेरे से आपणे हाथो देवलो रोटी।

बाया आया बींची रा लागा रोणी बेटी जू चीणी
साल थिया साड़सती रा गुठी गाये दीमडू गीणी।

मालको आया उजली बींची रे फुलटे चढ़ाए
देखदे देखदे फुलटू सबे सुबे होई जाये।

शाशुरे जुल्मो री बातों बींची दी ली गाई
पर बींची री बोली दी कूल मलावणे दी आई।

गारडा संगती रामा

धान कूटी बोलो ऊखले मूसले, उड़ी पौणिए कानू गै
गारडा संगती रामा, जांगलो दा मूआं।

ऊबे जाणा गे हामेलो खे गारडा, पड़ा बौरफो जानु गे
गारडा संगती रामा जांगलो दा मूआं।

हामेलो खे बोलो जांदिए गारडा, साथी बोहणे बानू रे
गारडा संगति रामा जांगलो दा मूआं।

टीरो दी जाणी हामेलो गारडा, गारडा फूलो किमटी बूटो रे
गारडा संगति रामा जांगलो दा मूआं।

हामेलो खे जाणी जांदिए गाडी, गोए हाशणो बूटी गे
गारडा संगति रामा जांगलो दा मूआं।

टीरो दा जाणी हामेलो गारडा, दीता लूघिए घेरा रे
गारडा संगति रामा जांगलो दा मूआं।

एरे होए बोलो मोतो लोकुओ, इंदा कुएं नी मेरा दे
गारडा संगति रामा जांगलो दा मूआं।

रतनिए

यह गीत रतनी नाम की नायिका को समर्पित है जो जमे हुए घी के समान है, जिसके छोटे-छोटे हाथ और लंबी काली आंखें हैं।

ऊंबे...ऊंबे...ऊंबे...
बिलो शाणियो घीयो रतनीए।
हलणे खे बोलणा खेलणे खे, म्हारा बालका रा जीओ रतनिए

एके हाथो दे झाड़ना, एके हाथे छावटी रतनिए
छोटे छोटे तेरे हाथड़ू, काली लम्बड़ी आखड़ी रतनिए।
फूली करोला फूलणू, डाली फुलोली पाई रतनिए
तेरे रोजके रूशणे, हामा किचलो घाई रतनिए
डूंगे धारा रे बाथुआ, लाल लम्बड़े सिल्ले रतनिए
मरी जावे भला बीछड़े पंछी होई रो मीले, रतनीए।

गोरखीए

नायिका, जिसका नाम गोरखी है, मुजरी छोड़ रूठ गई है। नायक उसे मनाता है। वह गुहार लगाता है कि गोरखी का प्रेम औरों के लिए तो है, मेरे लिए नहीं।

ऐसी मुजरे जुगी जवाना बे
छेड़ू सोजा री गोरखीए, ऐसी मुजरे।
ऐसा मुजरे जुगी जवाना बे गोरखी जाणी
चोंदरी बैठी सीसियों रे...
बैठी सीसियों रे, थाम्बे जवाना बे
उरी खे लागे रास्ते हामों खे
लागे तारीको...
हामों खे लागे तारीको, लाम्बे जवाना बे
छेड़ु सोजो रौ गोरखीए, ऐसी मुजरे।

हो सोयणा

हो सोयणा, पीपली रा बूटो, हो सोयणा!
जांगली आणो दुर्गसिंघो, कुर्मो रे बूटो, हो सोयणा!

बूटो आणला कुर्मो रे, आणो सरजो रा सूटो, हो सोयणा!
बूटो न आणे राबड़ो, बाटो हांडदे चूटो, हो सोयणा!

थाणी गाशे कूलंगो लागी, ढोलो दी गीओ, हो सोयणा!
हो गोओ दी पोड़ी नाचदी तेसी सादिए री घीओ, हो सोयणा!

हो, ढोबदी नाचे सोथनणा, लागो कलिए गे पोता, हो सोयणा!
हो, खौशटा आणो रोगबाहणो, तांखे हाथो खे छोता, हो सोयणा!

हो, ऊबा गांवटा कूलगो रा, हुन्दे कूलगो रे फोरे, हो सोयणा!
बोलो रीतो भाजीओ कोटदी ऐबे डेबणा रे घोरे, हो सोयणा!

हो, कैंई तो कोरे सोयणया तू जीओ खे झेहड़ा, हो सोयणा!
हो, रेलू कुमीया सुखदे भाजे कोलिया रेशैड़ा, हो सोयणा।

काल़ा बाशा कौआ

यह एक बहुत प्रचलित गीत है जिसमें आंगन में काले कौए के बोलने से मेहमान के आने का संदेश मिलता है। नायिका प्रतीक्षा करती है तो नायक उससे विवाह का निवेदन करता है।

काल़ा बाशा कौआ तेरे आंगणे
तेरे आंगणे, तेरे आंगणे।
आए गोए, आए गोए, तेरे पावणे
तेरे पावणे, तेरे पावणे।
आखी लांदी काजल़ो, दांदो दी मोसी
हिज़ो भाजी जोपदी, आज रोई होसी
सारी हांडी दुनिया तू मेरे जियो दी बोसी।

बाजी कोरी बाजगो, गोयरा बाणा
जा साथी मेरिए, दिलड़ू लाणा
के तो आए शाऊरे के, मेरे मोरयो जाणा।
धारो री बागरे, नाल़ो री हिशे
एरा लागा मोनड़ू, सुपने दिशे
लोकू देंदी मोरनी, लोकू जोलदे मिशे।

काल़ा बाशा कौऊआ तेरे आंगणे
तेरे आगंणे, तेरे आंगणे।

बाबू जोगिंद्र और सुमित्र का गीत

कुटि लोओ चिओड़े, लाए लौए फाके रामा
ऊबे लागे छापरो, बैटरी झमाके मामा
बबुआ जोगेन्दरा, बैटरी झमाके मामा।
डिंगरो रो किंदरी, घाले पांदे गांव मामा
डिंगरो रा किंदरा, घाले पांदे गांव मामा

छाती लिखे काजलो, समितरे रा नाओं मामा
डिंगरो रा किंदरी, कोईयो दे कांडे मामा
कैबै ल्यौणे समितरा, कैबे रोहणे रांडे मामा
बाबुआ जोगन्दिरा, कैबे रोहणे रांडे मामा।

रतिराम का गीत

खाट्टे नि खाणे बे जमटू खाणे
मीठे बागो रे केले़ रतिरामा!
तुमे जियो रे कपटी रतिरामा, हामे जियो रे खेले।
घुघतू बाशो ला बोलो, पारले बोणे
बाशो चाकरा बेले़ रतिरामा!

बुरा नि मानणा साची बातोरा
जिऊंदे जियो रे मेले रतिरामा!

बरशा भरी रे बिछड़े बिछड़े
मिले काण्डे रे मेले़ रतिरामा!
तेरी खातरे काटे ओ पापिया
पोऊषो म्हीने शेले़ रतिरामा।

जिया लाला

हाथो दी बैटरी बांही चमको
घड़ी रे बिंदिए, जिया लाला
चली स्कूलो खे रोई रस्ते
खड़ी रे बिंदिए, जिया लाला।

पोरो बोलो ठियोग, पोड़ ऊरा साम्हणा
फागू रे बिंदिए, जिया लाला।
केहली तेरी जिंदड़ी, सारी दुनिया
लागू रे बिंदिए, जिया लाला।

तेरी परांठी, लागा रेडिया
बाजा रे बिंदिए, जिया लाला
नीऊ खुलू फार्मा, बिस्कुटा रा
खाजा रे बिंदिए, जिया लाला

घाल़ो रा मुनशी, बाबू दुरगा
सिंघ रे बिंदिए, जिया लाला
तेरी परोंठी कुत्ता भूंका
बाबू रे बिंदिए, जिया लाला

म्हारा वे कलर्को हाईकोटो रा
बाबू रे बिंदिए, जिया लाला।

शिखा रूशणा

तोएं तो शिखा रूशणा
बुरा तो शिखा रूशणा
जिन्दया मोरू तिन्दया बानो
लाणी थी मुंदड़ी रूंडया कानो
भूखे के देली टुकड़ा
तेरा मानू बारी के सानो, सौदा सूने रा
चांदी री थेई घोरिए खानो, शिखा रूशणा।

काठो री हाण्डी मिऊंगी झोल़ो
बुझी जा साजणा, जियो री कोल़ो
भावटे जा साजणा, जियो री कोल़ो
भावटे खे कोभी ना भाजू
टाटिए भाईं डागंरा रोल़ो, बांठणो बोईरो चेईं
सुगड़ो चेईं भार रा दोलो, शिखा रूशणा।

उबे रे जांगले, चिकणी माटी
होल रोओ छोणकी, जूं रोओ काटी
लागी री शिरतो, मोल़ी री टाटी
चोट लागी शिंगो, री ओजरी फाटी
जिऊ बोला मेरा, सात्तू खे
छाई री रोई तुम्बड़ी फाटी, शिखा रूशणा।

साजणो रा गांव

साजन के गांव के बीच एक टीला है। टीला न होता तो साजन का गांव सामने दिखता जिसे देखकर ही नायक संतोष कर लेता।

1

ढोली जा मेरे टिलुआ, दिशो साजणो रा गांव
बाईं तो पांदे रे मजनूआं, देए लाम्बड़े ल्हारे बे
दिन तो लागा बोलो ढलदा, एबे किसे जीवणा म्हारे बे।

चाणी तो करे ली खिचड़ी, भेई राखे ली माशो रे
गांवटा दिशो जे साजणो रा, मेरी जिंदड़ी री थी आशो रे।

बाशे ला मेरेया कुकुआ, दांते खोड़ो री टाईं
सारा तो खोओ हामे दिलड़ू, तेरे मिलणे री ताईं।

2

इसी भाव का एक और गीत है जो नाटी नाचते हुए भी गाया जाता है। सामने वाले टीले को समतल होने की गुहार नायक द्वारा की जाती है ताकि प्रेयसी का गांव दिखाई दे।

दिशौला साज़णौ रा ओरे गांओ, हो...
डोले़ जा मेरे बोलौ टीलूआ!
ठांडे जै पाणी रे हौले़ वाओं, हो...
शेलो खे लाणा मुइये हो मौजनू ना।
दांतै खोडू रे ना बोलौ रे टोवै, हो...
बौशला मेरे बोलौ हो, कुकूआ ना
एसी हालो खे ना बोलैरे होवै, हो...
तेरी बोलौ आखिरे ना मौटके।
पांडे नारगो रै बोलौर टीरौ, हो...
ठांऊड़े फीरौ ले बै बोलौरे ना।
ब्लोओं काल़जू री बोलौरे लोरी, हो...
तेरी शुणू मुइए जौब जौपणा ना।

काज़ली होरे कौंदिए

शीलो शिलाओणी लाए छेडु वे पीहंगो रे
काज़ली होरे कौंदिए।

सौरी रा सुंदरी मांगो टेलीरा सिंघो रे
काज़ली होरे कौंदिए।

भीती पाछे मौरना, लोके जाणू ध्याणे रे
काज़ली होरे कौंदिए।

लाणा ओसो मुजरो, हिम्मतू वयालो़ रे
काज़ली होरे कौंदिए।

सौरी रा सुंदरो, जपो भौइती खोटो रे
काज़ली होरे कौदिए।

तेरे नी औणे, गाने पातले होगे रे
काज़ली होरे कौंदिए।

ओरे बोले औड़े पौरा, बीकमा जीटो रे
काज़ली होरे कौंदिए।

बातो लाए सायमा, शुणी सुदरा होरो रे
काज़ली होरे कौंदिए।

तेरे चन्हारगे सूने चांदी रे मोरो रे
काज़ली होरे कौंदिए।

टाटड़े छोहहू तोऐ, खेलणे के चाणे रे
काज़ली होरे कौंदिए।

तू चाली शौऔरे, हामो लागणा बुरा रे
काज़ली होरे कौंदिए।

छोडणा मुलको, देणा गलो़ दा छुरा रे
काज़ली होरे कौंदिए।

बिशू मेले में प्रेम निवेदन

बिशू मेले में नायक नायिका के माथे की बिंदिया देखना चाहता है और उसे किसी के साथ नाटी न नाचने की सीख देता है।

मेरे देखणी बिंदी उबड़ा और डालिए चादरू
इजी कुबजा नि देंदी, जेता तो लागो डालिए मोनडू।

भाड़े साजड़ा घीयो, रजिए मेरी कणिए कुबजया
मेरा रांजिया जियो, शाली दो आज़ा दाड़िए बुदिया।

राणा अतरसिंगो घुंडिया, मांगो डालिए ठियोगिया
पोड़ी पोंदरो पिंगो बिशू तो, लागो डालिए सोई जो रो।

देखी डांगरू रींगो, ढोबो दे नाची डालिए कोनकोए
तापे नोदी रे आटो, बिशू तो, लागो डालिए सोईं जो रो।

देखे बुदिया काटो, ढोबो दी, नाचे डालिए बिशू दी।

बाबुआ जयरामा (ठण्होग बिशु मेले का गीत)

बोली बाजी कोरी गे बाजी गो
बाजा गोयरा न बाणा रे
बाबुआ जयरामा, गोयरा बाणा रे।
बीशु गो लागा ठैण्होगो रा
पड़ो बिशु खे ना जाणा
बोलो बुड़ेया बोलूगे बापूआ।
भौरी बुगी दी न शैरी
बाबुआ जयरामा, बुगी दी न शैरी
बीशु ले जाणी ठण्होगी रे
तेते खेलना न पौड़ी
गाओ होली बोलूगे थियोटी
होला दामटा कूजे
बाबुआ जयरामा, होलटा दामटा कूजे
ठारो बीशो बोली कढारणू
गोई जुबड़ी पुज्जै
बाबुआ जयरामा, गोई जुबड़ी पुज्जै।

सैंज बिशू

सैंज में बिशू हो रहा है। शाठी और पाशी का ठोडा खेल चला है। युद्ध में चारों ओर धूल उड़ रही है। मेरी तो छतरी भी खो गई।

उड़ा शाकीरा माटा बिशु तो
लागो दाड़िए सोइंजोरू
मेरा हाड़छा छाता बिशु तो
मुजे दाड़िए सोंइजोरू
उमो आगीला भांता तुएं तो
पाए दाड़िए बिसरी।

चीटलौ चादरू

चीटलौ चादरू लाला धारियौ, कूणी बणाओडी बुणो लो
कूणी बणाओडी, बुणो मेरी नैणा लाड़िए
कूणी बणाओडी बुणो लो।
सूलड़े जपे नैणू लाड़िए, लोगू ता दूरा का शूणो ओ
दूरा का शूणा ओ मेरी नैणू लाड़िए, लोगू ता दूरा का शुणो ओ।
घर का चिणे नेता लाड़िए, लोहे घड़नी गजा लो
घड़नी गजा लो मेरी नैणा लाड़िए, लोहे घड़नी गजा लो।
बेशी तो रोहणे तोंगे आगे, करी लैणा पेउके मज़ा लो
पेउके मज़ा लो मेरी नैणा लाड़िए, करी लैणा पेउके मज़ा लो।
माहणू तो चैईं जिया लागदे, घर चैई खिड़की आलै लो
खिड़की आले लो मेरी नैणा लाड़िए, खिड़की आऌै लो।
बालिए बाले लो मेरी नैणा लाड़िए, चैईं आलिए बाऌे लो।

भियूरी

विवाहिता भियूरी दीवाली के अवसर पर अपने मायके नहीं पहुंची। मां परेशान है कि जिस बेटी को उसने गेहूं के आटे और घी से पाला, वह न दीवाली को, न संक्रांति को मायके आई जबकि सभी की ध्याणे आ गईं। मां उसके न आ पाने से व्याकुल है।

मेरी भियूरी धीए! मेरी भियूरी धीए!
धाचे थे कोणके थीए, थाचे काणके धीए!

साजो आओ दैऌी रा, मेरे से भियूरे न आए
ओरी री ध्याणे आए गोई, मेरे भियूरे न आए।

चैश बरैलिए गे रांडे, चैश बरेलिए गे रांडे
खाए न भियूरी रे वाण्डे, खाए न भियूरी रे वाण्डे।

बेलुआ बाएदू तू जाए, बेलुआ बोएदू तू जाए
सोए भियूरी ऐ दे लाए, सोए भियूरी रे दे लाए।

जाणे खे डेवणे से पोड़ी जाणू, न भियूरी रो घोरो
दूर खे जांदे राजो शोड़ा, दोफेडो जिवे लागो डोरो।

कुछ नाटी गीत (दिलड़ू ना लाणा रे)

यह एक बहुत प्रचलित गीत है जिस पर नृत्य किया जाता है। यह दुनिया बेईमान है, इसलिए किसी से दिल न लगाना, गाने के भाव हैं।

दुनिए रा बेईमान, दिलड़ू ना लाणा रे
दुनिया रा बेईमान, दिलड़ू ना लाणा रे।

फुली करो फुलटू, डाले़ फूली केला रे
ऊंदे जाणा राजगढ़ो, तेती देखणा मेला रे।

फुल्ली करो फुलटू, डाले़ फूली तूणी रे
तू तो चाला धारा खे, मेरी बातो ना शूणी रे।

फुल्ली करो फुलटू, डाले़ फूलो धतूरा रे
तू तो चाला घरा खे, हामें लागणा बुरा रे।

दुनिए रा बेईमान, दिलड़ू ना लाणा रे
दुनिया रा बेईमान, दिलड़ू ना लाणा रे।

शांवली की नाटी

शांवलिए ना बे मानणा बूरा मेरी बातो रा।

देशो रा बोलो पांछिया, शोभे दी कांडी
ताई के मेठणे सारी, मोंएं सच बाटो हांडी
शांवलिए ना बे मानणा बूरा मेरी बातो रो।

आरो बोलो धानड़ू पारले कांडे कुलगी शुंठी
तेईं साथी री म्हाबतो चूटी लोके शीरणी बांडी
शांवलिए ना बे मानणा बूरा मेरी बातो रो।

शौं बोलो देवथाणो री बिसरी बिसरी भीजी आंखी
बातो बिसरी जीवो री देवो सोरठो रा थीया साखी
शांवलिए ना बे मानणा बूरा मेरी बातो रा।

रामा रूमी जोगा बे रोहा ना जाणा म्हारा
बोहरी जुगे चोड़ा न्हानड़ा भावटा ला म्हारा
शांवलिए ना बे मानणा बूरा मेरी बातो रा।

निरमो नाटी

सोरी रे गांवटे पाणी री बाओं गे, धीवटू निरमो!
पाणी रे बाओं गे, धीवटू निरमो!

बेगियो शोभटा सोरी रा गांव गे, धीवटू निरमो!
सोरी रा गांव गे, धीवटू निरमो।

सोरी री बुधिया जीभो रा लाटा गे, धीवटू निरमो!
हीऊंदो काटा गे, धीपटू निरमो!

मांगो सोरी रा सूंदरो टेली रा सिंघो, धीवटू निरमो!
टेली रा सिंघो, धीवटू निरमो!

तेरे मेले के निरमो घोड़णे जाणा, धीवटू निरमो!
घोड़णे जाणा, धीवटू निरमो।

मांगो कोटो रा ठाकुरो, घूंडो रा राणा, धीवटू निरमो।
घूंडो रा राणा, धीवटू निरमो।

मूर्तू नारदा

गायणो बूटी रे, मूर्तू नारदा बूटी रे मूर्त नारदा।
ठोरे गोते भोजो रे, तू हारो दी होटी, मूर्तू नारदा
चाम्बे रा मेरिए ढोलकू बजो, जाह्नू रे टेके, मूर्तू नारदा।
आखुटी देंदी तू सानिको दाड़िए, होठडू मेके, मूर्तू नारदा
एकी तंगो दी मूर्तूया, दूजे तांगी दी बेलो, मूर्तू नारदा।
तेरी झाकिए शूका जीवटा, छाड़ी राखी हेटो, मूर्तू नारदा
खोड़ी रोही तू बाटा दी कोरनी, मुओं री भेटो, मूर्तू नारदा।

सुनफा नाटी

खोरा झीनठा लागा बुणो दा बासा
मोहिशी चारदे चारदे चुका चौमासा
हो बोलो सुनफा!

डाली़ बूटो बूटो दा हांडणा देसो
श्राचि के ध्याना तापा रिखी रे भेसो
हो बोलो सुनफा!

ठांडे नालेटू री चीशो लुटड़ी मांज्यो
कोशमली़ बुणो दी शर्हाली़ चाणी साज्यो
हो बोलो सुनफा!

शामला़ शामला़ घोरो दा आणा बे ज़ीजिए
गोरसो जेता केता दा झांबा रोजिए
हो बोलो सुनफा!

जानकी नाटी

उबातौ कौरे जानकिए बोलौ खौड़ो से ओड़ा जानकिए!

तेरे औ मेरा औ बाउटा मामौऔ नारणे चौड़ा।
घोड़ा बी नेई जे बोलया, घोड़ा औ सुमौ दु खौड़ा।
उडणै धीए शिलाऊणी दि बी रौआ औ थोड़ा।

मियें तौ म्यासै शिलाऊणी रे, जेदै पीनडू खाडू।
तौखैं बी आणौ लै जानकिए मोती चूरौ रे लाडू।

ताला गाशौ शलाऊणे दित्तीऔ पाथरौ कारौ।
अधिए डैबे से रातये बालौ गै जानके हारौ।
गिरले मेरिए बागरै उड़ी लो शाकरा कारा।
ऐरा देन्दऐ टुकड़ा जेईऐ पौड़ों न घाटा।

धारा दा डबा ओ सूरजौ, तींदा बी लागै न सोटा।
बोठा तो रौए पाऊणेया, आमे बाकरा काटा।
झिशका फिरौ ला फिरका, गाबौ जे गोड़ौ रा साटा।

गिद्धा

दुनिया रा बेईमान, दिलडू ना लाणा रे।
फुल्ली करो फुलटू, डाले फूलो केला रे
ऊंदे जाणा राजगढ़ो खे, तेती देखणा मेला रे।
फुल्ली करो फुलटू, डाले फूली तूणी रे
तू तो चाला घरा खे, मेरी बातो ना शूणी रे।
फुल्ली करो फुलटे, डाले फूली धतूरा रे
तू तो चाला घरा खे, हमें लगाणा बूरा रे।

झूरी

लामण की तरह झूरी गीतों में भी प्रेम, संयोग-वियोग का वर्णन रहता है। एक 'दो पदी' मुक्तक का उदाहरण।

खाय जाणी झूरिए कोरी कूजी री दौंई
दिलड़ू लाणा तेरी गोईली थी तांदी बांठिणी कौंई।

तेरी उजली बाकरी, उजली गौओ
चूटों नी भावटा दाड़िये हामे शोके लोओ।

लाए नी झूरिए बोला रेखो दी मेखो
पापटी दुनियां ला तेंई दूरके दी देखो।

घोर छाडे घारे आंगनी घोरो पाछला डोबा
राजे री छाडी नौकरी तेरे नोयणो दा लोभा।

ठींडो री टूपिए बोलो तोड़े के शे लाए
बांठणिए रे नौयणाए मांउए शे खाए।

लाई नी झूरिए एबे लाणा रौ बाणा
भोले़ सीते रा भावटा गिरी किरियों लाणा।

जिवंदी रोही झूरी

जिवंदी रोही झूरिए।

चांद घेरा बादले़, माछी घेरी जाले़
हामे घेरे दाड़िए, तेरे ला तीले काले़।
फूली जाला फूलीटू, डाली़ फुलों दूणों
टका भरी री जिन्दड़ी, कोस कोसरा शुणो।
जिवंदी रोही झूरिए!

पाणी मेरा मजणू, पूरबो के लागे फांस
होरो झूरों होरी के, हामे झूरों ला ताखे।
फूली जाला फूलीटू, डाली फूलों कांगू
खायां पीयां बोलो मुकता, थेरे हाथौ रा मांगू।
जिवंदी रोही झूरिए।

धारो रा पीपलू शुक्या, शुके आंखी रे आंशु
किशा होला मिलणा, तुमे थरती रे हांमे गोई ने बाशु।
पापीया जीवटू चीते, ना रोहों बो किशे
देसो सकाली दी हामों, कोरी तु घिशो।
जिवंदी रोही झूरिए!

कुछ अन्य उदाहरण

बांठणो जुहणो बे रे झूरिए
होला साथो दा तारा
आखि रा कियां बोलो नोरजा
तिंदा बे तोला जिऊटा म्हारा।

झूरी का मुखमंडल चंद्रमा की भांति है। उसकी आंखें तराजू की तरह हैं जिसके पलड़ों में प्रेमी का दिल तोला जा रहा है।

टाटे गे ठौगड़ी, ठौगड़ी के टाटी
डखलो दी शाटी सातू जे बाटी
जेतणी गोती मनो रे झूरिए
तेतणी भुखया हामे काटी।

कांहडे रा कौथरा नेवलो रा घोलो
कोई गिरी झूरिए, शुनली रांडे।
पाणी जैई बौशणे खे दाड़िए
औलौ, पाणी जेई बोशणे खे।

औशके खेबड़े पोरकी मांगौ
तीनो कोई नी देई दो झूरिए
पालटे डायमों औसौ तो मांगो
पालटे डायमो रे।

भैड़ोरा गाभटा, दूधो नी मोहिषी रा पीन्दा
बूढे रे भाजी, रोंहदी झूरिए
नौआ नीं गाबरू, ता कुएं नींदा
नौआ नी गाबरू रे।

अन्य पद

पाणी गेरा मजनूवां, पूरबो के पारी बेदे
होरो झूरों हीरो के, हाम झूरी ताखे बेरे।
तारा चूटा गोईणीए, सोनी के चाला बेरे
आशु ठोलका मेरी आखिए, कुणिए न भाला बेरे।

छिटमिटकी चांदणी, लागी रोहे तारे बेरे
म्हारे भागो ऐ चोहूं, फेरी के न्यहारे बेरे
पोलो पोलो तेरे आवणे रे नाया बेरे
काल़जू धोड़की जेतणी बेरी, थापा तू आया बेरे।

जुबड़ो रवेड़ो दी दूबो, गाउ पोछी ओशो बेरे
आशटू चुके ऐबे गिणणे, जीवटू गाए नोशो बेरे।

सुरमी की झूरी

ओरा देन्दे जेबो रा रूमालो, सुरमे जेबे रा
धीओ देखी सुनिए दी तेरा, कोदका दयालो सुरमे।

बाटो देखी तू हाण्डदे, तेरे मोरे रे जो चालो सुरमे
तेरे नोखरे लोटके देखे ओ, जीऊ ठोगड़े रे बे हालो सुरमे।

आखे रे रहाचे निजटे सुरमे, पेटो रे म्हाई ऐ भूखो सुसे
जियो रे रहाचे चोयनो ढोइका, कुण शुणो मेरी दुखो सुरमो।

देफो रा देन्दा जागरा, ओरे तू शाउरे जे आए सुरमे
होलो देन्दे बाकरे रो, मुखो रोस्ता तू लाए सुरमे।

तेरे आवणे नी शावरे नी, ओरे दे जेबो रे नशाणे सुरमे
रूमालटू दे तू आपणो, बात कूणी चोगरे ने जाणे सुरमो।

अन्य रूप

गोल़ी दागी ना कनेरूए लाए, दिता आखी रा चीरा
कुणिए लाया जियो दा बुरा।

काल़ी आखटी पिंऊल़ा ढाटू, माथे पांदे रा टिका
बिना पोईसे मुफती दा ऐ पापी जिऊटा बिका।
कुणिए लाया जिओ दा बुरा।

फूली कोरो ला फुलटू फुलटू ज़ेरा मिसरी कुज़ा
आखी मितरे मुरतो कोसरी कोरू आशुए पूजा
कुणिए लाया जियो दा बुरा।

झूरी में नायक-नायिका संवाद

प्रेमी : *शाडो बशौ रोलो शावणों बशे नानड़ी बूंदे*
अखी शुफी उेखदे, शुकी मुईटी रूंदे।

प्रेमिका : *दूरा शा पड़ो बोलो हेरणा, चुड़ी ल्याणी राहियो*
आखिए माजा देखिदा जिया, काजली बणो रा सीयो।

प्रेमी : *चुड़ी पड़ो बोलो फाकटू, संराई पड़ो पाला।*
गिरा पडत्रे चानालू दी, रोई नी खोणौ बाला।

प्रेमिका : *झूरी बोलो लाणो खे, बोलदा नी जियो*
सासो दा वाडिया कोधो हरे धानो की शी गोभी।

प्रेमी : *झूरी बोला बांठणे हरे धानो की शी गोभी*
मिलणा नी हुई सकी, रोई बाणे बाणे पाणी री ओवी।

प्रेमिका : *कांसे दा बलुआ बोलो, मांजी माजिए चुटा*
तेरा मेरा बोलो भावटा, हसी खेलियो टूटा।

कुछ अन्य संवाद

नायक : *बाठणो बोइरो झूरिए, गाओ रे शोभो*
ठोणियो आओ बोणेओ, लगी देखणे रा लोभो।

नायिका : *भोहती शुणे पाई लासरू, भोइती मिठड़ी बातो*
चऊ घेड़र रे जिंदड़े, निच्छालिए कोटो जवानी रो साथो।

नायक : *बाठणो बोइरो झूरिए, पिह्आ चिओ रा शेका*
आधी छोड़ो बाटो दे, लांगा कोई दाभ लेखा।

नायिका : *भोले भोरे रे जवाने बाठणो, एन्थी जिओ देनी गलाये*
साथी जीवणे मरणे रे कांसमो, चूड़े मोड़ो आगे खाये।

लामण

कुल्लू तथा महासू की तरह यहां भी झूरी के अतिरिक्त लामण पदों का स्वतंत्र अस्तित्व है। यहां कुछ पद दिए जा रहे हैं।

तेरी आखटी नानीयै! जिन्हें मोती रे दाणे
हाथ पकड़ै साथी रा एबै नी आधमौ पाणै।

तेरी आखटी नानीयै! जिन्हें रामौ रे तीरो
भोले री लागो छातिए, सुरनौ वासिए फिरो।

टीपलू रे आंगणै दे, बान्ही बानो रे हौलौ
छाड़े देलि आखि रै, मौटके देखे डांगरू ढौलौ।

झाशिए भौलखो कांशिए, भेजिए काम
हाथौ भीजै औशौ, मूहटू दौये रे धामैं।

लोका

झूरी, लामण के अतिरिक्त सिरमौर में 'लोका' भी प्रसिद्ध गायन शैली है। प्रायः लोका के पदों के अंत में 'लोका' से होता है।

1

हेड़ा छड्डया हेड़िए, बण छड्डया पंछिए
नौकरें छड्डी बांकिया, नारां जी लोका।

इक्की हत्था छत्तुआ, दूजे हत्थे पक्खुआ
मेले़ बिच घुम्मदी जिंद, कह्ली जी लोका।

पाणिए जो जांदियां सत बल पांदियां
इक्क बल सजणा जो देणा जी लोका।

डुह्गी डुह्गी बासियां दिल मेरा द्वासियां
किहां करी हुणा समजागे जी लोका।

2

लोका रिया छोरियां ज्यू, ज्यूए ते बी उकाई ओ
जिना पिच्छे छड्डे घर बार जी लोका।

जिनें गल्ले बरजां, तेरियां गल्लां कीतियां
जिनें गल्ले हुई गै दिल दूर जी लोका।

देख्या करयां दूरां ते तां सद्या करयां काह्जो
कालजू दे पौंदे ओ काले़ दाग जी लोका।

चिट्टे तेरे कपड़े, नीला तेरा कडलू
उडी जांदी गिरा तां गबार जी लोका।

3

छोटे छोटे गुड्डू छम छम हण्डदी
मैं दूरा ते पछाणी तेरी चाल जी लोका।

कच्ची कल्ी तोड़ी गया, बिच बने सुटी गया
पापां ते न डरया बेईमान जी लोका।

आपू चलेया शिमले जो मैं रोंदी आंजू
रोंदिया दरद नई आई जी लोका।

कोई हुंदी जोड़ियां, कोई हुंदे जौड़वे
कोई हुंदे जिवे जो, जलाने जो लोका।

साका

लोका की भांति 'साका' गीत भी यहां प्रचलित हैं। यह गीत शृंगारिक प्रकृति के होते हैं और पंजाबी टप्पों से मेल खाते हैं।

पुनयो री रात जीनटी, पुनयो रीत रात मुइए
झिली मिली बौरखा शैली बागुरो
नोदी रे कांडे दा बाशी रोहा चाकुरो
हिली रोहे चमेलटी रे पात
पुनयो री रात मुइए पुनयो री रात।

धारो गे बांशी री, टेटो कुणिए लाई
बीसरी बातो, चिते कोनी आई
जेथ लागा भावटा, शाहणी का जात
पुनयो री रात मुइए, पुनयो री रात।

रूई रूई पोड़े, आंखटी दे गेरे
जीयों तो मुइए, का माखते तेरे
जीयों री बागरो, कोही री बात
पुनयो री रात मुइए, पुनयो री रात।

जेनी री खातीरी, दुनिया वे छाडी
से रोही रूशी, मेरे मनोरी लाड़ी
मरण मारबता का वेधानारो बात
पुनयो री रात भाईयो, पुनयो री रात।

टप्पे

गंगी, बालो तथा पंजाबी टप्पों की तरह सिरमौर में भी टप्पे प्रचलित हैं। प्रस्तुत हैं इनके कुछ उदाहरण।

शिमला दिया सड़कां, मेमो कूटे रोड़ी
मेरी तेरी मूसुआ बाबू बालकां दी जोड़ी।

बाबुदा क्वाटरा, लिला वंडी दा छत्ता
हाय बाबू मूसंआ, लिला वंडी दा छत्ता।

किसी लाईटी चुगली, तां किने दितिया पता
मूसुआ लाई चुगली, घड़लो दितिया पता।

धारा पई धूमड़ी, वला पिया पाला।
टोपी पाई पटका, पोगरा चिलड़ा।

पारलिए जांदिए, मुंहे तेरे लाली
आज देखा मिलदी, जेब पई खाली।

परलिए जांदिए, हत्थ लेआ लोटा
देखी सुणी चलणा, जमाना लगा खोटा।

बाबू दी रंजरी, रंगरा तां काली
पंज मांगे कपड़े, रूपयै मांगके चा़ली।

मांई रूपू

सिरमौर में 'मांई और रूपू' एक प्रेमगाथा भी प्रचतिल है। सौतेली मां के दुर्व्यवहार के कारण दुखी मांई अपने प्रेमी रूपू के साथ भाग जाती है। कुछ समय बाद पति की मृत्यु होने पर वह सती हो जाती है। प्रस्तुत है इस गाथा का एक अंश–

पारलै चलालै दू दैणे स्पुए पेड़ो
मांई चारो बाकरी, चारै रूपुआ भेड़ौ।

माएं जाणों ले के, बाशौ ले भेड़ौ
छिछड़े री छांइए रूपू, सौऊलो सिक्कौ।

मांई री मंटू जिणी, हारषी जेओ निरूकौ
रूपुए फारशे पाए गोरू दे, चौणे तू नेह्ड़े आए।

माईं रे ओ रूप रे हौले बाले बताए
कोठी गाड़ौरी जातरौ, कौरे रूपुआ आए।

तेरी जातरे माईंए, मौंए जाणी नै जाणे
तेरी हौली सतड़ी, मुखी छाडे बदाणु।

भर्तृहरि

सिरमौर में सर्दियों के दिनों भर्तृहरि, भारथ, हारूल आदि गाथाएं गाई जाती हैं जिनमें वीररस की गाथाओं का समावेश रहता है। प्रस्तुत है राजा भर्तृहरि का एक अंश—

आमे छोड़ियो पापिया कोसी देशो खे चाला ला
राणी थाम्बों रो पींगालो बोले भगुए रा पाला ला।

आमे छोड़ियो पापिया, कौसी देशो खे चाला
तूं मांगे भिछिया आं बोले, डाऊंबी पाला ला।

आमे छोडियो पापिया, कौसी देशा खे चाला ला
तुमें छोडियो पापणी घैरी, पूरबों खे चाला ला।

तेरी गलौ बोले पापिया, आओणा साथे ला
तूं मांगे भिछिया आं बोले, डरऊंबी हाथो ला।

दशहरा गीत

कुलूए दशहरे स्टेज लागा बौणदा
चऊए चकूणिए चक।
चक भले माहणुआ
चऊए चकूणिए चक।

बीजा बोला दशमी लागी म्हारै कुलूए
म्हारे जाचा बे जाण।
जाणा भले माहणुआ
म्हारे जाचा बे जाणा

देशा देशा रे आए म्हारे पाहुणे
भात लोड़ी जाटू रा खाणा।
खाणा भले माहणुआ
भात लोड़ी जाटू रा खाणा।

राजा भर्तृहरि को रानी पिंगला ने ताना दिया कि आप राजा होते हुए भी न शिकार खेलते हो, न मांस खाते हो। यह ताना सुन राजा भर्तृहरि संन्यास धारणकर पूर्व दिशा की ओर चल दिए।

कोठणो कार्मो, जोगी पोड़ा ला धारणा
राजे दीता भरतरी के राणिए फिटकारी
तूनी राजा बोलो हेड़ा खेलदे, तू खांदा ना शिकारो।

सिरमौर में हौकू मियां की हार, सामा-दौलतू की हार (वीरगाथा), भर्तृहरि के साथ 'पंडवायण' का गायन भी किया जाता है। पंडवायण, जैसा कि नाम से लक्षित होता है, पांडवों और कौरवों की गाथा है। यहां पंडवायण का एक अंश उदाहरण के लिए दिया जा रहा है-

आवन्दा नि भाईयो हाण्डे भीतरा हाण्डा
फिरी फिरी खुबला झाल़ रा काण्डा।

कुण बड़ा छतरी कुणजा बड़ा खाण्डा
बाणो छाड़ा आगनी धोखे दी पाण्डा।

मामे तेरे शकुनिए बातो लोई लाए रे
जितणा तेरे जोध धारो कुढ़ासनी री आए रे।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, अतः अपना-अपना पराक्रम दिखाना आवश्यक है। कौरव-पांडव का घमासान युद्ध कुढ़ासनी यानी कुरुक्षेत्र में हुआ।

कुल्लू के लोकगीत

ऐतिहासिक संदर्भ

कुल्लू एक पुरातन राज्य रहा है जिसके एक ओर लाहुल स्पिति तो दूसरी ओर मंडी स्थित है। इधर कांगड़ा तो उस पार रामपुर बुशहर।

कुल्लू के बाहरी सिराज में निरमंड एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान रहा है जिसमें परशुराम का मंदिर है। यहां निरमंड ताम्रपत्र के अलावा महत्त्वपूर्ण मूर्तियां मिली हैं।

कोल या किरात

आज के कुल्लू या पुरातन कुल्लूत के वासियों को स्थानीय भाषा में 'कोलटा' कहा जाता है। इन मिलते-जुलते शब्दों के आधार पर यह नहीं माना जा सकता कि कुल्लूवासी मूलतः कोल थे। आर्यों का पहला संघर्ष कोल संघ से हुआ। ऋग्वेद में उल्लेख है–

उतं दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि। अवाहित्रंद शंबरम् (ऋग्वेद 4.30.14)

उक्त ऋचा के अनुसार कुछ विद्वानों ने शंबर को कोल संघ का अधिपति माना है, कुछ ने 'कोल से इतर' किसी दूसरे संघ का। दोनों ही स्थितियों में कोल संघ की मौजूदगी सिद्ध होती है।

कुल्लूवासी कोल नहीं, किरात थे। इतिहासकारों का मत है, जब कोल बीहड़ों में रह रहे थे, मंगोल आकृति के किरातों ने चीन के आसपास से भारत में प्रवेश किया और कोलों को यहां से भगा दिया। ये लोग असम से नेपाल, कुमाऊं, कांगड़ा होते हुए लाहौल स्पिति तक गए। किरातों के दो वर्ग माने जाते हैं–भिल्ल किरात और राज्य किरात। बाराही संहिता में किरातों की भूमि चीन प्रदेश का मध्य भाग माना गया है। बाणभट्ट ने किरातों का आवास कैलास के समीप हेमकूट पर्वत माना है। कुल्लू में हामटा को भी हेमकूट माना जाता है।

पौराणिक देवता व ऋषि

हिमालयी संस्कृति में ही नहीं, पूरे प्रदेश की संस्कृति में आदिदेव शिव का अभूतपूर्व स्थान है जिससे सिद्ध होता है कि यहां की संस्कृति मानव की मूल संस्कृति रही है।

बिजली महादेव, शिव मंदिर बजौरा, नग्गर तथा दलाश के साथ नग्गर व दलाश में विष्णु मंदिर स्थित है। भुंतर के पास आदि ब्रह्मा का मंदिर है। देवियों में चामुंडा, ज्वालामुखी, संध्यागायत्री, त्रिपुर सुंदरी, काली के अनेक मंदिर हैं। देवियों के अलावा योगिनी, फुंगणी के स्थान भी हैं जो प्रायः पहाड़ की चोटियों पर स्थित हैं। स्थानीय देवियों में भोटंती, भारथा, शबरी आदि हैं।

कुल्लू के विभिन्न भागों में मनु, वशिष्ठ, भृगु, जमदग्नि, दत्तात्रेय, कपिल, श्रृंगी आदि अनेक ऋषियों के स्थान हैं।

कुल्लू में देवता की पूजा का निर्वाह ठाकुरों द्वारा ही किया जाता है। वहां ब्राह्मणों का आगमन श्रीरघुनाथ जी के आगमन के साथ सोलहवीं शताब्दी में हुआ। किन्नौर की ओर अंतिम ब्राह्मण परिवार सराहन में ही रह जाता है। यद्यपि इन क्षेत्रों में बाहर से जो शिल्पी आए और धातु, लकड़ी, कपड़ा, चमड़ा आदि का काम करने लगे या जो संगीत नृत्य का प्रदर्शन करते थे उन्हें 'बाहर का' माना गया और कालांतर में समाज में निम्न स्तर का माना गया।

व्हेनसांग ने अपनी यात्रा में (635 ई.) में जालंधर के बाद कुल्लू का उल्लेख किया है। इन्होंने कियू-लो-तो को जालंधर से 700 ली अर्थात् 117 मील उत्तर-पूर्व की ओर बताया है।

कुल्लू के लोकनृत्य

कुल्लू, किन्नौर, महासू या शिमला, सिरमौर (इन क्षेत्रों के लोकनृत्य में बहुत हद तक समानता है। यहां नृत्य एक सामूहिक कृत्य के रूप में प्रचलित है। पुरुष और महिलाएं समान रूप से नृत्य करती हैं। पुरुष और महिलाएं अलग-अलग तथा साथ-साथ भी नृत्य करते हैं। इन सभी क्षेत्रों में 'नाटी' नृत्य का एक सामान्य प्रकार है जिसमें एक-दूसरे का हाथ पकड़े पूरा का पूरा गांव नृत्य में शामिल होता है। इस नृत्य में आपसी सद्भाव, भाईचारे का भाव भी समाहित है। सब लोग एक-दूसरे का हाथ थामे नृत्य करते हैं जिससे एक व्यक्ति दूसरे से जुड़ता जाता है। यह अकेले व्यक्ति का नृत्य न होकर एक सामूहिक नृत्य है जिससे व्यक्ति व्यक्ति से जुड़ता जाता है। इस नृत्य के कई प्रकार हैं।

कुल्लू नाटी

कुल्लू क्षेत्र की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां हर ग्रामीण चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, नृत्य करता है। नृत्य यहां बच्चों को घुट्टी के साथ पिलाया जाता है। कोई किसी को नृत्य सिखाता नहीं अपितु अन्य क्रियाकलापों की तरह सभी स्वतः ही नृत्य सीख जाते हैं।

कुल्लू नाटी प्रदेश का बहुत ही मनमोहक लोकनृत्य है। अपनी पारंपरिक वेशभूषा, पारंपरिक वाद्यों और गीतों के साथ जब नर्तक घाटी में नाचते हैं तो समां बंध जाता है। कुल्लू के विभिन्न भागों (मनाली, लग घाटी, रूपी घाटी, बंजार, भीतरी सिराज, बाहरी सिराज और साथ लगते जिला मंडी के अधिकांश भाग में नाटी प्रचलित है। साथ लगते मंडी जिले में लगभग सभी जगह नाटी नाची जाती है।

कुल्लू नाटी हिमाचल में ही नहीं अपितु विश्व में प्रसिद्ध है। यूं तो नृत्य के लिए 'नाटी' शब्द का प्रयोग किन्नौर, महासू (शिमला), सिरमौर आदि क्षेत्रों में किया जाता है और इन क्षेत्रों में नृत्य के इस प्रकार में समानता भी है किंतु कुल्लू के क्षेत्र का मुख्य नाच 'नाटी' ही है। देवता के उत्सव में, धार्मिक समारोहों में, जातर में, मेलों में, विवाह व भोज के अवसर पर नाटी लगाई जाती है जिसमें महिला तथा पुरुष समान रूप से नृत्य करते हैं।

वेशभूषा

मेले या धार्मिक उत्सवों के अवसर पर ग्रामीण अपनी पारंपरिक वेशभूषा में सुसज्जित होकर आते हैं। संभवतः हिमाचल प्रदेश में कुल्लू ही एक ऐसा क्षेत्र रह गया है जहां अभी भी लोग अपनी परंपरागत वेशभूषा पहनते हैं। हिमाचल के शेष भागों में परंपरागत वेशभूषा समाप्त हो चुकी है। कोई अपनी पुरानी वेशभूषा में दिखाई नहीं देता। किंतु कुल्लू में यह अभी भी जीवित है। गांव तो जीवित हैं ही, कुल्लू शहर में भी लोग अपनी परंपरागत वेशभूषा में देखे जा सकते हैं। विशेषकर महिलाएं अपना पट्टू जरूर पहनती हैं।

नर्तकों की वेशभूषा इनसे कुछ अलग और विशिष्ट होती है। नर्तक सिर पर काली ऊनी टोपी पहनते हैं जिसे गोलाकार मोड़ा होता है। इसे 'टोपा' भी कहा जाता है। टोपी के ऊपर चांदी की कलगी के साथ झालर लगी रहती है। कई बार सिर में नरगिस के फूलों के हार भी गोलाकार बांधे जाते हैं। घुटनों तक लंबा सफेद ऊनी चोला जिसके नीचे सफेद चूड़ीदार पायजामा।

इस परिधान के साथ बाएं कंधे पर एक आकर्षक ऊनी चादर रखी जाती है जिसे दाईं ओर कमर में बांधा जाता है। पैरों में पहले घास की बनी पूलें पहनी जाती थीं, अब बहुत बार बूट ही पहन लिए जाते हैं। महिलाएं रंगीन सुसज्जित कुल्लूई डिजायनों से भरपूर पट्टू पहनती हैं। गले में बड़ा सा चांदी का चंद्रहार विशेष आकर्षण रहता है। नाक में नथ या लौंग। पहले सिर पर टोपी पहनी जाती थी। अब टोपी की जगह थीपू ही प्रयोग में लाया जाता है। थीपू एक बड़े आकार के रुमाल की तरह होता है जिसे पीछे की ओर गांठ लगाकर सिर पर लपेटा जाता है। पहले कानों में ऊपर तक चांदी के गहने भी पहने जाते थे, अब एकाध गहने से भी काम चला लिया जाता है।

नाटी के समय वाद्य

नाटी के साथ लोकगीत अवश्य गाए जाते हैं अतः पारंपरिक वाद्यों का होना परमावश्यक है। कुल्लू का वाद्य विशिष्ट है जो नाटी के समय, देव उत्सव के समय, समारोह के समय बजाया जाता है। वाद्य के बिना नृत्य संभव नहीं। यह वाद्य अलग-अलग ढंग से बजाया जाता है। देवता की आरती के समय अलग, देवता को जगाने के लिए अलग और देवता के गूरों की खेल के समय अलग तरह का बाजा बजता है। नाटी के समय भी अलग-अलग तरह का बाजा बजाया जाता है। नगारे का प्रयोग देवता के प्रांगण में किया जाता है, नृत्य के समय नहीं। बहुत बार छोटे आकार का 'नगारटू' नृत्य के समय बजाया जाता है। नृत्य के समय सबसे जरूरी साज 'ढोल' है। ढोल का बाहरी खोल पीतल का होता है। लगभग डेढ़-पौने दो फुट के खोल को बकरी के चमड़े से मढ़ा जाता है। चमड़े को आठ छेद बनाकर कसा जाता है। ढोल का दाहिना पुड़ लकड़ी से बजाया जाता है जो गंभीर ध्वनि पैदा करता है। दूसरी ओर हाथ से बजाया जाता है। नाटी में ढोल का विशेष महत्त्व है। ढोल बजाने वाले को ढोली कहते हैं।

सामान्य से बड़े आकार के ढोल को 'दराघ' कहा जाता है। इसका प्रयोग देवता के सामने होने वाली 'देऊ खेल' में किया जाता है। देऊ खेल में बजने वाली धुन को 'हुल़की' कहा जाता है।

शहनाई, नाटी के समय प्रयोग में लाया जाने वाला दूसरा महत्त्वपूर्ण वाद्य है। वैसे भी यह एक मंगल वाद्य है जो देवता की पूजा के समय बजाया जाता है। कुल्लू में इसे 'छनाल' भी कहा जाता है। डेढ़-दो फुट लंबी शहनाई चांदी

या चंदन की बनी होती है जिसमें बांसुरी की भांति छह या आठ नौ छेद होते हैं। इसका अग्रभाग धतूरे के फूल की तरह होता है। मुंह की ओर चांदी की पी-पी लगी रहती है जिसमें पाला घास का सरकंडा लगाया जाता है जिसे पंपिका कहते हैं। पंपिका को स्वर निकालने के लिए थूक से गीला कर लगाते हैं। कुल्लू में शहनाई का स्वर पतला निकाला जाता है जबकि चंबा की ओर यह स्वर मोटा होता है। नाटी के समय एक अकेला शहनाईवादक ही पूरे गीतों को निर्वाह करता है। हर गीत के बोल के बाद शहनाई उसे दोहराती है जिससे गाने या नाचने वालों को बिना गाए नाचने का मौका मिलता है। कुल्लू में अभी भी शहनाई के अच्छे कलाकर विद्यमान हैं।

गानों के बोलों के बीच नरसिंगा या रणसिंगा और करनाल बजाई जाती है। अंग्रेजी के एस के आकार का रणसिंगा तांबे, पीतल या चांदी का बना होता है। दो भागों में विभक्त यह वाद्य बजाने के समय जोड़ लिया जाता है। यह दूर तक आवाज करता है। करनाल या नरकाल लगभग छह फुट लंबी होती है। इसकी चौड़ाई मुंह से आगे धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। इसका मुंह धतूरे के फूल की तरह होता है और लंबाई में तीन गांठें होती हैं। यह भी पीतल, तांबे या चांदी की बनी होती है। यह रणसिंगे के साथ प्राय: जोड़ी में बजाई जाती है।

कई जगह इन वाद्यों के साथ छंछाला भी बजाया जाता है। इसे लगभग छह इंच व्यास की थालीनुमा बरतन को बीच में उभार दे बनाया जाता है। उभार के बीच में डोरी बांधी जाती है ताकि इसे हाथ में पकड़ा जा सके। यह अष्टधातु से बनाया जाता है और दोनों हाथों में पकड़कर आपस में टकराकर बजाया जाता है। वास्तव में इसे बौद्ध मंदिरों में पूजा के समय बजाया जाता है। नाटी में इसका प्रयोग कम किया जाता है।

वाद्यों का कुल्लू में विशेष महत्त्व है। बिना वाद्यों के देवता का कोई भी कृत्य संभव नहीं। अत: हर देवता का अपना अलग वाद्य दल होता है। वादक निम्न वर्ग से संबंधित होते हैं किंतु देवता के साथ इनका महत्त्वपूर्ण नाता है। देवता इनके बिना नहीं चलता। ये लोग ही अपने वाद्यों द्वारा देवता को जगाते हैं, उसका आवाहन करते हैं। देवता का हर धार्मिक कृत्य वाद्यों के बिना संभव नहीं। पुराने समय में इन्हें देवता की ओर से जमीन दी जाती थी जो मुजारा कानून के तहत इन्हें मिल गई।

इन वाद्यों के सहारे बहुत बार बिना गायन के भी नृत्य चलता रहता है। किंतु विधिवत नाटी के समय गायन के साथ इन वाद्यों का होना आवश्यक है।

नाटी के प्रकार

कुल्लू नाटी के कई प्रकार हैं अंग संचालन के साथ बदलते हैं। नाटी का लीडर सबसे आगे नाचता है जिसे 'धुरी' कहा जाता है। धुरी के 'शाबाशे...' कहने के साथ सभी नर्तक नाटी का प्रकार बदल लेते हैं। नाटी के कई प्रकार हैं, यथा–ढीली नाटी, फेटी नाटी, दोहरी नाटी, रूंझका, लुडी, लालड़ी, बुशहरी, खड़ियात आदि।

धीमी गति से नाचने, कदमों को आगे-पीछे करने, पंक्तियों में नाचने, आगे झुकने और पीछे हटने के विधान पर ही नाटियों के अलग-अलग प्रकार बनते हैं। अलग कोरियोग्राफी और अलग अंग संचालन से ही नाटियों का प्रकार बदलता है।

नाटी का प्रारंभ धीमी गति से होता है, वाद्य भी धीमी गति से ही बजाए जाते हैं। गीत भी धीमे चलते हैं। अतः इस प्रकार के शुरुआती नृत्य को 'ढीली नाटी' कहा जाता है। इस नाटी में बाईं टांग से दो कदम आगे लिए जाते हैं। इसके बाद बाईं टांग पीछे करते हुए दाईं टांग से पीछे हटते हैं। दोबारा यही क्रम दोहराया जाता है। कदमों के आगे-पीछे करने, नीचे झुकने, पंक्तिबद्ध होने के क्रम से ही नाटी नृत्य में फेटी नाटी, दोहरी नाटी, लालड़ी, लुडी, रूंझका, बुशहरी, बांठड़ा, खड़ियात आदि नाटियों के विभिन्न प्रकार बनते हैं।

खड़ायत नाटी से पहले किया जाता है जिसमें दो नर्तक तलवारों से कर नृत्य करते हैं। वाद्यों के बजने के साथ दो पुरुष नर्तक तलवार के साथ लड़ाई की मुद्रा में तेजी से घूमते हैं। कुछ चक्कर इधर से उधर लगाने के बाद अंत में तलवारें नीचे रख दी जाती हैं। हर नाटी का प्रारंभ इसी नृत्य के साथ होता है जो युद्ध की पुनरावृत्ति प्रतीत होती है।

लालड़ी में नर्तकों का आपस में संवाद स्थापित होता है। एक नाटी में आगे-पीछे होते हुए ताली बजाई जाती है।

विभिन्न स्थानों के नाम पर भी नाटी में विविधता आती है जैसे सराजी नाटी अर्थात् सराज की ओर नाची जाने वाली (बुशहरी नाटी अर्थात् बुशहर में नाची जाने वाली) सिरमौरी नाटी यानी सिरमौर की ओर नाची जाने वाली। इन नाटियों का प्रभाव देसी स्थानों पर भी होता है जैसे कुल्लू में भी 'बुशहरी नाटी' पाची जाती है।

पुराने समय में महिला और पुरुष इकट्ठे नृत्य न करके अलग-अलग नृत्य करते थे। अब नाटी में महिला और पुरुष इकट्ठा नृत्य करते हैं। पहले

पुरुष नाचता है, उसके साथ महिला, फिर पुरुष और महिला; इस क्रम में छह-छह या आठ-आठ की जोड़ी में नृत्य होता है। गांव में यह एक पूरी माला का रूप धारण कर लेता है जिसमें अनेक पुरुष और महिलाएं नृत्य करते हैं। कहीं-कहीं पुरुष अलग और महिलाएं अलग नृत्य करते हैं। अब नृत्य के समय एक पिरामिड बनाकर नर्तकों को ऊपर भी ऊंचे में उठा दिया जाता है। कभी महिला और पुरुष अलग गोला बनाकर बीच में एक पुरुष और महिला अकेले-अकेले नाचते हैं और अपना स्थान बदलते हैं। पुरुष महिलाओं के बीच और महिला पुरुषों के बीच अकेली नृत्य करती हैं। कहीं पुरुष और महिला गोले के बीच में नाचते हैं।

नाटी के साथ गीत चलते रहते हैं जिनमें पुरुष गाते हैं, महिलाएं उसे दोहराती हैं। कुछ गीत प्रश्न-उत्तर के रूप में गाए जाते हैं। नाटी का प्रारंभ देव वंदना से होता है जिसमें देऊ पराशर या भगवती की वंदना का गीत गाया जाता है।

नाच के साथ वाद्य अनवरत रूप से बजते रहते हैं। गाने के बोलों के बाद शहनाई से उसे दोहराया जाता है। बीच-बीच में रणसिंगा और तुरही या करनाल बजाई जाती है। नृत्य के अंत में वाद्यों को तेजी से बजाया जाता है जिससे गाने और नाच की गति भी तेज होती जाती है। मंच पर प्रदर्शन के समय एक नृत्य कम से कम आधे घंटे तक चलता है। अन्यथा नृत्य को कठिनाई से समाप्त करवाना होता है। लोग नाचने से हटते नहीं।

अब इन नृत्यों में कई नई-नई तकनीक भी इस्तेमाल की जाने लगी है। जैसे महिला नाचते हुए नीचे रखे रुमाल को जीभ से उठाती है या सिर पर घड़ा या दीपकों की थाली रखकर नृत्य किया जाता है। किंतु यह पारंपरिक नृत्य का अंग नहीं है। ऐसे नृत्य दर्शकों को रिझाने के लिए बाद में जोड़े गए।

लोकगीत

धार्मिक गीत (शिव वंदना)

म्हारै देऊआ बोला शिवजीआ
तेरी जय जयकारा हो।
ऊथड़ी धारा न मंदिर तेरा
सदा जय जयकारा हो।
होरी देऊआ बै फूलरा जेलरू
म्हारै शिवजी बै हारा हो।

शिव पूजा

नदीये किनारे
बाडुआ लिंग बणाऊओ
शिव शंकर उपजाऊओ
आगा जै आगा गौऊरी बेटी
पाछा हांडा शिव शांकरा
हाथा जोड़ी अरजा शांकरा
तुयै स्वामी आगडू चाले।

देवी वंदना

धारा पादै शोभला माता रा मंदिर
आसा बै तू दर्शन देंदी कीबै नई।
हार डाहू गूंधिया फूलारा तेरा
म्हारे एई हारा बै लांदी की बै नई।
हौथा मुहां धौणे बै गंगा रा पाणी
म्हारै इन्हां पापा बे धोदी कीबै नई।

देवी हिडिंबा स्तुति

देबी हिड़मा देऊआ री राणी
घौणे जंगला न मंदिर तेरा।
सभै देऊ शौभाऊणै तौ संगे
तू सा इन्हां सभी री राणी।
हौथा जोड़िया अर्ज आसारी
पूरी केरी आशाबै, पूजणा आसा मनाली।
देबी हिड़मा देऊआ देबी री राणी
ठण्डा सा हेरी जायरू पाणी।

कृष्ण लीला

बाई हागै, बाई हागै, बाई हागै
तेई कृष्णे छेड़नी लाई ओ।
तेई घीरै में चिन्दिए हेरू
तेईए नी पता जादू केरू

मेरी पातल़ी बाई मरोड़नी लाई ओ।
भोरूदी गागर पेरनी लाई ओ
तेई कृष्णै छेड़नी लाई ओ।

कृष्ण महिमा

धनै धनै म्हारे घने कृष्णा
धनै मुरली आला।
राजा कंसा रा भाणजा
अर्जुणा रा साल़ा।
सारी जनता सा तोपदी
आपू तू गोरू गूआल़ा।

नाग वंदना

नाग बोलो देवा, देवा रा बे राजा
तारा बोलो देवी रा मन चांदा भाईया
सारा बोलो पोहाड़ो दा लोका ला गाया।
शिब बोलो शंकरों रा प्यारा ए ही ख्वाजा
माऊ बोलो नागा, नागा देवा रा वे राजा।
मीठे बोलो बथेरा बड़े बोलो जवानों में छाया
लोगो रे संकट काटणे देवा बोलो रे आया।
देऊं ताखे बर वस्त्र ओरो धाजा
नागा बोलो धोरती गोईणी रा राजा।
सोबे प्रजा कठी होवो, बोलो कठे रावल
सबी के देवो तुमे बोलो राखे रे चावल।
नागा बोलो लोको दा गाया
नागा बोलो लोके मनाया।

पराशर वंदना

म्हारे देऊआ तू ऋषिया पग़सड़ा!
तेरी जय जयकारा हो।
तू दाता म्हारा, तू सा स्वामी, तू पालनहारा हो
तेरी जय जयकारा हो।

डूंगा डूंगा सौर तेरा, मंदर पुराणा, लाई देणा बेड़ा पार हो
तेरी जय जयकारा हो।
सतीजुग, त्रेताजुग, द्वापर सारा, कलिजुगा तैईनी पाया सार हो
तेरी जय जयकारा हो।

परबत व्यास रिखी, व्यास कुण्ड तीर्था, जुगे री सा याद तेरी अंत नी हो
तेरी जय जयकारा हो।
सेभी रा भला केरी, सुख देई मालका, दुख केरी दूर,
शुणा सेभी री पुकार हो
तेरी जय जयकारा हो।

दुर्वासा वंदना

म्हारे देऊआ बोला दरवासेआ ऋषिया
तेरी जय जयकारा हो।
एक मंदिर पाल़गी है पाल़गी
दूजा मंदिर धारा हो।
हौथड़ू जोड़ी सा अरज म्हारी
तूहे सा सभी रा सहारा हो।

विजय दसमी (दशहरा) का गीत

विजय दसमी अर्थात् दशहरे का मेला आ रहा है। मेले से पहले फसल के सभी काम पूरे कर लो। छल्ली छप्पर पर डालकर सुखा लो, धान काट लो, घास काट लो। चितकबरा पट्टू बनवा लो। बहन नीमूंए! तभी मेले का मजा आएगा।

छौली चौड़े जैड़े जैड़े ओच्छी भाऊए नीमूंए
लाल बोला छापर बड़ाणा हो।
धान लूणै लैरे लैरे औच्छी भाऊए नीमूंए
घीऊ बोला खिचड़ू खाणा हो।
ऊन कौते शेरै शेरै ओच्छी भाऊए नीमूंए
चादरू बोला चितरा बड़ाणा हो।
गाह लूणै जैरे जैरे ओच्छी भाऊए नीमूंए
विदा बोला दसमी जाणा हो।

बिदा दसमी जाणा

इस गीत में बहन से आग्रह किया जा रहा है कि मैं भी सिर में ढाठू लगाकर मेले में जाऊंगी।

बिदा दसमी लाणी मेरी लाल लूंगिए
मूंमी दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

मेरे शिरा बै ढाठू देओ सरला
मुंमी दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

घौणा ज़ाचड़ू पाणा मेरी लाल लूंगिए
बिदा दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

इसी तरह की शब्दावली में एक नाटी गीत भी गाया जाता है—

लाल चिड़िए ओ लाल चिड़िए, मूंबी जाचा जो जाणा
मेरी लाल चिड़िए।
मेरे सिरा जो ढाठू दे ओ सरला!
मूंबी जाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए।
मेरे पैरा जो मोचड़ू दे ओ बिमलो!
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए।

एक और गीत

बिदा दसमी लाणी मेरी लाल लूंगिए
मूमीं दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

मेरे शिरा बै ढाठे दे ओ सरला
मूमीं दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

घौणा जाचड़ू पाणा मेरी लाल लूंगिए
बिदा दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

नाटी तथा अन्य गीत

महासू तथा सिरमौर की भांति नाटी कुल्लू का एक लोकप्रिय व विशिष्ट नृत्य है। नाटी डालते समय अनेक गीत गाए जाते हैं। नाटी भी कई प्रकार की है, जैसे—ढीली नाटी, फेटी नाटी, लाहुली नाटी आदि। नाटी में पूरा का पूरा गांव नृत्य करता है। नाटी से पहले नर्तक, विशेषकर वृद्ध नर्तक ढोली को निर्देश

देते हैं कि कौन सी नाटी डालनी है। उसी नाटी के अनुरूप ताल बजेगा–

बाजड़ै ढोलिया ढीली नाटी
जाच़ नी छवदी हेसी नाटी।
बुडलै नौचलै दिहाड़ी राती
बाजड़ै ढोलिया ढीली नाटी।
नौच़दै लागै सभै साथी
बाजड़ै ढोलिया ढीली नाटी।

मेलों में गाए जाने वाले गीतों को लाल्हड़ी कहते हैं। युवक तथा युवतियां प्राय: दो पंक्तियों में नाचते हैं।

मेले में जाने की तैयारी का गीत

कालो जाच़ा बै जाणा ओ गुड्डिए
जाच़ा बै जाणा।
थिपू चीतरा पौटू लाणा ओ गुड्डिए
चीतरा पौटू लाणा।
जौंघा न झांझर लाणी ओ गुड्डिए
जौंघा न झांझर लाणी।
हौथा न घड़ी लाणी ओ गुड्डिए
हौथा न घड़ी लाणी।
गौल़ा न हार लाणा ओ गुड्डिए
गौल़ा न हार लाणा।

लाल चिड़िए : एक

यह नाटी गीत बहुप्रचलित है और कुल्लू, मंडी तथा चंबा तक गाया जाता है।

लाल चिड़िए! हो लाल चिड़िए।
मूं बी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे पैरां जो मोचड़ू लई दे बिमलो
मूं बी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे हाथा जो गजरू लई दे बिमलो
मुंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए।
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे सिरा तो सालणू लई दे बिमलो
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे पैरां जो झांझर लई दे बिमलो
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

मेरे नाके जो बेसर लई दे बिमलो
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए
मेरे देसा रा रूआज मेरी लाल चिड़िए।

लाल चिड़िए : दो

लाल चिड़िए सेरी न जाणा, सेरी न जाणा।
सेरी पाकोला गींहूं रा दाणा, गींहूं रा दाणा।
गींहूं रा दाणा घौरे ले आणा, घौरे ले आणा
गींहूं रा दाणा जादा नीं खाणा, जादा नीं खाणा
तेरे शेंटुआ उफरी जाणा, उफरी जाणा, उफरी जाणा
लाल चिड़िए सेरी न जाणा, सेरी न जाणा।
सेरी पाकोला माशो रा दाणा, माशो रा दाणा
माशो रा दाणा घौरे ले आणा, घौरे ले आणा
माशो रा दाण जादा नीं खाणा, जादा नीं खाणा।
तेरे शुंटुआ उफरी जाणा, उफरी जाणा, उफरी जाणा।
लाल चिड़िए सेरी न जाणा, सेरी न जाणा, सेरी न जाणा।

भावा रूपिए

भावा रूपिए ओ खेला दी एज़ा मेरी भावा रूपिए।
भावा रूपिए ओ कौखे रे खौल़े, मेरी भावा रूपिए
भावा रूपिए ओ पड़े रे खौले, मेरी भावा रूपिए।
भावा रूपिए ओ जांगड़ू शोल़े, मेरी भावा रूपिए

भावा रूपिए ओ छोशियो दूणू, मेरी भावा रूपिए।
भावा रूपिए ओ किज़ी रे तेले, मेरी भावा रूपिए
भावा रूपिए ओ गूटी रे तेले, मेरी भावा रूपिए।

प्रणय गीत

चौल बिरशू न नौचणा मेरी चिड़िए
चौल नौचदे जाणा। (युवक)
लोका भरम खाणा मेरे चिड़ूआ
लोका भरम खाणा। (युवती)
एज़ बौन्हणी जोड़ी मेरी चिड़िए
एज़ बौन्हणी जोड़ी। (युवक)
हौथ वचन लोड़ी मेरे चिड़ूआ
हौथ वचन लौड़ी। (युवती)

सिबादासिए

मेल़ी लोड़ी पाणी रै नाल़ा सिबादासिए
मेल़ी लोड़ी पाणी रै नाल़ा तेरे सौः।
राती बोला मेल़ी लो सुपने सुपने
दोती बोला पाणी रौल़ा तेरे सौः।
शोखे बोला फूटी लो कौकड़ी कौकड़ी
खोज़ बोला पाणी रा आल़ा तेरे सौः।
शिरा बोला पादै लाऊ फूलै रा डोलह्रू
गौल़ा बोला चांदी री माल़ा तेरे सौः।
हौसदा तेरा लो खाखड़ू खाखड़ू
छाती धिना लोहै रा तला तेरे सौः।

नैणू लाड़ी

देस सा शोभला धारा रूपी रा
पाणी सा ओगती आल़ा लो।

हौसदा तेरा लो खाखड़ू नैणूए
छाती धिना लौहे रा ताल़ा लो।

देस सा शोभला धारा रूपी रा
पाणी सा ओगती नाल़ा लो।

शाह सा नौह्ठा लो शांगरै नैणूए
हंस लागा फिरदा डाल़ा लो।

देस सा शोभला धारा रूपी रा
पाणी सा ओगती आल़ा लो।

बेला कबेला तू केरी मिलणा
हाउं बैठा बौता निहाल़ा लो।

देस सा शोभला धारा रूपी रा
पाणी सा ओगती आल़ा लो।

हाऊंए रा केरी लो आसरा नैणूए
रैणे रा बुटड़ू म्हारा लो।

देस सा शोभला धारा रूपी रा
पाणी सा ओगती आल़ा लो।

लाल्हड़ी

नाटी गीतों में एक प्रकार लाल्हड़ी भी है—

1

कालो जाच़ा बै जाणा ओ गुड्डिए
जाच़ा बै जाणा।
थिपू चितरा पौट्टू लाणा ओ गुड्डिए
चितरा पौट्टू लाणा।
जौंघा न झांझर लाणी ओ गुड्डिए
जौंघा झांझर न लाणी।
हौथा घड़ी लाणी ओ गुड्डिए
हौथा घड़ी लाणी।
गौल़ा न हार लाणा ओ गुड्डिए
गौल़ा न हार लाणा।

2

चौल बिरशू न नौचणा मेरी चिड़िए
चौल नौचदे जाणा।

लोका भरम खाणा मेरे चिड़ूआ
लोका भरम खाणा।
एज़ बौन्हणी जोड़ी मेरी चिड़िए
एज़ बौन्हणी जोड़ी।
हौथ वचन लोड़ी मेरे चिड़ूआ
हौथ वचन लौड़ी।

इंदरा लाड़ी

इन्दरा लाड़िए तेरी टौहरै
हाइएं इन्दरा लाडिए तेरी टौहरै।

लोभी तेरा छोटड़ा आपू लौरे
इन्दरा लाड़िए आपू लौरे।

चाउड़ी घूमदी औरै पौरै
इन्दरा लाड़िए औरे पौरे।

जाचा न घूमिया एज़ै घौरै
इन्दरा लाड़िए एज़ै घौरै।

घौरा तौभै निहाल़दे शौशू शौहरे
इन्दरा लाड़िए शौशू शौहरे।

नौई पार वै टपणा झूलै तौरे
इन्दरा लाड़िए झूलै तौरे।

ठारा करड़ू

ठारह करड़ू पौहरी देशा रै
शोभला देश सा म्हारा।
चांदी रा चाधरू ओढ़िया जोतड़ू
हिऊंए रा देश सा म्हारा।
आसै सी एईरै तितरू चाकरू
ऐ सा बगीचड़ू म्हारा।
मणिकर्णा गरम पाणी
जीउ छिपला सारा।

ढाली ढौंसी ढोह्ला बाज़दै
रौणकू तीर्थ सारा।
औरिए पौरिए उथड़ै ज़ोतड़ू
मौंझै व्यास री धारा।

बोदी गीत

काफल़ पौके बोदिए रौई, तोसै रै बोणा हो
काफल़ पौके बोदिए रौई, तोसै रै बोणा हो।

झूरी रै फाड़ै न दूई टुपकू सोणा हो
काफल़ पौके बोदिए रौई, तोसै रे बोणा हो।

चीड़ू रा लोड़ी ज़न्म दूईए रौहणा बोणा हो
काफल़ पौके बोदिए रोई, तोसै रे बोणा हो।

जैंढा सोढू मना न तैंढा कौखे न होणा हो
काफल़ पौके बोदिए रोई, तोसै रे बौणा हो।

जिंदै न केरी झूरना मौरिया नईं रोणा हो
काफल़ पौके बोदिए रोई, तोसै रे बोणा हो।

लोक देणै बोलणे घौर नीं आपणा खोणा हो
काफल़ पौके बोदिए रोई, तोसै रे बोणा हो।

छेता लो खौल़ा न कोम अपणा कमोणा हो
काफल़ पौके बोदिए रौई, तोसै रे बोणा हो।

तोता मैना

तोता लाड़ी मैना हो, तेरा पिंजरा पुराणा हो...तेरे सौः।
निउईं केरी नज़रा हो, लोके लाउ भरम खाणा तेरे सौः
तोता लाड़ी मैना हो, तेरा पिंजरा पुराणा हो...तेरे सौः।

धियाड़ी बै पौई चोउकी हो, राती बै लाहुल़ा शाणा तेरे सौः।
घौरा कौछै तीरथ हो, गंगा किज़ी बै जाणा हो तेरे सौः
तोता लाड़ी मैना हो, तेरा पिंजरा पुराणा हो...तेरे सौः।

मनैरी केरी मोउज़ा हो, दूरा देशा बै जाणा तेरे सौः।
झूरिए खोलू रूशणा हो, रातिए खोलू भियाणा तेरे सौः
तेता लाड़ी मैना हो, तेरा पिंजरा पुराणा तेरे सौः।

किता नि ढौकिणा पालू न हो, किता पूंघा पजाणा तेरे सौः।
फूला साही हल्का हो, देउआ साही नचाणा तेरे सौः
तोता लाड़ी मैना हो, तेरा पिंजरा पुराणा तेरे सौः।

श्रम गीत

घूघती

घूघती या घुग्घी बहुत से व्यक्ति रस्सा खींचते हुए गाते हैं। गीत के टप्पे गाते हुए नृत्य के बाद रस्सा खींचा जाता है।

1

घूगती मेरी घूघती
घूगती बांकी घूघती।

घूघती नौह्ठी मेरी मण्डी सराज़ा
तौखै न आणू लाहुला बाज़ा।

घूघती नौह्ठी मेरी लाहुल़ तिंदी
छिड़ी मूलै मेली चाकटी सिंदी।

घूघती नौह्ठी मेरी शिला नरोगी
छेउरे डेहरै काटणी डोगी।

घूघती बेठी मेरी खोड़ै री फाणी
रीत वास्त सारै नि जाणी।

घूघती नौह्ठी मानतलाई
पलू ढौकुईया पुघा पजाई।

2

इस गीत में दो व्यक्ति पहले घूघती बोलते हैं फिर सभी घूघती-घूघती कहते हैं। इस तरह दो व्यक्तियों के बाद सभी इकट्ठा गाते हैं।

घू भाईयो! घूघती...दो व्यक्ति
घूघती... घूघती...सभी

घूघती न्हौठी मांडी सराजा
घूघती... घूघती।

नौखा न आणू सकेतड़ बाजा
घूघती भाईयो! घूघती।

घूघती भईयो! घूघती
तौखा न आणू सकेतड़ बाजा
तेबे भीरी सो चुड़चड़ांदी
उड़िया न्हौठी बाजा बजांदी
घूघती... घूघती।

सो पुहती पिती र काज़ा
सुरा थी पिंदा तौखा रा राजा
घूघती... घूघती।

घूघती बैठी चाकटी पिंदी
छिड़ी मूले ता चाकटी सिंघी
घूघती... घूघती।

घूघती भाईयो! घूघती
भाइड़ भौरे घूघू पाज़ा
तौखा न आणू लाहुली बाजा
घूघती... घूघती।

भुणा ड़े यारो घूघती घूरा
घौरा पुहती मारदी ठौरा
घूघती... घूघती।

घौरा थी लागा शौईरी साज़ा
खांदे पिंदे बाज़ा गाज़ा
घूघती... घूघती।

रोटी बौड़े चाकटी सूरा
साज़ा थी ए कि ब्याह थी पूरा
घूघती... घूघती।

सौरा शराब माज़ा बोड़ी
पटिकदे नौचदे चेकड़ी चोड़ी
घूघती... घूघती।

ढलकी केरदे बोंडदे जूबा
भेड़ मुनी न काटदे रूभा
घूघती... घूघती।

नौचदे कोई ढिसिदे होरा
गुआंदे बोहू ता खांदे थोड़ा
घूघती... घूघती।

पाहुणे भौरी मिल़दे गौल़ा
लालड़ी लागी ग्राआं रे खोल़ा
घूघती... घूघती।

घू भईयो! घूघती
गेहूं रा दाणा चूगती
घूघती... घूघती।

घूघती बे हूई जूगती
सो खोड़े रे पाण्हे ऊकती
घूघती... घूघती।

चूटी पाण्हटी सो खुड़कदी
घूघती हूई सो फुरकदी
घू भाईयो! घूघती।

3

हेसरू बोला हे सार
ज़ोर नी लादै... हे सार।
केल़ो री काठी, बाल्हा बै नौहठी
हेसरू बोला हे सार।
बड़े जुआनी हे सार
जोर न लादै हे सार।

4

झीऊंचलीए

झीऊंचलीए... झीऊंचलीए... (एक व्यक्ति)
झीऊंचलीए... झीऊंचलीए... (सभी)

चौले उठिया कुलू बे जाणा (एक व्यक्ति)
झीऊंचलीए...झीऊंचलीए... (सभी)

कुलू जाया की नाऊंचा खाणा...झीऊं...
कुलू जाया घिऊ खिचड़ू खाणा...झीऊं...
घीऊ खिचड़ू नी गौला न जाणा...झीऊं...
गौला तेरे मूं ता घुंघरू लाणा...झीऊं...

कुलू देशा सा पौटू रा बाणा...झीऊं...
गौला घुंघरू पौटू भी लाणा...झीऊं...
डेंगा थिपू जोंघा बूटड़ू लाणा...झीऊं...
थिपू पौटू की पलवा पाणा...झीऊं...

कुलू जाया मूं शाहुरा लाणा...झीऊं...
तेरे शाहुरे की सेलरा लाणा...झीऊं...
एजे दूइए घौर बसाणा...झीऊं...
नूआं घोर चूटा फूटा पराणा...झीऊं...

तेरी तेइएं चूटा फूटा सजाणा...झीऊं...
घौरा नाईएं पूछू सियाणा...झीऊं...
कोने शुणू नाई लेखा न पाणा...झीऊं...
मशेरना नाईं कदी सियाणा...झीऊं...

याणा नाईं ए लोभा न लाणा...झीऊं...
एजे मांदी आसा हौथ मलाणा...झीऊं...
जुगा जानी बे सोंग बणाणा...झीऊं...
झीऊंचलीए...झीऊंचलीए...।

चिड़ूआ

छौड़ी देणी गराहुंजी चिड़िए, चौल उथड़ी धारा
चौल उथड़ी धारा चिड़िए, चौल उथड़ी धारा। (पुरुष)

मन लागला दूहीरा चिड़ूआ, चौल उथड़ी धारा
चौल उथड़ी धारा चिड़ूआ, चौल उथड़ी धारा। (महिला)

देश नी रौहू जीणे बे चिड़िए, बोणा रौहणा खारा

जोता जोता न हण्डणा चिड़ूआ, बाल्हा हण्डणा फारा
बाल्हा हण्डणा फारा चिड़ूआ।

छौड़ी देणा ए साथरा चिड़िए, भियाणू निकला तारा
नाई छुटदा साथरा चिड़ूआ, सोंग सदका म्हारा
सोंग सदका म्हारा चिड़ूआ।

पाखले आटो पाहुणे चिड़िए, घौर भौरूआ सारा
घौर भौरूआ पाहुणे चिड़ूआ कौखे जांइडू म्हारा
कौखे जांइडू म्हारा चिड़ूआ।

जोंघे हण्डणा शोभला चिड़िए, देश भालणा सारा
चिड़ू उड़ू मेरा धाउड़े लोभा न, सारा मुल्क निहारा
सारा मुल्क निहारा चिड़ूआ।

लोभा लोभा बे साउग चिड़िए, नाला तोपली धारा
छेके मिलड़े मने रे चिड़ूआ, गोला शोभिला हारा
गेला शोभिला हारा चिड़ूआ।

कौ न्होठा दूरा देशा बै चिड़ूआए पाणी ओकती आला
कौकड़ी मेरी लड़फड़ाउई, काल़जे लाई छाला
काल़जे लाई छाला चिड़ूआ।

देऊआ रा सा मोहरू चिड़िए, तेरा मूंहडू काला
कौधी बोणना ए तौ बी चिड़िए, मेरे गोल़ा री माल़ा
मेरे गोल़ा री माल़ा चिड़िए।

तेरी मेरी ए जोड़ी की लोभिया, घुडी मुंडी रा ढाला
तेरे एई लोभा रा चिड़िए, बिणी सुरे मताला
बिणी सुरे मताला चिड़िए।

चिड़ू रा लेणा जलम लोभिया, दुही रौहणा डाला
रौई तोसा रे डाला चिड़ूआ, रौई तोसा रे डाला।

जीवनू प्रेमी का गीत

एक ऐसे प्रेमी का गीत है जो विवाहित है किंतु प्रेमिका को पाने की चाह नहीं मिटी।

जीवनू दूई रा बड़ा बांका, जीवनू दूईं रा बड़ा बांका।
एक बोला सी जीवनू जीवनू, एक बोला सी नावां।
सिंहा मुखिया कांगणू देनू, बौसे मेरे गावां।
बाईटू आगै रा जायरू बोला, आण डिब्बे रे डिबै।
लोका लोका रे गाभरू बोला, झूरी एबड़ी कीबै।
बूने घिरै तेरा नगर बोलणा, उजै हलाणा रा ढोगा।
कूण बूझला मने री मनशा, कुणा छाती रे रोगा।
पारे भाहरा और डोभी, मौंझै बोहली ब्यासा।
चौ भोहरू रा बाव हुआ, हाजी भी नी चुट्टी आशा।

करुण गीत

घेशू लोभिया

यह एक करुण गीत है जिसमें घेशू की पत्नी पर मोहित एक युवक घेशू को मार देता है। घेशू की पत्नी फिर भी उसके हाथ नहीं लगती।

घेशू लोभिया, जान धीनी जौऊआ रे खूडा
लोभा रा न्हौठा थी बोणा कोमा बे, घौरे आपणा छूड़ा
झूरी लोभ रौह सौदा बे, माण्हू री काया रा धूड़ा
देशा छौड़िया परदेशा बे जाणा, कुणी रा खौडुआ बूरा
मारदा मौत ड़े पापी सुंदरा, घौरा छंटी बुढलू मामा
घौर छुटू त्रई भूईंरा, होर छुटू बूढलू मामा
होछे छूटे बालक मेरे, बाबू छुटू मारदा हाका
कुणी रा खौडुआ पापी सुंदरा, देईरा नी थी कौसी बे धाका
मारदा मौत ड़े पापी सुंदरा, हौथा रे कांगणू देनू
देऊआ बे देनू बौकरू, देबी बे सनागणू देनू
मारदा मौत ड़े पापी सुंदरा, लोका रे देशे
कुण धाचला आमा बापू बे कुण जाला तिन्हारी गेशे

भियाणिए

यह भी एक करुण गीत है जिसकी घटना ज्ञात नहीं है।

हांइये भियाणिए, कोने कीए काहणी शूणी
याणी बाली बे हुई मौता, चीड़ी डाला री रूणी

छाती लागा भौलका, मना री बूझणी कूणी
नला धारा भौपटे नेंदिए, ज़ोते री बागरे पूणी
झुमण भौरिया केरू हण्डणा, नाई थी रांवड़ी ज़ाणी
जेबे लागी तेरी सोठणी, छाती लाई कुटणी घाणी
खीर गंगा रा जायरू, नीला ब्यासा रा पाणी
फूला सेही थी होलकी, गोल़ा थी बिन्हिया लाणी
याद लागी एंदी झुपकू, कुणी बुद्धिए रूहाणी
हौछू नीभे बौहिया, हेरिदी हौछिए काणी
तू न्हौठी मौरिया, याद सा बिसरी आणी
हाड़ शुके पिंडे रे, लोहू रा निरशा पाणी
कुणी बुझणा से इसा मेरा, गोला लागा हेरिदा पाणी
भियाण भियाणुई, गीत रौही याणौ री याणी।

फूला देई बाह्मणिए

भुंतर मेले में एक अधिकारी फूला देई को जीप में भगा ले गया। जीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिसमें फूला देई की मृत्यु हो गई।

फूला देई बाह्मणिए, ठांडे कमरे
ठारा पीई बोतला, ठांडे कमरे।
डेके रे बोले तू सूती नींदरे
आपू रौही सुतिया, छोली खाई बांदरे।
सोंझा ढीसी थी लोगड़े, दोथी शांदरे
जाच़ लागी भी भूइण, बाबू चंदरे।
राउगी नाल़े री बाह्मणिए, पाई जीपा आंदरे
तू बो बैठी थी बाह्मणिए, जीपा आंदरे।
सड़का शोटिया आह्मणिए, जीपा नाल जोंदरे
आपू पूजी तू नाला न, शोहरू झीपा जोंदरे।
लाश पूजी तेरी बाह्मणिए, ठाणा हांदरे
सोड़ खाई थी बाबूए, नेगी लोम्बरे।

शिबी

इस गीत में शिबी नाम की प्रेमिका का वर्णन है जो प्रियतम को छोड़ कहीं और विवाह कर लेती है किंतु प्रेमी उसे नहीं भूल पाता।

शिबिए! याद नोही बिसरी तेरी।

दूर नौह्ठी तू छौड़िया शिबिए
याद नोही बिसरी तेरी।

ठण्डी बाईं रा जाईरू शिबिए
पाणी भौरणा डीबै।
लोका लोका रै गाभरू शिबिए
झूरी एबड़ी कीबै!

रोहतांगै पौरा न हीऊंरा भरूह्रू
संघै बागर बियाना।
दूर हेय आ झूरी रा हौथड़ू
छाती भौकू औगी रा घियाना।

गेहूं तेरै यै जौजरै शिबिए
जौए रै बोल्हणे पुयै।
कुणी पापी रा पौऊ झूरिए पौहरा
दूरा न भाल्दे हुयै।

शिबिए याद नौही बिसरी तेरी
याद नौही बसिरी तेरी।।

तारू

तारू नाम का प्रेमी विवाहित है। उसकी प्रेमिका नदी में डूबकर मरने से डरती है। वह अपने प्रेमी का नाम घरवालों को नहीं बता पाती।

लोमे तारूआ डूघी नौई रा गाहण
नौईं नी देई दी मेरे।

चोकण पाणी रा केरिए जतन
सौहना पाहुणे तेरे।

कैबे केरनू रोटी टुकड़ा केबे
सोहना के डेरे।

सेर देनू, देनू साथरा देनू
जान नीं देहंदी मेरै।

ऐढ़े पई नीए झलदी बाहुऐ
हौंद भलेरे।

शिर जाला काटिए ना नी
दसिदा मेरे।

मूंह आगला होसणा खेलणा
पीठी पीछं न लेरे।

लोमैं जारूआ डुघी नौई रा गाहण
नौई नी देंहदी मेरे।

भोले रामा दर्जिया

इस गीत में भोलेराम दर्जी की प्रेमगाथा है। वह टोपियां बेचकर जीवनयापन कर लेगा बशर्ते उसकी पत्नी या प्रेयसी का साथ बना रहे।

भोले रामा दर्जिया, टोपी बेचिया जीणा।
हाऊं आणनू कागज़ पत्तर, तूं आणी कलम दाना।
याद लागी एज़दी झूरी री, छाती भौके घिहाने।
गला ढूंढणी तैं हाड़के चोड़ दी, ऐबे ढूण मिठी जवान।
सौंज पोई बोला सौंजणी, औग बौकदी बैठे।
लनिए चिड़िए नौठी जोते रे गाशै।
लौके केरे रौंहदे बौसदे, आसा बैठे तुसरी आशै।

ब्राह्मणी

यह गीत मंडी में भी गाया जाता है।

निरमण्डा रिए बाह्मणिए!
पया बरखा रा छाल़ा भलिए
निरमण्डा रिए बाह्मणिए।

ढाठू सग्या ऐस्सा बाह्मणिया रा
पया बरखा रा छाल़ा भलिए
निरमण्डा रिए बाह्मणिए।

भुख लगी ऐस्सा बाह्मणिया जो
खाई लैणा गरिया रा गोल़ा भलिए
निरमण्डा रिए बाह्मणिए।

लुंबरू

हमारा प्रेम लुंबरू अर्थात् गुच्छे की तरह हमेशा जुड़ा रहे, यह कामना इस गीत में की गई है–

दुई जाणै रै लुम्बरूआ
संघी हेरी तोपदा दूजा लो।
दूई जाणै रै लुम्बरूआ
लोभी बल़ागुआ तेरे कौमान
माह्णू हेरी तोपदा दूजा लो।
दूई जाणै...
औधी रात मैल़ी सुपने न
ढौकू मांजा रा पाऊणा!
दूई जाणै रै लुम्बरूआ।

फतेहचंद कारदार

यह गीत फतेहचंद कारदार और रेपतू के प्रेम का बखान करता है–

हांडे बी बोला फतेहचंदा कारदारा
भेडा चारी जागू जवोणा लों
झूरी लाई बोला हैं नौऊंची
लाई बोणा सलोणा लो।
रेपतू लाड़ी रै जाह्नू न बेशीया
कौसी न कौमा न छौणा लो।

नैणू

देश लो शोभला ऊझी रूपी रा
पाणी बोला ओक्ती आल़ा लो।
हौंसदा तेरा लो खाखड़ू खांदिए
शोभा तेरी दौन्दे माल़ा लो।
बेला कबेला तू केरी मिलणा
हाऊं बैठा बौता निहाल़दा लो।
मेरा केरी आसरा खांदिए
रैणे रा बूटड़ू म्हारा लो।

तोता लाड़ी

तोता लाड़ी मैइना हो
तेरा पिंजरा पराणा हो।
निऊंई केरी बेशणा ओ
लोक भरम खाणा तेरे सोह्।
गपो गपो मेरी झूरिए ओ
आसा रात बिहाणी तेरे सोह्।
किता न ढोकिणा पालून लो
किता पुंगा पजाणी तेरे सोह्।

शिबदासिए

शिबदासी नाम की नायिका को संबोधित कुल्लू तथा मंडी में बहुत से गाने हैं।

मेल़ी लोड़ी पाणि रै नाल़ा शिबदासिए
मेल़ी लोड़ी पाणि रै नाल़ा तेरे सोह्।
घुंडी लोड़ी मुंडी रा ढाला शिबदासिए
राती मेल़ी सूपने हड़िए शिबदासिए
दोती मेली पाणी रै नाल़ा तेरे सोह्।

विरह गीत

नायक के नायिका के पास विलंब से पहुंचने पर प्रतीक्षा में उसकी दयनीय स्थिति का इस गीत में वर्णन किया गया है।

तोखे भाल़दै निहाल़दे झूरिए
ओच्छी रै डेहरू बैठे
मूंडकू पाती आसै झूरि रै फाड़ै न
जौघां पसारा तो सड़का फेटे।
सौंज पोई सौंजड़ी झूरिए
दिल लागा ज़ौल़दा गेठे।

हीरामणिए

हाईये लाहिये हीरामणिए, बीहा रौजा न फेरी लो।
संवै केरू लो उतम ठाकर पूजी भाटग्रां सेरी लो।

जिंदे ती आसा झूरना मौरी छारे री ढेरी लो।
एक गल्ल शूणी बधकी बधकी कैरी आपणी कीती लो।

हूमांबंतिए

इस गीत में नायक नायिका को मायके से अपने घर ले जाने के लिए मिन्नत करता है।

हूमांबंतिए चरखिए!
चौल घौरा बै जाणा लो।
फूल निंबरू फूलिया
भर फूलली गोभी लो।
खाणा पीणा रा नी लालच
तेरी जानी रा लोभी लो।
हूमांबंतिए चरखिए!
चौल घौरा बै जाणा लो।

पौट्टू आलि़ए

यह गीत नाटी में भी गाया जाता है।

पौट्टू आली़ए भान्जिए!
पौट्टू लाणा कि ढाठू लो।
कुंगू लाणा तैबे कालज लो
लाणा रेशमी ढाठू लो।
पौट्टू आलि़ए भान्जिए
पौट्टू लाणा कि ठाठू लो।

त्रासा गीत

ऋतु के खुलने पर महिलाएं नाचती और गाती हैं। पहले महिलाएं नाटी नहीं नाचती थीं। इन गीतों को त्रासा गीत कहा जाता है। इस नृत्य को नाटी न कहकर 'त्रासा खेलणा' कहा जाता है।

1

जिंदू औरे बी नी ऐंदा
जिंदू पोरे बी नी जांदा।

मौंज़ पौटी पादै बैठा
थोकदारा लोभिया
जिंदू री लायती खांदा
नंइयो थिपू नी देंदा।
ऐ जिंदू रा लायती खांदा
नंइयो कुरतू देंदा।

जिंदू औरे बी नी ऐंदा
जिंदू पोरे बी नी जांदा।

मौंज़ रा लायती खांदा
नंइयो सूथणू देंदा।

जिंदू औरे बी नी ऐंदा
जिंदू पारै बी नी जांदा।

मौंज़ पौटी पादै बेठा
थोकदारा लोभिया।

जिंदू रा खांदा
पोलडू नी देंदा।

जिंदू औरे बी नी ऐंदा
जिंदू पारै बी नी जांदा
मौंज़ पौटी पादै बेठा
थोकदारा लोभिया।

2

ओ मेरे गदिया तौभे नंई रौहणा
लौंगा री डूंगी ओ मेरे गदिया।

लौंग गढ़ाई देनू ओ मेरी गदणी
तौभे नंई रौहणा मेरे गदिया।

बाले़ री डूंगी ओ मेरे गदिया
बाले़ गढ़ाई देनू ओ मेरी गदणी।

टौके री डूंगी ओ मेरे गदिया
टौके गढ़ाई देनू ओ मेरी गदणी।

3

पिछले बज़ारे सालिए घौर मेरा
मैं नी हेरू डोला घौर तेरा।

पिछले बज़ारै सालिए भाऊ मेरा
मैं नी जाणू भाऊ तेरा।

कोटलू जे आला सालिए भाऊ मेरा
कोटलू जे आला भाऊ मेरा
ऐ...मैं नैंई जाणू डोला भाऊ तेरा।

टोपणू जे आला सालिए भाऊ मेरा
पिछले बज़ारा भाऊ मेरा।

श्रानी गीत

देव मंदिरों में चैत्र संक्रांति से लेकर वैशाखी तक बालिकाएं दो दलों में गीत गाती हैं जिनमें कच्चे फलों को न खाने की चेतावनी दी जाती है।

एक : *हौरे आरू शाढ़ै नी खाणै*
मौरली पीतै रे जौरे।
दूसरा : *आसै नी मौरदी रे जौरे*
आसे नी मौरदी जौरे।
एक : *हौरे सेऊ पाले नी खाणे*
मौरली पीते रै जौरे।
दूसरा : *आसै नी मौरदी जौरे*
आसे नी मौरदी जौरे।

बिरशू

यह गीत चैत्र से दशहरे तक महिलाओं द्वारा गाया जाता है।

भाउए चमेली मेरी जाचा वै नी ऐंदी
एणे नी देंदा बेईमान बांकया हाकमा।

भउए चमेली मेरी खेलदी नी ऐंदी
एणे नी देंदा बेईमान बांकेया हाकमा।

भाउए चमेली मेरी पाणी वै नी ऐंदी
एणे नी देंदा बेईमान बांकेया हाकमा।

भाउए चमेली मेरी नौचदी नी ऐंदी
एणे नी देंदा बेईमान बांकेया हाकमा।

काले़ बादला़

यह एक हृदयग्राही गीत है और वैसी ही इसकी धुन है।

काले़ बादला़ हेठे
हेठे बोला नीमू तेली रिए शोहरिए।

सौंझ पोई बोला सौंझणी लो सौंझणी
औग बोला भौकली गेठे
गेठे बोला नीमू तेली रिए शोहरिए।

लोभी नौह्ठा बोला रूशिया घौरा बे
औछी रै डेहलू बैठे
बैठे बोला नीमू तेली रिए शोहरिए।

बारा बोरषा हुई मिलिए लो मिलिए
पंद्रह बोरषा बोला बिछड़ी
बिछड़ी बोला नीमू तेली रिए शोहरिए।

तोखे भाल़दे भाल़दे नीमूआं
केतरी बोरषा जीणा
जीणा बोला नीमू तेली रिए शोहरिए।

ओच्छी जैई बोला जिंदड़ी जिंदड़ी
केतरी बोरषा जीणा
जीणा बोला नीमू तेली रिए शोहरिए

काले़ बादला़ हेठे
हेठे बोला नीमू तेली रिए शोहरिए।

बांके चिड़ूआ

ज़ाई जान्ति शादै माघै रै महीने
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

गेठे पुजिया निकते पसीने
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

घिऊ खिचड़ू खाणै बै धिनै
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

बौड़ै बौबरू सगै बै धिनै
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

ऊना रै दोहड़ू सोणे बै धिनै
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

चांदी री बुमणी लोहे री पीणा
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

पौट्टू लाणै बोला फूला मरीने
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

तौ नी घाटी बोला काटीदै दीनै
बांके चिड़ू मेरे सुंदरूआ।

काल़ो मेरे भऊंरा

काल़ो मेरे भऊंरा केसो बागे तीया जी।

हार गुंधे मालती रा देऊआ बै नेआ जी
ढूगी भऊंरा कुईड़ी पाणी आटे लोटै जी
रोंदी मते भऊंरिए भऊंरा ऐणा जोते जी
काल़ो म्हारे भऊंरा केसो बागे तीया जी।

हार गुंधे गुलगूदी रा देबी बै नेआ जी
ढूगी भऊंरा कुईड़ी पाणी आटे नदिए जी
रोंदी मते भऊंरिए भऊंरा ऐणा कदी जी
काल़ो म्हारे भऊंरा केसो बागे तीया जी।

हार गुंधे चतेली रा राजे बै नेरेल़े जी
ढूगी भऊंरा कुईड़ी पाणी आटे नरेल़े जी
रोंदी मते भऊंरिए जींदे जीऊए रे मेल़े जी
काल़े म्हारे भऊंरा केसो बागे तीया जी।

दोखुड़िए

दोखुड़िए भंऊरा भराऊजी रा जोड़ा
शौशू आणी शोहरे भी होरा।

सुण मेरी दोखुड़िए
दोखुड़िए सीरा बै सालू बी जोड़ा।

भाभी बी आणी भाईए बी होरा
सुण मेरी दोखुड़िए
चेके बै पोटू बी जोड़ा
दोखुड़िए जौंगा बै पोलडू बी जोड़ा।

नौई पारली पीउंलिए

नौई पारली पीउंलिए एंदी किबै नईंयो
ऐणे बै एंदी भाऊआ गोखडू नईंयो।

नौई पारली पीउंलिए एंदी किबै नईयो
ऐणे बै एंदी भाऊआ कंगणू नईंयो।

ऐणे बै एंदी भाऊआ लंगरी नईंयो
नौईं पारली पीउंलिए एंदी...
ऐणे बै एंदी भाऊआ पोलडू नईंयो।

हेती लाड़िए

1

आपू आई बोला घौरा बै
दाची शोटी बगड़े बोणा
हेती लाड़िए बगड़ै बोणा।

लोभी री आई सोठणी
दुही बोला ओछुए रोणा
गरमी आई जैठा री
आऊ बोला मांऊ रा भाणा।

भाड़ी लागी जाच़ बोला
आसा दुही भी जाणा
भाड़ी लागी जाच़ बोला
दुही दुहरू जाणा।

सदा बै याद लोड़ी रौही
फोटू खिंचिए डाहणा

गिता सा लिखदै आई पराणी
हेतिए लाड़िए बगडै बोणा।

2

आपू आई बोला घोरा बे
दाची बोटि बगड़ै बणा
हेतिए लाड़िए बगड़ै बणा।

झूरी री आई सोठणी
ती बोला बोसले सोणा।

लोभी री आई सोठणी
बोला औछूए रोणा।

गरमी आई जेठा री
आऊ बोला मांउ रा भाणा।

भाड़ी लागी जाच़ बोला
आसा दूई ऐ जाणा।

सदा बे याद लोड़ा
फोटू खिंचिए डाहणा
हेतिए बोला लाड़िए।

3

गाई सूई तेरे पंद्रह
घीऊ धीना वेधे पराणा।

घाटै मुलके जल़मा
खरे होणा खोटे लो रौहणा
हेतिए खोटे लो रैहणा।

जैंदी लिखी होली मोथे न
सौहे परावती गै होणा
हेतिए परावती होणा।

काटिए सैभी झंझटा
सुखै री ती निंदरा सोणा
हेतिए निंदरा सोणा।

4

गाई सूई तेरे पन्द्रा
घीऊ दैणा बेगे परौणा।
हेतिए बेगे परौणा, हेरे हेतिए बेगे परौणा।
घाटे मुलखे जल्मा, खरे हौणा खोटे लो रोहणा।
काटिए सभी झंझटा, सुख री ती निंदरा सौणा।
खोटे बी होले कर्मा, पाप भी लो सामणे रोहणा
कमदी मुकणा हाबड़ा, कदी हौणा ध्याड़ा नछौणा
आपू आई तू घौरा बे, दाची शैटी बौगड़े बौणा।

हीरू लाड़िए

बीरू प्रधानै री लो हीरू लाड़िए
जिंदी ता जानिए लो मौऊज़ा मारिए।

याद ता लागी ऐंदी बार बारिए
दुनिआ धीनी ती तौभे सारिए
बीरू प्रधानै री लो हीरू लाड़िए।

आसै गोए उआरिए तूसै पारिए
चीतरा चादरू शेती धारिए
बीरू प्रधानै री लो हीरू लाड़िए।

छाती न लागी बोला धड़ धड़िए
बीरू प्रधानै री लो हीरू लाड़िए।

लाड़िए बिमला

आइयै लाड़िए बोला बिमला
तेरे सी नखरे ठारा ओ।

पौटड़ू पंधै पाई प्रश्ना
झूरी सा मेरी कि तेरी ओ
आइयै लाड़िए बोला बिमला।

लूणा खाऊ पिपला चोकण
आंज़ा ता पौटा बै कारा ओ
आइयै लाड़िए बोला बिमला।

लोभी लाड़िए

लोभी लाड़िए मौजनूए
तेरी ज़ानी रा लोभी
खाणे रा पीणे रा नी ती लालची
तेरी जानी रा लोभी
लोभी लाड़िए मौजनूए
तेरी जानी रा लोभी।

फूल ता फूलू बोला फूलणू
डाली़ फूलली गोभी
गोभी लाड़िए मौजनूए
डाली़ फूलली गोभी
बोहू भाई रा झगड़ा
भेतू नी केरला पंची
नौंऊची बोला लो झूरिए
हाडा हाडा न रंची।

फूल ता फूलू बोला फूलणू
डाली़ फूलला कूज़ा
पापी गोऊए बोला दीलड़ू
नई साधिदा दूजा।

फूल ता फूलू बोला फूलणू
डाली़ फूलली कूरी
जौंगा सभी बै बूटकू
दिला रूचदी झूरी
लोका दूई बालो बोलणे
मिली रोहणा दूई।

फूल ता फूलू बोलाा फूलणू
डाली़ फूलला कूला
आसा जाणा दूरा देशाबे
नई बुझणा बूरा।

फूला लाड़िए

बंद पी बोतला बांगलू आंदरै
फूला पाड़िए बांगलू आंदरै।

आलू खाए शाइले
छौली खाई बांदरै
फूला लाड़िए बांगलू आंदरे।

घूमदी नौह्ठी बोला
जीपा आंदरै
फूला लाड़िए...।

जीप बोला पौई तेरी
झीड़ी जौंदरै
फूला लाडिए...।

गप्पा मारी बेशिया
कमरे आंदरै
फूला लाड़िए।

लाश तेरी पोई बोला
कौण्डे जौंदरै
फूला लाड़िए...।

ढालू लाड़िए

सैंइजा नाल़ै आई उषा मशीना
ढालू लाड़िए उषा मशीना।

साटना रा सूट सिहणै बै धीना
ढालू लाड़िए सिहणै बै धीना।

दाड़ू री चटणी पाणा पदीना
ढालू लाड़िए पाणा पदीना।

रोई रोई केरू साथरू सीना
ढालू लाड़िए साथरू सीना।

हार नी गुंधुआ ढोलरू धीनी
ढालू लाड़िए ढोलरू धीना।

सरजू बाण्ढीए

सरजू बाण्ढीए बोला बाण्ढीए
मतै बलागदी शाढ़ा म्हीने रै नेगी।

बाल्हे री कणक बोला कणक
मूछी मूछीए लेगी
सरजू बाण्ढीए बोला बाण्ढीए।

चाऊलू चिफले बोला चिफले
लोभी गोउ जाति रा काल़ा।

आपू गोई बोला शोभली हेरे शोभली
लोभी गोउ हेरणा काल़ा।

आपू गोई बोला बुढल़ी हेरे बुढल़ी
शाह गोउ बाल़े रा बाल़ा।

म्हारे राजैया शांगरी आल़ैया

राजा शांगरी पर गीत

शाह नौठा मनाल़ी हेरे
हाड़ आणू आनी रै नाल़ा
आईंए बोला म्हारै राजैया शांगरी आल़ैया।

बून्है पोई तेरी आनी हेरे
उझै खड़ी बोला धारा
शांगरी आल़ैया...
उझै बोला खड़ी धारा।

कैण्डा हुआ तेरा मौरणा
शूना केरू नगरू सारा
हेरे बोला म्हारे राजैया।

राणी लागी तेरी बोलदी
कदी नई ती बोलदा माड़ा
शांगरी आल़ैया...
कदी नई ती बोला माड़ा।

लाहुल़ी राणी

हिउंआ रै जोतड़ू हेठै बोला लाहुल़ी राणिए
हिउंआ रै जोतड़ू हेठै ओ।

आपू ता नौह्ठा बोला खेपा बै लो ठाकरा
झूरी डाहि जोतड़ू हेठै लाहुल़ी राणिए।

तंदी बोला निहाल़दे भाल़दे ठाकरा
औछी रै डेहलू बेठै।

हेरदी बेशै बोला भाल़दी राणिए
फिरी ऐणा आगलै जेठे लो लाहुलि़ए राणिए।

कारदारा लच्छीरामा

म्हारे कारदारा लच्छीरामा
छोती उठिया देऊआ रै कौमा
म्हारै बोला।

आपू ता छोटका
शोठा लामा
म्हारे बोला कारदारा।

ढीला ती कुरता
पीड़ा पज़ामा
म्हारे कारदारा।

देऊआ रा कारज लाई जाणा
म्हारे लो कारदारा।

तेजू नाटी रा शौऊंकी

तेजु सा बोला नाटी रा शौऊंकी
नईं बोला मौरूआ लोड़ी।

लाल चादरू ओढ़ी
तेजुआ नई मौरूआ लोड़ी
सेऊ लंघु सैंईजा तेजुआ
जोत लंघी जलोड़ी।

नाका पैंधला डै हाड़कू तेजुआ
टुंडू बोला पंधली शलौड़ी
तेजुआ...

तेजु हुआ बोला मौरणा मौरणा
ऐबैं नईं डै झुरला कोई
तेजुआ...।

ध्याड़ बोला काटी हौंडी फिरिया
राता बोला काटणी रोई
तेजुआ...।

गारडा केहरसिंगा

कुछ गीत जीप के पहुंचने, बंदोबस्त तथा बिजली आने पर भी बने।

म्हारे गारडा केहरसिंगा
सैंइज़ा लो जीपा पजाई
किसन सिंगे धीनी ओकती
संघे हांडदी लाई
लाई बोला म्हारै गारडा केहरसिंगा।

डेरा लो बोला भलाण हेरे
पाणी लो तेगड़ी बाईं
म्हारै गारडा केहरसिंगा
पाणी लो तेगड़ी बाईं।

किह नी लोड़ी हौथ ढोकी
किह लोड़ी पूंगै पजाई
म्हारै गारडा केहरसिंगा
किह लोड़ी पूंगै पजाई।

गुमतरामा पटवारिया

गुमतरामा पटवारिया
बंदोबस्त लाणा हो।

लाठा आणी शांगली़
आसा नापणी बागा।

एक झूरी बोला तेरी शांघड़
छूजी पोरे सराजा हो
गुमतरामा पटवारिया
बंदोबस्त लाणा हो।

बुढलू मामा भगतूआ

बुढलू मामा भगतूआ
लारजी उझै निहारा।

जगा जगा आई बिजली तारा
लारजी उझै निहारा।

बुढलू मामा भगतूआ
लारजी उझै निहारा।

वेदरामा ठाकरा

सरला चंबयाल द्वारा लिखा गया यह गीत भुंतर स्थित 'भुट्टी वीवरज सहकारी सभा' पर है जहां कुल्लू शाल के उत्पादन की मुहिम वेदराम ठाकुर द्वारा चलाई गई।

वेदरामै ठाकरै शाल बणाई लोई
वेदरामै ठाकरै शाल बणाई लोई।

तेरी यादी न पौटू बणाए हिंकी हिंकी रोए
वेदरामै...।

आपू कौतिए आपू बुणणा होर नी बुणदा कोई
वेदरामै...।

ध्याड़ी जाण पौटू बूणदे राति बै रौहणा सोई
वेदरामै ठाकरै शाल लाई बणाई लोई।

इंदिरा गांधी री यादी न

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या पर बना गीत

पौहरेदारे केरू हमला
गोली छाती न लाई।

लाई बजीरा इंदिरा
गोली छाती न लाई
एक छूटा तेरा बेटा राजीव
दूजै मारता रै भाई।

भाई बजीरा इंदिरा
दूजै मारता रै भाई।

ऐ बैरी निकते आपणे
छाती री छानणी बणाई
ऐ बणाई इंदिरा
ऐ छाती री छानणी बणाई।

नौखा हुआ तेरा मौरणा
त्राई सेना आई।

ऐ कैण्डा हुआ तेरा मौरणा
सारी दुनिया रूआई।

देशा री तैंईए बोला इन्दिरा
गोली छाती न खाई।

बेटड़ी बै धीनी जादी तैं
सारी बेटड़ी रूआई।

पौहरेदारे केरू हमला
गोली छाती न लाई।

विजय दसमी (दशहरा) का गीत

विजय दसमी अर्थात् दशहरे का मेला आ रहा है। मेले से पहले फसल के सभी काम पूरे कर लो। छल्ली छप्पर पर डालकर सुखा लो, धान काट लो, घास काट लो। चितकबरा पट्टू बनवा लो। बहन नीमूंए! तभी मेले का मजा आएगा।

छौली चौड़े जैड़े जैड़े ओच्छी भाऊए नीमूंए
लाल बोला छापर बड़ाणा हो।
धान लूणै लैरे लैरे औच्छी भाऊए नीमूंए

घीऊ बोला खिचड़ू खाणा हो।
ऊन कौते शेरै शेरै ओच्छी भाऊए नीमूंए
चादरू बोला चितरा बड़ाणा हो।
गाह लूणै जैरे जैरे ओच्छी भाऊए नीमूंए
विदा बोला दसमी जाणा हो।

बिदा दसमी जाणा

इस गीत में बहन से आग्रह किया जा रहा है कि मैं भी सिर में ढाठू लगाकर मेले में जाऊंगी।

बिदा दसमी लाणी मेरी लाल लूंगिए
मूंमी दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।
मेरे शिरा बै ढाठू देओ सरला
मुंमी दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।
घौणा ज़ाचड़ू पाणा मेरी लाल लूंगिए
बिदा दसमी जाणा मेरी लाल लूंगिए।

इसी तरह की शब्दावली में एक नाटी गीत भी गाया जाता है–

लाल चिड़िए ओ लाल चिड़िए, मूंबी जाचा जो जाणा
मेरी लाल चिड़िए।
मेरे सिरा जो ढाठू दे ओ सरला!
मूंबी जाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए।
मेरे पैरा जो मोवडू दे ओ बिमलो!
मूंबी नाचा जो जाणा मेरी लाल चिड़िए।

उपदेशात्मक गीत

समय के बदलाव के साथ नई रीत को निभाने के लिए अब कुछ उपदेशात्मक गीत भी बने हैं। इनमें कम संतान, बेटी की महत्ता तथा शराबबंदी से संबंधित गीत हैं।

1

जागै कुल्लू रै मरद बेटड़ी
देशा सुआदें लागै।
आगै किला मरद गाजियों

मौता रौहंदे पीछे
एई देशा रै बेटे सी आसे
देश बढ़ाणा आगे।

2

एक दूई लोड़ी आपणे शोहरू
थोड़ै शोहरू बांके हो।
खाणै री बिपदा, लाणै री बिपदा
थोड़ै शोहरू बांके हो।
पढ़ाए लिखाए लोड़ी आपणै शोहरू
थोड़ै शोहरू बांके हो।

3

नई पीणी लूगड़ी, नई पीणा शराबा
बचाई डाहणे ढबूए, नई खोणा नाज़ा।
नई पीणी लूगड़ी, नई पीणा शराबा
हौसदे खेलदे, नौचणा आसा
सभी संघै हेरी, ढूणना आसा।

ऋतु गीत

प्रदेश के अन्य भागों की तरह यहां भी कुछ ऋतु गीत प्रचलित हैं। ऋतुओं का प्रभाव जनमानस पर पड़ता ही है अतः हर ऋतु के अनुरूप कोई न कोई गीत गाया जाता है। उझी यानी ऊपरी कुल्लू में पहली बार बर्फ पड़ने पर इसके स्वागत में यह गीत गाया जाता है–

हीऊं लागा झीऊंरा बोला झीऊंरा
चौल उझी बै जाणा।
जान्हू झरड़दी झिकड़ू
झेचीमामी रा बाणा
चौल उझी बै जाणा।
ऊथड़े जोत जाया बोला
आसा हीऊं ठण्डा ती खाणा।

घाह्ले गीत

यह गीत वर्षा ऋतु में घास काटते हुए गाया जाता है–

चौले गाह् बै जाणा रूपदासिए
लुप लुपांदी दाच़ी।

चैके ओरै बौन्ह रौशी रूपदासिए
लुप लंपादी दाच़ी।

गाशै री सीमा सीमा न रूप रूपदासिए
चौले गाह् बै जाणा।

होली गीत

कुल्लू शहर में अवध की भांति होली मनाई जाती है। सत्रहवीं शताब्दी में कुल्लू के राजा के वैष्णव होने से होली जैसे त्योहार अवध की रीत पर मनाए जाने लगे। यह केवल कुल्लू शहर तक ही सीमित है।

सखी री कोई मोड़ लियाओ
वन को चले दोउ भाई...सखी री...।

आगे आगे राम चलत है
पीछे लछमन भाई
उनके पीछे सियाजी चलत है
राजा जनक की जाई
सखी री कोई मोड़ लियाओ
वन को चले दोउ भाई।

इस गीत का कुल्लूवी रूपांतर भी गाया जाता है–

बौणा बै चौले भाई मौरे रामा
बौणा बै चौले भाई ओ।
आगै आगै रामजी चौले
तिन्हां पीछे सीआ जी चौली
राजा जनक की जाई।
तिन्हां पीछे लछमण चौले
चौले दोनो भाई ओ।

राम के वनवास के बारे में एक गीत जो हिमाचल के अन्य भागों में भी प्रचलित है, यहां भी अपने ढंग से गाया जाता है–

राज हौंदे हुआ बनवासा
रामा मेरे जोगुणआ।
तो घाटी अजुधिया सा सूनी
रामा मेरे जोगणुआ।
तो घाटी आसा किन्हा जीणा
राम मेरे जोगणुआ।

राम रावण युद्ध

राम रावण लौड़िदै लागै, रावण पाऊ लौम्मा
संघै चौलौ सीआ राणिए, संघै चौले रामा
लंका रा सेऊ बणदा, बांदर लाये कौमा
संघै चौले सीआजी ए, संघै चौले रामा
लंका फूकदा बांदर भेजू, लिंगटा केरू लौमा।

बारामासा

कुल्लू शहर में गाया जाने वाला बारामासा होली गायन की भांति अवध के रंग लिए हुए है। इसमें बीच–बीच में कुल्लूई का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

चैत मास जब लागी रे सजनी
निकसे कुंवर कन्हैया।
पांव धरे वृजवन बैशी
घर आंगन नहीं सनैईया।

बैशाख मास जब लागी रे सजनी
धूपै दौइरे झमाके।
एऊ धूपै मेरी पैर जलाओ
जलां दी मछली तलपी।

जेठ मास जब लागी रे सजनी
चौऊ दिशै पौंण चकोरी।
आग लागी नित वासु सन की
आंगे आंगे कर डोरी।

आषाढ़ मास जब लागी रे सजनी
चौऊ दिशै बादल छाए।
मोर बोला पापीहर पापी
दादूर शब्द सुनाए।

शौण मास जब लागी रे सजनी
रिमक झिमक मेघ बरशो।
भरनेणा कोई आणै न देऊ
हम्मा रा जीऊ तलपे तलपे।

भाद्र मास जब लागी रे सजनी
चौऊ दिशै नदिया बाड़ी।
मोर बोला पपीहर पापी
अन्न धन गठरी डारी।

शौज मास जब लागी रे सजनी
नैना तुम्हारे बाड़े।
भरनेणा कोई आणै न देऊ
यशोदा लाल तुम्हारे।

काति मास जब लागी रे सजनी
हाणै कै पापा कीन्है।
मूकी नार के नास कीन्है
के सुख कुवजै दीन्हैं।

मसीर मास जब लागी रे सजनी
चल वृंदावन में हंसीये
के हास्सी नंदलाल जी
के जबना जल दसीयै।

पोस मास जब आए रे सजनी
मलीडूया और नै उड़ै
तलप तलप बहु डूगरी
प्रेत प्रेम से वोंद न छोड़ूं।

माघ मास जब आए रे सजनी
वृंदावन की कुजी

इन्हां कुजी को अरप दरप नहीं
सिर पर नोंम लूंजी।

फागुन मास पराड़ा महीनो
सब खेला वृजोवने होड़ी
जगरनाथ की बारह माही
चिंत लाई सुने रे सनैईया।

कुल्लू में विवाह गीत

कुल्लू शहर व इसके आसपास विवाह गीत गाए जाते हैं किंतु इन पर कांगड़ा का प्रभाव है या यू कहें ये कांगड़ा से ही आए हैं क्योंकि कुल्लू शहर व इसके आसपास बहुत से लोग कांगड़ा से आकर बसे हैं हालांकि आज वे यहां की संस्कृति में इतने घुल-मिल गए हैं कि पहचान करना आसान नहीं है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

किसी भी शुभ कारज के समय विधान की बात की पुष्टि इस तरह की गई है–

गंगा जवना पारे शादिआ
आण कपला धेनु औ
गौंत्र गोबरा बिन कारज शुद्ध न होए
शाधिया आणा एक पठुआ पंडत
इन्हां बिना कारज शुद्ध न हो
पीपला रा बूटड़ू, हरिए द्रुब, हरे फूलै
इन्हां बिना कारज शुद्ध न हो।

वर-वधू को स्नान से पूर्व सिर में तेल लगाया जाता है। सभी रिश्ते-नाते कटोरी में दूर्वा से तेल डालते हैं। दूल्हे या दुल्हन के शरीर में उबटन मला जाता है।

रलिए मलिए महल चंगाया
कि बोटण रल रहैया।
बोटण लांदी लाड़ी दी बोवा
कि बोटण रल रहैया।
कंचन भरी के सर भरी कटोरी
कि बोटण रल रहैया।

इस तरह सभी रिश्तेदारों को संबोधित कर तेल भी डाला जाता है।

सुनैरी कटोरणिए
पर तेला जो, पर तेला जो
पहला संजोया तेरे
बापू ने बापू
तेल पुआंदिए
लंबी तेरी बेल बो।

स्नान गीत

कौन तीरथ नहाए, कौन फल पाए
बद्रीनाथ नहाए, अच्छा फल पाए
चार धाम नहाए शुभ फल पाए
सूरजकुण्ड नहाए पुण्य फल पाए।

लगन के लिए कन्या को घर से बाहर आने का आमंत्रण–

बाहरे निकले श्याम सुंदरी
श्रीकृष्ण लगना बै आए जी
किन्हिए तेरा लगन गिणैया
किन्हिए लिखी तेरी जोड़ियां
ब्रह्मा विष्णु लगन गिणेया।
विधिमाता लिखी जोड़ियां।

मामा द्वारा कन्यादान के लिए सुहाग पानी लाने का गीत–

सांकली रे गंगा पिंऊंळी रे गंगा
ए राम तेरे नाम लिंदे होंदे पाप सूने
बिना पुष्य फल किन्हें पाईए
मामे बिना पुण्य फल पाईए।

शंख में पानी डाल कन्यादान का गीत–

दे दे आमा जी शंख भरे दान दे
औज़ के धरमा ब्रह्मपुरी बासा जे
दे दे आमा जी कन्या दान दे
हो गई औज़ गौत्र न पारे जे।

विदाई गीत

खुशी खुशी कर दो विदा
तम्हारी बेटी राज करे
महलों रा राजा मिला
तम्हारी बेटी राज करे।

वधू प्रवेश गीत

किनीए लंका तोड़ी किनीए सीआ घर ले आए
हनुमान लंका तो रामचंद्र सीआ घर ले आए
आगै आगै सीता माई पीछे लछमण दोनों भाई।

इसी तरह जन्म और यज्ञोपवीत संस्कार के गीत भी गाए जाते हैं।

हरिद्वार झूलैया घने सांकली चिड़िए
तेरा बालक झूलै पालणे
घने सांऊली चिड़िए
तेरा बालक झूलै पालणे।

किजा रा तेरा पालणा
किजी रै लागलै डौरे
सूनै रा तेरा पालणा
रेश्मै रै लागलै डोरे
घने सांऊली चिड़िए।
तेरा बालक झेलै पालणा।

यज्ञोपवीत के अवसर पर देवताओं को निमंत्रण–

सुरगै अष्ट करोड़ी देवते
पाताला बासुकी नागै री रानी
तिन्हां बै न्यूता म्हारा
तिन्हां बै न्यूता म्हारा।

यज्ञोपवीत या जनेऊ के समय भिक्षा मांगते समय गीत–

किज़ीरी तेरी मुद्रा जोगिया, किज़ीरी तेरी झोली़
पट्ट वस्त्र की मुद्रा जोगिया, रेशमे री तेरी झोली

किधर दिशा न आऊ जोगिया, कूणी दिशा बे चौलू
पूरब दिशा न आऊ जोगिया, पछम दिशाबै चौलू।

गुरु मंत्र के समय का गीत–

दे दे *गुरूजी गुरू ग्याना*
दे दे *भाईजी अलख भिख्या*
आज के धरम गंगा स्नाना
दे दे *आमा जी यज्ञोपवीता*
आज के दिन धरम ब्रह्मापुरी बासा।

कुल्लू का क्षेत्र कुल्लू व मनाली के अतिरिक्त मुख्य दो भागों में विभक्त है–एक भीतरी सिराज और दूसरा बाहरी सिराज। भीतरी सिराज में बंजार का क्षेत्र आता है जहां जलोड़ी जोत से होकर बाहरी सिराज के आनी में पहुंचते हैं। आनी से ऊपर पंद्रह–बीस तक पहाड़ी क्षेत्र शिमला के रामपुर के ठीक सामने है। यहां दलाश, निरमंड जैसे बड़े गांव हैं और ऊपर श्रीखंड का शिखर है। यहां की संस्कृति रामपुर से मिलती है। मुख्य कुल्लू से यह भाग साल कटा रहता है और सर्दियों में जलोड़ी जोत के बंद हो जाने से शिमला होकर ही रास्ता रह जाता है। यहां की बोली में कुल्लू से भिन्नता पाई जाती है। प्रस्तुत हैं इस ओर के कुछ विवाह गीत।

कुछ और विवाह गीत (शुभ मूहर्त का निकलना)

मशीरैं नैं रांची गो शांकरा
मशीरै पड़ा पायो
पोशा नैं रांची शांकरा
पोशै हुआ शैई लाड़ो
माघे नैं रांची शांकरा
माघैं करिए स्नाना

फागुणैं नैं रांची शांकरा
फागुणैं होइये होलिका
चैत्रैं नैं रांची शांकरा
चैत्रैं फूलिया बणासों

बशैह नैं रांची शांकरा
बशैह फूलिया जुई
जेठे नैं रांची शांकरा
जेठे फूलिया कुई

शड़ै नैं रांची शांकरा
शाडै तपी लाड़ो होये
शौणे नैं रांची शांकरा
शौणे वर्षदै मेऊ

भद्रा नैं रांची शांकरा
भद्रा मड़ी अमावसां होये
शौजे नैं रांची हो शांकरा
शौजे फूलिया पकाहा
काति रांचैं शांकरा
काति करिये विवाह।

शिव रूप में वर की शोभा

कहो पतियो! सुणो सखियो!
दुल्है देखदे जाणो
दुल्हो जैं देखदे चालो रे सखियो
अन्ता किन्हीयै नैं पाईया।

सज्जणा सुहेवली सब मग्ना
दुल्हा दिगम्बरा आओ
सिरै जटा धारी
जटा जै धारणै सिसा चमके
मुक्टै गंगा बहाऊया
त्रय शौत्तीशे कुई देवा जुलै आये
शम्भु ज्योति स्वरूप धारिया।

नीमा जै धर्मा कीछ कोई नैं जाणदे
स्रवण मुद्रा जलाया
फेरा दी नाद बजाईयो

इन्द्रा चौंर ढलाओ रे शम्भु
नारी मांगलू गाईया
कहो पतियो! सुणो सखियो
दुल्है देखदै जाणो
दुल्है जै देखदे चालो रे
अन्ता किन्हीयै नैं पाईया।

सज्जणा सुहेवली सब मग्ना
दुल्हा दिगम्बरा आओ
बैले वाहनै आओ
सिरै जटा धारी
जटा जै धारणै सिसा चमकौ
मुकटै गंगा बाहाऊया

त्रय शौत्तीसै कुई देवा जुलै आयै
शम्भु ज्योति स्वरूप धारिया
नीमा जै धर्मा कीछ कोई नैं जाणदे
सरवण मुद्रा जलाया।

शिव बारात का वर्णन

सास कहती है–

पारा औउ आओ
ताता! राऊडे जनेत
ऐऊ भस्म पोकी लै बेटी नैं देऊ।

वर कहता है–

डैणे डनेलड़ी मुंबी नैं बिआऊ
करे करे ईश्वरा आपणो रूप
पैर लाओ पेइयै ताडै
करे करे ईश्वरा आपणो रूप।

सास कहती है–

तु लै देऊ अरगा
तु लै वशैंदरो धूप

तु नैं बोली डैण
मु नैं बोलू राऊड़ा
करे करे ईश्वरा आपणो रूप।
करे करे ईश्वरा आपणो रूप
मु नैं बोलू राऊड़ा
करे करे ईश्वरा आपणो रूप।
नैं बोलु ऐबे भस्मा पोकी
तु नैं बोली डैणा डनेल
करे करे ईश्वरा आपणो रूप।

बटणा

बोटणा संजोया
दादु दादियैं फनैऊई आओ।
बोटणा संजोया...।

किन्हियै फनैऊई आओ
बोटणा संजोया।
बाबुयै माईयै संजोइया
बोटणा संजोया...।

किन्हियै फनैऊई आओ
बोटणा संजोया...।
भाभियै बीरणा संजोइया
बोटणा संजोया।

वर-वधू स्नान

डूलो डूलो गौरियो...पाणी तपाऊयो
विष्णु नरायणा करियो स्नाना
बाड़ो नरायणा करियो स्नाना।
आणे मेरे दादुआ गंगा तीरो पाणी
बाड़ो नरायणा करयो स्नाना।
बाबू बोला माईयैं
आणे गंगा तीरो पाणी

बाडो नरायाणा करयो स्नाना।
डूलो डूला गौरियां...पाणी तपाऊयो।

बारात आगमन

बाहरी ता निकड़े
बाड़ी धिए कनिया...
बाहरी आओ
सुंदरा स्वामिया...।

मैं किंहा निकड़ू कुलजा पुरोहिता
मैं हौंदी दादुए प्यारी
बाहरी ता निकड़े...।

मैं किन्हा निकड़ू कुलजा पुरोहिता
मैं हौंदी बाबुए प्यारी
बाहरी ता निकड़े...।

मैं किन्हा निकड़ू कुलजा पुरोहिता
मैं हौंदी भाभी बीरणे प्यारी
बाहरी ता निकड़ै...।

कन्यादान

आज की घैड़ी बाबुआ अकी...
मुलै आणो आंगणै दाणा।

होरे जै दाणा बाबुआ सब गेयो आई
आओ नैं चोड़ू कायडैयो दाणा
मूं हौंदी बाबुआ कर्मा री अरी
भाई हौंदां कर्मा रा पूरा
बागै बागीचै मूलैं मैड़ दो
मुलै मैड़ा बांडिया भागा
होर जे दाना बाबुआ सब गेओ आई
आओ नै बाई मैं हीओ दाणा
सुनैं चांदी ओ दाणा।

दशा जै महीनै उदरैं लैई
छया महीनै बाबुआ गोदियै खेलै ऊई
आज के अकी दीनी
मुलै आणे आंगणै दाणा।

फेरे

लाऊई दीनी पहल की
नारी मांगड़ू गाईया
गोपी गोकुल कान्ह वाड़ो
कृष्ण बिहाऊणै आईया।

लाऊई दुजी नारी मांगड़ू गाईया
गोपी गोकुल कान्ह बाड़ो।

लाऊई दीनी नारी मांगड़ू गाईया
गोपी गोकुल कान्ह वाड़ो।

लाऊई दीनी चौथी नारी मांगड़ू गाईया
गोपी गोकुल कान्ह वाड़ो।

लाऊली दीनो छेमी नारी मांगड़ू गाईया
गोपी गोकुल कान्ह वाड़ो।

लाऊई दीनी सात्तवीं नारी मांगड़ू गाईया
गोपी गोकुल कान्ह वाड़ो
कृष्ण बिहाऊणे आया।

राम विवाह

1

एको विनतीया
सुणा रे सिरी रामै
एको विनती हमारी
कुणी बेटियै चौऊको दीनों
कुणी धनुषा सम्भाड़ो।

आपी बाबुआ चौऊका दीनो
आपी धनुषा सम्भालो
अैया कनिया देऊ...।

तेऊ लै जुण मेरा धनुषा सम्भालै
आयी गेये विसवामित्र मुनि...
रामचन्द्र राजो सिया बिहांदुए आओ
कर्मा लियै करतारे
जर्मा लियै मां बायै।

समुंदरा लांगिया सभी दानु आओ
नगरी नगरी लोग
विवाहो स्वामी सती सिया
सिरी रामै एको विनतिया।

कुणी बेटियै चौऊको दीनो
कुणी धनुषा सम्भाड़ो।

2

अधपूरी नगरी आयै दशरथ राजै
रामै विवाहऊयै सिया कुंआरी।

कृष्णै विवाहऊई रूकमणी
अत्री ऋषि विवाहऊई अनसूया।

चौड़ी आओ घोड़ुयै राम कुंआरो
ईन्द्रै रांचीए दृष्टा प्रमाणा
ब्राह्मणा वेदो पढ़ाओ
होर जै नारी मांगड़ू गायै
सबद ताल बजायै।

हास्सी हास्सी बोला कशौल्या माई
नौ लाखा दीआ बड़ाऊयै।

नंद लाल दसरथे पावै पड़ै
हाथुल जोड़ी हुअै खड़ै

अधपूरी नगरी आयै दसरथ राजै
रामै विवाहऊयै सिया कुंआरी...।

ईन्द्रै रांचीए दृष्टा प्रमाणा
ब्राह्मणा वेदो पढ़ाओ...
होर जै नारी मांगड़ू गायै
सबद ताल बजायै।

लामण

लामण कुल्लू का एक सशक्त लोककाव्य है। हृदयग्राही भावों के साथ इसमें उत्कृष्ट काव्य के दर्शन होते हैं। यह काव्य प्रश्न और उत्तर के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। नायिका प्रश्न पूछती है तो नायक उत्तर देता है। यह अरण्य गायिका का एक अद्‌भुत रूप है जिसमें युवक तथा युवतियां लंबी तान में गाते हैं ताकि एक शिखर से आवाज दूसरे शिखर तक पहुंच सके। दोहा, चतुष्पद और छंदों के प्रयोग से एक लयात्मक और गीतात्मक काव्य बन जाता है। प्रकृति से प्रतीक और बिंब विधान लेने से यह और भी मारक हो जाता है। नायक अथवा नायिका की प्रशंसा, संयोग, वियोग सभी का चित्रण इस गायिका में मिलता है। यह काव्य मूलतः कुल्लू और इससे लगते क्षेत्रों में प्रचलित है। कुल्लू से लोक साहित्य के विद्वान् श्री एम. आर. ठाकुर ने इस काव्य पर एक पूरी पुस्तक 'ठंडे पाणी रे डिबणू' शीर्षक से लिखी है। इस काव्य की अन्य विशेषता यह भी है कि इसका सृजन निरंतर होता रहता है। जैसे नए-नए लोकगीत बनते हैं, वैसे ही अज्ञात गीतकार इस काव्य में भी नित नए प्रयोग करते रहते हैं जिससे इसमें विस्तार होता रहता है और नए-नए प्रयोग देखने को मिलते हैं। यहां इस अद्‌भुत काव्य के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं–

शीली बोलो घासणिए, तांदी फूको आगो।
बिना भावरा भावटा, जिशा अलणे कोदू रा शागो।

सापो रे मुंडकी पोरू देए ले काटी।
हाऊं बोणू दीउटू, तू बोणी दीए री बाती।

खाई दपौहरी खाऊ औधला सीड़ू।
झूरी सा बाल्हारी घुगती, लोभी जोता रा चीड़ू।

फूल फुलू डोलरा, बोणा न भूंबले पौके।
लोभी चाकरू लौड़फड़ा हुआ झूरी चाकरी कौखे।

मास नी रौहू पिंडा न हेरिदा, हाड़कू हेरिदे रौहे।
पिंडा रा बौणू चांलू जेंडा पौटू लेमकू लौहे।

छाह्टी छोल़दे चूटी जेरी शेलो री डोरी।
दिनड़ू गिणदे घौशी गूठी री पोरी।

थाले पछियाई मांदरी, ऊझे पछियाई सेली।
याद लागी एंदी लोभीरी, निंदर कीझीबे एली।

जूटी शौली रा चिह्टू, भौकदा भौकदा हीठा।
संग थी बोन्हू उमर भौरी बे, धाउड़ी बौता न रहीठा।

चतुष्पद

जौऊ पौके पिउंल़े, हौरे गेहूं री सेरी।
तेरे दोहे–लामणे, मोंझा बौता भलेरी।

भेटी फूली कूसमी, बेऊड़ी फूली जूही।
दसा देई बोलणे, मिली रौहणा दूही।

फूली कौरो फूलटू, डाल़ी फुललो शांछी।
तौ बिना एरा फिरो, जेरा घायलो पंछी।

गाड़ बौहे गाड़िए, ढोंके न आंदी कूला।
बाड़ी शूकी जिंदड़ी, हौरे तंबाकू फूला।

हौल़ा बाया हाल़ीए, कुजिया रोए लाखा।
ईशा फिरा ओड़दा, जिशा पाणिए पांखा।

दोहा

मोंझ मदरशा फेर फिरदी शाढ़े री बूटी।
जेबे शुणे तेरे दोहे-लामण, हौथा री कलमा छूटी।

सौहा नौच़ले देउआ रे देउलू, बोणा नौचल़े गूणी।
मूं सी लाणे दोहे-बाह्मणू, कोनड़ू लाया शूणी।

शोझा निकती बादल़ी, भूइण निकता तारा।
सूरजा बिछड़ी चंदर, संग बिछड़ू म्हारा।

फूली कोरला फुलटू, डाली फुलला कुजा।
हिये भीतरी मूरतो, होर नी सुझजा दूजा।

बिजिए मेरी गोणिए, जगमग दिशो तारे।
हामे न बोलो बिछड़े, बिछड़े करम म्हारे।

प्रणय

बिंदरा बोणा न भूजी खोड़ा रा बूटा।
आमा बापू ताईं पिहर पेउका भाई रा सौउदा झूठा।

चूटी रा किरडू, दूर बाई रा पाणी।
आमा बापू रे फाह्ड़ा न लोड़ी मौत, भाई लोड़ी चौकदा जमाणी।

उथड़ी कोठी न फेर फिरदे खिड़कू लागे।
बेटा न्हौठा दूरा री नौकरी, दाह लागी कौकड़ी आगे।

बेढ़े हेठे जाइरू, बेढ़े धामे मजूरी।
आमा बापू री मोहमा, भाई भियारू री झूरी।

साजा लागा शौइरी, जाच् लागली खौल़ा।
आमा बापू रे चरण बंदने, भाई रे मिलणा गौल़ा।

साजा निभू थी माघा रा, छेके सा शौइरी आई।
आमा बापू हुए जुंखडू जुंखडू, हाऊं सा मिलदी आई।

हौथ कजौशला हुआ माण्हू रा, बौल दे पेऊकी देऊआ।
भाई भरयारू रा झूरी लोभ, आमा बापू री सेऊआ।

यार मितर खाणे पीणे रे लालची, गर्ज हांडदे नाती।
आमा बापू लोभा शोभाबे, भाई दुखा सुखा बे साथी।

संयोग

गेहूं गौगरे, पीऊंल़े जौऊरी काशी।
चंद्रा सेंही नजरी तेरी, सूरजा सेंही पियाशी।

फूल फुलू फूलणू झूरिए, भौर फूलला पाल़ा।
ज्हारा ज्हारा रे हौंखड़ू तेरे लाखे री दोंदे री माल़ा।

मखमला रे थिपू रा भलका, लोभे देई जुटू रे फेरे।
किहां भलेरने झूरिए मूं ता लाल गलोटड़ तेरे।

गेहूं जोंदरे ऊबण जौऊ जोंदरे सौरी।
लोभी गलाबा रा डोल्ह्रा, झूरी सा बोदी री तौरी।

खाई दपौहरी खाऊ औधला सीडू।
झूरी सा बोला बाल्हा री चाकरी लोभी जोता रा चीड़ू।

बून्हे बोलणा सोमसी ऊझे खड़ा जमोटा।
होरी री झूरी पीऊंल़ी-झरऊंल़ी, मेरा मांजुआ लोटा।

उथड़ी धारा न केलू रे बूटड़ू घौणे।
जौझा झूरी ताईं फड़ाहुए, सके लोड़ी दुहरू बोणे।

वियोग

बीझे सौरगा बादल निकता हौरा।
आपू न्हौठा फरंगी री नौकरी झूरी डाही जौल़दी घौरा।

फूल निभू फूलिया, भौर फूलला जौरा।
लोभी न्हौठा दूर नौकरी, दुखा रा कोटड़ू घौरा।

नीलीए चीड़िए, कोल्ह बुणू पाणी रे छोभे।
लोभी न्हौठा दूरा पारा बे कुणी रे रौहली लोभे।

भेलया माण्हुआ, भलेया जुआना।
राती नी पौड़दी निंद्र, दिहाड़ी नी रूचदा खाणा।

हेठे धीरे शहरा, ऊझे भेखली धारा।
लोभी चौलू दूरा पारा बे, गौल लागा भौरिदा म्हारा।

जोता राम गाश शौहिया निभू, हौछू रा गाश नी शौहू।
पीछे फीरिया लागे भाल़दे, हाजी की सेंइसा रौहू।

जोते री चीड़िए, कुणी पापीए बलागी।
छेके फीरे चीड़िए घौरावे, रात पौड़दी लागी।

तौउए बी तौउए घौड़ू ए लोहे रे तौउए।
जुण झूरी लोड़ी नजरी पांधे, सौ न्हौठी धारा रे लौउए।

जूनी बीजू फूटे भागे री हीकड़ू भोनदी जूनी।
याणे बाले बे मौरना हुआ चीड़ी सो हाले री रूणी।

बालू सुना रा फली गोई नशोभी।
पिहू न छूटे याणी झूरी न छूटी रा लोभी।

बून्हे माहुल, पीछे पोई करेरी।
लोभी भोले बे हुई मौत, याद किहां बिसरी तेरी।

बूटी बूटी भूजल खोड़े री बूटी।
कुणी जुगा पाप खोडुआ झूरी दिले री छूटी।

हौरे गेहूं री जौचड़ी, पीऊंल़ी फिरी री शाई।
छेके फिर डे घौरा बे चिड़ूआ सा निबरी आई।

शोझा निकती बादल़ी, भुईण निकला तारा
सूरज बिच्छड़ू चन्द्र, संघ बिच्छड़ू म्हारा।

भेडा चारी फुआललडुए, गोरू चारै गुआल़ै।
ठारा लागी मूं सोठणी, बारा लागै हेरे बुआल़ै।

❑❑
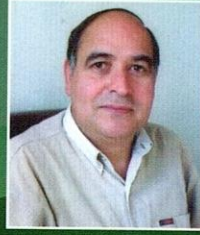
सुदर्शन वशिष्ठ

24 सितंबर, 1949 को पालमपुर (हिमाचल) में जन्म। 125 से अधिक पुस्तकों का संपादन/लेखन वरिष्ठ कथाकार। अब तक दस कथा संकलन प्रकाशित। चुनिंदा कहानियों के पांच संकलन। पांच कथा संकलनों का संपादन

चार काव्य संकलन, दो उपन्यास, दो व्यंग्य संग्रह के अतिरिक्त संस्कृति पर विशेष काम। हिमाचल की संस्कृति पर विशेष लेखन में 'हिमालय गाथा' नाम से सात खंडों में पुस्तक श्रृंखला के अतिरिक्त संस्कृति व यात्रा पर बीस पुस्तकें। पांच ई-बुक्स प्रकाशित। संस्कृति विभाग तथा अकादमी में रहते हुए सत्तर से अधिक पुस्तकों का संपादन/प्रकाशन। कई रचनाओं का भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद

जम्मू अकादमी ('आतंक' उपन्यास), हिमाचल अकादमी ('आतंक' उपन्यास तथा 'जो देख रहा हूं' काव्य संकलन) तथा साहित्य कला परिषद्, दिल्ली ('नदी और रेत' नाटक) पुरस्कृत। 'व्यंग्य यात्रा सम्मान' सहित कई स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा साहित्य सेवा के लिए पुरस्कृत। अमर उजाला गौरव सम्मान, 2017; हिंदी साहित्य के लिए हिमाचल अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'शिखर सम्मान' से 2017 में सम्मानित

वर्तमान सदस्य : राज्य संग्रहालय सोसाइटी शिमला, आकाशवाणी सलाहकार समिति, विद्याश्री न्यास, भोपाल

संप्रति : 'अभिनंदन' कृष्ण निवास, लोअर पंथा घाटी, शिमला-171009

ISBN—978-93-83234-33-2